

ॐ गरीशायनमः ॥ ॐ नमस्त्यै नमः ॥ १

अथ चिंता तंत्र लिख्यते ॥

दोहा

पारद भारद कारनी वसनी हारद साहि ॥ १ ॥
वीन विशारद धारनी शारद सुमरी नाहि ॥ २ ॥
वानी सानी शील सुख सब जानी जानीन ॥
सति दानी ज्ञानीन की गनी महारानी न ॥ ३ ॥
अति सति मंद गुलाब कबि छंद अलंकारीतीति ॥
कला बरीतीति गति बिरति नाहि जानै नीति नीति ॥
तउ हठ बल रचना रचत पाचि पाचि तीचि रताप ॥
साचि रपद लाचि ररह्यो बिन वानी के जाप ॥ ४ ॥
ताते अब बिनती करौ भूलि माफ करि साय ॥
दो चिंता गत दास को चिंता तंत्र बनाय ॥ ५ ॥

गुरु निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥ एकानन हर द्वि
हर हरि सुख घर अकर द्वि देह ॥ भानु सहस्र कर हीन गुरु
हि सुमरे गुन गेह ॥ ६ ॥ दोहा ॥ एक सुख के महादेव हैं
तय हाथ के विष्णु हैं सुख के घर हैं बिना सुड के गरीश
वना हजार किरन के सूरज हैं गुन के घर हैं ऐसे गुरु मैं
हो सुमरे ॥ ६ ॥ दोहा ॥ आशय घर दीर्घ उदर सुर्त
रूपाल ॥ मोदक भायक मोद कर भजे गुरुनगन ॥
॥ गुरुगन पाल नहीं भजे गुरु कैसे हैं न
उदर अभिप्राय कौ धरने में दीर्घ हैं उदजल ॥
वारे हैं रूपाल हैं मोदक भायक ॥ प्रद

दकर आनंद के करवे वारे हैं फरगतोश जी कैसे हैं आधार धर आधार को घ-
 रवे वारे हैं अर्थात् भक्त जन को आधार दाता हैं दीरघ उदर
 लंबो है उदर जिनको सर्व सहाय शिव जो है सहायक जिन
 के हाथाल हैं मोदक भायक लड्डु आव हैं जिनको मोद कर क-
 र्यान करवे वारे हैं ॥ **श्लोक** ॥ आधारः स्थितिं प्राये पन
 साधार्यो रीप ॥ मोदकः वाक्य भेदे स्त्री हर्ष के पुस न्यवत ॥
डोहा ॥ इति मेदिनी कोषे ॥ गुरु अंशमानार्थ ॥ **डोहा** ॥
 दर्शक सुपथ कुपथ के शंख वेद धुनि दान ॥ तम हर साक्षी ज
 नन के मजे न गुरु वषु मान ॥ २० ॥ **गुरु हर्षार्थ** ॥ **डोहा** ॥
 दाता साति गति मंत्र के हाता दुरित अमान ॥ दाता जन सुमिरेन
 में दाता गुरु भगवान् श्री पीताम्बर श्री जलज धर पालक वीश
 जहाहि ॥ रत्नाकर घर चतुर कर गुरु हरि सुमिरे नाहि ॥ २० ॥
टीका ॥ गुरु हरि नहि सुमिरे गुरु कैसे हैं पीतांबर श्री ज
 लज धर पीत वस्त्र शोभा और सोतीन को धारै है पालक वी
 स महाहि काविराजन के महाही पालक हैं ॥ रत्नाकर घर च
 कर रत्नन के समूह धारण करै हैं शिष्यन को प्रवीन करै हैं
 हरि कैसे हैं पीतांबर लक्ष्मी शंख को धारै हैं बीस गरुड़ के
 महाही पालक है समुद्र के घर है चतुर्भुज है ॥ २० ॥ **गुरु**
रामार्थ ॥ **डोहा** ॥ अवरी साति हर सुसाति घर सवरी
 ति के घास ॥ बनिता खवरी हरि हित कवरी नाहि गुरु राम
प्रार्थ ॥ **डोहा** ॥ द्विज कुल भव द्विज दगद द
 कर कास ॥ गो पीति हित गो पीति अहित भजे
 म ॥ २१ ॥ **टीका** ॥ गुरु घन श्याम नहीं
 द्विज कुल में उत्पन्न भये हैं ब्राह्मण क
 गले हैं संसार के मायक हैं काम के करत

हैं गो पति शिव से है हित जिनाका गो पति मूल से अहि-
त है अर्थात् मन कौं रोकने वाले हैं कृपा कैसे हैं चन्द्रमा
के कुल में उत्पन्न भये हैं सुदामा का दरद द्वार कियो है
शिव के भायक हैं कामावतार प्रद्युम्न के करने वाले हैं गो
पति हित बरुणा से हित है इन्द्र से अहित है ॥२२॥

गुरु हरार्य ॥ दोहा ॥ शुचि घर चंदन चंद घर भूति
मान गति दाय ॥ सुखद दुखद दर चरित वर भजन गुरु
गिरि राय ॥२३॥ **टीका ॥** गुरु गिरिश नही भजे गुरु कैसे
हैं पवित्रता के घर हैं चंदन कपूर धारण करि है संपत्ति वा
न हैं ज्ञान के दाता हैं सुख के दाता हैं दुखद जो दुर्व्यसन
उनके दालिने वाले हैं चरित करि विद्या पढावै हैं शिव के
से हैं जगि के घर हैं तीसरे नेत्र में अग्नि है चंदन चंद्रमा
कौं धारै हैं भस्म सहित हैं शुभ गति के दाता हैं सुखद स्व
र्ग के दाता हैं दुखद दर दुष्टन के दालिने वाले हैं चरित उत्त
म है ॥२३॥ **गुरु विधातार्य ॥ दोहा ॥** रचना कर वरवे

दधर गमन सरल उदार ॥ दानि चतुर्मुख चतुर कर भुजन गुरु
जग कार ॥२४॥ **टीका ॥** गुरु कैसे हैं कविता के करि वे
वारे हैं सुंदर वेदन के धारण करि वे वारे हैं हंस को सो ग-
मन है उदार सरल तैं विद्या के दानी हैं चतुरन में मुख्य
हैं चतुर करि वे वारे हैं ब्रह्मा भी कैसे हैं संसार कौं ब-
नायवे वारे हैं वर और वेदन के धारण करि वे वारे हैं
स पै चढ़ि के गमन करि वे वारे हैं दानी हैं च-
र भुजा वारे हैं जैसे गरुड़ जग कार में नै नह ॥ अंत ३५॥

अर्थिका ॥ दोहा ॥ गो पति पति जल यो कुंद मुद
धर धर्म बिलीन ॥ ज्ञाता अक्षर अर्थ प्रव

गीत कीन ॥ २५ ॥ टीका ॥ गुरु हरि हर में राति नहि करी
 गुरु कैसे हैं गो पति पति वानी के पति जो चिह्नान तिन
 में मुख्य हैं ॥ जल जात धर मोतीन के धारन करि वे चारे
 हैं जव हर ॥ व्यसन के दूर करि वे चारे हैं ॥ धर्म विलीन
 पुराय १ न्याय २ में लीन हैं ॥ ज्ञाता है ॥ अक्षर अर्थ अद ॥ बरौ
 अर्थ प्रयोजन के दातृ हैं हर कैसे हैं इंद्र के स्वामी हैं ॥ शंख धर हैं
 पाप हर है ॥ न्याय १ आचार २ में लीन है ॥ ज्ञाता है ॥ अच्युत
 हैं ॥ प्रयोजन १ यज्ञ के २ दाता है हर कैसे हैं ॥ वृषभ के पति
 हैं ॥ चंद्र धर है ॥ दुःख हर है ॥ धनुष अहिंसा २ उपनिषद में
 लीन हैं ॥ ब्रह्म है ॥ धन दानी हैं ॥ २५ ॥ **गारापति निमि**
त चिंता कथन ॥ दोहा ॥ एक रदन वारण बदन मद
 न कदन के नंद ॥ मयन मदन मद सीत सदन कथे न करु-
 शा कंद ॥ २६ ॥ मंद सतिन के फंद हर शिवा नंद सुख कंद ॥
 नरक निकंदन चंद धर नहि बंदे जगत्तंद ॥ २६ ॥ सुख घर सं-
 पति निकर कर दुख दर अधम उधार ॥ उद्धर कदन लागि न-
 हिर रे लंबोदर दर दार ॥ २७ ॥ बिघन सकोचन सोच हर पो-
 च सकोच निकाल ॥ भय मोचन लोचनन सैं कव लखि हैं
 गारापाल ॥ २७ ॥ **रवि निमित्त चिंता कथन ॥ दो०**
 अरुन बसन वर अरुन तनु जोति वंत छबि थान ॥ उदया च-
 ल थित उदय कर भय हर भजे न भान ॥ २० ॥ सेवा नर ना-
 कन की भायक करत तस्थोन ॥ नायक मुर नायकन को दि-
 मस्थोन ॥ २१ ॥ वृष रवि सन्मुख दीति दै इकट
 थ ॥ धरि शिर दीपक सर्व दिन थित नर त्यों इ
 ॥ रन में रावन वधन रवि समरे राम सराहि ॥
 ला ॥ १ भय कौं दूर कर वाला

नवहो दश सिर गिरि गये सो मैं सुमरे नाहि ॥ २३ ॥ घात
 क जालक जाल के पालक बालक बाल ॥ चालक कालकर
 ल के कये न कालक काल ॥ २४ ॥ मग चाहक चाहक जन
 दाहक दारिद दाह ॥ गाहक दीन पुकार के नहि जाचे दिन
 नाह ॥ २५ ॥ बरस विनाया भूलि मैं सविता छविता कीन ॥
 सविता कविता दीन तउ सविता कविता कीन ॥ २६ ॥ सु
 भायक घायक असुर सकल सहायक आप ॥ अज कायक
 वायक सुदुल क्यों न हरो सो ताप ॥ २७ ॥ विष्णु निमित्त रि
 ता कथन ॥ दोहा ॥ नील जलद तनु विमल मन कमल
 नयन सुखकार ॥ कंज गदा दर चक्र धर मैं न भजे मुज च्य
 र ॥ २८ ॥ दाता दान अमान के जन्मन करन स यान ॥ वन
 वीस मन लाय न भजे जग भावन भगवान ॥ २९ ॥ परमानंद
 जन मन हरन तनक न कीने काम ॥ परमानंद ध्यायेन मैं
 के धाम ॥ ३० ॥ धारि धारणा धाम तजि साधनस
 अनंत ॥ किलकत कमला हित भज्यो भज्यो न कमला
 ॥ ३१ ॥ तग सति धरि जग पतिन के खग राति धायो
 ॥ जग रति तजि सेये नही खगपति के अलवार ॥ ३२ ॥
 जग राति देखि तजे नही उर न ति केल गवार ॥ खगपति
 पालक तजे मैं खगपति अलवार ॥ ३३ ॥ विष्णुंभर भुम
 भजे विष्णुंभराधि पान ॥ विष्णुंभर पानन भजे
 भगवान ॥ ३४ ॥ लपट्यो लोभ अनंत मैं
 ॥ डट्यो न संतन के सरगा रट्यो न नाम अनंत ॥ ३५ ॥
 छंद अनंद मैं लाग्यो तोषण तंद ॥ राग्यो कुंद मुंद

पालक २ राजा ३ ब्रह्मादि ४ निधि भेद ॥

मैं त्याग्यो नाम सुकुंद ॥२६॥ चरवा दारन लों रंज्यो पर घर
 परवा भाषि ॥ नहि हरि दरवाजो भज्यो करवा कर मैं राषि ॥
 २७॥ दिशि दिशि फिर कसि कसि बपुष जोख्यो धन दुख
 जानि ॥ वसि जगदीश पुरी करी नहि पापन की हानि ॥२८॥
 धामनि धीशन के सकल फिरि फिरि सब जगदीश ॥ तट नदी
 श जगदीश पुर मैं जगदीश नदीश ॥२९॥ कदरी बनि सुनि
 गदरी मन की गाय ॥ सब तर्ज बदरी फल भषत बस्यो नव
 दरीनाथ ॥३०॥ करै राव अति रंक कौं अति निर्धन निधि
 वान ॥ धर्यो न छिन सति नंद मैं सिंधु सुता को ध्यान ॥३१॥
 कृमा सदन दारिद कदन कमल बदन वर हाथ ॥ बघौं न क
 रै सोपर मया रमा रमा के नाथ ॥३२॥ कारन मानि अकार न
 हिरह्यो गवारन लार ॥ दुख दारन धार्यो न उर वर वारन पवार
 र ॥३३॥ **राम निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥** श्या-
 म गौर जोरी जुगल पीत नाल पट धारि ॥ विचरत दशरथ अजिर
 मैं सुमरे मैं न सम्हारि ॥३४॥ निश दिन अकरन करन मैं तनकट
 कसरन कीन ॥ अस रन सरन खरारि की छिन हू सरन गहीन ॥
 ३५॥ हठ्यो न माया मोह मद कट्यो न पाप पहार ॥ घट्यो न
 धन अनुराग मन रट्यो न राम उदार ॥३६॥ व्यरथ पश्यो मम
 रथ समुक्ति असमरथन के फंद ॥ अरथ त्यागि सुमर्यो नही
 समरथ दसरथ नंद ॥३७॥ सरजू तीर कुटी रवामि लहि समी
 र हरे पीर ॥ धरिस गभीर बरनीर मैं नहि सुमरे रघुवीर ॥३८॥
 कान कथलीखन कत फिख्यो कनक कली सी प्यार ॥ जनक
 ली नहि नहि भजे जनक लली भरतार ॥३९॥ भाषि भाषि

॥ धनवान ३ समुद्र ३ फिसादी ६ नहि करवा को ५ सोना की खानि

त समान फल लयि लखिनेर नीर ॥ हर्ष हर्ष विपिनन फिरो
 रषि रषि उर रघुवीर ॥ ५० ॥ तरुनी तरुनी राम की वर चरनी चर
 नी न ॥ बैतरनी तरुनी करे शुभ करनी करनी न ॥ ५१ ॥ वर्ष विती-
 ता व्यर्थ बह चित चीता के साहि ॥ रीता को रीतो रह्यो सीता सु
 मरी नाहि ॥ ५२ ॥ नमत निहारि अनंदनी जगत बंदनी ख्यात ॥
 ररी न नरकानि कंदनी जनक नंदनी सात ॥ ५३ ॥ दरनी दारिद दु-
 ख दलन करनी अति कल्याण ॥ हरनी रावन सहस शिर चरनी
 राम प्रियान ॥ ५४ ॥ गली गली विफली फिरो छली छली की
 लार ॥ जनक अली बसि नाहि करी जनक लली रखवार ॥ ५५ ॥
 शोच्या नाना पंथ में वोच्या जन धन देन ॥ शोच्या वोच्या स-
 कल तजि वस्यो अयोच्या मैन ॥ ५६ ॥ रह्यो नही निशि वास-
 रो सासरो कि सठ साहि ॥ सीता पति को सासरो कस्यो आसरो
 नाहि ॥ ५७ ॥ नाना बनक बनाय कै धस्यो धनिक नगरीन ॥ लो-
 भ पास के नास हित प्रविश्यो जनक पुरीन ॥ ५८ ॥ अनुचित अ-
 नुचित कर्म करि भरी पाप की पोत ॥ जमसेना भय धरि नली
 चित्रकूट की ओट ॥ ५९ ॥ अघ अपवित्र विचित्र भट कोने घने
 अमित्र ॥ परस पावित्र कियो नही चित्रकूट निज मित्र ॥ ६० ॥
 दंडक पाप प्रचंड को खंडक कष्टत मास ॥ राम सररा लहि न
 हि कस्यो दंडक बन में धाम ॥ ६१ ॥ राम लखन सिय पग प-
 रस पावन भूमि मरार ॥ फिरो न सुमरत राम को निरपत मुनि
 न अगार ॥ ६२ ॥ घटी घटी वय घाटि गई हटी न आशा आंच
 पंच बटी बसि नाहि लख्यो मुक्ति नदी को नाच ॥ ६३ ॥ जम
 में वौंधि बिरोध अति करि करि अगानत पोत ॥ राम नाम
 वल नहि वस्यो पंचवटी के कोट ॥ ६४ ॥ विपति पाय जामे
 वसे सीता लछमन राम ॥ मै व्यापद गत नाहि कस्यो पंचव-

टी में धाम ॥ ६५ ॥ जटी वरुलता पौति में फटी गूदरी धारि ॥
 पंचवटी कब नौचि हों मुक्ति नदी सद सारि ॥ ६६ ॥ **कृष्ण**
निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥ पीत वसन घन श्या-
 म ननु शोभा सदन सुजान ॥ वर वंसी बन माल धर धरे न उर भ-
 गवान ॥ ६७ ॥ धायो धानोदर भरन दामोदर ऊभर्योन ॥ दामो-
 दरि जसुदा तनय दामोदर सुमर्योन ॥ ६८ ॥ चंचि फंदन सैंद-
 दता में नति संद हरीन ॥ कीर नद नंदन बंदना चंदन दाम घ-
 रीन ॥ ६९ ॥ साधा साधा नरन की करी अगाधा सेव ॥ राधा वर-
 धरने नही बाधा हर हरि देव ॥ ७० ॥ करत रह्यो जग पथन
 में अकथन कथन अपार ॥ मन हर मन मय मन मयन कथे
 न नंद कुमार ॥ ७१ ॥ अघ दल दल पलकन भजे बल भैया ख-
 ल काल ॥ पल जल में लपखाल की पाली खाली खाल ॥ ७२ ॥
 वर्षत बनमालीन में विचर्यो बनमालीन ॥ कुल पाली पाली
 रह्यो सुमरे बनमालीन ॥ ७३ ॥ सब संग नजि रंगि राग में गो-
 पीन की अनुहारि ॥ ब्रज वसि तन मन नहि कर्यो बनमाली-
 चलिहारि ॥ ७४ ॥ तरसत बरसत वारि में धायो धनिकन धा-
 म ॥ वर्षत घन श्यामन सहत नहि सुमरे घन श्याम ॥ ७५ ॥
 उतरन पट रोपीन की धरि टोपी कोपीन ॥ कोपी गुन लोपीन
 सति हरि में रोपीन ॥ ७६ ॥ तुलसी बन में नहि फिर्यो
 धरि तुलसी माल ॥ हिन जुत हरि उर में धरी नहि तुल-
 स दल माल ॥ ७७ ॥ पाप प्रचंडन सों डर्यो पर्यो रह्यो
 ॥ ७८ ॥ मधु धेनुक चारार हर समरथ शरणा राहीन ॥ ७९ ॥
 य सद पाप भय करत सकल मिलि मार ॥ कैटभ

१ मव कुटुंब को पेद २ स्त्री को उदर

शो कंश हर कव कोर है उद्धार ॥ ५८ ॥ प्रियाम सिद्धि की साधि
 का विघन बाधिका चाहि ॥ सुर नर की आराधिका रती राधि-
 का नाहि ॥ ५९ ॥ राधे राधे रत रत साधे साधन में ॥ दुख
 दाधे साधे मनुज आराधे दिन रैन ॥ ६० ॥ दरसाने दिन दारने
 सरसाने शुभ काम ॥ बरसाने वसि नाहि लखे बरसाने घनश्या-
 म ॥ ६१ ॥ थली थली बिथली करी हेरत वली वलीन ॥ लाल
 लली देरत दली गोकुल गली गलीन ॥ ६२ ॥ आसा बाँध आ-
 सान फिरि घर घर वासालीन ॥ त्यागि दुगसा हरि सुमरि म-
 थुरा वास न कीन ॥ ६३ ॥ भज तो राधा रमन कौं बाधा हरन
 अपार ॥ तजि धन दारा नाहि धस्यो द्वाग बनी दुवार ॥ ६४ ॥ स-
 मन स्व सादिन कर सुता पावन प्रियाम सरीर ॥ तजि घर घरनी
 हरि भजत तस्यो न जमुना नीर ॥ ६५ ॥ सब परि हरि हरि ह-
 रि रत परि हौं तिनके द्वार ॥ नाहि जानौ कै हैं किनहि ह-
 रि राधा रगवार ॥ ६६ ॥ **शिव निमित्त चिंता कथन**
दोहा ॥ सित शरीर वर सर्प शिर कृपा गार हर सार ॥ वि-
 ष शशि मरिता भस्म धर हरन करे हितकार ॥ ६७ ॥ वसुम-
 ति वस वसुमति फिर्यो वसुमति पाति न स थान ॥ पशु-
 पाति मति तजि नाहि भजे पशुपाति वसु हग वान ॥ ६८ ॥
 विशद न कीनों हृद सदन मदन कदन उर राहि ॥ बदन
 दोषक दनन कर्यो पंच बदन गुन भाषि ॥ ६९ ॥ **पंचिका**
 पचि पचि तजी सोच विमोचन सेव ॥ नाहि लोचन रो-
 करे देखि त्रिलोचन देव ॥ ७० ॥ लखी आरसी आरसी
 लार ॥ शिव सिपारसी नाहि धस्यो बनारसीन मरार ॥

८३॥ पंचानन नित्य तीर पर हर हर कहत फिर्यो न ॥ बसि
 पंचानन नगर मे पंचानन सुमर्यो न ॥ ८३॥ भूप भवन आ
 धार लहि विचर्यो सदा अधीर ॥ निराधार हर हर कहत
 फिर्यो न सुर सार तीर ॥ ८४॥ अब कब है है वह दिव-
 स धारि बसन का साय ॥ फिर हों गिरिजा बहन तट गिरि
 जा पीत गुन राम ॥ ८५॥ राम रचित संसार हित करि हर म-
 रीत चाह ॥ डारि पापन सों नहि लई सेतु बंध की राह ॥ ८६॥
 करि पूजन हर हर जपत धरत उसा हस हाहि ॥ वरत भवन
 तीज लहि फिर्यो सेतु बंध के साहि ॥ ८७॥ निर्मल गंगोतीर
 सोलल शरि सौ सीन महार ॥ धारि कावरि निज कंध पै गयो
 न मै उंकार ॥ ८८॥ सारस नैनन के सरस लखि लखि सारस
 तेन ॥ जुवना रस वस घर वस्यो वस्यो बनारस मेन ॥ ८९॥
 साँसी मन्यासीन की जसी पीडा तीन ॥ नासी जम पासीन की
 कासी वासन कीन ॥ ९०॥ भस्म लाय कर पात्र धारि संगत्या
 गि अघ हीन ॥ कवहु न कासी मै फिर्यो करि के बल कोपीन ॥
 ९१॥ विस्वासी राख्यो न मै जम पासी को ताल ॥ दाता दासी
 सुक्ति को कासी को कुत वाल ॥ ९२॥ हरि हर निमित्त चिं-
 ता कयन ॥ दोहा ॥ बनिता उर वासांग घर गरुड ध्वज ह
 धू केत ॥ पाल प्रलय कर सुति वर कस्यो न हरि हर हेत ॥ ९३॥
 वसि कोसि मथुरा पुरी धरि देवालय साहि ॥ पूजि उसा धव
 प्रेम सों साधव ध्यायो नाहि ॥ ९४॥ साधि सनाधि मुनी-
 न लों करि कोपीन पिधान ॥ बैदि कुशासन विपिन में धर्यो
 न हरि हर ध्यान ॥ ९५॥ धर्यो काल नै गाल में धिन धिन

खीचत खाल ॥ कब करि हौ सो पाल अब हरि हर विभुव
 न पाल ॥ १०६ ॥ देवी निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा
 बर बरनी दर दारनी करनी कुल कल्यान ॥ हर अरधंग वि
 हारनी हेरी हिये हरान ॥ १०७ ॥ विभुवन की प्रतिपालिका
 असुर सालिका अैन ॥ असुर सालिका कालिका पूजि रिगई
 सैन ॥ १०८ ॥ प्रवल खलन की खंडिका दनुज बंडिका चा-
 हि ॥ मंहि मंडल की मंडिका रटी चंडिका नाहि ॥ १०९ ॥
 रुद्राणी कात्यायनी भवा भवानी बैन ॥ सवांणी दासाय-
 राणी रटी सृडानी सैन ॥ ११० ॥ पछितातो मन में रह्यो पुनि
 पुनि धारि उमाह ॥ दुर्गम गनि लौनी नहं ॥ हिंगलाज की रा-
 ह ॥ १११ ॥ सहे कसाला निति करे आला आला पाप ॥ नाहि
 ताप्यो पाला परत ज्वाला कलकी नाप ॥ ११२ ॥ भयो न रवी
 न ब्रतादि करि नियमित वस्तु भयो न ॥ सुखी दुखी दिन
 कटि गये ज्वाला मुखी लखी न ॥ ११३ ॥ आलस बस बैठ्यो
 दिन गे सोवत स्वात ॥ मानी मात पितादि की गो न जो
 की जात ॥ ११४ ॥ **विधि निमित्त चिंता कथन ॥**
 ॥ जग कर सुख घर दुःख हर सुर नर असुर समान ॥
 ॥ चतुर्मुख चतुर्मुख धर्यो न निशि दिन ध्यान ॥ ११६ ॥
 कि ताही करि दया बिता दिये दिन रैन ॥ मान्य पिता
 के भजे पिता सह सैन ॥ ११७ ॥ विछुरत प्रिय सुत
 में निज तनही तजि दीन ॥ सै घर हू तजि विरान धरि
 रीत सी खीन ॥ ११८ ॥ राम दरश की लालसा पति स
 रामन कर्यो न ॥ कौसल्या लों में निधुर प्रभु पद प्रेम ध-
 ॥ ११९ ॥ सुर पति समरेष्वर्यत जिकरी राम पद प्रीति ॥

सुनि पट धरि धन धाम तजि चलत भयो प्रभु लार ॥ ल
 खन चीन में लखन रीत लखी न स्वप्न मरार ॥ १२० ॥ वि
 भुवन पति निज सुवन करि पाल्यो जिन उर लाय ॥ पश्यो
 न आनि मति संद में नंद जसोदा पाय ॥ १२१ ॥ **हनुमान**
निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥ धन हित धोर धोर
 दोनता जाचे धनिक अमान ॥ सोतापीत को वोहरो नहि
 जाच्यो हनुमान ॥ १२२ ॥ फिरो दोहरो द्वार बड़ देखि सो
 हरो यान ॥ विदित वोहरो राम को नहि जाच्यो हनुमान
 १२३ ॥ **पुष्करादि निमित्त चिंता कथन ॥ दोहा ॥**
 पुष्कर कर नन में रह्यो कस्यो न पुष्कर पान ॥ प्रफुलित पु
 ष्कर छाँबि लखत वस्यो न पुष्कर यान ॥ १२४ ॥ सकर भानु
 दिन प्रात ही करन पाप मन धीन ॥ जाय सितासित नीर में
 चुवकी नित्य न लीन ॥ १२५ ॥ सकर लय लरि सकर गति
 फिरो सकर निधि राग ॥ त्यागि सकर सकरी जनन ति
 सौ न सकर प्रयाग ॥ १२६ ॥ सकरन भयो न दीन लरि
 कर न सक्यो बड याग ॥ दिये न करन कथान में सक
 न कर्यो प्रयाग ॥ १२७ ॥ अहाय पाप न क्षय अरख
 जोरि जुग हाथ ॥ रक्ष रक्ष कहि नहि भरो अहाय बटके
 ॥ १२८ ॥ हरि गुन सुमरत आह्व करि पितु सों उरगि
 भयो भू ॥ अब अब करतीह दिन गया सब तजि गया
 योन ॥ १२९ ॥ सतसंग सतन कन कस्यो कस्यो कनक
 हेत ॥ फिरो न धरि सुनि बन कनिहि धर्यो कनक कुरु
 खेत ॥ १३० ॥ भयो मन अनुराग में धन सुत द्वारा गेह ॥

मानु ग्रहण कुरु खेत नहि मेयो सोहत सनेह ॥ २३२ ॥ सुनि सुनि
 सतुन तौरायित पुनि पुनि करि जल पान ॥ हर हर सुसरत नहि
 कस्यो हरद्वार ज्ञज्ञान ॥ २३२ ॥ कोटिन नर नारी राये गये संतम
 ति धाम ॥ नव हू मेला कुंभ पर गयो नु तजि घर काम ॥ २३३ ॥ ध-
 त्यो विष्णुपद भूति हित उड्यो विष्णुपद माहि ॥ पूजि विष्णुपद
 प्रेम सौ लियो विष्णुपद नाहि ॥ २३४ ॥ सा बढील बज्ज रूपने
 धाये धारि बज्ज रूप ॥ भुस्यो भूलि बज्ज रूप मै नहि सुमे मो
 रूप ॥ २३५ ॥ नाना अग्रहन ग्रहन करि असहन सहन बज्ज-
 सहे ग्रहन दुख जनन के वस्यो ग्रहन बन नाहि ॥ २३६ ॥ सराहि ॥
 तरुनीन मै पाग्यो त्याग्यो नाम ॥ वैतरनी तरुनी ॥ २३७ ॥ वैतरनी
 दाम ॥ २३७ ॥ केश कांश रद रद भये काय करुनी तरुनी चंदन
 वराट का नउ सन काम न त्याग ॥ २३८ ॥ श्री सी लाग ॥ दृग भेवरी
 रत सस्त चहुं ओर ॥ भीष भदय ज्यो धारि ली रन की गदर्ग फि
 ॥ २३८ ॥ दया सदन जन दुख काजु ख लूटि हैं काक कंक कर मोर
 लाब अघ ग्रसित को करे दन त्रिभुवन के रखवार ॥ जब
 डीत चिंता ॥ २३९ ॥ अवारीव पार ॥ २४० ॥

तत्र सम्पूज्य शुभम्

मदन दहन गुन राहन हर जन पालक खल हार ॥
दुख दारिद हर दीन के करो मोर उद्धार ॥ १० ॥

देवीस्तुति दोहा

वीणा पुस्तक धारिनी हंस बाहिनी साय ॥
विनय करौ कर जोरि कै शारद होल सहाय ॥ ११ ॥
जग जननी जग दीश्वरी जग की रक्षा कार ॥
सब देवन की मात तुम मेरी करो सम्हार ॥ १२ ॥
दुःख हरनि सुख की करनि बुद्धि दायनी साय ॥
लोभ ईरषा दैत दुख इनसें मोहि बचाय ॥ १३ ॥
सब गुण की तुम खानि हो हो सब की हितकार ॥
मात दायनी मात दैन में क्यों हारी सो बार ॥ १४ ॥
शुभ निशुभ विनाशनी जग पालनि जग साय ॥
मैं हों निर्वल अति दुखित मेरी करो सहाय ॥ १५ ॥
चंड मुंड की सारनी सहिषा सुर बध कार ॥
देवन की प्रति पालनी गिरिजा करो सम्हार ॥ १६ ॥
सुनि किन्तु सुर नाग नर सिद्ध पितर रख वारि ॥
मात चराचर पालनी वार न करि सो बारि ॥ १७ ॥
उतपीत कर प्रति पालनी करनी सुख संसार ॥
चंदकला विनती करै अब है मेरी बार ॥ १८ ॥
गंगापति जननी दुख दलनि अध हरनी सुख दानि ॥
भवसागर में बहत हों पकरो मेरी पानि ॥ १९ ॥
काम लोभ मद दैत दुख इनसें मोहि निकारि ॥
जन पाली काली तुही है मेरी सब वारि ॥ २० ॥
शीघ्र असुर संहारि सब सुर दुख दीन दारि ॥
विनय करत हिंसक कन्या क्यों अब मोहि उवारि ॥ २१ ॥

दीनन की प्रति पालनी मुनिये करुणा साय ॥
 जगदंबा साहेश्वरी सिंह बाहिनी साय ॥२२॥
 दनुज दलानि जगदंबिका शंकर प्रिया भवानि ॥
 सहिष्ठा सुर मद सारनी कृपा करी जन जानि ॥२३॥
 सीता स्तुति ॥ दोहा ॥

शशि सो मुख भृकुटी धनुष लसत कुंद से दंत ॥
 जलज नयन शुक नासिका अधर अरुणाक्षि वंदन ॥
 वर कपोल कर पद कमल ओ फल कुच पाच प्रदान ॥
 कनक लता तनु कवि भरी रामचंद्र की दास ॥२४॥
 रचना पाल प्रलेन की करनी राघव नारि ॥
 मुख भरनी दारिद दरानि मेरी ओर निहारि ॥२६॥
 दशशिर रावन बीस भुज पुर बसि छाया रूप ॥
 सकल सदल नास्यो असुर हरो सु सो भव कृप ॥२७॥
 रावन राक्षस सहस शिर पुष्कर द्वीप निवासि ॥२८॥
 सो नास्यो पल एक मै पूरन कला प्रकासि ॥२९॥
 जनक सुता जन तारनी जग जननी जग पाल ॥
 राम प्रिया अघ हारनी दारो कुमति करात ॥३०॥
 राधा स्तुति ॥ दोहा ॥

भाल विपुल शशि सो बदन रदन कुंद कलि काहि ॥
 अधर विंद शुक नासिका केश प्रयास सुदुर्गाहि ॥३१॥
 खंजन से दृग पानि पद यलज जलज कवि धाम ॥
 भौंह मदन धनु वील कुच राधा कंचन दाम ॥३२॥
 कीरति सुता सुलोचनी अति रोचनि मति धाम ॥
 रति रम्भा मद मोचनी हरो विघ्न हरि बाम ॥३३॥
 जग जननी वृषभानुजाति जं पुर की रस वारि ॥

इवन हौं भवसिंधु मै मान मोहि उद्धारि ॥ ३३ ॥

गंगा स्तुति दोहा ॥

चंद इंदु सो गोर रंग अर्धचंद्र सो भाल ॥ ३२ ॥

सकरा सन थित हिस सुता वरो कलुख कराल ॥ ३४ ॥

कंज अभय बर कलस कर शोश सो सुख सस देह ॥

सेत वसन करणायतन करो सु सोपर नेह ॥ ३५ ॥

शुभ करनी दुख दल दलानि दीन दीषि रिक्कारि ॥

चंदकला शिर धारनी चंदकला कौं तारि ॥ ३६ ॥

जो तौमैं सज्जन करै ताकौं भंगा पाय ॥ ३७ ॥

अर्धंगा भंगा करै क्यों दे बिद्य अचवाय ॥ ३८ ॥

मै तुव दासी दुख भरी है सुहि दर्शन आय ॥

शंकर सोस निवासिनी सुहि तुव तीर बसाय ॥ ३९ ॥

जमुना स्तुति दोहा ॥

सूर सुता जग पावनी अघ हरनी सुख दानि

मात चराचर पालनी जमुना मो दुख भावि ॥ ४० ॥

समन स्व सादिन कर सुता हिसकर बदनो नाय ॥

दुख हरनी करनी दुख जमुना करौ सहाय ॥ ४१ ॥

जम गरा मुहु मरि लावनी जग पावनि जन पाल ॥

सन मोहन सन भावनी साता होइ सयाल ॥ ४२ ॥

हिंग लाज ज्वाला सुखी कैला काली जीन ॥ ४३ ॥

रक्त दीतिका आदि मस हरो पाप गनि दीन ॥ ४४ ॥

अथ विष्णु आदि चौबीस अवतारन

को स्तुति दोहा

गदा पद्म दश चक्र धर रमा रसन चागीस ॥ ४५ ॥

अरि गंजन भंजन खलन जन रंजन जगदीश ॥६३॥
 करत छीर सागर सयन तउ ध्यापक सब तार ॥
 विष्णु चराचर नाथ सो बसो सदा मन मोर ॥६४॥

राम स्तुति दोहा

रघुवर मेरे स्वामि हौ मैं चरनन की चोर ॥
 दीन दया कीर दीठि दै हरो दीनता मेरि ॥६५॥
 राम तुम्हारे पद कमल सज उर करो निवास ॥
 सो मन प्रभु पद कमल में करै मधुप है वास ॥६६॥
 बालि विराध कबंध सग कुंभकरन घननाद ॥
 तारे दश शीशादि सो मोपर करो प्रसाद ॥६७॥
 डूबत हौं भव सिंधु में प्रभु पकरो सो हाथ ॥६८॥
 तुम अनाथ के नाथ हौं मैं अनाथ हौं नाथ ॥६९॥
 निर्धन के धन दुख दरन असरन सरन उदार ॥७०॥
 भव सागर में भुमत हौं करे करी लौ पार ॥७१॥
 आसा लप्सा मोह मद लोभ ईर्ष्या कास ॥७२॥
 देत महा दुख दोष विन इनाहि निवारो राम ॥७३॥
 वार न पकस्यो ग्राह मैं तब भट करे संहार ॥
 वार करी किंहीं कारने चंदकला की वार ॥७४॥
 राक्षस बानर भाल खरा प्रभु कीने भव पार ॥
 करे न धिनि करुणा सदन हौं इनतैन उतार ॥७५॥
 गानिका सबरी मुनि तिया तारी ताट कहाल ॥
 चंदकला अबला खला रही लला कलिकाल ॥७६॥
 मैं अध जुत अध हरन तुम दीन बंध मैं दीन ॥
 मैं दुख घर दुख हरन तुम तउ किलंब क्यों कीन ॥७७॥
 प्रभु सुग्रीव बिभीषनहि करे रंक मैं राज ॥७८॥

अव अवला कौ दारिअध करो अनघ खुराज ॥५५॥
 विनय करौ कर जोरि कै नवौ धरनि धरि शोश ॥
 मै अति पापिन दीन हौं क्षुपा करौ जगदीश ॥५६॥

कृष्णस्तुति दोहा ॥

दंसी लकरो करन मै गल फूलन कौ साल ॥५७॥
 मोर मुकुट पट पोत धर सोहन होइ मयाल ॥५८॥
 शकट अघासुर पूतना वकरवर असुर संहारि ॥
 राखो गोपी गोप प्रभु त्यों मुहि रखो मुरारि ॥५९॥
 नाच्यो कालिय नाग हरि नृत्य कस्यो शिर तास ॥
 पुनि दास्यो तिहिं गरुड भय त्यों दारो भस जास ॥६०॥
 देखि नाग कौ अति डरदी विनय करी अहिवाल ॥
 हरयो वासु भय त्यों हरो मोर सहा अघ जाल ॥६१॥
 दास्यो सुरपति को गरब द्विगुनी नख गिरि धारि ॥
 वसत सुलोउर घर सलल सारो थाहि मुरारि ॥६२॥
 विप्र सुदामा को हस्यो दारिद इक दिन मोहि ॥
 तैसे मेरो मोह सद लाय हरो क्यों नौहि ॥६३॥
 शिवा सदन सैं रुक्मिणी हरि लाये ब्रजराज ॥
 तैसे मोरि दुरास कौ हरो न हरि किहिं काज ॥६४॥
 दुपद सुता के बसन कौ हरता राखी लाज ॥
 त्यों विभुवन पीत अघ हरन करो किकरी काज ६५॥
 गोपिन सैं दधि दान हठि लियो नंद के लाल ॥
 चंद कला कौ देइ अव भक्ति दान खल काल ॥६६॥
 सवला गोपिन कौ सधी नवला नवला चाह ॥
 चंद कला अवला लला रही निहारत राह ॥६७॥
 कुवरी दासी कंस की पावन कीनी ज्ञाप ॥६८॥

मैं दासी प्रभु चरन की क्यों न हरो सो पाप ॥ ६७ ॥
 शंख वेद हरि ले गयो प्रलय मौकतिहिं सारि ॥
 वेद लाय विधि कौं दिये सोन सु मोहि उधारि ॥ ६८ ॥
 वीन वासन बलि सदन में जाय दान लै धीर ॥
 दारी सुरपाति को बिपति त्यों टारो सो पोर ॥ ६९ ॥
 अग्नि तोय विष शैल की बिपदा टार खरारि ॥
 रक्षा को प्रह्लाद की त्यों अब मोहि उवारि ॥ ७० ॥
 बालक हौ प्रह्लाद तब रत तो राम सराहि ॥ ७१ ॥
 पिता कहौ न क्यों रै मेरो बैरी नाहि ॥ ७२ ॥
 नहि मान्यो प्रह्लाद तब मन में सानि कुवान ॥
 यंभ बाँधि अभिमान जुत असि धरि बोल्यो नात ७२
 बता कहाँ हैं राम अब सुनि बोल्यो प्रह्लाद ॥
 तो सो मैं असि यंभ मैं हैं सब ठाँ निवाँद ॥ ७३ ॥
 पितु सुनि सुत के बचन कौ सारन लारयो कोपि ॥
 यंभ फारि नर हरि प्रगट हन्यो असुर मद लोपि ॥ ७४ ॥
 कमठ होय धरि धरि धर कर्यो सुरन को काम ॥
 हस्यो असुर दल त्यों हरो मोरि कुमति मति धाम ७५
 हिरन्याक्ष हनि घृष्टि बनि लाये धरनी सोय ॥
 चंदकला के अघ हरो नाथ दया द्रव होय ॥ ७६ ॥
 परशु धारि इकई स वर क्षत्रिय गन संहारि ॥
 विप्रन कौं धरनी दई राम सु मोहि उवारि ॥ ७७ ॥
 हलधर होकारि मुष्टि सैं मार्यो नुरत प्रलंब ॥
 चंदकला के दुखन कौं हरता करी विलंब ॥ ७८ ॥
 बुद्ध होय के मखन की निंदा करि हरि नाथ ॥
 जीवन की रक्षा करो सो मेरो जम पाप ॥ ७९ ॥

ऋ कल्को अवतार हरि हरि हो स्नेह अपार ॥ ५ ॥
 करि हो जग रक्षा सु अव करो कृपा कर्नार ॥ ८ ॥
 वेत शास्त्र सथि व्यास है दिये पुराण बनाय ॥ ९ ॥
 राख्यो वरणा अत्र स धरम सो सम करो सहाय ॥ ११ ॥
 नर नाशयरा कीपल प्रथु नारद सनत कुमार ॥ १२ ॥
 दत्तात्रेय रु मोहिनी करो भवारी पार ॥ १३ ॥
 धन्वंतरि हरि ध्रुव ऋषभ हंस यज्ञ अवतार ॥
 विष्णु रूप चौबीस मिलि करो मोहि भव पार ॥ १४ ॥

जमस्तुति दोहा ॥

नील कमल सम प्रियामतनु राजत अवर पीत ॥
 प्रियाम वरणा शिर पर सुकुट कुंदल अवरा पुनीत ॥ १ ॥
 हार भार उर में लसत अंगद भुज में भ्राज ॥ २ ॥
 काल मृत्यु के नाथ भम हरो पाप जमराज ॥ ३ ॥
 सृज सुत धाता जमुन दीनन के प्रतिपाल ॥ ४ ॥
 कुंदल किंकरी कुमाति पर करुना करो कृपाल ॥ ५ ॥

भैरवस्तुति दोहा

गौर रंग मुख कमल सो सोहत लाल लगोट ॥
 चंदकला शिर धर हरी चंदकला की खोट ॥ १ ॥
 उर भुज भाल विशाल बपु शिर पर चिह्नन वार ॥
 कर विशाल खप्पर धरे हरो सु भव भय भार ॥ २ ॥
 प्रियाम वरणा अति अरुणा दृग भाल चंद सिंदूर
 खुले केश नख शिर सुभग करो सो मो दुख दूर ॥ ३ ॥
 भोम रूप खल खल गानन कौं सुजनन कौं सुख रूप ॥
 चंदकला के दुरद हरो सो भैरव भव भूप ॥ ४ ॥
 शंभु उमा के अति हिनू कासी के कुतवाल ॥

अति समर्थ भव दुख हरन भैरव हरो कु काल ॥८१॥

प्रियाम गौर तनु अमल मन काम रूप सुखकार ॥

दुख दारिद खल हर करो समजोरी उद्धार ॥ ८२॥

हनुमान स्तुति ॥ दोहा ॥

जलधि लौघि सिय सोधि ले आयो लंक जराय ॥

चूडा गनि रामहि बई निरभि मान शिर नाथ ॥ ८३॥

लक्ष्मन तनु बरछी लगी गये राम धवराय ॥

तव लाकार संजीवनी तुरतीह लिये बचाय ॥ ८४॥

राम लखन हरि ले गयो आहिरावन पातार ॥

ताकों हनिलायो तज अति नलि रह्यो उदार ॥ ८५॥

रावन हनिनिज पुर प्रविशि पाय राज कीह राम ॥

मैं तेरो रिनिया सदा रहि हों कपि बल धाम ॥ ८६॥

राम चन्द्र के फेरि हू कारज सारे दोरि ॥

सो हनुमत अंजनि तनय विपदा दारो मोरि ॥ ८७॥

तुलसी चन्दन कल्प तरु बील आसलक सोय ॥

पीपल बट केलादि तरु मोर सहायक होय ॥ ८८॥

हरद्वार पुष्कर गथा सेतु बंधु जग दीश ॥

बदरीनाथ प्रयाग सब हरो पाप मम ईश ॥ ८९॥

चित्र कूट हिम वान गौर हेम कूट गिरि राज ॥

द्रोणा प्रवर्षणा आदि गिरि सोर सुधारद्व काज १००

कासी अवध अवंतिका मथुरा माया सात ॥

द्वारावति काँची पुरी करो सोर अध घात ॥ १०१॥

नृपाति मुकुट मौरा राम की नगरी बुंदी माँहि ॥

यह वय चौदह वर्ष मैं रचना कीन्ही आहि ॥ १०२॥

श्री गुलाब काबि राज नै माहि अभ्यास ॥

करवाने वातक हिनै हेरवना फल तास ॥२०३॥

सम्बत सर उवईस सै ॥ पैतालीस दिनेस ॥

सार्ग कथा परव शप्पसी कीनों शतक अशेस ॥२०४॥

ज्ञान ज्ञो मद्राव गुलाबसिंह नां किंकरीचंद्रकला जी दत्त करुणा शत
न सम्प्रसास ॥ सं० २८५३ वि० में प्रकाश हुआ ॥

करुणा शतक का शुद्ध शुद्ध पत्र

पृष्ठ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१	२२	शोष	शीघ
२	२२	जरासाय	जरासाय
२	२८	कर	करि
२	२५	क्यों अब	त्यों अब
६	५	गोश सो	शीश सो
६	२	शोष	शीघ
६	८	राखो	राखे
६	२३	गोपिन को	गोपिन की
८	६	भवारी	भवारीव
८	२०	अवर	अस्वर
८	२८	हरी	हरो
८	२२	करो सो	करो सु

इति

(ह० द० दारीताल कापी नवीस फतेह गढ़)

बानिताभूषण

(अर्थात्)

क्रम से नायिका अलंकारन के एकत्र लक्षणा
उदाहरणन को संस्कृतनेक ग्रंथ सतानुसार ऊपरि ॥

युत चक्र वारा वंशा वतंस हन ॥ बुंदी पीत रघुवीर की
बुद्धीन्द्र महाराजा धिराज ॥ १ ॥ उद्यम कस्यो गुलाब

जी जी जी जी जी ॥ २ ॥ आश्विन नवमी शुक्ल

विंशत्यंशे ॥ ३ ॥ श्रीगुरु नमो ॥ ४ ॥

सिंह जी के कर्णों इक ठाम ॥ चाही तैं याको धर्यो

जी गुलाब यिका जाति ॥ ५ ॥ दोहा ॥ जाति

नारि ॥ बहिरि हस्तनी उत्तमतुष

साधारण नायिका स्वकी

जगत प्रकाश ॥ ६ ॥ उपज तरतिथाई निरोख

पंडित जी श्री जसिद दोय ॥ खंडितादि जे भेट ते सा

वी के अलंकार लक्षणा ॥ ७ ॥ दोहा ॥ स

पथ के साहिं ॥ चमत्कार भयन सरिसभ

॥ ८ ॥ हर बारीप्रथ अलंकारांग कथन दोहा

गोश कषादि उपमान ॥ समानार्थ वाच

न ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ है उपमेय विषय

अरु वराय ॥ उपमानतु विषयी रु अवराय ॥ प्रासंगिक कहै अस्तु
 न जानि ॥ अप्रसंग अप्रस्तुत जानि ॥ १२ ॥ भेदय विशेष्य विशेष-
 परा भेदरू ॥ वज्र व्यापक सासान्य अखेटक ॥ १३ ॥ अल्प व्या-
 पक आदि विशेष ॥ भूषन आसक नाम अशेष ॥ १४ ॥ अथ सू-
 रीपदा लुप्रीपना लक्षणा ॥ दोहा ॥ लुप्रीपना वाचक रु वि-
 शय धर्म उपमान ॥ इक द्वैच के लोप सैं लुप्रीपन परिमान ॥ १५ ॥
 टीका ॥ वाचक उपमेय धर्म और उपमान ये च्यारों होय सो पुरीप-
 ना अलंकार है ॥ एक के दोय के तीन के लोप सैं लुप्रीपना को प्रमाण
 है ॥ १६ ॥ अथ साधारण नायिका पुरीपना उदाहरण ॥
 दोहा ॥ शशि सो उज्ज्वल मुख सुभग अर्ध चंद्र सो भात ॥ कनक ल-
 ना सी कवि अरी बिहरत देखी वाल ॥ १७ ॥ टीका ॥ शशि सो उज-
 ज्वल मुख है ॥ आधा चंद्रमा सो सुन्दर भात है ॥ सोना की बेलि सी छ-
 वि झरी जरी नायिका डोलती देखी ॥ यहाँ शशि उपमान सो वाचक उ-
 ज्ज्वल अरी मुख उपमेय है २ और अर्ध चंद्र उपमान सो वाचक अ-
 री उपमेय सुभग धर्म है २ और कनक लता उपमान सी वाचक कवि
 अरी धर्म बाल उपमेय है ३ यातें पुरीपना अलंकार है ॥ १८ ॥ वाच-
 क लुप्रा १ धर्म लुप्रा २ धर्म वाचक लुप्रा ३ वाचकोपमेय लुप्रा ४ उप-
 मान लुप्रा ५ वाचकोपमान लुप्रा ६ धर्मोपमान लुप्रा ७ धर्मोपमान वा-
 चक लुप्रा ८ ये लुप्रा के आठ भेद हैं ॥ अथ स्वकीया जातों लुप्रा
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ कर किसलय मृदु २ कंज से पाय २ नैन मृग-
 नैन ३ ॥ श्री कवि ४ कवि केश सिंह सो ५ पिक मधुरे सिय बैन ॥ १९ ॥
 टीका ॥ कर है सो नवीन वान से कोमत है याके मूल में से वाचक
 नहीं यातें वाचक लुप्रा है १ कंज से पाय है यासे धर्म लुप्रा है २
 नायिका के नेत्र मृग नैन से हैं याके मूल में धर्म वाचक नहीं यातें ध-
 र्म वाचक लुप्रा है ३ श्री नायिका कीसी कवि है याके मूल में वाचक

उपमेय नहा यातें धर्म वाचकोपमेय लुप्रा है ४ काट सिंह सी यत्-
 ली है इन्हीं सिंह की काट नहीं कही यातें उपमान लुप्रा है ॥१॥ सिय
 के बेन कोयल से सीते हैं चाके मूल में पिकवानी उपमान और से
 वाचक नहीं यातें वाचकोपमान लुप्रा है ॥१६॥ बरवै ॥ रि-
 रिजा दृग मृग सम है गति गज राज ॥ लापत लुप्रा आठ हिचों
 काविराज ॥१७॥ टीका ॥ पार्वती के नेत्र हरिन के समान हैं। यामें
 मृग के दृग उपमान नहीं और धर्म नहीं यातें धर्मोपमान लुप्रा है
 ॥ गति गजराज यामें नायिका की गति उपमेय तो है धर्म उपमान
 वाचक नहीं यातें धर्मोपमान वाचक लुप्रा है ॥ जानकी पार्वती-
 स्वकीया नायिका हैं ॥१७॥ अथ सुरधा अनन्वय लक्षणा ॥
 दोहा ॥ जिहि तनु जोवन अंकुरित सुरधा तिय है सोय ॥ नकी
 उपमा जाहि कौ लगे अनन्वय होय ॥१८॥ अथ सुरधा अन-
 न्वय ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ मुख सो मुख दृग से दृगहि कच से
 कच दसाहि ॥ अल्प उरोज उरोज से जनक सुता के आहि ॥१९॥
 टीका ॥ मुख सो मुख ही है दृग से दृग ही हैं कच से कच ही ही
 हैं जनक सुता के छोटे कुच से कुच ही हैं यहाँ छोटे कुच से मु-
 रधा है और मुख दृग कुच उरोजन की उनहीं की उपमा लगी यातें
 अनन्वय है ॥१९॥ अथ अज्ञात यौवना उपमेयोपमा ल-
 क्षणा ॥ दोहा ॥ नहिं जाने निज यौवनहि है अज्ञात सु जोय ॥
 उपमा उपमेयोपमा लगे परस्पर होय ॥२०॥ टीका ॥ जोवन कौ
 नहिं जाने सो अज्ञात यौवनायिका है ॥ परस्पर उपमा लगे सो उप-
 मेयोपमा अलंकार होय है ॥२०॥ अथ अज्ञात यौवनोपमेयो-
 पमा उदाहरन है ॥ सर कावत गुड़ियाँ तबै लसत अमित छावि सा-
 नि ॥ जलज पानि से जलज से जनक लली के पानि ॥२१॥ टीका ॥
 गुड़ियाँ सर कावे हैं नच जनक लली के हाथ से जलज लगे हैं ॥

र जलज से हाथ लें हैं। यहाँ गुदियाँ खेलि बसों अज्ञातरे
 वना नायिका है ॥ और जलजन की उपमा हाथन कों लगी
 हाथन की उपमा जलजन कों लगी याँ उपमेयोपमा अलं
 कार है ॥२१॥ अथ ज्ञात यौवना प्रतीप लक्षणा ॥ दो
 हा ॥ जनि जौवन आप ही ज्ञात यौवन जान ॥ भाषत प्रथ-
 म प्रतीप जहँ होय वर्य उपमान ॥२२॥ टीका ॥ आया
 जौवन कौ आप ही जनि से ज्ञात यौवना नायिका है हे ज
 न ॥ जहाँ उपमेय उपमान होय तहाँ प्रथम प्रतीप भाषत है
 प्रतीप नाम उलटा को है ॥२२॥ अथ ज्ञात यौवना प्र
 थम प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥ निरखत कती छाँह ज
 व दौरत दीवि दुख ॥ कीरति जा सीबी जुरी तब ही जानी जा
 य ॥२३॥ टीका ॥ जब कती छाँह देखती ऊई सरखीन की
 दीवि बचाकर के दौड़े है तब ही कीरति जा सीबी जुरी जा
 नी जाय है ॥ यहाँ कती छाँह देखि बसों ज्ञात यौवना ना
 यिका है कीरति जा सीबी जुरी में उपमेय उपमान भयो यह
 उलटा है याँ प्रथम प्रतीप है ॥२३॥ अथ नवोदा द्वि
 तीय प्रतीप लक्षणा ॥ दोहा ॥ लज्जा भय बस रति न च
 ह नारि नवोदा मान ॥ द्वितीय वर्य उपमान के होय वर्य
 अपमान ॥ टी० लज्जा और डर के बस रति नहीं चाहै सो नवोदा नायिका के
 मेय है सो उपमान हो जाय और उपमेय को अनादर हो
 य सो दूसरे प्रतीप है ॥२४॥ अथ नवोदा द्वितीय प्रतीप
 हरण ॥ दोहा ॥ पिच कर तैं छुटि भजत जब क्यों सजनी ऊ
 लसात ॥ देखो तद्वत दामिनी घन में चपल लखान ॥ २५ ॥
 टीका ॥ पीतम का हाथ में मैं छुटि करि के जब नायिका
 भाजे है तब सरखी क्यों हरखावैं हैं ॥ देखो नायिका की समान

मेघ में बीजुरी चंचल दीरे है यहाँ नायक का पात में नायिका भा-
जे हैं याँतें नवोदा है नायिका सी बीजुरी है यामें उपमेय उपमान भ-
यो नायिका की अनादर भयो याँतें दूसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ

विश्रब्ध नवोदा तृतीय प्रतीप लक्षणा ॥ दोहा ॥

सो विश्रब्ध नवोदा है विश्वा से कहु पीय ॥ वरार्य वरार्य रोह अब
गर्यहि अनादरे सु तृतीय ॥२६॥ टीका ॥ पीतम को कहु विश्वास
करै सो विश्रब्ध नवोदा नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमेय रहकरि
के उपमान को अनादर करै सो तीसरो प्रतीप है ॥२५॥ अथ वि-

श्रब्ध नवोदा तृतीय प्रतीप उदाहरन ॥ दोहा ॥

कोल भवन कों भासिनी भाँति भरी सी जाय ॥ दासिनी मन को दुति दरपति हि
विरियाँ न रहाय ॥२७॥ टीका ॥ कीड़ा का भवन कों भासिनी है
सो उर में भरी सी जाय है ॥ ना समय बीजुरी का मन को दुति को गर्व
नहीं रहे ॥ यहाँ नायिका कोल भवन कों डरपती सी जाय है याँतें
विश्रब्ध नवोदा नायिका है ॥ और नायिका उपमेय से बीजली उप-
मान ने अनादर पायो याँतें तीसरो प्रतीप है यह द्वितीय भेद से उल-
टो है ॥२५॥ अथ सतांतरा सुगधा भेद ॥ चौपाई ॥ वयसं-

धि १ नव बधू २ प्रसंगा ॥ नव जीवन पुनि नवल अनंगा ॥ राति वा-
सा ५ मृदु साना दै जानौ ॥ लज्जा प्राया सात वरानौ ॥२८॥ अथ व-

यः संधि चतुर्थ प्रतीप लक्षणा ॥ दोहा ॥

वयसंधि शिशु
ता कलक कलकै जब तन तीय ॥ चवथ वरार्य उपमान है अब गार्य स

म नग नीय ॥२९॥ टीका ॥ जब नित्य का तन में बालक पना की
कलक कलकै सो वयसंधि नायिका है ॥ उपमेय है सो उपमान हो
जाय उपमेय की समान उपमान नहीं गन्यौ जाय सो चवथो प्रतीप
है ॥२९॥ अथ वयसंधि चतुर्थ प्रतीप उदाहरन ॥ दो-

हा ॥ सजि सिंगार जब नित्य चलत संत तज साति साहि ॥ तब तब करी

कुंसा राति सतता यावत नाहिं ॥३०॥ टीका ॥ जब तिय है सो सिंग
 र लीक के संद तेज गति से चले है तब तब हाथी और हिरण को
 गति सतता नहीं पावे है इहां संद तेज गति से चले है याते वय-
 म्नीय नायिका है और संद तेज गति उपमेय है सो उपमान भयो
 करो कुरंग को राति सतता लायक नहीं याते चवथो प्रतीप है ॥३०॥
 अथ नवल बधू पंचम प्रतीप लक्षणा दोहा ॥ दिन दिन
 दूगो डति पड़े नवल बधू अनुमान ॥ उपमेयतु उपमान के व्यर्थ हो
 य उपमान ॥३१॥ टीका ॥ दिन दिन प्रति दूगो सोभा बड़े यह नव-
 ल बधू को अनुमान है उपमेय है सो उपमान हो जाय फेरि उपमान
 व्यर्थ हो जावे सो पंचम प्रतीप है ॥३१॥ अथ नवल बधू पं-
 चम प्रतीप उदाहरण ॥ दोहा ॥ दोयन के शश लों कला नि-
 शि जाकर सरसात ॥ जनक सुता तनु निरख तां कनक लता दबि जा-
 त ॥३२॥ टीका ॥ दोयन का चंद्रमा को समान कला राति दिन सर-
 साते है । जनक सुता का शरीर कों देखतां कनक की लता दबि जा-
 ते है । यहां कला सरसावा सों नवल बधू नायिका है और जनक
 सुता उपमेय है सो उपमान भई ताके आगे कनक लता व्यर्थ भई य-
 है पंचम प्रतीप है ॥३२॥ अथ रूपक लक्षणा ॥ दोहा ॥
 विषयी रंजि विषय कों के तद्रूप अभेद ॥ अधिक न्यून सम तुल्य
 करि पद रूपक के भेद ॥३३॥ टीका ॥ उपमान है सो उपमेय
 को रंजि तद्रूप और अभेद होकरि के ॥ एक उपमान उपमेय में मि-
 ल्यो रहै एक उपमान न्यारो रहै सो तद्रूप ॥ उपमान उपमेय में भे-
 द नहीं रहै सो अभेद ॥ इन दोन के अधिक न्यून समता करिके
 कः भेद होते हैं ॥३३॥ अथ नव यौवना अधिक तद्रूप
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ सो सुग्धा नव यौवना जीवन कलक लसाय
 मु है अधिक तद्रूप जह उपमेय हि अधिकाय ॥३४॥ टीका

जाके जोवन की कलक लखावे सो सुगया नव यौवना नायिका है जहाँ
 उपमेय की अधिकता होय सो अधिक तद्रूप है ॥३४॥ अथ नव
 यौवना अधिक तद्रूप उदाहरन ॥ दोहा ॥ सरसै चन्द्र प्र-
 काश तैं जोवन भलक प्रकाश ॥ सिय मुख शशि शशि तैं सरस निश-
 दिन करत प्रकाश ॥ ३५ ॥ टीका ॥ चंद्रमा का उजाला तैं जोवन की
 कलक को प्रकाश अधिक है ॥ सीता को मुख चंद्रमा है सो चंद्रमा तैं अधिक
 है राति दिन उजालो करे है इहाँ तो जोवन का प्रकाश सैं नव यौवना
 नायिका है और सीता का मुख चंद्रमा उपमेय सैं राति दिन प्रका-
 श करवो अधिकता है यातैं अधिक तद्रूप है ॥ ३५ ॥ अथ नव
 ल अनंगा न्यून तद्रूप लहरा ॥ दोहा ॥ नवल अनंगा का
 म रुचि भोलापन सैं जानि ॥ होय न्यून तद्रूप जब उपमेयहि कम उ-
 नि ॥ ३६ ॥ टीका ॥ भोलापन सैं काम की रुचि होवै सो नवल अ-
 नंगा नायिका जानो ॥ जब उपमेय को कम ठानैं तब न्यून तद्रूप हो-
 य है ॥ ३६ ॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप उदाहरन ॥
 दोहा ॥ सुनि रति की पिय विनय तिय नैन मूँदि मुसकाय ॥ तब
 कृष की चष रूपन सैं चंचलता नर हाय ॥ ३७ ॥ टीका ॥ तिय है
 सो पिय की रति की विनय सुनि करि के नैन मूँदि मुसकावै तब
 कृष की सो चष रूपन सैं चंचला नहीं रहे यहाँ नैन मूँदि मुसका-
 वा सैं नवल अनंगा नायिका है और रूपन की सो चंचलता चष
 रूपन सैं नहीं यातैं न्यून तद्रूप है ॥ ३७ ॥ अथ रति बामास
 स तद्रूप लहरा ॥ दोहा ॥ रति बामा बामा सुनौ सुरत अरु
 चि पहिचानि ॥ सस तद्रूप डहन सैं समता भये बखानि ॥ ३८ ॥
 टीका ॥ रति बामा है सो नौ सुरत सैं अरुचि पहिचानों ॥ दो-
 नून सैं समता भया पै सस तद्रूप बखानों ॥ ३८ ॥ अथ रति-
 बामा सस तद्रूप उदाहरन ॥ दोहा ॥ मोन धारि पिय पाम

सजय बैठे हग शिर नाय ॥ तब राधा रति अति लसत मानवती
 रति भाय ॥ ३८ ॥ टीका ॥ जब मौन धारि कोरि कै पिय के पास ह
 ग शिर नवाय कोरि कै बैठे तब राधा रति है सो अत्यंत लसै है मा
 नवती रति की समान ॥ यहाँ मौन धारि शिर नवाय बैठि बासों
 रति वासा नायिका है और राधा रति में मानवती रति में समता है
 याते सब तद्रूप है ॥ ३८ ॥ अथ मृदु साना अधिक अभेद
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ मृदु साना जो सान के अवसर मृदुल रहात
 अधिक होय उपमेय तब अधिक अभेद कहात ॥ ४० ॥ टीका ॥
 सान का अवसर में मृदुल रहावे सो मृदु साना नायिका है उपमे
 य अधिक होय तब अधिक अभेद कहावे है ॥ ४० ॥ अथ मृदु
 साना अधिक अभेद उदाहरण ॥ दोहा ॥ साय राध ल
 रिष पिय प्रथम सुसकानी रिस दारि ॥ हास्य जेन्हतब सदन में प्र
 त रही विस्तारि ॥ ४१ ॥ टीका ॥ पीतम को पीहलै सायराध दे
 रिष कोरि कै रस को दारि करि कै हँसी तब हास्य रुपी चौ
 दनी सदन में सँवरे ही विस्तारि रही यहाँ रस दारि सुसका
 वा सों मृदु साना नायिका है और हास्य में चाँदनी में भेद
 नहीं यह तो अभेद सबैरे विस्तारि रही यह अधिकता है
 याते अधिक अभेद रूपक है ॥ ४१ ॥ अथ लज्जा प्राया
 न्यून अभेद लक्षणा ॥ दोहा ॥ लज्जा जुत सुरताहि को
 सो है लज्जा प्राय ॥ न्यून होय उपमेय तब न्यून अभेद क
 हाय ॥ ४२ ॥ टीका ॥ लाज सहित सुरत को सो लज्जा प्रा
 या नायिका है जब उपमेय न्यून होय तब न्यून अभेद कहा
 वे है ॥ ४२ ॥ अथ लज्जा प्राया न्यून अभेद उदाहर
 न ॥ दोहा ॥ धीर धरु गुरु जनन नर जो गत दे व रसास
 पिय सो भाषत भय भरी तिय रति सोभ प्रकास ॥ ४३ ॥ २॥

टीका ॥ धीरज धरो गुरु जन मनद देवर सात जगें हैं पिय सों
 भाषतां तिय रति की भय भरी सोम प्रकाश है इहाँ गुरु जनादि-
 कसैं लाजें है यातैं लज्जा प्राया है तिय रति की भय भरी सोम
 प्रकासवो न्यूनता है यातैं न्यून अभेद रूपक है ॥४३॥ अथ
 सध्या सम अभेद लक्षणा ॥ दोहा ॥ लाज काम सम जासु
 कै सो है सध्या तीय ॥ उपमानरु उपमेय सम होय अभेद तृतीय
 ॥४४॥ टीका ॥ जाके लाज काम समान होय सो सध्या नायिका
 है। उपमान-उपमेय समान होय सो तीसरो अभेद है ॥४४॥ अथ
 सध्या सम अभेद उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखि लखि पिय हवा
 छवि तिया जब जब दीटि दुरात ॥ तब तब पिय मन बस करिनि
 हवा कंजन छवि छात ॥४५॥ टीका ॥ पीतम का दृगन की छ-
 वि देखि देखि करि कै तिया है सो जब जब दीटि दुरावै तब
 तब पीतम कामन फौं बस करवा वाली दृग कंजन में छवि छा-
 वै है देखि करि कै दीटि दुरावै है यातैं सध्या नायिका है
 दृगन के ज्योर कंजन के समता है यातैं सम अभेद रूपक है ॥
 ४५॥ सध्या भेद ॥ चौपाई ॥ इक आरुढ़ यावना १ बा-
 ला ॥ प्रगल्भ वचन २ द्वितिय ललासा ॥ प्रादुर्भूति अनंगा ३ सोई
 चौथी सुरत बिचित्रा ४ होई ॥४६॥ अथ आरुढ़ यौवना
 परिणाम लक्षणा ॥ दोहा ॥ सु आरुढ़ जुवना कहौ पूरन जो
 वन वास ॥ उपमेयरु उपमान मिलि करि कै किया परिणाम ॥४७॥
 टीका ॥ जो वान पूरन जोवन वान होय सो आरुढ़ यौवना नाय-
 का है। उपमेय-उपमान मिलि करि कै किया करे सो परिणाम अ-
 लंकार है ॥४७॥ अथ आरुढ़ यौवना परिणाम उदाह-
 रन ॥ दोहा ॥ कुच कुंभन तैं ऊं परीत भुज लतिकनि राहिलेन
 दृग कंजन सैं लखि प्रिया मन रंजन करि देन ॥४८॥ टीका ॥

कुच कुंभन सैं उर कों परित करि कै भुज लतिकान सैं गहि लै
 दृग कंजन सैं देखि कै प्रिया है सो जन कों राजी करि दै है य
 हों कुच कुंभन सैं आरुह्य बौवना नायिका है और कुच कुंभ
 भुज लतिकान दृग कंजन सैं परित दो गहि दो देखि दो क्रिया
 करे यों पोरुषात् अलंकार है ॥ १८ ॥ अथ प्रगल्भ व
 चना प्रथम उल्लेख लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रगल्भ वचना
 वचन साध जूते चहु राय ॥ बड़ मानें बड़ सक कों सो उमे
 ख गनाय ॥ १८ ॥ दोहा ॥ जो बड़ वचन साध करि कै डरवै
 सो प्रगल्भ वचना नायिका है सक कों बड़न है सो बड़
 त प्रकार माने सो प्रथम उल्लेख गनायो ॥ १८ ॥ अथ प्रग
 ल्भ वचना प्रथम उल्लेख उदाहरण ॥ दोहा ॥ राज
 स पिय लखि तिय वचन भाषत जूत अभिमान ॥ पिय पिय
 कोकिल लखन सौतिन जाने वान ॥ १९ ॥ दोहा ॥ पीतस कों
 अपराध सहित देखि करि कै तिय कों अभिमान सहित वचन
 भाषत ॥ पीतस ने पियूष जान्या सरसीन ने कोकिल जान्या सौ
 तिन ने वारा जान्या यहाँ अभिमान का वचन भाष वा सैं प्रग
 ल्भ वचन नायिका है और एक वचन कों पीतस ने पियूष जा
 न्या सरसीन ने कोकिल जान्या सौतिन ने वारा जान्या यों उ
 ल्लेख अलंकार है ॥ १९ ॥ अथ प्रादुर्भूत सनेभवा द्विती
 य उल्लेख लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रादुर्भूत सनेभवा परित कास
 कलान ॥ बड़ गुन सों बड़ विधि कहे जूत उल्लेख प्रमान ॥ २० ॥
 दोहा ॥ काल कलान सैं परित होय सो प्रादुर्भूत सनेभवा है
 कलत गुन सों बड़न विधि करि कै कहे सो दूसरा उल्लेख को प्र
 मान है ॥ २० ॥ अथ प्रादुर्भूत सनेभवा द्वितीय उल्ले
 ख उदाहरण ॥ दोहा ॥ काल कलान भरी तिया रीत सैं रति

हरिदाय ॥ छवि में गिरिजा गुन गिरा पालन रसा लखाय ॥ ५२ ॥
 टीका ॥ काम कलान की भरी ऊई तिय है सो रति में रति ह-
 रखावे है. छवि में गिरिजा है. गुन में गिरा है. पालता रसा-
 ला है. यहाँ काम कलान की भरी ऊई है यातें प्रादुर्भात मनो
 भवा नायिका है और एक नायिका कों अनेक गुरा सैं अनेक
 तरह जानी यातें दूसरो उल्लेख है ॥ ५२ ॥ अथ सुरत बिचि-
 त्र सुमन लक्षणा ॥ दोहा ॥ सुरत बिचित्रा नायिका. जो अद्भुत
 रत ठान ॥ सुमन है इक वस्तु लखि सो सुमन को मान ॥ ५३ ॥
 टीका ॥ जो अद्भुत रत ठाने सो सुरत बिचित्रा नायिका है
 एक वस्तु कों देखि करि के सुमन होय सो सुमन अलंकार है
 ५३ अथ सुरत बिचित्रा सुमन उदाहरन ॥ दोहा
 केलि कला अद्भुत करत. जब पिय मन जलसात ॥ तब तबनि
 रति सखीन कों मदन तिया सुधि जात ॥ ५४ ॥ टीका ॥ अ-
 द्भुत केलि कला करतों जब पीतस को मन जलसावे है तब तब
 निरोख करि के सखीन कों मदन तिया की सुधि आवे है. यहाँ
 अद्भुत केलि कला सैं सुरत बिचित्रा नायिका है और नायिका
 कों देखि करि के सखीन कों मदन तिया को स्मरणा भयो यातें
 स्मरणा अलंकार है ॥ ५४ ॥ अथ प्रौढ़ा भुम लक्षणा ॥
 दोहा ॥ प्रौढ़ा पति ही के विषय. केलि कलाप प्रवीन ॥ इक
 कों लखि भुम होय जहँ है भुम भूषण वीन ॥ ५५ ॥ टीका ॥
 पति के विषय केलि कला में प्रवीन होय सो प्रौढ़ा नायिका है
 एक कों देखि के भुम होय तहाँ भुम अलंकार है हे वीन ॥ अ-
 थ प्रौढ़ा भुम उदाहरन ॥ दोहा ॥ जब पिय संग सि-
 य चाँड़ अता. हरषि हिये लपटानि ॥ तब लखि हर्ष मोर
 गन धन दासिनि मन माँनि ॥ ५६ ॥ टीका ॥ जब सोता हेत

पानस के संग अटा पै चढ़ि करि कै. हरिष करि कै हिया सों
 लपटाई. तब देखि करि कै सोरन के गत हर्ष. घन दासिनी
 मन में खानि करि कै. यहाँ हर्षि करि हिया सों लपटायो है
 याँतें प्रीति नायिका है। और सोरन को घन दासिनी को भूम
 भयो याँतें भूम खलंकार है ॥ ५६ ॥ अथ प्रीति भेद ॥ चौ-
 पाई ॥ ताड़तरु राय कामां धौकी है ॥ भावोन्नता रस प्रीति
 प्रतीति ॥ अह रसस्त रत चतुरा ५ जानी ॥ पुनि जानांत नायिका
 ६ जानी ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ है रसस्त रत कोविता चित्र विभू-
 सा जोय ॥ पुनि लब्धो पति नायिका प्रीति सिद्ध नव होय ॥ ५८
 अथ गाढ़ तरु राय संदेह लक्षणा ॥ दोहा ॥ गाढ़-
 तरु राय नायिका पूरन जोवन वारि ॥ इक कों लखि संदेह है
 मंदेहसु निर्यारि ॥ ५९ ॥ टीका ॥ जो पूरन जोवन वारी होय
 जो गाढ़ तरु राय नायिका है. एक कों देखि कै संदेह होय सो
 निश्चय ही संदेह है ॥ ५९ ॥ अथ गाढ़ तरु राय संदेह
 ह उदाहरण ॥ दोहा ॥ बंक लीटि हग सदा भरे कुच नि-
 तंव लखि पान ॥ अलि मानत यह रति रसा उसा गिरा कि
 प्रवीन ॥ ६० ॥ टीका ॥ बाको लीटि सदा के भरे जर हग कु-
 च नितंबन कों पान देखि कै ॥ अलि मानें हैं यह रति है कि
 रसा है कि गिरा है कि उसा है है। प्रवीन. यहाँ कुच नितंब
 पान है. याँतें गाढ़ तरु राय नायिका है. और अलि कर-
 ति रसादिक को निश्चय न भयो. याँतें संदेह लक्षणा है
 ६० ॥ अथ कामांधा शुद्धापत्ति लक्षणा ॥ दोहा
 कामांधा अनि जान वस. पारि पूरन रति भाव ॥ शुद्धापत्ति
 नि अन धरि माँचो साव दुख ॥ ६१ ॥ टीका ॥ काम के
 वस अत्यंत होय पारि पूरन रति भाव सो कामांधा है ॥

और धीरे धीरे के साँचा भाव कों छिपावे सो शुद्धापन्नति अलं-
 कार है ॥६२॥ अथ कामांधा शुद्धापन्नति उदाहरन ॥
 दोहा ॥ नैनन चाके मन सर वैनन सह घर आहि ॥ तजे न पाति
 को छिनक यह डरे गुरुन सों नाहि ॥६२॥ टीका ॥ चाके नेन
 नहीं हैं मेन के सर हैं बचन नहीं है सद के घर हैं यह पाति
 कों छिन भर भी नहीं त्यागो है बड़ा आदमीन सें डरये नहीं-
 यहाँ पाति कों नहीं त्यागो है यातें कामांधा है और नैनन कों
 मेन सर चहराया वैनन कों सद घर चहराया यातें शुद्धापन-
 नति है ॥६२॥ अथ भावोन्नता हेत्वपन्नति लक्ष-
 णा ॥ दोहा ॥ उन्नत भावन ते तिया भावोन्नता बखानि ॥ हेत्व
 अपन्नति जुक्ति सों वस्तु दुराये जानि ॥६३॥ टीका ॥ उन्नत भा-
 वन तें भावोन्नता नायिका बखानो जुक्ति सों वस्तु छिपावे पै हे-
 त्वपन्नति अलंकार जानो ॥६३॥ अथ भावोन्नता हेत्व
 पन्नति उदाहरन ॥ दोहा ॥ अति उन्नत भावन भरी यह
 नहि नरी निदान ॥ सतनुपाति वर्गी रति नहीं रसा जाहि छवि था-
 व ॥६४॥ टीका ॥ अत्यंत उन्नत भावन की भरी है यह निश्चय
 ही नरी नहीं वन सहित पाति दारी है यातें रति नहीं छवि को
 थान रसा है यहाँ उन्नत भावन में भावोन्नता नायिका है और ना-
 यिका कों जुक्ति की रति सें बचाय रसा चहराई यातें हेत्वपन्न-
 ति है ॥६४॥ अथ दर ब्रीड़ा पर यस्तापन्नति लक्षण
 दोहा ॥ जब है चारी लाज तब दर ब्रीड़ा तिय आप ॥ पर यस्ता
 पन्नति धर्म पर को पर सें रोप ॥६५॥ टीका ॥ जब चारी लाज
 होय तब दर ब्रीड़ा नायिका है पैला को धर्म पैला में रोपे सो पर
 यस्तापन्नति अलंकार है ॥ अथ दर ब्रीड़ा पर यस्ताप-
 न्नाति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुले कात अप सुजात हय-

जब तिय बोलत संत ॥ आहि सुधा धरेते बचन नहि न सुधा धर
 चंद ॥ ६६ ॥ टीका ॥ सुरत करता अथ खुल्या नेत्रन सैं जब ति
 य संत बोलै- ने बचन सुधा धरे है- चंद्रमा सुधा धर नहीं है-
 यहाँ अथ खुल्या नेत्रन से दर ब्रोजा नायिका है- और चन्द्रमा
 को सुधा धर यशो छिपाय बचन सैं उहरायो- यतैं परयस्ताप
 न्छति है ॥ ६६ ॥ अथ समस्त रत कोविदा आता पन्ज
 हि लहरा ॥ दोहा ॥ सो समस्त रत कोविदा सकल सुरत प
 र दीन ॥ आतापन्जति आन की करे आति को दीन ॥ ६७ ॥ टी०
 संपूर्ण सुरत में प्रवीन होय सो समस्त रत कोविदा है- और को
 आति को दीन करे सो आतापन्जति अलंकार है ॥ ६७ ॥ अथ
 अथ समस्त रत कोविदा आता पन्जति उदाहरन ॥
 दोहा ॥ नाना विधि निशि सुरत नैं अमित प्रात लखि नाहि ॥ स-
 रिय पेकी कहु आधि है तिय कहि रति अम आहि ॥ ६८ ॥ टी०
 नाना प्रकार सैं रात्रि सैं सुरत नैं ताहीं सबैरे अमित होखि के स-
 री नैं पेकी कहु आधि है तिय नैं कही रति को अम है। यहाँ
 नाना प्रकार की सुरति नैं समस्त रत कोविदा है- और नायिका का
 बचन सैं सरस को अम जातो रह्यो- यतैं आतापन्जति अलंकार
 है ॥ ६८ ॥ अथ आक्रांत नायिका केका पन्जति लहरा-
 रा ॥ दोहा ॥ सु आक्रांत नायक तिया निहि यति कुल बस-
 भाव ॥ केका पन्जति आन के जनि संच छियाव ॥ ६९ ॥ टी०
 जादे पति और कुल बस में होय सो आक्रांत नायिका है और
 का जान्छा सों संच को छिपावे सो केका पन्जति अलंकार है ॥ ६९ ॥
 अथ आक्रांत नायिका केका पन्जति उदाहरण ॥
 दोहा ॥ ननकज मन सोरे नही भूषन बसन बनान ॥ सरि क
 हि पिय की है कथा नहि सरि सरि की बात ॥ ७० ॥ टीका

भूषन वसन बनाता मन कौं तनक भी नहीं सोरै है-सखी नैं कहां
पिय की कथा है- नायका नैं कहां नहां सखी-सखी की बात है य-
हां भूषन वसन बनावा सौं आक्रान्त नायका है और नायका
नैं सखी सैं सौंची बात छिपाई यातैं छेका पन्झति है ॥ ७० ॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पन्झति लक्षणा
दोहा ॥ है समस्त रस कोविदा पिर्याह सकल रस दाय ॥ पद
मिसादि करि कैतवा पन्झति सत्य दुराय ॥ ७१ ॥ टीका ॥ पी-
तम कौं संपूर्ण रस दायक होय सो समस्त रस कोविदा है मिस
पद करि के सत्य कौं दुरावै सो कैतवा पन्झति अलंकार है ॥ ७१ ॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पन्झति उदाहर-
न ॥ दोहा ॥ हास विलास कलान करि प्रेम पास मन खींचि ॥
पीतम कर में कर लियो चित वनि सुख रस सोचि ॥ ७२ ॥

टीका ॥ हास विलास कलान करि के प्रेम पास सैं मन कौं खींचि के पी-
तम कौं कर में कर लियो चित वनि का मिस सौं रस सोचि करि के यहाँ
कलान करि के पीतम कौं बस में कर लियो यातैं समस्त रस कोविदा
है और चित वनि कौं मिस पद करि के रस सोचि वो उदहरायो यातैं कैत-
वा पन्झति अलंकार है अथ चित्र विभ्रमा लक्षणा ॥ दोहा

चित्र विभ्रमा नायिका विभ्रम जासु बिचित्र ॥ तन दुति पिय मन बसकर
निबर्नत विबुध पवित्र ॥ ७३ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ जिहँ रद हासी
मुख करत कुंद जौन्ह शीश मंद ॥ सोहीनि मरनि राधिका सोही लियो छ-
जचंद ॥ ७४ ॥ अथ लब्धापति लक्षण ॥ दोहा ॥ सोलव्या पीत

नायिका प्रौढा भेद वखानि ॥ कानि करे जाकी सदा पात कुल प्रभुतामा
नि ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखि ललचानी बाल कौं लई ल-
ला उर लाय ॥ इक टक चितवत दुहुन मन रह्यो मेद सरमाय ॥

अथ धीरादि भेद ॥ दोहा ॥

मध्या प्रोढा मान सै त्रिविधि होत प्रत्येक ॥ धीरा और २

पुन धीरा धीरा एक ॥ ७५ ॥ अथ उत्प्रेक्षा लक्षणा ॥

दोहा ॥ वस्तु हेतु फल तीन सैं संभावना जब होय ॥

उत्प्रेक्षा ताको कछन कवि गुलाब कवि लोय ॥ ७६

वस्तु हेतु फल इन तीन सैं जब संभावना होय ताको

ता अलंकार कहैं हैं- गुलाब कवि कहैं कवि लोग हैं सो

७६ ॥ चौपाई ॥ वस्तु एक उक्ता सपदा कहि ॥ दूजी अन

उक्ता सपदा लहि ॥ हेतु साँहि सिद्धा सपदा है ॥ द्वि

य असिद्धा सपदा सदा है ॥ ७७ ॥ टीका ॥ वस्तु सैं एक उक्ता

दा कहैं ॥ दूसरी अनुक्ता सपदा लहो अर्थात् उक्ता सपदा वस्तु त्प्रेक्षा

नुक्ता सपदा वस्तु त्प्रेक्षा हेतु के साँहि सिद्धा सपदा है दूसरी सदा अ

द्धा सपदा है- हेतु त्प्रेक्षा दोय प्रकार की सिद्ध होय तो सिद्धा सप

हेतु त्प्रेक्षा असिद्ध होय तो असिद्धा सपदा हेतु त्प्रेक्षा है ॥ ७७

दोहा ॥ फल सिद्धा सपदा सदा असिद्धा सपदा दोय ।

वाचक मनु संकादि विन सम्पोत्प्रेक्षा होय ॥ ७८ ॥ टीका

फल सैं सदा सिद्धा सपदा है- असिद्धा सपदा है ये दोय भेद

वाचक मनु संकादि विना सम्पोत्प्रेक्षा होय है अफल को फल

द्वारा संभावना करे सो सिद्ध होय तो सिद्धा सपदा फलोत्प्रेक्षा अ

सिद्ध होय तो असिद्धा सपदा फलोत्प्रेक्षा है ॥ ७८ ॥ दोहा ॥

जाकी संभावना सो संभाव्य बखानि ॥ जै जै संभावना से

आस्पद पहिचानि ॥ ७९ ॥ टीका ॥ जाकी संभावना होय से

संभाव्य मान बखानों जै संभावना होय सो

ये दोन होय सो उक्ता सपदा वस्तु त्प्रेक्षा संभाव्य मान होय

सपदा नहीं होय सो अनुक्ता सपदा वस्तु त्प्रेक्षा है ॥ ७९ ॥

अथ मध्या धीरा उक्ता सपदा वस्तु त्प्रेक्षा -

लक्षणा ॥ दोहा ॥ मिस प्रगटे कहि व्यंग्य बच मध्या धीरा
 नारि ॥ हे संभाव्यरु आस्पद सु उक्ता स्पदा विचारि ॥ ५० ॥ टीका
 व्यंग्य का बचन कहकारि के रोस कौ प्रगटे सो मध्या धीरा नायि-
 का है- संभाव्य मान और आस्पद होय सो उक्ता स्पदा विचारो ॥
 ५० ॥ अथ मध्या धीरा उक्ता स्पदा वस्तु प्रेक्षा
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ हर्षित कीनी मुहि दिखा लालन लोच
 न लोल ॥ मानजै मंजे मेजीव रंग हैं जुग मीन असोल ॥ ५१ ॥ टीका
 लालन में चंचल नेत्र दिखा करि के मोकों हर्षित करे मानों म-
 जीव का रंग में रेंग्या द्रव्य असोल दो मीन हैं- यहाँ हर्षित श-
 ब्द में दुखित हा या व्यंग्य में कह्यो- याँतें मध्या धीरा नायि
 का है और मोहन वस्तु में मीनन की तर्क है- याँतें वस्तु प्रेक्षा
 है- और हाँव विद्य मान हैं- याँतें उक्ता स्पदा वस्तु प्रेक्षा है ॥ ५१ ॥
 अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तु प्रेक्षा लक्ष-
 णा ॥ दोहा ॥ परुष बचन कहि व्यंग्य विन कोपै मध्या धीर ॥
 जहै नहि पद में आस्पद अनुक्ता स्पदा धीर ॥ ५२ ॥ टीका ॥
 परुष बचन कह करि के व्यंग्य विना कोपै सो मध्या धीरा ना-
 यिका है- जहाँ पद में संभावना को विकारों नहीं होय सो अनु-
 क्ता स्पदा है हे धीर ॥ ५२ ॥ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता
 स्पदा वस्तु प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ अनल भाल म
 नु बिष अघर नैनन साँहि मसाल ॥ जावो जह निशि जागि पगे को
 मुहि करत बिहाल ॥ ५३ ॥ टीका ॥ भाल में अनल है अघर
 में बिष है नैनन के साँहि मसाल है- जहाँ रात में जागि करि के
 पगे तहाँ जावो सोको बिहाल क्यों करते हो- यहाँ जावक अंज-
 न ललाई में अनल विष मसाल को तर्क है याँतें वस्तु प्रेक्षा
 और जावक अंजन ललाई नहीं कहो याँतें अनुक्ता स्पदा वस्तु-

प्रेक्षा है ॥ ५३ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पदा हे
 नू त्प्रेक्षा लक्षणा ॥ दोहा ॥ व्यंग्य अव्यंग्य हि वचन कहि
 रोस प्रकाशे रोय ॥ ॥ सिद्ध अहेतुहि हेतु कत हेतु त्प्रेक्षा होय
 ॥ ५४ ॥ टीका ॥ व्यंग्य अव्यंग्य वचन कहि करि कै रो करि कै रोस
 कों प्रकाशे- सिद्ध प्रकारण कों करण करि सो सिद्धा स्पदा हेतु प्रे
 क्षा होय ॥ ५४ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धा स्पदा
 हेतु त्प्रेक्षा उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय लखि रोय रिसाय ब-
 कि कोने लोचन लाल ॥ तिन की रुचि लखि मनु भये लालन लोच-
 न लाल ॥ ५५ ॥ टीका ॥ पिय कों देखि करि कै रो करि कै रोषक
 रि कै- वकि करि कै लाल नेत्र कथा तिनकी रुचि देखि कै मानों
 लालन के लाल नेत्र भये यहाँ रोवा सों मध्या धीरा धीरा नायि-
 का है- और लालन के लाल नेत्र हो वाको कारण नायिका के लाल
 नेत्र नहीं तिस कों कारण उदाहरा- यातें हेतु त्प्रेक्षा और ला-
 ल हो वो सिद्ध है यातें सिद्धा स्पदा हेतु त्प्रेक्षा है ॥ ५५ ॥ अ-
 थ प्रौढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतु त्प्रेक्षा लक्षणा ॥
 दोहा ॥ कोष प्रकाशे व्यंग्य करि रति ते रहें उदास ॥ होय अ-
 सिद्धत दूसरी हेतु त्प्रेक्षा भास ॥ ५६ ॥ टीका ॥ व्यंग्य करि कै
 कोष कों प्रकाशे रति ते उदास रहे- सो प्रौढा धीरा नायिका है-
 सो असिद्ध होय तो दूसरी हेतु त्प्रेक्षा भासै है ॥ ५६ ॥ अथ-
 प्रौढा धीरा असिद्धा स्पदा हेतु त्प्रेक्षा उदाहरन ॥
 दोहा ॥ पिय लखि सुरति बिस्तारि तिय करि करि रति नैन ॥
 मदमाती यातें मनो बोलत हल बल वन ॥ ५७ ॥ टीका ॥
 पिय कों देखि कै सुरति बिस्तारि करि कै तिय है सो रति नैन
 करि करि कै मद मस्त ऊर्ध्व- यातें मानों हल बल वचन बोले
 है यहाँ मद माती का बहाना सों हल बल वचन बोले है या

तैं प्रीठा धीरा नायिका है और मद मस्त हो चाको कारणा हल
 बल बचन बोलवो नहीं ताको कारणा उहरायो यातैं हेतु त्वेक्षा
 है- मद मस्त हो वो असिद्ध है- यातैं असिद्धा हेतु त्वेक्षा है ॥
अथ प्रीठा अधीरा सिद्धा स्पदा फलो त्वेक्षा लक्ष-
णा ॥ दोहा ॥ तर्जन ताडन आदि कारि व्यंग्य रहित करि को
 प ॥ सिद्ध अफल को फल करि सु फलो त्वेक्षा ओप ॥ ८८ ॥ टी०
 तर्जना ताडना आदि कारि के व्यंग्य रहित कोप करि सो प्रीठा
 अधीरा नायिका है- सिद्ध अफल के नाई फल करि सो फलो
 त्वेक्षा ओप है ॥ ८८ ॥ **अथ प्रीठा अधीरा सिद्धा स्प-**
दा फलो त्वेक्षा उदाहरणा ॥ दोहा ॥ गर्जत आसत डर-
 त नहि धरत न चित्त में चेत ॥ घुसत कुकि कुकि रहत मनु मद-
 राज समता हेत ॥ ८९ ॥ टीका ॥ गर्जे है- चासे है- डरे नहीं है
 चित्त में चेत नहीं धरे है- घुसे है कुकि कुकि रहे है मानों मस्त
 राज की समता के चासे- यहां गर्जादिक में प्रीठा अधीरा नायिका
 है- और गर्जवो चासवो नहीं डरवो चित्त में चेत नहीं धरवो-
 घुसवो- कुकिवो इनको फल मद राज की समता नहीं ताको फ
 ल उहरायो यातैं फलो त्वेक्षा गर्जादिक सिद्ध है यातैं सिद्धा-
 स्पदा फलो त्वेक्षा है अ प्रीठा अधीरा अधीरा असिद्धा स्पदा
 फलो त्वेक्षा लक्षणा ॥ दोहा ॥ ताडनादि करि रति बि-
 रस कोप प्रकासे नारि ॥ जहं असिद्ध है अफल फल सु फलो त्वे-
 क्षा धारि ॥ ९० ॥ टीका ॥ ताडनादि करि के रति से बिरस हो
 करि के नित्य सो है सो कोप को प्रकासे सो प्रीठा धीरा धीरा नायि-
 का है जहं अफल फल असिद्ध होय सो फलो त्वेक्षा धीरा है ॥
अथ प्रीठा अधीरा अधीरा असिद्धा स्पदा फलो त्वेक्षा उदा-
हरण ॥ दोहा ॥ अलग रहो पर सोन पद लखो आपनो हाल

बूढ़न नमना हित ननों रंगे नैन रंग लाल ॥ ८२ ॥ टीका ॥
 अलग रहो पद नाति परसो आपनो हाल देखो- बूढ़न की
 ससना के चारों ननों लाल रंग में नेत्र रंग्यो है ॥ इहो अल-
 रा रहो पद नाति परसो या बचन में सुरत में बिरल रही
 याँतें प्रीति धीर धीर नायिका है ॥ और लाल नेत्र करवा-
 को पाल बूढ़न को सलता नहीं ताको फल बहराय संभाव
 ना करो- याँतें फलोत्प्रेक्षा है ॥ नेत्र रंगवो आसिद्ध है याँतें
 अतिदूर स्थला फलोत्प्रेक्षा है ॥ ८२ ॥ अथ जेष्ठा कनि-
 ष्ठा रूप का ति शयोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ द्वे व्याही
 तिय होय जह जेष्ठ कनिष्ठा युक्ति ॥ निकसे बरग्य अव-
 रग्य में रूप का ति शय उक्ति ॥ ८३ ॥ टीका ॥ जहाँ दोय पर-
 राई ऊई स्त्री होय तहाँ जेष्ठ कनिष्ठा की युक्ति है ॥ उपमान
 में उपनेय निकसे सो रूप का ति शयोक्ति अलंकार है ॥ ८३ ॥
 अथ जेष्ठा कनिष्ठा रूप का ति शयोक्ति उदाहर-
 न ॥ दोहा ॥ कनक लता जुग में कमल असल प्रफुल्लित
 पाय ॥ अली रली इक से करत इक से दीठि दुगय ॥ ८४ ॥ टी-
 दो कनक लतान में निर्मल कमल प्रफुल्लित पा करि के अ-
 ली है सो एक से रली करे है- एक से दीठि दुगय करि के य-
 हाँ दो नायिकान से जेष्ठा कनिष्ठा हैं ॥ और दो कनक ल-
 तान में दो नायिका निकली और अली से नायक निकल्यो
 याँतें रूप का ति शयोक्ति अलंकार है ॥ ८४ ॥ इति स्वकीया
 अथ परकीया लक्षणा ॥ दोहा ॥ परकीया पर पुरुष से
 गुप्त करे जो प्रेम ॥ तासु परोदा कन्यका द्वे विधि करि के नेम ॥ ८५ ॥
 अथ परोदा सापन्हुवा नि सयोक्ति लक्षणा ॥ दो-
 उदा व्याही और की करे और से प्रीति ॥ होय अपन्हुव सहित यह

सापान्हव रीति ॥ ८६ ॥ टीका ॥ और को ब्याही और सों
कैरे सो ऊदा नायिका है- यह अपन्हव सहित होय सो
की रीति है ॥ ८६ ॥ अथ परोहा ।

उदाहरन ॥ दोहा ॥ सास जिवानी ननद क्यों तर
बिना विचार ॥ सो तनु में नहीं सो भुसर रहत तमाल मकार ॥

टीका ॥ सास-जिवानी-ननद बिना विचार क्यों तरजै है ॥ मेरा
में भुसर नहीं तमाल में रहे है पर पुरुष में रत है- यातें पर-
है- और भवरा सों मन को बोध भयो तमाल में कृष्णकों
भयो यह रूप कातिशयोक्ति तनु में नहीं तमाल है- यह
यातें सापन्हवा तिसयोक्ति अलंकार है ॥ ८७ ॥ अ-

अनुदा भेद का ति शयोक्ति । लक्षणा ॥ दोहा ॥

अन ब्याही पर पुरुष सों- रमें अनुदा जुति ॥ दाही कों औरै क-
हैं- भेद कातिशयोक्ति ॥ ८८ ॥ अथ अनुदा भेद काति

उदाहरन ॥ दोहा ॥ पितु वस तन मन कान

क्यों पावे इक थान ॥ कर्ता कैरे नोढ़े सके- है विधि की विधि

॥ ८८ ॥ टीका ॥ तन है सो पिता के बस है- मन है सो

के वस है ॥ एक स्थान कैसे पावें- कर्ता कैरे नोढ़े सके है

की विधि और है- यहाँ बिना ब्याही कृष्ण सों रत है ॥

कों पति चाहती है- यातें अनुदा नायिका है ॥ विधिकी

और ही है यह भेद कातिसयोक्ति है ॥ ८९ ॥ अथ पर

भेद ॥ दोहा ॥ गुप्ता और विदग्ध २ पुनि- लक्षिता

कुलटा ४ नि ॥ अनुसयान ५ मुदिता ६ दिये- पर कीया भिद

॥ ९० ॥ अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधातिशयो-

लक्षणा ॥ दोहा ॥ भूत सुरत दुर वै जु निव- सो गुप्ता

॥ कैरे जु जोग अजोग कों संबं धातिशयोक्ति ॥ ९० ॥

टीका ॥ जो ऊई सुरत के ताई छिपावै सो पहिली गुप्ता कहौ
 है ॥ जो अजोग कौं जोग करै सो संबंधातिशयोक्ति अलंकार है
अथ भूत सुरत गुप्ता संबंधातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ शशितैं ऊँचे गिरि शिखर-चढी पुष्प की चाह
 उतरत बिचले तन घसन-कटक लगे अथाह ॥ १०२ ॥ **टीका ॥**
 चन्द्रमा सैं ऊँचे पर्वत की शिखर के ऊपर पुष्प की चाह सैं चढी
 उतरता शरीर का कपड़ा बिचलया घणा का चाल गया- यहाँ भू
 त सुरत चिन्ह छिपाये यातैं भूत सुरत गुप्ता नायिका है ॥ गिरि
 शिखर अजोग कौं चन्द्रमा के जोग्य करी- यातैं संबंधातिश-
 योक्ति है ॥ १०२ ॥ **अथ वर्तमान सुरत गुप्ता यो संबं**
धातिशयोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ वर्तमान रत जोयनै
 दूजी गुप्ता जोग ॥ असंबंधातिशय उकाति यो गाँह करै अयोग ॥
 १०३ ॥ **टीका ॥** वर्तमान सुरत का छिपावा सैं दूसरी गुप्ता कौ
 जोग है ॥ योग कौं अयोग करै सो असंबंधातिशयोक्ति है ॥ १०३ ॥
अथ वर्तमान सुरत गुप्ता असंबंधातिसयोक्ति
उदाहरन ॥ दोहा ॥ सोख सुहि सुछित परत माहि इन-
 राखी भरि घाय ॥ पर उपकारी दीन हित नाहि इन सम सुरनाय ॥
 १०४ ॥ **टीका ॥** हे रसो मोकैं अछिन्न परत इननै वाय भ-
 रि कै राखी ॥ पैला का उपकार करवा वाला दीनन का हितकारी
 इन सम सुरनाय नहीं- यहाँ वाय भरि वारैं वर्तमान सुरत
 गुप्ता है ॥ और इंद्र जोग है ताकौं अजोग कस्यो यातैं असंबंधा-
 तिसयोक्ति अलंकार है ॥ १०४ ॥ **अथ भविष्यति सुरत**
गुप्ता अवतमानि शयोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ सुरत
 भविष्यति गोप तैं तीजी गुप्ता गाय ॥ अकमानिशय उक्ति जहं
 हेनु कार्य को साथ ॥ १०५ ॥ **टीका ॥** आगे हो वा वाली सुरत

के ताँई छिपावे सो तीसरी गुप्ता की गाथा है ॥ जहाँ कारजा कार
ज को साथ होय सो अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ २०५ ॥

अथ भविष्यति सुरत गुप्ता २ कसाति शयोक्ति

उदाहरन ॥ दोहा ॥ फूलन हित बन सघन में जहाँ आ-
ली आ ॥ पंग धरत हित नव सनवर कीट है कंटक साज ॥

२०६ ॥ टीका ॥ फूलन के वास्ते हे आली आज सघन बन में
जाऊँगी ॥ पंग धरती ही तन का सुन्दर कपड़ा कंटकन के साज
में कटैगा- यहाँ होवा वाला चिन्ह कह्यो- याने भविष्यति सु-
रत गुप्ता है ॥ और पंग धरती ही कपड़ा कटैगा इसमें कारन
कारज संग है- याने अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ २०६ ॥

अथ बचन विदग्धा पलाति शयोक्ति लक्ष

गा ॥ दोहा ॥ बचन विदग्धा चालुरी करे बचन में साज ॥
हे चपलातिशयोक्ति जहं हेतु जानने काज ॥ २०७ ॥ टीका ॥
बचन में चतुराई करे सो बचन विदग्धा नायिका है ॥ जहाँ

ही में कारज होवे सो चपलातिशयोक्ति अलंकार

॥ २० ॥ अथ बचन विदग्धा चपल ॥ शयो

उदाहरन ॥ दोहा ॥ हरि लखि सखि से कहि अवधि

जमुना न्हान ॥ प्यारी बचन पियूष से सुनतहि हर्ष कान

२०८ ॥ टीका ॥ हरि कों देखि करि के सखी से कही जमुना न्हान

कों अब ही जाऊँगी प्यारी का पियूष सा बचन सुनता ही

कान हर्ष यहो नायिका कों सुनाकरि के सखी से कही याने ब

चन विदग्धा नायिका है और स्नान हित जायो कारणा है नाका

सुन चाँसे ही कृष्णा को हर्षिवो कारज भयो याने चपलातिश

योक्ति अलंकार है ॥ २०८ ॥ दोहा ॥ बचन विदग्धा होय

देशी में अनुराग ॥ स्वयं दूतिका पथिक से कही बचन करि ला

२०८॥ अथ क्रिया विदग्धा अत्यन्तातिशयोक्ति
लक्षणा ॥ दोहा ॥ क्रिया विदग्धा चतुरी जबै क्रिया में सा-
ज ॥ अत्यन्तातिशयोक्ति है पूर्व हेतु सैं काज ॥ ११० ॥ टीका ॥

जब क्रिया में चतुराई करे सो क्रिया विदग्धा नायिका है ॥ हे-
तु सैं पहिले काज होय सो अत्यन्तातिशयोक्ति अलंकार है ॥ ११० ॥

अथ क्रिया विदग्धा अत्यन्तातिशयोक्ति उ-
दाहरन ॥ दोहा ॥ कंज कली कर हाथ उर धर्यो तिया हरि

हरि ॥ भये प्रफुलित प्रथम ही कंज निहार्यो फेरि ॥ १११ ॥ टीका ॥

कंज की कली कर के हरि कों देखि कर के तिया ने हृदय में हा-
थ धर्यो रूप ॥ पहिले ही प्रफुलित भया कंज फेरि देख्यो-इ-

हो कंज की कली कर के रात कों भिलवो जनायो- हृदय में हा-
थ धरि के यह जनायो तुम मेरा हृदय में बसो हो ॥ याते क्रि-

या विदग्धा नायिका है और पहिले प्रफुलित भया कंज फेरि
निहार्यो कारज पहिले है कारणा पाछे है ॥ याते अत्यन्तातिश-

योक्ति अलंकार है ॥ १११ ॥ अथ लक्षिता तुल्य योगि-
ता लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रीति लखे ते लक्षिता वरार्यन को उ-

रक धर्म ॥ होय अवरार्यन को प्रथम तुल्य योगिता मर्म ॥ ११२ ॥

टीका ॥ प्रीति जान्या सों लक्षिता नायिका है ॥ उपमेय उप-
मेय को रक धर्म होय अथवा उपमान उपमान को रक धर्म

होय सो पहिली तुल्य योगिता को मर्म है ॥ ११२ ॥ अथ ल-
क्षिता प्रथम तुल्य योगिता उदाहरन ॥ दोहा

नेन तेन विफलान हैं आली तेरे आज ॥ क्यों मुकरत मुख
खि लगत शशि कंजन मन लाज ॥ ११३ ॥ टीका ॥ हे आ-

ली आज तेरे नेन-वेन विफलाने हैं ॥ क्यों मुकरे है मुख
कों देखि के चन्द्रमा-कमल का मन में लाज लगे है ॥ यहाँ

सखी में रति के बिन्ह जानि लिये. याँते लीहता है ॥ और नैन. वैन
 उपमेय हैं तिनको विकलावो एक धर्म है. याँते प्रथम तुल्य योगि-
 ता है और चन्द्रमा कमल उपमान को लाजवो एक धर्म है याँते
 प्रथम तुल्य योगिता है ॥ ११३ ॥ अथ कुलटा द्वितीय तु-
 ल्य योगिता लक्षणा ॥ दोहा ॥ बज्रत नरन सों जोरमें
 सो कुलटानियमाव ॥ हति तुल्य हिन अहित में तुल्य योगिता आ-
 न ॥ ११४ ॥ टीका ॥ जो बज्रत पुरुषन सों रौ सो कुलटा नित्य-
 को प्रमान है ॥ हिन अहित में समान हति होय सो दूसरी तुल्य
 योगिता है ॥ ११४ ॥ अथ कुलटा द्वितीय तुल्य योगि-
 ता उदाहरन ॥ दोहा ॥ ऊँच नीचा हत अहित में करे न तन
 क बिचार ॥ घालक पालक नख में करे सुरत उपचार ॥ ११५ ॥
 टीका ॥ ऊँच नीच में और हित अहित में तनक भी बिचारन
 हीं करे मारवा वाला. पालवा वाला आदमीन में सुरत को जतन
 करे है ॥ यहाँ बरा पुरुषन सों सुरत चाहै है ॥ याँते कुलटा काय
 का है ॥ और मारवा. पालवा बालान में रति करे वो समान लक्षणा
 हार है. याँते द्वितीय तुल्य योगिता है ॥ ११५ ॥ अथ प्रथ-
 म अनुसयाना तृतीय तुल्य योगिता लक्षणा
 दोहा ॥ बतमान संकेत को विगडन दोरख डराय ॥ कम पुन
 अनि गुनन संग बर्नन तीतय कहाय ॥ ११६ ॥ टीका ॥ बत-
 मान मकान के नाई विगडनो दोरख डरये सो पहिली अनुसयाना
 नाथिका है ॥ कमगुरी को अत्यंत गुरी के संग बर्नन हो-
 य सो तीसरी तुल्य योगिता है ॥ ११६ ॥ अथ प्रथम अनु-
 सयाना तृतीय तुल्य योगिता उदाहरन ॥ दोहा
 बुदावन अरु चंद्राय नंदन सम सर सात ॥ सब जनु सम है प
 अली सुहि जनु राज न भात ॥ ११७ ॥ टीका ॥ यहाँ वसंत में

पतकार हो जायों संकेत विगस्यो यातें प्रथम अनुसयाना है
 और चैत्र शुक्ल नंदन बड़े हैं ॥ तिनकी समान वृंदावन को बने
 न है ॥ यातें तृतीय तुल्य योगिता है । अथ द्वितीय अनु-
 सयाना दीपक लक्षणा ॥ दोहा ॥ होनहार संकेतको
 को सोचै साजि अभाव ॥ दीपक वरार्य अवरार्य की धर्म रक्ता-
 ना पाव ॥ ११८ ॥ टीका ॥ होवा वाला संकेत को अभाव सा-
 नि करि के सोचै सो दूसरी अनुसयाना है ॥ वरार्य अवरार्य का ध-
 र्म की रक्ता होय सो दीपक अलंकार है ॥ ११८ ॥ अथ-
 द्वितीयानुसयाना दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ स-
 रसी तिहार सासरी है वन ताल अपार ॥ तह मराल उत्तम पुरुष
 क्रीड़ा करत अपार ॥ ११९ ॥ टीका ॥ यहाँ नायिका ने आ-
 गला संकेत को सोच कस्यो ताकीं सरसी नें समुझाई यातें दूस-
 री अनुसयाना है ॥ और मराल उद्यमान उत्तम पुरुष उपमेय क्री-
 डा कर वो रक्त धर्म है यातें दीपक है ॥ ११९ ॥ अथ तृती-
 या अनुसयाना प्रथम दीपका वृत्ति लक्षणा ॥ दो-
 हा ॥ पिय सहेट सो सैन गई यौग नित्यारो धृति ॥ पद को
 आवति होय सो प्रथम दीपका वृत्ति ॥ १२० ॥ टीका ॥ पीत-
 म सहेट में गयो में नहीं गई यौं गाँव करि के धीरज त्यागै सो
 तीसरी अनुसयाना नायिका है ॥ पद की आवृत्ति होय सो पहि-
 ली दीपका वृत्ति है ॥ १२० ॥ अथ तृतीयानुसयाना-
 प्रथम दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ हरी छ-
 री कर माल उर धरि आवत नंदलाल ॥ सरसाने लखि विकल भ-
 इ सरसाने लौ बाल ॥ १२१ ॥ टीका ॥ कर में हरी छरी हृदा
 में माला धरि करि के नंदलाल को सरसाया ऊँचा आवता दे-
 ख के लाल्या तीर की तरह विकल भई ॥ यहाँ नायिक को

छेद में सों आयो देखि कै दुख पाई यातें तीसरी अनुसयानां है
 और सरसाने सरसाने पद एक है अर्थ न्यारो न्यारो है यातें प्र
 थम दीपका वृत्ति है ॥ १२१ ॥ अथ मुदिता द्वितीय दी
 पका वृत्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ लखि चित चाही होत
 मन हर्ष मुदिता मानि ॥ द्वितीय दीपका वृत्ति है अर्थ वृत्ति पि
 छानि ॥ १२२ ॥ टीका ॥ चित की चाही होती देखि करि कै
 मन में हर्ष सो मुदिता नायिका मानों ॥ अर्थ की आवृत्ति हो
 य सो दूसरी दीपका वृत्ति पिछानौ ॥ १२२ ॥ अथ मुदिता
 द्वितीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ रहि है
 इकली घर बधु जे हैं सगरे प्रात ॥ बिकसे तिय के दग सुनत
 ले सगरे गान ॥ १२३ ॥ वधु है सो स्कली घर रहै गो सेवरे सब जाविगा सुनतों
 ही तिय के नेत्र बिकसे सब गात फूल्यो यहां एकली रहबासों प्रसन्न भई
 यातें मुदिता नायिका है और बिकस्यो फूलवो पद न्यारा रहै अर्थ एक है
 ॥ १२३ ॥ अथ गानिका तृतीय दीपका वृत्ति लक्षण
 दोहा ॥ धन दे जासों रति करे सो गानिका परिमान ॥ आवृ
 त्ति जु पद अर्थ की तीजी जानि सुजान ॥ १२४ ॥ टीका ॥
 धन दे जासों रति करे सो गानिका को परिमान है ॥ पद अर्थ की
 आवृत्ति होय सो तीसरी दीपका वृत्ति जानों ॥ १२४ ॥ अथ
 गानिक तृतीय दीपका वृत्ति उदाहरन ॥ दोहा
 धन दाय की बात सुनि अवन तप्त हो जात ॥ घर आवत ल
 खि नयन मन तृप्त होत हर्षति ॥ १२५ ॥ टीका ॥ धन दे वा
 वाला की बात सुनि कै अवन तप्त हो जावे हैं घर आवता देखि
 कै नेत्र मन हर्षावैं है यहाँ धन दायक से हर्षावातें गानिका है
 और तृप्त तृप्त पदवी एक है ॥ अर्थ वी एक है यातें तीसरी दीप
 का वृत्ति है ॥ १२५ ॥ अथ अन्य नायिका वर्णित ॥

अथ तीसरी दीपका वृत्ति

होना ॥ सुभारिहिर हीन जे लखिया परकीयार ॥ सा-
 न्य में दोन ये दोन नायिका चाह ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥
 नन्य संभोग दुःखिता जानौ ॥ पुनि वक्रोक्ति बखिता जानौ ॥
 वृद्ध्यों राव वती उर जानौ ॥ तीन नायिका ये सब जानौ ॥
 १२७ ॥ अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति वस्तुप-
 सा लक्षणा ॥ दोहा ॥ बिन वायक सौ आन तिय रसी मा-
 न मन माहि ॥ अन्य सुरत दुःखिता कही दुःखित होय लखि-
 माहि ॥ १२८ ॥ टीका ॥ अपना नायिक सौ और स्त्री सौ रसी
 मान करि के मन में दुःखित होय सो अन्य सुरत दुःखिता ना-
 यिका है ॥ १२८ ॥ दोहा ॥ उपमान उपमेय जुग वाक्य धर्म
 एक होय ॥ वस्तु प्रति वस्तुपसा भिन्न भिन्न पद जोय ॥ १२९ ॥
 टीका ॥ उपमान उपमेय दोनों वाक्यन को एक धर्म होय ताको
 प्रति वस्तुपसा वने है न्यारे न्यारे पद होखि कै ॥ १२९ ॥
 अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति वस्तुपसा उदा-
 हरण ॥ दोहा ॥ विचले भूषन वसन की सोति नोहि सुहा-
 ॥ अधिक लीन की दारि वर कैसै ह नहिं भात ॥ १३० ॥ टीका
 वस्तुपसा जसा भूषन वसन की सोति नोकों नहीं सुहावे ॥ ध-
 ॥ तीन की सुंदर वर कैसै भी नहीं भावे यहाँ सोति के सुरत
 कह देख्यो यातें अन्य संभोग दुःखिता नायिका है और पु-
 रीहि सें उपमेय वाक्य है उत्तराह में उपमान वाक्य है ॥ तिन-
 में न सुहात नहीं भात धर्म एक है पद न्यारे न्यारे हैं यातें
 प्रति वस्तुपसा है ॥ १३० ॥ अन्यत्र ॥ नीति मंजरी ॥
 दोहा ॥ अस्तुति कीने इष्टजन रीकै कवजन कोय ॥ मौस-
 म सति वर मनहि लोह सलाका होय ॥ १३१ ॥ आहूति हो-
 य वर मनहि होय वे धर्य ॥ होयाहि प्रति वस्तुपसा ह-

दृष्टांत तुवै धर्म्य ॥१३२॥ अथ भूषणा चंद्रिकावै
धर्म्य प्रति वस्त्रूपमा उदाहरन ॥ दोहा ॥ बुधनी
जानत बुधन को परम परिजम ताहि ॥ प्रवल प्रसब की पी
र को बंध्या जाने नाहि ॥१३३॥ टीका ॥ बुधन का घरा
परिजम को पह्यो ज्यो पंडित ही जाने है ॥ प्रवल जो सं-
तान हो वकी पीड़ा है ताको बाँक स्त्री नहीं जाने ॥ यहाँ
पूर्वार्द्ध में जाने उत्तरार्द्ध में नहीं जाने यह न्याय धर्म है यातें वै ध-

र्म प्रति वस्त्रूपमा है ॥१३३॥ दोहा ॥ गुरा वंश में व ह
मनुज- पुजे सुरगति पाय ॥ तुंबी बिने जग मान नाहि- बीरा
दंड लहाय ॥१३४॥ टीका ॥ गुरा वान वंश में भी ज्यो
आदमी संगति पाकर कै पुजे ॥ तुंबान बिना जगत में
बीरा को दंड आदर नहीं पावे ॥ यहाँ पुजे और मान-
नहीं पावे यह विरुद्ध धर्म है यातें वै धर्म्य प्रति वस्त्रूप
मा है ॥१३४॥ अथ गर्विता भेद ॥ दोहा ॥ प्रेम-
गर्विता एक है रूप गर्विता द्वय ॥ निजरूप रूपति रूप को
गर्व करे तैं होय ॥१३५॥ अष्ट विधि है गुन गर्विता निज पति
विद्या बुद्धि ॥ पति सूरत्य उदारता जानि लेत मन शुद्धि ॥१३६॥
होय भाँति कुल गर्विता निजकुल पिय कुल गर्व ॥ करे कहै वक्तो
क्ति करि हैं ग्यारह भिद सब ॥१३७॥ अथ प्रेम गर्विता दृ-
ष्टांत लक्षणा ॥ दोहा ॥ गर्व करे पति प्रेम को प्रेम गर्वि-
ता गाय ॥ होय बिंब प्रति बिंबते दृष्टांत सु दरसाय ॥१३८॥
टीका ॥ पति का प्रेम को गर्व करे सो प्रेम गर्विता गावे ॥ बिंब
प्रति बिंब करि कै होय सो दृष्टांत दरसावे है ॥१३८॥ अथ
प्रेम गर्विता दृष्टांत उदाहरन ॥ दोहा ॥ सजनी पि-

च को प्रीति जाते लोहिं निरंतर भात ॥ जैसे सरद मयंक की मन
 को जोन्ह सुहात ॥ १३८ ॥ टीका ॥ हे सजनी पिय की अत्यंत
 प्रीति मोकों निरंतर भावै है ॥ जैसे सरद का चंद्रमा की चाँदनी मन
 को सुहावै है- यहाँ पिय की प्रीति वज्रत भावै है याते प्रेम ग
 विता नायिका है- और नायक की प्रीति बिंब है चंद्रमा की चाँ
 दनी प्रीति बिंब है ॥ याते दृष्टांत अलंकार है ॥ १३८ ॥ नीति चं
 द ॥ दोहा ॥ सब जग के व्यवहार की नीति बिना थित नाहि
 भोजन बिना प्राणीन की ज्यों तनु थित नाहि जाहि ॥ १३९ ॥
 टीका ॥ संपूर्ण संसार का व्यवहार की नीति बिना थित न
 हो ॥ जैसे भोजन बिना प्राणीन का तनु की थिति नहीं ॥ यहाँ
 नीति और व्यवहार की थिति बिंब है भोजन और प्राणीन के त
 नु थिति प्रति बिंब है ॥ याते दृष्टांत अलंकार है ॥ १४० ॥ अ
 य भूपरा चंद्रिका वै धर्म्य दृष्टांत उदाहरन ॥
 दोहा ॥ गर्व स मुख मन करत तुव अरि मन सकत नसात ॥ ज
 व तौ रवि को उदय नाहि तब तौ तम चहरात ॥ १४१ ॥ टीका
 तेरे गर्व के सामने मन करता ही संपूर्ण बैरो नास को प्राप्त होवै
 है ॥ जब ताई सूरज को उदय नहीं है तब ताई तम चहरावै है
 यहाँ नशावो चहरावो विरुद्ध धर्म है याते वै धर्म्य दृष्टांत है ॥
 १४१ ॥ अय निजरूप गर्विता निदर्शना लक्षणा ॥
 दोहा ॥ गर्व करै जब रूप को रूप गर्विता सोय ॥ जुग वाक्यन
 की शक्तता निदर्शना सो होय ॥ १४२ ॥ टीका ॥ जब रूप को ग
 र्व करै सो रूप गर्विता नायिका है दोन वाक्यन की शक्तता होय
 सो निदर्शना अलंकार है ॥ १४२ ॥ अय निजरूप गर्विता
 निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥ जो अधुराई सुभगता राज
 त को मुख साहि ॥ बैरो अनी भगवत के

१४३॥ टीका ॥ जो मधुरता और सुभगता मीर सुरव में राजे है
जरी सखी चंद्रमा में यही निर्मलता है ॥ यहाँ सुदरता को अ-
भिमान है ॥ यातें रूप गर्विता नायिका है और सुभगता मधु-
राई है सोई चंद्रमा में निर्मलता है यह दोन वाक्यन की रक्ता
है यातें निदर्शना अलंकार है ॥ १४३॥ अथ द्वितीय नि-

दर्शना लक्षणा ॥ दोहा ॥ वृत्ति पदार्थ की जेहां और वै-
र वहराव ॥ यह निदर्शना दूसरी काबि गुलाब मन भाव ॥

१४४॥ टीका ॥ जहाँ पदार्थ की वृत्ति और वैर वहरावे यह दु-
सरी निदर्शना गुलाब काबि का मन में भाव है अर्थात् पदार्थ वृ-
त्ति नाश एक वस्तु की लीला गुन धर्म की है ॥ १४४॥ अथ पिय

रूप गर्विता द्वितीय निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥

पिय चष खंजन चरित गहि मन रंजन करि देत ॥ बचन पिय
बिलास लहि काहि सोल गहि लेत ॥ १४५॥ टीका ॥ पीतम-

का चष है सो खंजन का चरित गह करि कै मन कों राजी करि
देहें ॥ पिय का बचन अमृत का बिलास कों प्राप्त हो करि कै

कौन कों सोल नही ले ॥ यहाँ पिय का रूप को गर्वि है ॥ यातें
पिय रूप गर्विता नायिका है ॥ और खंजन की लीला नैनन

ने लीनी अमृत का गुन बैनन ने लीना यातें दूसरी निदर्श-
ना है ॥ १४५॥ अथ तृतीय निदर्शना लक्षणा ॥ दो-

हा ॥ किया अस तसत करि करे औरन कों उपदेश ॥ तीजो-
द्विविधि निदर्शना बर्नत सकल बुधेश ॥ १४६॥ टीका ॥

असत सत किया करि कै औरन कों उपदेश करे सो तीसरी
दो प्रकार की निदर्शना संपूर्ण बुधन के ईश बर्नते हैं ॥ १४६॥

अथ भूषण चंद्रिका नायिका रहित असहर्ष
निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥ राज विरोधी नशत है

यों जग कों दरसात ॥ चंद्र उदय में तम निकर दिन दिन दीप्त
 जात ॥ १४४ ॥ टीका ॥ राज का विरोधी नरै है ॥ ऐसे जगत कों
 दरसातो ज्यो चंद्रमा का उदय में तम को समूह दिन दिन में
 छांजतो जाय है ॥ यहाँ तम कीजियो असत किरिया है ॥ यों ज-
 सूर्य निदर्शना है ॥ १४५ ॥ अथ निज गुन गर्वित नायिका
 दृष्टि निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥ निज गुन बस जो
 पिचाहि में सौतिन शिक्षा देत ॥ सब ही नित्य वह करन हित सोखे
 गुन चित चेत ॥ १४५ ॥ टीका ॥ अपना गुन सैं में पीतल कों द-
 स दार के सौतिन कों शिक्षा द्यो है ॥ सब ही पीतल का बस कर
 वाले वास्ते नित्य का चेत सैं गुन सोखे ॥ यहाँ गुन सों में पीतल
 कों बस करों हैं ॥ ऐसे कह वारें निज गुन गर्वित नायिका हैं
 और गुन जो सत अर्थ तारों सौतिन कों शिक्षा दीनी ॥ यों स-
 दृष्टि निदर्शना अलंकार है ॥ १४५ ॥ अथ मान बली व्यति-
 रेक लक्षणा ॥ दोहा ॥ अपर निया के दरस तें नाम कहे तें जा-
 य ॥ संगमादि करि मान सैं मानवती निया होय ॥ १४६ ॥ टीका
 और निया के दृष्टि ते नाम कहे तें निया संगमादि करि के मा-
 न सैं मानवती नायिका होय है ॥ १४६ ॥ दोहा ॥ उपमान स
 उपमेय सैं वै लक्षणा व्यतिरेक ॥ अधिक न्यून सम सावकार
 ताको विविध विवेक ॥ १४७ ॥ टीका ॥ उपमान उपमेय सैं
 विशेषदा होय सो व्यतिरेक अलंकार है ॥ अधिक न्यून सम
 सावकार के ताको तीन प्रकार को ज्ञान है ॥ १४७ ॥ अथ ल-
 क्षणा लक्षणी अधिक व्यतिरेक उदाहरन ॥ दोहा ॥
 लोख निज निजतो रिस भरी चितवै चंचल भाय ॥ तब खेन
 न भे हा ॥ तें लाली अति छबि छाव ॥ १४८ ॥ टीका ॥ निज
 की दानवी दोख है रिस की भरी चंचल भाय सैं चितवै ॥

तब खंजन से दृगन में लाली अत्यंत छबि सैं छावै है
 यहाँ पिय की बीनती तैं रिस की भरी छई जाँके है
 याते स्वकीया सानिनी है ॥ और नेत्र उपमेय में लाली
 सैं घणी छबि छाई याते अधिक व्यतिरेक है ॥ १४८ ॥
 अथ परकीया सानिनी न्यून व्यतिरेक उदाहरन
 दोहा ॥ सापराध लखि पियाहि तिय जब दृग दै न
 वाय ॥ तब खंजन से चखन में चंचलता न रहाय ॥ १४९ ॥
 टीका ॥ तिय है सो पिय कों अपराध सहित देखि के
 जब दृगन कों नवा देहै तब खंजन से नेत्रन में चंच-
 लता नहीं रहे ॥ यहाँ पीतम कों अपराध सहित दे-
 खि के दृगन कों नवावै है ॥ याते परकीया सानिनी है
 और नेत्रन में चंचलता नहीं यह न्यूनता है याते न्यून
 व्यतिरेक है ॥ १४९ ॥ अथ गानिका सानिनी स-
 म व्यतिरेक उदाहरन ॥ दोहा ॥ सागस लखि धन
 दानि कों मोंन गहै मन सारि ॥ तब शशि सो मुख बा-
 ल को होय श्यामता धारि ॥ १५० ॥ टीका ॥ धन दानी
 कों अपराध सहित देखि के मन कों सारि के मोंन कों ग-
 है ॥ तब चंद्रमा शरीको बाल को मुख श्यामता धारि
 के होय यहाँ धन दानी कों देखि के मोंन गहै है याते
 गानिका सानिनी ॥ और शशि के मुख के समता है ॥
 याते सम व्यतिरेक अलंकार है ॥ १५० ॥ अथ द्वाद-
 श नायिका वर्नना ॥ दोहा ॥ प्रोषित पातिका खंडि-
 ता कलहां तरिता जानि ॥ विप्र लब्ध उत्कंचिता वासक स-
 ज्जा सानि ॥ १५१ ॥ रुखाधीन पतिका अपर अभिसारिका
 निहारि ॥ नवम प्रवत्स्य त्रेयसी कही कविन निधारि ॥

१५२॥ चोपाई ॥ द्वाव आगमिष्यत पतिका लहि ॥
 मकादश आगत पतिका कहि ॥ पति स्वाधीना द्वादश
 नासा ॥ में बनी लखि गुंथ ललामा ॥ १५३ ॥ अथ प्रो
 षित पतिका लक्षणा ॥ दोहा ॥ गये प्रीय परदेश
 मे विरह विकल जो होय ॥ सो है प्रोषित भर्तिका द-
 शों दशा जुन जोय ॥ १५४ ॥ दशा दशा नास ॥ दो०
 अधिलापरु चिंता स्मरन गुन कथन रु उद्देग ॥ जड़ता न्या
 धि प्रलाप उन्माद सरन जुत बेग ॥ १५५ ॥ अथ मुग्धा
 प्रोषित पतिका लक्षणा ॥ दोहा ॥ हयों पंचकमुख
 दि को पूरव लक्षणा धारि ॥ बर वरानि है साथ करि सो
 सहोक्ति निर्धारि ॥ १५६ ॥ टीका ॥ यहां मुग्धा मध्या
 प्रोता परकीया सात्वान्या को पहिलो लक्षणा धारो ॥ सा
 य शब्द करि कै सुन्दर बर्नन होय सो सहोक्ति निर्धारो
 १५६ ॥ अथ प्रोषित पतिका सहोक्ति उदाहरन
 दोहा ॥ कहु दुवराई लखि परी पिय वियोग को पीर
 दुवराई संग सेनता छाई सकल प्रीर ॥ १५७ ॥ टीका
 थोरी सी दुवराई जानि परी पीतम का वियोग को पीडा
 में दुवराई के साथ सेनता सम्पूर्ण प्रीर में छाई ॥ इ
 हों थोड़ी दुवराई में मुग्धा प्रोषित पतिका है ॥ और
 दुवराई के साथ सेनता बनी चावें सहोक्ति है ॥ १५७ ॥
 अथ विनोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ सो विनोक्ति प्र
 स्तुत जहाँ होय कहुक विन हीन ॥ द्वितीय विनोक्ति
 कहु बिना पावै सोम नवीन ॥ १५८ ॥ टीका ॥ जहाँ
 प्रस्तुत कहु बिना हीन होय सो विनोक्ति है कहु बि-
 ना नवीन सोमा पावै सो दूसरी विनोक्ति है ॥ १५८ ॥

अथ मध्या प्रोषित पतिका प्रथम विनोक्ति
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ बिरहा नल कल जर निमिय शरीर
 कि प्रवान ॥ तउ जानी अलीन नै बिन लाली छवि छीन ॥
 १५८ ॥ टीका ॥ बिरहा नल की कलकी जरनि प्रवान नै जे
 व में रोके राखी ॥ तौ भी सखीन नने लाली बिन छीन छवि
 जानी ॥ यहाँ बिरह की रू नायिका नै रोकी सखीन नै जानी
 याते मध्या प्रोषित पतिका नायिका हे और ललाई बिन
 छीन भई याते पहिली विनोक्ति हे ॥ १५८ ॥ अथ

प्रोषित पतिका द्वितीय विनोक्ति उदाहरन
 ॥ सब तनु लाली दुरि गई जरि बिरहानल ताप ॥ त-
 मने मोहत अलीन को पीरी प्रभा अमाप ॥ १६० ॥ टीका ॥
 तन में लाली छिपि गई बिरहानल की ताप से जी
 क तौ भी अलीन को सन सो हे हे अमाप पीरी प्रभा हे
 सो यहाँ पूरा बिरह सैं प्रौढा प्रोषित पतिका नायिका हे
 लाली बिन पीरी प्रभा नै अधिक शोभा पाई याते दूसरी
 हे ॥ १६० ॥ अथ समा शोक्ति परिकर लक्ष

॥ दोहा ॥ समा शोक्ति प्रस्तुत विषे अ प्रस्तु फुरि जाय
 कहे विशेषराहि सो परिकर उहराय ॥ १६० ॥ टी
 ॥ प्रस्तुत पद के विषे अप्रस्तुत फुरे सो समा शोक्ति अ
 हे विशेषरा पद सैं आशय कहे सो परिकर अलंका
 उहरावो हे ॥ १६१ ॥ अथ परकीया प्रोषित पतिका

शोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उद्धव देख्य अलिय
 हे कपटी वे पीर ॥ तजि वर बिसला मालती सेवत कला
 केनीर ॥ १६२ ॥ टीका ॥ हे उद्धव देखो यह अलि कपटी हे
 वे पीर हे श्रेष्ठ

रत्नों को सेवै है ॥ यहाँ कपटी वे पार कह वासों परकीया
प्रोषित पतिका नायिका है ॥ और भवरोमा लती कनीर की-
कली प्रासंगिक हैं याते ससा शोक्ति अलंकार है ॥ १६२ ॥

अथ गानिका प्रोषित पतिका परिकर उदाहरन
दोहा ॥ पाती प्रीतम धनद की बांचित प्रिया प्रवीन ॥ लखि
लखि हिस कर बदन नैं सरिख गन शीतल कीन ॥ १६३ ॥ टी-
का ॥ प्रीतम धनद की पाती प्रवीन प्रिया नैं बांचतां हिस-
कर बदन सैं देखि देखि कै सरवीन को गन शीतल कस्यो
यहाँ धनद की पाती सैं गानिका प्रोषित पतिका नायिका है
और हिस कर विशेषण पद सैं शीतल करवो आशय है
याते परिकर अलंकार है ॥ १६३ ॥

अथ खंडिता लक्षन
दोहा ॥ अन्य तिया संभोग के चिन्ह धारि निज गान ॥ हो
य खंडिता जालु कै आवै पिय परमात ॥ १६४ ॥ चिंता तूझी
भाव युनि अश्रु पात संताप ॥ चेष्टा हैं निश्वास अरु आदि
अस्कुदालाप ॥ १६५ ॥

अथ परिकरां कुर श्लेस लक्ष-
ण ॥ दोहा ॥ आशय सहित विशेष्य पद परिकर अंकुर
सोय ॥ बज्रत अर्थ पद सैं कटै श्लेस अलंकारि होय ॥ १६६ ॥
टीका ॥ विशेष्य पद आशय सहित होय सो परिकर अं-
कुर अलंकार है ॥ पद सैं बज्रत अर्थ कटै सो श्लेष

र होय है ॥ १६६ ॥ अथ सुरधा खंडिता परिकरां कुर
उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात आय निशि वस को
तायो धाम ॥ भाल लाल लखि लाल को रही नाय शिर वाम ॥
१६७ ॥ टीका ॥ सबै ही आकार के रात्रि सैं वस वाको
र धाम बताया लाल को भाल लाल देखि कै वाम है सो

नायिका है और भाल विशेष्य पद में सापराध पराग आशय
 है ॥ याते परि करंकर अलंकार है ॥ १६७ ॥ दोहा ॥ श्लेष
 वरार्य रु वरार्य करि वरार्य अवरार्य विजोय ॥ तृतीय अव
 रार्य अवरार्य करि कवि गुलाब मत होय ॥ १६८ ॥ टीका
 श्लेष अलंकार है सो उपमेय उपमेय करि कै उपमेय उपमा
 न करि कै और तीसरा उपमान उपमान करि कै गुलाब क
 वि का मत में होय है ॥ १६८ ॥ अथ मध्या खंडिता व
 रार्य वरार्य श्लेष ॥ दोहा ॥ दंपति कंपत विरस बस
 बोलत करत न लाग ॥ इक टक चितवत चलत नहि भरे खरे
 हरा राग ॥ १६९ ॥ टीका ॥ दंपति जो नायिका नायक है सो
 विरस के वस से कंपते हैं ॥ विरस को अर्थ नायिका में विना
 रस नायक में विशेष रस बोलै नहीं मिलाप करै नही इक
 टक देखे है चले नही नेत्र खरे राग से भरे हैं राग नाश प्रेम
 और राग को है ॥ यहाँ नायक को सदोष देखि काम से
 भई लाज से बोलि नही सकी याते मध्या खंडिता

ह और दोन उपमेय हैं विरस और राग पद के दोय
 अर्थ हैं याते वरार्य वरार्य श्लेष है ॥ १६९ ॥ अथ व-
 श्लेष ॥ दोहा ॥ द्विज कपि हित कर
 शील घर और हारक ररा धीर ॥ पालक दीन अनंत के गौर
 रघुबीर ॥ १७० ॥ टीका ॥ गौर रघुबीर कैसे हैं
 ब्राह्मण कपि भगवान से हित करे है शील के घर
 औरिन के हारक हैं ररा में धीर हैं घरा गरीबन के
 हैं ॥ प्रथम रघुबीर कैसे हैं ॥ द्विज पक्षी जवायु क
 वानरान के हित कर हैं अनंत शेषावतार लक्ष्मण जी
 पालक हैं ॥ गौर उपमेय प्रथम रघुबीर

उपमान हैं याते वरायी वराय्य श्लेष है ॥ १७० ॥ कपिर्नागि
 लह के सारवा मृगेच मधुसूदने ॥ इति मेदिनी ॥ दो०
 सुखद मदन दर वीर्य धर राज राज हित धीर ॥ उपमा ज
 लज शुचि भूति धर गिरिजा पति रघुवीर ॥ १७१ ॥ टीका
 गिरिजा पति कैसे हैं सुख स्वर्ग का दाता है मदन कामदे
 व का विदीर्ण करवा वाला है ॥ वीर्य जो शुक्र प्रभाव तेज
 सामर्थ्य इनके घर हैं ॥ राज राज कुवेर सौ हित हैं धीर ध
 रज वान है ॥ उमा पार्वती जलज चन्द्रमा ॥ शुचि अग्नि ॥ भू
 ति भस्म ॥ इनकों धारण करवा वाला है ॥ रघुवीर कैसे हैं ॥
 सुख आनंद का दाता है मद नहीं है ॥ दर भय नहीं है ॥ वी
 र्य जो तेज सामर्थ्य के घर है ॥ राजान के राजा जो सार्वभौम
 जिनसे हित है ॥ धीर पंडित और धीरज वान है उमा जो की
 र्ति कांति ॥ जलज मोती ॥ शुचि अंगार शुद्ध मंत्री ॥ भूति संप
 ति ॥ इनकों धारण करने वाले हैं ॥ यहाँ रघुवीर उपमेय हैं
 गिरिजा पति उपमान हैं ॥ याते वरायी वराय्य श्लेष हैं ॥ १७२
 सुख शर्मसिना केच ॥ वीर्य्य शुक्र प्रभावेच ॥ तेजः साम
 र्य्य यो रोप ॥ राज राजः कुवेरे पि सार्वभौमे सुधा करे ॥ धीरे
 धैर्य्य चिते रेरे बुधे लीवंतु कुंकुमे ॥ उमा ॥ तसी है स वती
 हरिद्रा कीर्ति कान्ति सु ॥ शुचि ग्रीष्माग्नि अङ्गरे प्यासा दे
 शुद्ध मंत्रिणि ॥ इति मेदिनी ॥ चिंता तंत्रे अवराय्य
 अवराय्य श्लेष ॥ दोहा ॥ वाहक वृष दाहक अवृषश
 ति अन चाहक काम ॥ अति चाहक वन चरन के सुमरेगम
 न वाम ॥ १७३ ॥ टीका ॥ राम कैसे हैं धर्म के चलावे वा
 ले हैं ॥ अधर्म के दाहक हैं कामना के अत्यंत अन चाहक
 हैं ॥ वानरान के अति चाहक हैं ॥ वाम कैसे हैं बैल के वा

हक हैं। अकलवान के दाहक हैं ॥ कामदेव के अत्यंत अ-
न चाहक हैं ॥ भूत पिशाचादिक के अति चाहक हैं ॥ जे-
से राम वाम मैने नहीं सुभरे ॥ यहाँ राम और शिव उपमान
हे याते अवराय अवराय श्लेष है ॥ १७२ ॥ अथ अप्र-
स्तुत प्रशंसा लक्षणा ॥ दोहा ॥ जहाँ प्रस्तुत के कार-
णों अप्रस्तुतहि प्रशंस ॥ होय तहाँ भूषण यहै अ प्रस्तुत
प्रसंस ॥ १७३ ॥ टीका ॥ जहाँ प्रस्तुत के वास्ते अप्रस्तुत
प्रसंशे तहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होय है ॥ १७३

॥ बरीन अ प्रस्तुतहि माँहि जहाँ प्रस्तुत निकसे।
संबंध हि माँहि अलंकृति यह निती विकसे ॥ समस्त
के माँहि जहाँ सम रूप जु निकरे ॥ सो सा रूप्य निबं-
ध नाँहि भिद पहिलो उधरे ॥ निकसे विशेष सामान्य में
सामान्य निबंधना ॥ सामान्य विशेषहि में कहे सुहे
निबंधना ॥ १७४ ॥ दोहा ॥ कारणा में कारज क
हेतु निबंधन सोय ॥ कारज में कारणा कहे काय निबंध
होय ॥ १७५ ॥ अथ प्रौढा खंडिता सारूप्य नि

उदाहरन ॥ दोहा ॥ वक धरि धीरज कपटक
जो वनि रहै मराल ॥ उधरे अंत गुलाब कवि अपनी बो
चाल ॥ १७६ ॥ टीका ॥ वक है सो धीरज धरि की
कपट करि के जो मराल वनि के रहै है गुलाब कवि कहे
अंत में उधड़े अपनी बोली चाल में ॥ यहाँ सदोष ना-
सों नायिका चतुराई करि कहे है याते प्रौढा खंडिता
॥ और वक हंस वरिषा वामें समान रूप मरख का पंडि
वरीषा वो निकसे है ॥ याते सारूप्य निबंधना है ॥ १७६
पर कीया खंडिता सामान्य निबंधना ॥

उदाहरन ॥ दोहा ॥ सीख न सानै गुरुन की अहितहि
हित मन सानि ॥ सो पछितावै तासु फल ललन भये हित
हानि ॥ १७६ ॥ टीका ॥ गुरुन की सीख नहीं सानै मनमें
अहित कों हित समि करि के सीता का फल में पछितावै
हे! ललन हित की हानि भयापै यहाँ नायक कों सद्दोष दे-
खिके नायिका कहै है ॥ जैसे घर कान की सीख नही मानी
तो दुख पाई यातै परकीया खंडिता नायिका है और प-
हितो सामान्य वचन सब पै है फेरि पछितावै सक ना-
यक को ही निकसे है यह विशेष है यातै सामान्य नि-
बन्धन है ॥ १७७ ॥ अथ गानिका खंडिता विशेष
निबन्धन उदाहरन ॥ दोहा ॥ लालन सुर तरु धनद
ह अनहितकारी होय ॥ तिन ह को आदरन है यों मानत
बुध लोग ॥ १७८ ॥ टीका ॥ हे! लालन सुर तरु और कुवे-
र भी अनहितकारी होय तिन को भी आदर नहीं होय
जैसे बुध लोग सानै है ॥ यहाँ नायक कों सद्दोष देखिके
धनवान को निंदा करै है यातै गानिका खंडिता नायिका
है और कल्प लक्ष कुवेर को बरानि है यह विशेष है
फेरि सब धनवानन पै लागै है यातै विशेष निबन्धन
है ॥ १७९ ॥ अथ भूषण चन्द्रिका कारन निबन्ध-
न ॥ दोहा ॥ लोनों राधा मुख रचन विधि नै सार त-
साम ॥ तिहि सग होय अकाश यह प्राप्ति में दीखन-
प्रयाम ॥ १८० ॥ टीका ॥ राधा को मुख रच वाको वि-
धि नै तसाम सार लियो ताका सग में होकरि के यह चं-
द्रमा में कालो अकाश दीखै है यहाँ राधा को मुख ब-
ना वाका कारन को बरान है ॥ तमिं मुख कारज की बड़ाई

निकसै है याते कारन निबंधना है ॥ १०८ ॥ **अथ कार्य**
निबंधना उदाहरन ॥ दोहा ॥ पुन पद नख की द्युति
 कलक गड धोवन जल साथ ॥ नीहि कन मिलि दीध सयनमें
 चंद सयो है नाथ ॥ १०९ ॥ **टीका ॥** तुम्हारा पद का नख की
 कलक द्युति धोवन जल के साथ गई ताका कनका मिलि की
 के उदीध का सयनामे है। नाथ चन्द्रमा वन्यो है ॥ यहाँ चंद्र
 मा कारज को बनन में नख द्युति कारन की बड़ाई है याते
 कार्य निबंधना है ॥ ११० ॥ **अथ कलहों तरिता ल-**
क्षणा ॥ दोहा ॥ पिय आयें सनि नहीं फिरि पाई पाहि
 ताय ॥ कलहों तरिता नायिका कही कविन मुख पाय ॥ १११ ॥
 भ्रांति और संताप पुनि संमोहर निश्वास ॥ ज्वर रु प्रलापादि
 क सकल याकी चेष्टा भास ॥ ११२ ॥ **अथ प्रस्तुतांकर**
लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रस्तुत वर्णन करि अपर प्रस्तुत द्यो
 तन होय ॥ तहाँ प्रस्तुतांकर कहत कवि गुलाब बुध लोय
 ११३ ॥ **टीका ॥** प्रस्तुत को वर्णन करि के प्रस्तुत को प्रवा
 स होय गुलान कवि कहै है बुध लोग है सो तहाँ प्रस्तुतां
 कर अलंकार कहै है ११४ ॥ **अथ मुरधा कलहों तरि-**
ता प्रस्तुतांकर उदाहरन ॥ दोहा ॥ जली न रोके
 मालती अली अनत जब जाय ॥ ना पाई मन मानि दुख कली
 काहि कुम्हिलाय ॥ ११५ ॥ **टीका ॥** हे जली जली और रो
 र जावै जब मालती नहीं रोके ताके पाई मन में दुख मानि
 करि के कली क्यों कुम्हिलावै ॥ यहाँ नायक राये पै पीछता
 ली नायका मां सखी नै कली कही याते मुरधा कलहों तरि
 ता नायिका है ॥ और कली ही दिव्यमान है ता प्रस्तुत में ना
 यिका प्रस्तुत निकसै है याते प्रस्तुतांकर अलंकार है ॥ ११६ ॥

अथ पर्यायोक्त लक्षणा ॥ दोहा ॥ जहं रचना सौ
 वान सौ पर्यायोक्त प्रकार ॥ जहं मिस करि कारज करि द्विती-
 य भेद निर्धार ॥ १८६ ॥ **टीका ॥** जहां रचना सौ बात होय
 सो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ जहो मिस करि कै कारज सधै सो
 दूसरो भेद है विधारि निश्चय ॥ १८६ ॥ **अथ मध्या क**
लहां तरिता उदाहरन ॥ दोहा ॥ नंबर दर्शन ला
 ख लघु आदि अंक की भाव ॥ सादर राख्यो ते न सो अली आ
 ज नहि आव ॥ १८७ ॥ **टीका ॥** नंबर दर्शन लाख लघु इ-
 न च्यारौन का आदि अंक को भाव तेने आदर सहित नहीं
 राख्यो सो हे अली आज नहीं आवै ॥ यहां नायिका नै नाय
 क को बुलावो चाह्यो यातै मध्या कलहां तरिता नायिका हे
 और नंबर को नं दर्शन को द। लाख को ल। लघु को ल। क या
 सौ नंदलाल नामनिकस्यो यह रचना सौ बात कही यातै पर्या
 योक्त अलंकार है ॥ १८७ ॥ **अथ प्रौढा कलहां तरि-**
ता द्वितीय पर्यायोक्त उदाहरन ॥ दोहा ॥ ज-
 ब नहि मान्यो मोर मत क्यों अब तचने निकाम ॥ सो शिरभ-
 र कत शीत भै लै जैं हों घन श्याम ॥ १८८ ॥ **टीका ॥** जब
 मेरो मत नही मान्यो अब बिना काम क्यों तचै है मेरो शि-
 र भरकै है आराम भया पै घनश्याम कौ लियाजगी यहाँ
 तच वासौ और सरखी को कह्यो नही मानि वासौ प्रौढा कल-
 र भरक वाका मिस करि कै नहीं जावो कारज साध्यो या-
 तै दूसरो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ १८८ ॥ **अथ व्याज स्तु-**
ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ इक की निंदा सतुति मिस स्तु-
 ति निंदा जहं जोय ॥ पर की निंदा सतुति सैं पर स्तुति नि-
 दा होय ॥ १८९ ॥ **टीका ॥** जहां एक की निंदा और

अस्तुति का भिर कर के वाही की अस्तुति निंदा देखो
 पैला की निंदा अस्तुति से पैला की अस्तुति निंदा होवे-
 १८८॥ **दोहा** ॥ पर की अस्तुति से जव पर की अस्तुति
 साज ॥ व्याज स्तुति यों पाँच विधि कहत सकल कविरा
 ज ॥ १८९॥ **टीका** ॥ पैला की अस्तुति से जब पैला की अस्तु
 ति साजै जैसे व्याज अस्तुति पाँच प्रकार से सम्पुर्ण कवि
 राज कहें हैं ॥ १८९॥ अथ वाही की निंदा से वा-
 ही की स्तुति ॥ **दोहा** ॥ रंक सुदामादिकन के भरि दीने मंज
 र कंसादिक कीने निपने हे हरि विनहि बिचार ॥ **टीका** ॥
 हे हरि सुदामादिक कंगालन कों घणो धन दीनों कंसादिक कों
 नाश कर्यो बिना ही बिचार यहाँ कृष्ण की निंदा में स्तुति है
 याने प्रथम व्याज स्तुति है ॥ १९०॥ अथ पर कीया क
 लहाँ तरिता वाही की स्तुति से वाही की निंदा
 दोहा ॥ तेरी सुघराई सखी सो पै कही न जाय ॥ पर भय
 भरि बोली न तब अब कर सलि पछिताय ॥ १९१॥ **टीका**
 हे सखी तेरी चतुराई सो पै कही नही जाय ॥ तब पैला का
 भय में भरि कर के बोली नही अब हाथ मसलि कर के
 पछितावे है ॥ यहाँ पर भय से परकीया कलहाँ तरिता है
 और सुघराई स्तुति में मूरखता निंदा निकसे है याने द्विती
 य व्याज स्तुति है ॥ १९१॥ और की निंदा से और की
 स्तुति ॥ **दोहा** ॥ दश शिर कुमति करान ने कर्यो राव-
 अपकार ॥ तज्यो विभीषन ताहि सो कीनों काम उदार ॥ १९२॥
टीका ॥ कराल कुमति चालो दश शिर है ऊने राम को अ
 पकार कर्यो ॥ ताको विभीषन ने तज्यो सो बड़ो काम कर्यो
 यहाँ रावन की निंदा से विभीषन की अस्तुति है याने तीस

श्री व्याज स्तुति है ॥ १८३ ॥ और की स्तुति से
 और की निंदा ॥ दोहा ॥ धन्य विभीषण राम की आ
 यो सरन सुजान ॥ धिक् है जनि अनुज अस दियो निकासि
 निदान ॥ १८४ ॥ टीका ॥ विभीषण को धन्य है सुजान रा
 म के सरणी आयो तको धिक्कार है जनि और भाई को नि
 श्चय निकासि दियो यहाँ विभीषण की अस्तुति से रावण
 की निंदा है याते चौथी व्याज अस्तुति है ॥ १८५ ॥ और की
 स्तुति से और की स्तुति ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य है
 राधिका पाय पति भगवान ॥ धन्य राधिका भान जिहि जाई
 सुता सुजान ॥ १८६ ॥ टीका ॥ राधिका को धन्य है धन्य है
 भगवान पति पाया राधिका की भाना को धन्य है जनि सु
 जान सुता जाई यहाँ राधिका की स्तुति से राधिका को भाना
 की स्तुति है याते व्याज अस्तुति को पाँचवीं भेट है ॥ १८७ ॥
 अथ व्याज निंदा लक्षणा ॥ दोहा ॥ पर को निंदा
 से जहाँ पर की निंदा होय ॥ तहाँ व्याज निंदा इकहि भेट कह
 न काबि लोग ॥ १८८ ॥ टीका ॥ जहाँ पैला की निंदा से पैला
 को निंदा होय तहाँ व्याज निंदा को एकही भेट काबि लोग क
 हें हैं ॥ १८९ ॥ अथ गनिका कलहाँ तरिता व्या
 ज निंदा उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुर तेर सम पिय तजि
 गयो करि बिगो उपचार ॥ साल मोर त निंद्य है निंद्य तोरलि
 पिजार ॥ १९० ॥ टीका ॥ कल्प वृक्ष की समान पीतर हो सो
 तजि करि के गयो बालनी जतन करि कोहे मेरा भाल त निंद्य है
 और तेरो निप करवा बालो निंदा लायक है यहाँ धनवान पति
 का या पै पीछताप है याते कानिका कलहाँ तरिता है और भाल
 को निंदा से ब्रह्मा की निंदा है याते व्याज निंदा अलंकार है ॥

१८७॥ अथ विप्र लब्धा लक्षणा ॥ दोहा ॥ तिय
 संकेत निकेत से जाय न देखे पीय ॥ कही विप्र लब्धा यहै
 दुखित होय अति जोय ॥ १८८ ॥ निवेदरु निश्वास पुनिस
 गिन उराहन सानि ॥ अज्जुपात चितादि ही याकी चेष्टा जा
 नि ॥ १८९ ॥ अथ प्रथम द्वितीयाक्षेप लक्षणा ॥
 दोहा ॥ आक्षेप सु कहि आपु ही फेरै बात विचारि ॥ क
 हि बच करै निषेध सो द्वितीयाक्षेप निहारि ॥ २०० ॥ टी०
 आपही कह करि के विचार करि के बात कों फेरै सो प्र
 थमाक्षेप है ॥ बचन कह करि के निषेध करै सो दूसरे
 आक्षेप है ॥ २०० ॥ अथ मृगधा विप्र लब्धा प्रथम
 क्षेप उदाहरन ॥ दोहा ॥ अबही घर चलि के अली उ
 दय होन दै चंद ॥ यों कहि भोरी भामिनी परी सेज दुति
 मंद ॥ २०१ ॥ टीका ॥ अबही घर चलि के अली चंद्रमा
 को उदय होवा है ॥ जैसे कह करि के भोरी भामिनी है सो
 मंद दुति से सेज पे परी ॥ यहाँ अबही चलि के चंद्रमा
 को उदय होवा है या पराधीन बात से मृगधा विप्र लब्धा
 नायिका है ॥ और अबही चलि यों बात कह करि के फे
 री चंद्रमा उदय होवा है याते प्रथमाक्षेप है ॥ २०१ ॥ अ
 थ मृगधा विप्र लब्धा उदाहरन ॥ दोहा ॥ आई
 नही सहेट में अली भूली चाल ॥ भाषि बचन कह कोप क
 रि सौन गही बर बाल ॥ २०२ ॥ टीका ॥ सहेट में नहीं
 आई है अली चाल भूली हों यों बचन भाषि करि के कह
 कोप करि के सुहर बाल ने सौन गही यहाँ कास से योड़ी
 कोप कर्यो और लाज से सौन गही याते मृगधा विप्र लब्धा
 नायिका है और सहेट में आयो कह करि के निषेध कर्यो

याँते दूसरो आक्षेप है ॥२०२॥ अथ तृतीया क्षेप वि
 रोधा भास लक्षणा ॥ दोहा ॥ गुप्त निषेध प्रकाश वि
 धि तृतीया क्षेप निकास ॥ है न विरोध विरोध सो भास बिरो
 धा भास ॥२०३॥ टीका ॥ छिपि वा तो मने करि वो होय
 जाहर में कर वो होय सो तृतीया क्षेप को निकास है विरोध
 तो नहीं होय विरोध सो भासै सो बिरोधा भास अलंकार है
 २०३॥ अथ प्रौढा विप्र लब्धा तृतीया क्षेप उदा
 हरन ॥ दोहा ॥ आली घर चलि चलती करि हैं प्रान प
 यान ॥ पङ्कचत ही घर होय गो येरी मोहि मसान ॥२०४॥
 टीका ॥ हे आली घर चलि चलती हो प्रान पयान करिगा
 पङ्कचत ही येरी मोकों घर मसान होय गो यहाँ उत्कर्ष व
 चन बोलै है याँते प्रौढा विप्र लब्धा नायिका है और घर
 चलि यह विधि बचन है घर चलती ही मरि जाऊँगी या
 ते मति चलै यह निषेध छिप्यो है याँते तीसरो आक्षेप
 है ॥२०४॥ अथ परकीया विप्र लब्धा विरोधा भा
 स उदाहरन ॥ दोहा ॥ सास ननद या तान कों आई
 नीति वाय ॥ अब आली घर गमन की सुधि आयें सुधि
 जाय ॥२०५॥ टीका ॥ सास ननद द्यौरानी जितानी नको
 नीति सुवा करि कै आई हे आली अब घर चलि बाकी
 सुधि आया सों शरीर की सुधि जाय है ॥ यहाँ द्यौरानी
 जितानीन कों सुवा करि कै आई जैसे कह बालों पर की
 या विप्र लब्धा नायिका है ॥ और सुधि आवा से सुधि
 जावो विरोध सो भासै है विरोध नहीं याँते बिरोधा भा
 स अलंकार है ॥२०५॥ अथ रानिका विप्र लब्धा
 विरोधा भास उदाहरन ॥ दोहा ॥ आई वर सत वा
 ना बाकी करन

रि में करि धन आसा धाम ॥ भई बिहाल निरस लखि
 घन प्रियामन घन प्रियाम ॥ २०६ ॥ टीका ॥ बरसता -
 जल में धन की आसा करि कै ई धाम में आई बिहाल
 भई निरस भई घन प्रियाम जो मेघ हैं उनको देखि कै
 घन प्रियाम जो श्री कृष्ण उनके नहीं देखि कै यहाँ धन
 की आसा करि कै धाम में आई याँ गानका विप्र लब्धा
 नायिका है और धन प्रियाम है सो घन प्रियाम नहीं यह वि
 रोध सो दीख्यो विरोधा भास अलंकार है ॥ २०६ ॥ अथ
 उत्कंठिता लक्षणा ॥ दोहा ॥ संकेत स्थल में गई पी-
 वन आयो होय ॥ ताको कारन चित वै उक्ता कहिये सो-
 य ॥ २०७ ॥ जंभा अगारई अरति कंप रुदन संताप ॥ स्वा-
 वस्था कथनारि ये याकी चेष्टा थाप ॥ २०८ ॥ अथ
 विभावना लक्षणा ॥ दोहा ॥ कारन बिन जह काज
 है नह विभावना मानि ॥ लघु कारणा ते काज है दूजो भेद
 सुजानि ॥ २०९ ॥ टीका ॥ जहाँ कारन बिना काज होय
 तहाँ विभावना मानो ॥ छोटे कारणा में कारज होय सो
 दूसरो भेद जानौ ॥ २०९ ॥ अथ सुग्धा उत्कंठिता
 विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय औ हैं औ हैं न
 या सोचत रहित उमंग ॥ पिय रानी लाये बिना केसर के
 सर रंग ॥ २१० ॥ टीका ॥ पीतम आवे गा अथवा नहीं
 आवे गा उमंग रहित सोचताँ केशर लगाया बिना केशर
 के रंग सी पीला ऊई ॥ यहाँ पीतम आवे गा अथवा नहीं
 आवे गा सेसँ उमंग रहित सोचै है याँ सुग्धा उत्कंठिता
 नायिका है ॥ और केसर कारन है ताका लगाया बिना केसर
 के रंग पीला होवो कारन भयो याँ प्रथम विभावना है

२२०॥ अथ सध्या उत्कंठिता द्वितीय विभावना
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ खाने सनेह सकोच की सुनो सद
 न निहारि ॥ भई विफल स्रष्टु शशि किरनि भई पार उ
 र फारि ॥ २२१॥ टीका ॥ सनेह सकोच की खानि हे
 सो सुनो घर देखि कै विफल भई चंद्रमा की कोमल कि
 रनि हे सो हृदय को फाड़ि करि कै पार भई यहाँ सकोच
 सनेह की खानि सें सध्या उत्कंठिता नायिका है ॥ और च
 द्रमा की कोमल किरनि थोड़ा कारण सें पार होवो बड़े
 कारण भयो याने दूसरी विभावना है ॥ २२१॥ अथ तृती
 य चतुर्थ विभावना लहरा ॥ दोहा ॥ कारण प्र
 न होय जहं प्रतिबंधक हूँ होत ॥ चवथ अकारण वस्तु
 तें कारण कै उद्भूत ॥ २२२॥ टीका ॥ जहाँ प्रतिबंधक
 जो रोकवा वालो है तैसे होता कलावी पूरन कारण होय
 जो तीसरी विभावना है ॥ अकारण वस्तु तें कारण उद्भूत क
 र सो चौथी विभावना है ॥ २२२॥ अथ प्रौढा उत्कंठि
 ता तृतीय विभावना उदाहरण ॥ दोहा ॥ बरसत
 बारि बयार न भुरसि गई बिन नाह ॥ जाये पिय किहि
 हनु नहि यों सोचत बिन चाह ॥ २२३॥ टीका ॥ बारि
 बरसै है बयार चलै है तोभी नाह बिना बलि गई पी
 नह कोई बालै नही आयो सै बिन को चाह सें सो
 चै है ॥ यहाँ बुरसि वारै बिन की चाह सें प्रौढा उत्कं
 ठिता नायिका है ॥ और बरसिबो बयार चलिबो रोकि
 वा बालो है तेंभी बुरसि बो पूरन कारण भयो याने तीसरी
 विभावना है ॥ २२३॥ अथ घर कीया उत्कंठिता
 चतुर्थ विभावना उदाहरण ॥ दोहा ॥ मैं आई घर

घर काम तजि आये नहीं नंदलाल ॥ यों कहि सो-
 बत कलिन पै चाँदे स्वेद विशाल ॥ २१४ ॥ टीका ॥
 मैं घर को काम तजि करि कै आई नंदलाल नहीं आये
 यों कहकरि कै फूलन को कलीन पै सोवना घरा स्वेद
 चढ़ा यहाँ घर को काम तजि वासों परकीया उत्कंठिता
 नायिका है ॥ और फूलन की कली अकारन वस्तु तैं पसे-
 व कारज भयो यातैं चौथी विभावना है ॥ २१४ ॥ अथ
 पंचम छठी विभावना लक्षणा ॥ दोहा ॥
 कारज हेतु विरुद्ध नै होय सु पंचम पाव ॥ कारज तैं कार-
 न जनम पट विभावना भाव ॥ २१५ ॥ टीका ॥ विरुद्ध
 कारणा सैं कारज होय सो पंचम विभावना है ॥ कारज
 सैं कारन को जनम होय सो छठी विभावना को भाव है
 २१५ ॥ अथ परकीया उत्कंठिता पंचम विभा-
 वना उदाहरन ॥ दोहा ॥ कुल नारिन भय ताप स-
 हि आई शीतल धाम ॥ ह्यौ पिय विन हिमकर अली-
 जारत मोहि निकाम ॥ २१६ ॥ टीका ॥ कुल की स्त्री-
 न को डर और दुख सह करि कै शीतल घर में आई है
 अली यहाँ पीतम विना हिमकर चन्द्रमा है सो मोकी
 विना काम जलावै है ॥ यहाँ कुल नारीन का भय और
 ताप सह वासों परकीया उत्कंठिता नायिका है और
 हिमकर सैं जलावो विरुद्ध कारज भयो यातैं पंचम वि-
 भावना है ॥ २१६ ॥ अथ गानिका उत्कंठिता तृ-
 तीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ धन दायक
 दायो नहीं किंहीं कारन ईहि याम ॥ यों आपत चषक
 धन तैं सारिता बही अमान ॥ २१७ ॥ टीका ॥ धन का-

देवा चातो ई घर सैं काई कारणा सैं नहीं जायो जैसे
 आपना व्यव नयन सैं अज्ञान सरिता वही यही धन
 को देवा वालो नहीं जायो जैसे कह वासों गनिका
 उत्कीर्णता नायिका है ॥ और सच्ची कारज सैं तौ सरि
 ता कारन भयो चातैं छली विभावना है ॥ २१७ ॥ अ-
 र्थ वासक सज्जा लक्षणा ॥ दोहा ॥ पिय आव
 न को यह दिवस मेरो अहे जान ॥ वासक सज्जा जानि
 ज्यो सजे सुरत को राज ॥ २१८ ॥ दूती प्रथम मनोरथरु
 भारता दर्शन आत ॥ सामग्री संपादन रु जानि सरयो पोर
 हार ॥ २१९ ॥ अर्थ विशेषोक्ति असंभव लक्षणा ॥
 दोहा ॥ विशेषोक्ति आत हेतु है नरु काज नहि होय
 कारज विन संभावना होय असंभव सोय ॥ २२० ॥ टी०
 अत्यंत हेतु होय तौ भी काज नही होय सो विशेषो-
 क्ति अलंकार है ॥ विना संभावना कारज होय सो असंभ-
 व अलंकार है ॥ २२० ॥ अर्थ सुग्धा वासक सज्जा
 विशेषोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सोई सोहन से
 ज पै लोयन मूदि विशाल ॥ पिय लग देखन चाहत
 उ खोलै नेन न बाल ॥ २२१ ॥ टीका ॥ सोभाय मान सेज
 के ऊपर सुतो विशाल नेत्रन को मूदि करि के पीतल कास
 न देख वाकी चाह है तौ भी बाल हैसो नेत्रन को नही खो-
 लि ॥ वहाँ नेत्र नही खोलै वासैं सुग्धा वासक सज्जा ना-
 यिका है और पीतल की मरा देखि वाकी चाह कारणा है
 तौ भी देखवो कारज नही भयो याने विशेषोक्ति अलं-
 कार है ॥ २२१ ॥ अर्थ सुग्धा वासक सज्जा असं-
 भव उदाहरन ॥ दोहा ॥ को जानै हो यह दिवस मेरो

हैं हैं आज ॥ सावन तीज उद्वाह दिन तीज वर सौतिन
 साज ॥ २२२ ॥ टीका ॥ कौन जाने है आज यह दिन-
 मेरो होय गो सावन में तीज का उद्वाह का दिन है अष्ट
 सौतिन का समाज को तीज कर के यहाँ काम में उत्सा-
 ह मान्यो लाज में सौतिन को अष्ट मानी याने मध्या-
 वासक सज्जा है और ई काम को हो वो संभव नहीं हो
 सो ज्यो याने असंभव अलंकार है ॥ २२२ ॥ अथ प्रथम

स द्वितीय २ संगति लहरा ॥ दोहा ॥ प्रथम
 असंगति कारगरु कारज न्यारी ठौर ॥ द्वितीय और थलक
 स कों करे और ही ठौर ॥ २२३ ॥ टीका ॥ कारगरु न्यारी
 ठौर होय कारज न्यारी ठौर होय सो पहिली असंगति है
 और थल का काम कों और ठौर करे सो दूसरी असंगति है
 २२३ ॥ अथ प्रौढा वासक सज्जा प्रथम असं

गति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सरखन सहित साजत स-
 यन बिमल बनावत वास ॥ देत दान लखि वाल कों थकी
 सौति अस तास ॥ २२४ ॥ टीका ॥ सरखन में हित सय
 न साजता निर्मल वास बनावता वाल कों दान देती देखि
 के लाका अस में सौति है सो थकी ॥ यहाँ दान देवासों प्रौ-
 ढा वासक सज्जा नायिका है और दान को परिअस का-
 रन नायिका में है थकियो कारज सौतिन में है याने प-
 हिली असंगति है ॥ २२४ ॥ अथ पर कीया वासक

सज्जा द्वितीय असंगति उदाहरन ॥ दोहा ॥
 हरे हरे सीजे सेज वर करि नव सत सिंगार ॥ हाथि हाथि से
 धरि दियो दियो वयार मरार ॥ २२५ ॥ टीका ॥ हरे हरे
 अष्ट सेज सजि के सोलह सिंगार करि के ॥ हाथि के हाथि

य में दियो पवन में धीरे दियो ॥ यहाँ दियो बयार में
धीरे वासों पर कीया वासक सज्जा नायिका है ॥ और
दिया को काम बिना पवन की ठौर में धीरे वाको है
तो पवन की ठौर में धर्यो यातें दूसरी असंगति है ॥ २२५ ॥

**अथ तृतीय असंगति प्रथम विषम लक्ष-
णा ॥ दोहा ॥** ज्ञान करत आनाह करे तृतीय असंग-
ति जानि ॥ अन मिलते के संग में प्रथम विषम मन सानि
२२६ ॥ **टीका ॥** और करताँ और करे सो तीसरी असंगति
जानी ॥ अन मिलते के संग में मन में प्रथम विषम सानों
२२६ ॥ **अथ गानिका वासक सज्जा तृतीय अ-
संगति उदाहरन ॥ दोहा ॥** सेज साजि भूषन वसन

पहरि हरीषि मन साँहि ॥ नय पहरत किँहि कारने धरी उ-
तारि उसाहि ॥ २२७ ॥ **टीका ॥** सेज साजि के मन में हर-
षि के भूषन वसन पहरे के नय पहरता का ई वासैं उम-
ग करि के उतारि धरी ॥ यहाँ नय ले वाके वासैं उतार धरी
यातें गानिका वासक सज्जा है नय पहरता उतारि धरियो
और काम कर्यो यातें तीसरी असंगति है ॥ २२७ ॥ **अथ**

स्वाधीन पतिका लक्षणा ॥ दोहा ॥ आशय में
सनि रह सदा आज्ञाकारी पोय ॥ सु स्वाधीन पतिका कही
कविन नियम करे तीय ॥ २२८ ॥ वन बिहार आदिक जि-
ते सदनोत्सव में प्रीति ॥ सद रु मनोरथ प्राप्ति पुनि अहं-
कार है रीति ॥ २२८ ॥ **अथ सुरधा स्वाधीन पति-
का प्रथम विषम उदाहरन ॥ दोहा ॥** सकल क-
ला निधि लाल कित कित यह भरी वाल ॥ अन मिल को
जाति मेल ह्यो अली लख्यो लिपि भाल ॥ २२९ ॥

टीका ॥ सम्पूर्ण कल्मस की खानि लाल कहाँ यह भोरी
वाल कहाँ यहाँ अन मिल को अत्यंत मेल है सो हे अली
भाल को लिपि से जान्यों यहाँ भोलापन से मुग्धा है औ
मेल हो वासे स्वाधीन पतिका नायिका है ॥ और अन मिल
ता को संग है याते प्रथम विषम है ॥ २३० ॥ अथ द्वि

य तृतीय विषम लहरा ॥ दोहा ॥ कारन कारन
भिन्न रंग द्वितिय विषम गरा नीय ॥ भले उद्यम ते अमल

फल होय सु विषम तृतीय ॥ २३१ ॥ **टीका ॥** कारन को
और रंग होय कारज को और रंग होय सो दूसरो विषम
गरा भला उद्यम से बुरे फल होय सो तीसरो विषम है

२३१ ॥ **अथ मध्या स्वाधीन पतिका द्वितीय**
विषम उदाहरा ॥ दोहा ॥ खुले अन खुले चष

निरखि रंगे लाल रंग प्रियाम ॥ तो लाली की रलक ते भयो
सौति मुख प्रियाम ॥ २३२ ॥ **टीका ॥** खुल्या अन खुल्या

चषन से देखि करि के प्रियाम को लाल रंग से रंग्या तिस
लाली की रलक से सौतिन को प्रियाम मुख भयो यहाँ खु

ल्या अन खुल्या चषन से मध्या स्वाधीन पतिका नायिका
है ॥ और लाली की रलक कारन को रंग लाल है सौतिन को

मुख प्रियाम कारज प्रियाम रंग है याते दूसरो विषम है
२३२ ॥ **अथ प्रौढा स्वाधीन पतिका तृतीय वि**

षम उदाहरा ॥ दोहा ॥ केलि कला रस रीति करि
सै बालस वस कोन ॥ अब अलि संतत मेल ते बोलि न स

को अलीन ॥ २३३ ॥ **टीका ॥** केलि कला रस की रीति
करि के मैने बालस को वस कर्यो हे अली अब निरंतर मे

ल से अलीन से नहीं बोलि सकी यहाँ केलि कला की

के पीतम कों वस करयो चातैं जौडा स्वाधीन पति का नायि
 का है और बालम कों वस करि वो भलो काम है नासों स
 खान कों नही मिलवो बुरो कल भयो चातैं तीसरो विष
 न है ॥२३५॥ अथ प्रथम द्वितीय लक्षणा ॥ दो
 हा ॥ वर्नन दो सम रूप को ताहि प्रथम सम जाय ॥
 फारन के गुन काज में मिलैं द्वितीय सम होय ॥२३५॥
 टीका ॥ दो समान रूप को वर्नन होय ताकों प्रथम स
 म देखो ॥ फारन के गुन काज में मिल्या सों दूसरो सम
 होय है ॥२३५॥ अथ परकीया स्वाधीन पति
 का प्रथम सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रेम पास गाँसि
 वम किया दे दीधि दान समाल ॥ गुन गर्वीली बाल नै
 विद्या निधि नंदलाल ॥२३५॥ टीका ॥ प्रेम की पासि
 से पकाडि करि कै वस करयो सुंदर दीधि दान दे करि
 कै गुन को गर्वीली बाल नै विद्या का निधि नंदलाल को
 यहाँ दीधि दान दे करि कै वस कर वासों परकीया स्वा
 धीन पति का नायिका है ॥ और बाल गुन गर्वीली क
 ष्या विद्या निधि हैं दोनों समान हैं चातैं प्रथम सम
 हैं ॥२३६॥ अथ परकीया स्वाधीन पति का
 द्वितीय सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ विह्वल कुंजन
 में भया जाय राधिका जाल ॥ यामे अचिरज कौन मरि
 अहि विहारी लाल ॥२३७॥ टीका ॥ कुंजन में डोल
 ते ऊँचो राधिका का जाल में पड़ि गयो हे सखी यामे
 कौन अचिरज है विहारी लाल है ॥ यहाँ डोलता कृष्ण
 कों वस करयो चातैं परकीया स्वाधीन पति का नायि
 का है ॥ और डोलता वारन का गुन विहारी लाल का

ज मैं पाया याते दूसरो सम है ॥ २३७ ॥ अथ तृती-
 य सम विचित्र लक्षणा ॥ दोहा ॥ काज सिद्धि
 निर्विघ्न है जतन करत सम तीन ॥ इच्छा फल विपरीत
 को जतन विचित्र प्रवीन ॥ २३८ ॥ टीका ॥ जतन करतों
 हो निर्विघ्न कारज सिद्ध हो जाय सो तृतीय सम है ॥ और
 विपरीत फल की इच्छा को जतन करे सो विचित्र अलं-
 कार है हे प्रवीन ॥ २३८ ॥ अथ गानिका स्वाधीन
 पतिका तृतीय सम उदाहरन ॥ दोहा ॥ हंसि
 हसाय वरषा परस आज बाल भार बाध ॥ लीनों सदन ब-
 साय हारि सुरतरु गोपीनाथ ॥ २३९ ॥ टीका ॥ हंसि के
 हसाय के रस बरषाय के आज बाल नै बाध भारि के सुर-
 तरु गोपीनाथ हारि कों घर में बसा लियो यहाँ सुर तरु
 का बस कर नासै गानिका स्वाधीन पतिका नाथिका है-
 और हंसि हंसावा जतन सैं कृष्ण को बस करि वो का-
 रज निर्विघ्न सिद्ध भयो याते तीसरो सम है ॥ २३९ ॥
 अथ अभिसारिका लक्षणा ॥ दोहा ॥ पिय
 पे जाय कि पीतमहि आप बुलावै जोय ॥ पाय प्रेम म-
 द मदन बस सु अभिसारिका होय ॥ २४० ॥ होय समय
 अनुरूप ही भूषणा शंका जानि ॥ प्रजा नै पुन्यरु कपट
 पहिचानि ॥ २४१ ॥ ये चेष्टापर नारि की है सी
 की नाँहि ॥ कृष्ण शुक्ल दिवादिमित हैं पर कीया मै
 हि ॥ २४२ ॥ निज गानन में लीन है रोकि सु भूषणा ध्वा-
 न ॥ दादि मात्र वसनन विमल कुल जाकरत पयान ॥
 २४३ ॥ मद सैं विह्वल बोलती प्रफुलित नैन विलास ॥
 हँसती सवलती भय रहित चेटी ॥ २४४ ॥

अद्भुत उज्जल विष धर करि नूपुर मनकार ॥ असुदित प्रकु
 लित मुख प्रगट बार मुखी अभिसार ॥ २४२ ॥ अथ मु
 ग्धा अभिसारिका विचित्रा उदाहरन ॥ दो
 हा ॥ पिय पै जात सखीन संग सलज सलौनी जोय ॥
 ज्यों ज्यों नीचो होत अति त्यों त्यों ऊँची होय ॥ २४६ ॥
 टीका ॥ सखीन का संग में पिय पै जाता लाज सहित
 नायिका जैसे जैसे अत्यंत नीची होय है वैसे वैसे ऊँची
 होय है यहाँ सलज जावा से मुग्धा अभिसारिका नायि
 का है और नीचा हो वासों ऊँचो होवो उलटो फल भयो
 योते विचित्र अलंकार है ॥ २४६ ॥ अथ प्रथम द्वि
 तीय अधिक लक्षणा ॥ दोहा ॥ अधिक अधिक
 आधार तें आधे समु अधिकाय ॥ द्वितीय अधिक आधे
 य तें जब आधार बढ़ाय ॥ २४७ ॥ टीका ॥ बड़ा आध
 र से आधेय अधिकावे सो पहिलो अधिक है ॥ जब आ
 धेय से आधार बढ़े सो दूसरो अधिक है ॥ २४७ ॥ अथ
 मध्या अभिसारिका प्रथम अधिक उदाह
 रणा ॥ दोहा ॥ सानी लाज सनेह की तिया पिया पै जा
 त ॥ तिहि लखि बढ्यो अलीन मन त्रिभुवन में न समा
 न ॥ २४८ ॥ टीका ॥ लाज सनेह की सनी ऊँई तिया
 है सो पिया पै जाय है ताको देखि करि के अलीन को स
 न बढ्यो सो तीनों भवन में नही भावे यहाँ लाज और
 सनेह की भरी ऊँई तिया है सो पिया पै जाय है योते
 मध्या अभिसारिका नायिका है ॥ और त्रिभुवन आ
 धार है तामें अलीन को मन आधेय नही भयो योते
 प्रथम अधिक है ॥ २४८ ॥ अथ मोटा प्रमाण

सारिका द्वितीय अधिक उदाहरन ॥ दोहा ॥
 प्रेम पगी अति मंद गति चली अलीन मकार ॥ उजियारी सु-
 ख चंद्र की भरी गलीन अपार ॥ २४८ ॥ **टीका ॥** प्रेम की प-
 गी ऊई अत्यंत मंद गति से अलीन का बीच में चली सुख चं-
 द्रमा की उजियारी गलीन में अपार भरी यहाँ प्रेम से च-
 ली याते प्रौढा प्रेमाभिसारिका नायिका है और सुख चंद्र-
 मा की उजाली आधेय है सो गली आधार में सा गई याते
 दूसरी अधिक है ॥ २४८ ॥ **अथ अल्प अन्योन्य लं-**
कारा ॥ दोहा ॥ अल्प अल्प आधेय से अल्प होय आ-
 धार ॥ अन्योन्य हि उपकार ते अन्योन्यालंकार ॥ २४९ ॥
टीका ॥ अल्प जो आधेय है उस आधार अल्प होय सो
 अल्यलंकार है परस्पर उपकार से अन्योन्यालंकार है ॥
 २४९ ॥ **अथ प्रौढा गर्वाभिसारिका अल्प उदाह-**
रन ॥ दोहा ॥ कीर्ति जा निज भवन में तुम्हें बुलावत आ-
 हि ॥ सुनि सुख भयो सुलाल के मन में भायो नहि ॥ २५० ॥
टीका ॥ राधिका अपना मकान में है लाल तुमको बु-
 लावै है ॥ सुनिकार के सुख भयो सो लाल के मन में नहीं
 भायो यहाँ पति को अभिमान के वस से बुलावै है याते
 प्रौढा गर्वाभिसारिका नायिका है ॥ और सुख है सो आ-
 धेय है मन आधार है सो सुख छोटा आधेय ते छोटी
 है याते अल्प अलंकार है ॥ २५० ॥ **अथ प्रौढा का-**
माभिसारिका अन्योन्य उदाहरन ॥ दोहा ॥
 चलत लली के लगि गये कीच लपटि अहि पाय ॥ अहि
 छवि छई पगन ते तिन ते छवि भइ पाय ॥ २५१ ॥ **टी०**
 लली के चलता कीच में लपटि करि कै अहि हैं सो पगन

मे लीग गया पगन से सर्पन की छवि छार्ई सर्पन से प
गन की छवि छार्ई यहाँ कामांधा नासे पगन से सर्प ल
गया को ठाँक नहीं पड़्यो याते प्रौढा कामाभिसारिका
हे और परस्पर उपकार है याते अन्योन्या लंकार है ॥

२५२॥ अथ प्रथम द्वितीय विशेष लक्षण ॥

दोहा ॥ विना रव्यात आधार के रह आधेय विशेष ॥
रक वस्तु कौं बहूत ठौ वरनत दूजो वेष ॥ २५३॥ टीका

विख्यात आधार विना जहाँ आधेय रहे सो प्रथम वि-
शेष अलंकार है ॥ रक वस्तु कौं बहूत ठाम वरनै सो दु-
सरो विशेष है ॥ २५३॥ अथ परकीया भिसारिका

उदाहरन ॥ दोहा ॥ डरि डरि गुरु बनि तान से चली ल

ली हित धारि ॥ पै डरि डरि पग मग धरत वन नभ कुमु-
म निहारि ॥ २५४॥ टीका ॥ गुरु बनि तान से छिपि छि

पि कारि कै लली है सो हित धारि कै चली ॥ परन्तु डरि ड

रि कै मग से पग धरै है वन में आकास को फूल देखि

कै यहाँ डरि डरि कै जा वासों परकीया भिसारिका नायि-
का है और आकास का फूल को बिना आधार वर्नन है

याते यहिलो विशेष है ॥ २५४॥ अथ कृष्णा भिसा

रिका द्वितीय विशेष उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रया

म वसन भूषन पहारि चली अभावस राति ॥ घन वन तम

निज मनन में सरखन लखी छवि छारि ॥ २५५॥ टी-

का ॥ काला वसन और भूषन पहारि कै अभावस की राति
में चली तब नायिका है सो घन में वन में तम में अपना
मनन में सरखीन नै छवि की छार्ई ऊई देखी यहाँ काला
कपड़ा पहारि वासों कृष्णा भिसारिका नायिका है और

राक वस्तु नायिका की इबि है सो घन बनादि में बरन
याते दूसरो विशेष है ॥२५५॥ अथ तृतीय विशे
ष प्रथम व्याघात लक्षणा ॥ दोहा ॥ अलघुला
भ लघु जतन तैं तृतीय विशेष सुख्यात ॥ चरनै हित
कर वस्तु सैं अहित सु है व्याघात ॥२५६॥ टीका ॥
छोटा जतन सैं बडो लाभ हो जाय सो तीसरो विशेष है
हितकारी वस्तु सैं अहित बनै सो व्याघात है ॥२५६॥

अथ शुक्लादि ॥ तृतीय विशेष उदा
हरन ॥ दोहा ॥ रजनी राका सरद की चली सेत साज
साज ॥ जिहि लखि जानी सखिन नैं लखी शारदा आज
२५७ ॥ टीका ॥ सरद की पुन्यों की राति में सुपेद साज
साज के चली यहाँ जिसकों देखि के सखीन नैं जानी आ
ज शारदा देखी ॥ यहाँ सेत साज साज के चली याते शु
क्लाभिसारिका नायिका है और नायिका का देखि वासों
सारदा को देखिबो अधिक लाभ भयो याते तृतीय वि
शेष है ॥२५७॥ अथ दिवारी सारिका प्रथम-
व्याघात उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुरंग वसन आभर-
न साजि चली मध्य दिन बाल ॥ मग में घन आये घु-
मडि लखि कुम्हिलानी हाल ॥२५८॥ टीका ॥ लाल
वसन आभरन साजि करि के बाल है सो दुपहरा चली
गैला में घन घुमडि आया तुरत ही देखि करि के कु-
म्हिलार्ड ॥ यहाँ दिन में चल वासों दिवाभिसारिका ना-
यिका है और घन घुमडिबो हित कर वस्तु सैं अहित
बन्यो याते प्रथम व्याघात है ॥२५८॥ अथ द्विती
य व्याघात प्रथम कारणा माला नक्षत्र ॥ दोहा

काज विरोधी सैं सधै जुग व्याघात बरखानि ॥ पुनि
 पुनि कारना काज है कारन माला जानि ॥ २५८ ॥ टी०
 विरोधी सैं कारज सधै सो दूसरो व्याघात बरखानौ ॥
 फेरि फेरि कारन है सो काज होय सो कारन माला अ-
 नंकार जानौ ॥ २५८ ॥ अथ प्रेय्या भिसारिका उ-
 दाहरन ॥ दोहा ॥ मदलाती हंसि बोलती चलती
 इत उत जोय ॥ संग बतावत चलत संग हंसि निशि
 जासिक लोय ॥ २६० ॥ टीका ॥ मद सैं मस्त जई हंसि
 करिके बोलती जई इत उत कौ देखती चलती जई ना-
 थिका के संग सैं मारग कौ बतावता जूझा हंसि करि-
 के रात्रि सैं जासिक लोय हैं सो संग चलै है ॥ यहाँ है
 इत उत कौ देखती चलै है याने प्रेय्या भिसा-
 रिका नाथिका है ॥ और चौकीदार मारग का रोकवा वा-
 तान नैं मारग को बतावो कारज कस्यो याने दूसरो-
 व्याघात है ॥ २६० ॥ अथ शनिका भिसारिका प्र-
 थम कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलती
 सजि भूषन बसन यौ कहती पति धाम ॥ अम सैं गुन
 गुन सैं धन रु धन सैं होत सु काम ॥ २६१ ॥ टीका ॥
 भूषन बसन सजि करिके पति का धाम कौ चलती जई
 जैसे कहै है अम सैं गुन होय है गुन सैं धन होय है
 धन सैं सुंदर काम होय है ॥ यहाँ भूषन बसन सजि
 करिके पति का धाम कौ जाय है याने शनिका भि-
 सारिका नाथिका है और अम कारन है गुन कारन है
 धन कारन है धन कारन है धन कारन है सु-
 काम कारन है याने पहिली कारन माला है ॥ २६१ ॥

अथ द्वितीय कारन माला रक्तावली लक्ष्मण
 दोहा ॥ कारन माला दूसरी कारज कारन माल ॥ गहि
 गहि पद छोड़ै जहाँ रक्तावली रमाल ॥ २६२ ॥ टीका
 कारज और कारन की माल होय सो दूसरी कारन मा-
 ला है जहाँ पद कों गह गह करिके छोड़ै सो रक्तावली
 है सुंदर ॥ २६२ ॥ अथ गारिका भिसारिका द्विती-
 य कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥ जाती मन ऊ-
 लसावती कहती भरी उमंग ॥ गुन अम संग धन गुन सँ-
 गहि सकल काम धन संग ॥ २६३ ॥ टीका ॥ जाती ऊ-
 र्द मन की ऊलसावती ऊर्द उमंग की भरी ऊर्द कहती
 है गुन है सो अम के संग है धन है सो गुन के संग है
 संपूर्ण काम है सो धन के संग है ॥ यहाँ धन की ब-
 ड़ाई करे है याते गारिका भिसारिका नायिका है ॥
 और पहिले गुन कारज कह्यो फेरि अम कारन कह्यो
 फेरि धन कारज कह्यो गुन कारन कह्यो याते दूसरी
 कारन माला है ॥ २६३ ॥ अथ प्रवत्स्यत्पतिका
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ अगले छिन में जाहि को जैहै पति
 परदेश ॥ ताहि प्रवत्स्यत्प्रेय सो बरनत सु कावि असेश
 २६४ ॥ कातर प्रेक्षणा काकु वच निर्वेदरु संताप ॥ संमो-
 हरु निश्वास पुनि गमन विषु को थाप ॥ २६५ ॥ अथ
 सुरधा प्रवत्स्यत्पतिका रक्तावली उदाहरन
 दोहा ॥ आली पीव पयान दुख लोख पारि है परमा-
 मन तैं सुख सुख तैं नयन अधिक अधिक सुरदात ॥
 २६६ ॥ टीका ॥ हे आली पीतम का पयान को दुखरु
 वैं ही जानि पड़े गा ॥ मन तैं सुख सुख तैं नयन अति

क अधिक सुरमावै है ॥ यहाँ सुरमावो थोड़ी डरव है या
 नै सुरमा प्रवत्स्य त्पतिका नायिका है और मन को छो
 डि करि कै मुख मुख को छोड़ि करि कै नयन गहे या
 नै रकावली है ॥ २६६ ॥ अथ साला दीपक अथ
 स सार लक्षणा ॥ दोहा ॥ मिलि दीपक रकावली
 साला दीपक चार ॥ सरस सरस बरनें अपर निरस निर-
 स सो सार ॥ २६७ ॥ टीका ॥ दीपक और रकावली मि
 ल्या पै साला दीपक अलंकार है चार सुंदर ॥ अधिक
 अधिक बनें और कम कम बनें सो सार अलंकार हो
 य है ॥ २६७ ॥ अथ मध्या प्रवत्स्यत पतिका
 साला दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात गमन पि
 य को कहत भौ सरि मुख छवि छोन ॥ सरि मुख ल-
 रि भौ तुरत ही राधा वदन मलीन ॥ २६८ ॥ टीका ॥
 सवेरे ही पीतम को गमन कहता सरखी को मुख छान
 छवि भयो सरखी को मुख देखि करि कै राधा को मुख
 तुरत ही मलीन हो गयो यहाँ काम से मुख मलीन-
 भयो लाज से कछु बोली नहीं यातै मध्या प्रवत्स्यत
 पतिका नायिका है ॥ और सरखी को मुख राधा को मुख
 यह तो रकावली दोनूनों की अन्वय मलीनता से है ॥
 यातै साला दीपक है ॥ २६८ ॥ अथ प्रौढा प्रव-
 त्स्यत्पतिका अथ सार उदाहरन ॥ दोहा
 सांगत विदा विदेश कौं सुनि भई प्रिया उदास ॥ चिं
 ता बढि हग जल बढे तिन तै अधिक उदास ॥ २६९ ॥
 टीका ॥ पीतम कौं विदेश को विदा सांगतौ सुनि
 करि कै प्रिया उदास भई चिंता बढि करि कै हगन मे

जल बड़े तिन में अधिक उसांस बड़े ॥ यहाँ पीतम
से बिकटित्वा सौ प्रौढा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है
और चिंता से दृग जल अधिक है तासों उसांस अधि
क है याते प्रथम सार है ॥ २६८ ॥

**अथ परकी
या प्रवत्स्यत्पतिका द्वितीय सार उदाहर-**
न ॥ दोहा ॥ प्रातः परोसी गमन को सुन्यो नारि ने
नाम ॥ भई भूष ने प्यास सुधि ताते मति अति छाम ॥

२७० ॥ **टीका ॥** सबै ही परोसी का गमन को नारि
ने नाम सुन्यो भूष ने प्यास की सुधि छाम भई
ताते मति अत्यंत छाम भई ॥ यहाँ परोसी को गमन
सुनि तासों परकीया प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है और
भूष ने प्यास छाम भई प्यास ने सुधि छाम भई ताते
मति अत्यंत छाम भई याते दूसरो सार है ॥ २७० ॥

अथ यथा संख्य लक्षणा ॥ दोहा ॥ क्रम से
कहे पदार्थ को क्रम से कथन जु होय ॥ यथा संख्य
तासों कहत कवि गुलाव बुध लोय ॥ २७१ ॥ **टीका ॥**

जो क्रम से कहे ज्ञये पदार्थ को क्रम से कथन होय ॥
गुलाव कवि कहे है बुध लोग है सो तासों यथा सं-
ख्य अलंकार है ॥ २७१ ॥

अथ गारिका प्रव-
त्स्यत्पतिका उदाहरन ॥ दोहा ॥ मांगी विदा
विदेश पिय गहि तिय कर कर बीच ॥ केरा मुदरी
लोन तिय कर अंगुरिन ने खीचि ॥ २७२ ॥ **टीका ॥**

पिय ने विदेश की विदा मांगी तिय का कर को कर
का बीच में गहि करि के तिय ने करा मुदरी ले लिया
कर अंगुरिन से खीचि करि के यहाँ करा मुदरी ले

सों गारिका प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है ॥ और
 करा मँदरी कह्या जाही कमसों कर जँगुरी कह्या
 याँ येया संख्य अलंकार है ॥ २७२ ॥ अथ आ
 रा मिष्यत्पतिका लक्षणा ॥ दोहा ॥ अहै पि
 य परदेश ते वों गनि हर्षित होय ॥ सुआरा मिष्यत्प्रे
 यसी वरनत सब कीव लोय ॥ २७३ ॥ अथ पर्या
 य लक्षणा ॥ दोहा ॥ क्रम से आश्रय एक के बड़
 है सो पर्याय ॥ क्रम से बड़ के एक ही आश्रय द्विती
 य गनाय ॥ २७४ ॥ टीका ॥ क्रम से एक के बड़त आश्र
 य होय सो पर्याय अलंकार है ॥ क्रम से बड़त के एक ही
 आश्रय होय सो दूसरे पर्याय गनावो ॥ २७५ ॥ अथ सु
 रधा आरा मिष्यत्पतिका प्रथम पर्याय उ
 दाहरन ॥ दोहा ॥ फरकत भुज दरा वास गनि भई भु
 दिते मन वाल ॥ पियराई मुख को गई आई लाली हाल ॥
 २७५ ॥ टीका ॥ चाई भुजा चाँया नेत्र फरकता गनि कार
 के वाल है सो मन में असन्न भई ॥ मुख की पियराई गई
 वुरत लाली आई यहाँ चाई भुजा चाँया नेत्र फरक्या याँ सु
 रधा आरा मिष्यत्पतिका नायिका है और पियराई ललाई
 को मुख एक आश्रय भयो याँ प्रथम पर्याय है ॥ २७६ ॥
 अथ सध्या आरा मिष्यत्पतिका द्वितीय पर्या
 य उदाहरन ॥ दोहा ॥ फरकत भुज पुनि काकड़ बो
 ल्यो नित्य घर आय ॥ लगी दीठि भुज वास पुनि जमी का
 क से जाय ॥ २७६ ॥ टीका ॥ चाँई भुज फरकी फोर का
 क सी नित्य के घर आ कर के बो ल्यो चाँई भुजा से दीठि
 लगी फोर काक से जा कर के जमी यहाँ प्रथम आवाका

सगुन देखि काम के वसैंदीति लगाई लाज के वस सैं
 अधिक नही हर्षाई याने मध्या आगमिष्यत्पतिका ना
 यिका है ॥ और एक दीति भुजा में और काक में लगी या
 ते दूसरो पर्याय है ॥ २७६ ॥ अथ परिहृति परि सं
 रख्या लक्षणा ॥ दोहा ॥ परिहृति सु पलटो करे अधि
 क न्यून को कोय ॥ परि संख्या यल जान तजि इक यल
 जो थित होय ॥ २७७ ॥ टीका ॥ अधिक न्यून को कोई
 पलटो करे सो परिहृति अलंकार है ॥ जो और यल को
 तजि करि के एक यल में थित होय सो परि संख्या अ
 लंकार है ॥ २७७ ॥ अथ प्रौढा आगमिष्यत्पति
 का परिहृति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उवताहि पात
 उमंग भरि बोली प्रिया प्रवीन ॥ आली अधिक उछाह दे
 विदा काक ने लीन ॥ २७८ ॥ टीका ॥ सबैरे उवता ही उ
 मंग में भरि करि के प्रवीन प्रिया बोली है आली अधिक
 उछाह दे करि के काक ने विदा लीनी यहाँ अधिक उछा
 ह सो प्रौढा आगमिष्यत्पतिका नायिका है और का
 क ने अधिक उछाह दे करि के विदा लीनी याने परि
 हृति अलंकार है ॥ २७८ ॥ अथ परकीया आग
 मिष्यत्पति ॥ परि संख्या उदाहरन ॥ दो०
 सुनत परोसनि को पिया जैहै आजहि सारु ॥ रही क
 चन ही प्रयासता कृशता करि ही सारु ॥ २७९ ॥ टी०
 परोसनि को पिया आज ही सारु कौं आवै गो कालाप
 नो है सो बालनही में रह्यो दुवराई कसरि में ही रही
 यहाँ परोसनि का पति सैं परकीया आगमिष्यत्पतिका
 नायिका है ॥ और कचन में प्रयासता रही कटि में कृशता

रहो ॥ याने परिसंख्या अलंकार है ॥ २७८ ॥ अथ वि
 कल्प प्रथम समुच्चय लक्षणा ॥ दोहा ॥ सम
 चन जुगल विरोध को कथन विकल्प वखानि ॥ वज्रभा
 वन को संग कथन प्रथम समुच्चय जानि ॥ २७९ ॥ टीका
 समान चल दोनों विरोध को कथन होय सो विकल्प व
 खानो ॥ वज्रभावन को संग कथनो होय सो प्रथम स
 मुच्चय जानो ॥ २८० ॥ अथ गानिका आगमिष्य
 त्यतिका विकल्प उदाहरन ॥ दोहा ॥ अवधि
 दिवस गनि गावती बोली हिय हर्षानि ॥ आज राति दु
 ख भानि है जमराज कि धन दानि ॥ २८१ ॥ टीका ॥
 अवधि का दिनन कौं गनि करि कै गावती ऊँ हिया
 मै हर्षा करि कै बोली आज राति मै दुख भानै गो जमरा
 ज कै धन दानी छाया यहाँ गावसौं गानिका आगमि-
 ष्यत्यतिका नायिका है ॥ और जमराज धन दानी समा
 न चल है तिन मै सारि वो जिवावो विरोध है याने वि
 कल्प है ॥ २८२ ॥ अथ आगत पतिका लक्षणा
 दोहा ॥ जाको पिय परदेश ते आयो तबही होय ॥
 आगत पतिका नायिका हर्षति जिय मै जोय ॥ २८३ ॥
 टीका ॥ जाको पीतम परदेश ते तबही आयो होय
 सो आगत पतिका नायिका जीव मै हर्षती देखौ ॥ २८४ ॥
 अथ सुग्धा आगत पतिका प्रथम
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय आये लखि नवल लिय
 पी हँसी जंभाय ॥ कंपी अनुरागी बझारि बैठी सि सटिल
 जाय ॥ २८५ ॥ टीका ॥ पिय कौं आयो देखि कै न
 य है सो हर्षी हँसी जंभायो ली कंपी अनुरागी फेरि

तिलजा करि कै बेदी यहाँ लाज वासै सुग्धा आगत प
 तिका नायिका है ॥ और नायिका में हर्षादिक बज्रत
 भाव है याते प्रथम समुच्चय है ॥ २८३ ॥ अथ द्विती
 य समुच्चय लक्षणा ॥ दोहा ॥ हौं पहिले हौं प
 हल यौ बज्रत मानि मन माँहि ॥ करै सिद्धि इक काज
 को द्वितीय समुच्चय आहि ॥ २८४ ॥ टीका ॥ हम प
 हिले हम पहिले जैसे बज्रत है सो मन में मानि करि
 कै एक काज की सिद्धि करै सो दूसरे समुच्चय है ॥ २८४ ॥
 अथ मध्या आगत पतिका द्वितीय समुच्चय
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय जाये परदेश सँ भँदन पिय
 जन भीर ॥ तनु चष अवनन चाह नै बढ़ि नित्य करी अ
 धीर ॥ २८५ ॥ टीका ॥ पीतम परदेश तैं जाये कुटुंब
 का समूह सौं मिलतां तनु चष अवन की चाह नै बढ़ि
 करि कै नित्य कौं अधीर करी यहाँ पहिले लाज सँ धीर
 धीर रही फेरि काम सँ शरीरादि की चाह नै बढ़ि करि
 कै अधीर करी ॥ याते मध्या आगत पतिका नायिका है
 और तनु चष अवनन की चाह नै बढ़ि करि कै अधी
 रता एक कारज कर्यो याते दूसरे समुच्चय है ॥ २८५ ॥
 अथ कारक दीपक समाधि लक्षणा ॥ दोहा
 कारक दीपक बज्र किया कम तैं कारक एक ॥ ज्ञान है
 तु सँ काज की सिद्धि समाधि विवेक ॥ २८६ ॥ टीका ॥
 कम सँ बज्रत कियान को कारक एक होय सो कारक
 दीपक अलंकार है ॥ और हेतु सँ कारज की सिद्धि होय
 सो समाधि है ॥ २८६ ॥ अथ प्रोढ़ा आगत पति
 का कारक दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ मनना क

नै विदेश तैं प्रिया पिया ह्यौ जात ॥ दौरी फिरीखरी
 गद्दी पुनि पूछी कुशलात ॥ २८७ ॥ टीका ॥ सजनी ने
 कही विदेश तैं हे प्रिया ह्या पिया आवै हे दौरी फि
 री खरी रही फेर कुशल पूछी यहाँ धरणी हर्षी या
 तैं जोहा आगत पतिका नायिका है ॥ और दौरी आ
 वि अनेक भाव सक नायिका में भये यातैं कारक दी
 पक अलंकार है ॥ २८७ ॥ अथ परकीया आग
 त पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥ पारो
 सी परदेश तैं आयो जिहि निशि माँहि ॥ घर के सब उ
 त्सवन में गये राखि घर ताहि ॥ २८८ ॥ टीका ॥ पा
 रोसी परदेश तैं आयो जी रात्रि में घर के सब उत्सव
 न में गये ता नायिका कौं घर राखि कै जाकी पारोसी
 सैं प्रीति ही ॥ यहाँ पारोसी का परदेश सैं आवा में
 परकीया आगत पतिका नायिका है ॥ और घर कान
 को जावो अन्य कारज है मिलाय कारज भयो यातैं
 समाधि अलंकार है ॥ २८८ ॥ अथ प्रत्यनीक का
 व्यार्थापत्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रवल शत्रु के मि
 त्र पै प्रत्यनीक बल धाति ॥ यौ है तो यह है कहा सो का
 व्यार्थापत्ति ॥ २८९ ॥ टीका ॥ प्रवल शत्रु के मित्र पै
 वल की धनि होय सो प्रत्यनीक अलंकार है ॥ यौ है
 तो यह काई है जैसे होय सो का व्यार्थापत्ति अलंका
 र है ॥ २८९ ॥ अथ गानिका आगत पतिका प्र
 त्यनीक उदाहरन ॥ दोहा ॥ आवत पति परदेश
 ने लखि सासरन असंद ॥ मे असन्न मुख नैन नव का
 मलर मेने चंद ॥ २९० ॥ टीका ॥ पतिका परदेश से

आवता गहरागान सहित देखि कै मुख नैन प्रसन्न भये तब
चंद्रमा ने कमल मूदे यहाँ नायक कौ गहरागान सहित देखि वासोंग
निका आगत पतिका नायिका है और चंद्रमा ने मुख का पक्षी कमल
न कौ मूद्या चाँते अत्यनीक अलंकार है ॥ २८० ॥ अथ पति स्वा

धीना लक्षणा ॥ दोहा ॥ रूप प्रेम गुन आदि करि है पति के
वस नारि ॥ पति स्वाधीना कहत तैं हैं कोब कोविद निर्धारि ॥

२८१ ॥ टीका ॥ रूप प्रेम गुन आदि करि कै नारि पति के
वस होय ॥ ताकौ पति स्वाधीना कहैं हैं कोब कोविद निर्धारि

करि कै ॥ २८१ ॥ अथ सुग्धा पति स्वाधीना का व्या
र्थ पति उदाहर ॥ दोहा ॥ आली मुख लखि लाल को रति

हर है लुभाय ॥ मैं वस भई तजि ताज सो गिनती गिनी न जाय ॥ २८२ ॥ टीका ॥ आ

ली लाल को मुख देखि कै रति ह लुभा करि कै रहै ॥
जै लाज कौ तजि करि कै वस भई सो गिनती नही

गिनी जाय यहाँ लाज कौ मुख माने है पति के व-
स है चाँते सुग्धा पति स्वाधीना नायिका है और जो

कौ देखि कै रति भी लुभा रहै तो मैं काँई हौं अैसे-
कह वासों काव्यार्थ पति अलंकार है ॥ २८२ ॥

अथ काव्य लिंग लक्षणा ॥ दोहा ॥ अर्थ सम
र्थन चोरय जो तासु समर्थ न होय ॥ काव्य लिंग भू-

पून तहाँ कवि गुलाब मत होय ॥ २८३ ॥ टीका ॥
समर्थन चोरय जो अर्थ ताको समर्थन होय तहाँ-

गुलाब कवि काम तै काव्य लिंग अलंकार है ॥ २८३ ॥
अथ मध्या पति स्वाधीना काव्य लिंग उ-

दाहरन ॥ दोहा ॥ मोलि लई सो लखि रहै बोलि
सकौ सचेत ॥ मोते रति जूनि जूनि जूनि जूनि

या छत ॥ २८४ ॥ टीका ॥ मोलि लई सी लखि रहों हों
 चेत सहित नही वोलि सकौं सोसे रति अत्यंत न्यून
 है मोहन पति है या वास्ते यहाँ मोलि लई सी काम
 है वोलि न सकौं यह लाज है याते मध्या पति स्वाधी
 ना नायिका है और सेते रति अति न्यून है यह बात
 समर्थन योग्य है ताको समर्थन किये मेरो पति मोहन
 है या वास्ते काव्य लिंग अलंकार है ॥ २८४ ॥ अथ
 अर्थति रन्यास लक्षणा ॥ दोहा ॥ है सामान्य
 विशेष जब तब अर्थति रन्यास ॥ द्विजो गुण वत संग
 तैं लघु गुरु होय प्रकास ॥ २८५ ॥ टीका ॥ सामान्य
 होय फेरि विशेष होय तब अर्थति रन्यास अलंकार
 है ॥ गुण वत संग तैं लघु गुरु प्रकास होय सो दूसरे
 अर्थति रन्यास है ॥ २८५ ॥ अथ प्रौढा पति स्वा
 धीना प्रथम अर्थति रन्यास उदाहरण ॥ दो
 हा ॥ सब के पति है सुभग पर सो पति सम कहैं हैं
 देखत प्रियाम सुरूप मुख मो चष तनक रूपेन ॥ २८६ ॥
 टीका ॥ सब के पति सुंदर है परंतु मेरा पति की स
 मान कही भी नहीं है प्रियाम को स्वरूप और मुख
 देखता मेरा चख तनक भी नहीं रूपे यहाँ पति को
 इक एक देखि वारों प्रौढा पति स्वाधीना
 और सब के पति सुंदर है यह सामान्य वचन है
 मेरा पति की समान कोई भी नहीं है यह
 वचन है याते प्रथम अर्थति रन्यास है ॥ २८६ ॥
 अथ परकीया पति स्वाधीना द्वितीय
 दोहा ॥ दोहा ॥ रहो ध्यान धरि

सुनें सुनें हियो जलसाय ॥ येरी मुरली लाल की सो
चित्त लियो चुराय ॥ २८७ ॥ टीका ॥ बिना ही सुन्य
ध्यान धरि कै रह्यो हों सुन्या सों हियो जलसावै है
येरी लाल की मुरली नें मेरो चित्त चुरा लियो यहाँ
मुरली का सुन चासैं वस भई यातै परकीया पति-
स्वाधीना नायिका है और कृष्ण के जोग सैं मुरलीनै
बडाई पाई यातै दूसरो अर्थात् रन्यास है ॥ २८७ ॥

अथ विकस्वर प्रौढोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥
विकस्वरस्तु विशेष पुनि है सामान्य विशेष ॥ प्रौ-
ढोक्ति जु कारन करै अकारनहि गनि वेष ॥ २८८ ॥
टीका ॥ विशेष होय सामान्य होय फेरि विशेष
होय सो विकस्वर अलंकार है ॥ अकारन कों वे-
ष गनि के कारन करै सो प्रौढोक्ति अलंकार है ॥ २८८ ॥

अथ गनिका पति स्वाधीना विकस्वर उदा-
हरण ॥ दोहा ॥ आली लावत लाल धन जगलन की
अनुहारि ॥ निहिं ले वारों दुगुन धन आनन अमल-
निहारि ॥ २८९ ॥ टीका ॥ हे आली लाल धनल्य
वै है जगत काजन की अनुहारि वारों ले करि केदु-
गुन धन वारों निर्मल मुख देखि करि कै यहाँ दुगुन
धन बार वासों गनिका पति स्वाधीना नायिका है
और लाल धन लावत यह विशेष है जगत काजन
की अनुहारि यह सामान्य है फेरि लाल पै दुगुन
धन बार दो यह विशेष है यातै विकस्वर है ॥ २८९ ॥
अथ उत्तम लक्षणा ॥ दोहा ॥ अन हित कारी
पीय पै हित ही करै जु वाम ॥ याकी चेष्टा उत्तमहि

जानि उत्तमा नाम ॥३००॥ टीका ॥ अनहित कारी पीय
 पे जो वाम अहित करे ॥ याकी चष्टा उत्तम है याते उत्त-
 मा नाम जानौ ॥३००॥ अथ उत्तमा प्रौढोक्ति उदा-
 हरन ॥ दोहा ॥ आये प्रीतम प्रात घर लाय महावर सा-
 ल ॥ तउ तनु जमुन तमाल द्यति लखि भइ हर्षित वा-
 ल ॥३०१॥ टीका ॥ प्रीतम है सो सर्वेरे ही घर आया
 भाल से सहावर लगा करि कै तो भी तनु में जमुना का
 तमाल की द्यति देखि कै वाल हर्षित भई ॥ यहाँ सापरा-
 ध नायक कौ देखि कै हर्षित भई याते उत्तमा नायिका
 है और जमुना को तमाल अधिक प्रियता को कारन न
 हो ताकौ कारन कस्यो याते प्रौढोक्ति अलंकार है ३०१
 अथ मध्यमा लक्षणा ॥ दोहा ॥ पिय के हित ते
 हित करे अहित अहित ते होय ॥ चेष्टा है व्यवहार
 सस जानि मध्यमा सोय ॥३०२॥ अथ संभावना मि-
 थ्या ध्य वसति लक्षणा ॥ दोहा ॥ जो यौ होय
 तु होय यौ सु संभावना जानि ॥ मिथ्या हित मिथ्या कथ
 न मिथ्या ध्यवसिति मानि ॥३०३॥ टीका ॥ जो यौ हो
 य तो यौ होय जैसे होय सो संभावना अलंकार है
 मिथ्या के वास्ते मिथ्या को कहवो होय सो मिथ्या
 ध्यवसिति मानौ ॥३०३॥ अथ मध्यमा संभाव-
 ना उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात पिया पा परत लखि
 बोली रिस्तहि नशाय ॥ रति जो न उत जावते तो क्यों
 परते पाय ॥३०४॥ टीका ॥ सर्वेरे ही पीतम कौ प
 न में पड़तो देखि कै रिस कौ नशा करि कै बोली जो
 रति में उत कौ नही जावते तो परान में क्यों पड़ते ।

यहाँ पीतम नै अधराध कस्यो नव रोस कस्यो और पी
तम पायन में पड्यो नव राजी जई याते मध्यम ना
यिका है और जो गति में उतकों नही जावते तो पगन
में क्यों पडते जैसे कह वासों संभवना अलंकार है ॥

३०४॥ अथ अधमा लक्षणा ॥ दोहा ॥ हितका
री ह पीय पै अहित करे जो नारि ॥ चेष्टा याकी अध
म यों अधमा कही विचारि ॥ ३०५॥ टीका ॥ हि-
तकारी सी पीतम पै जो नारि अहित करे चाफ़ी
चेष्टा अधम है जैसे विचारि करे के अधमा कही
है ॥ ३०५॥ अथ अधमा सिध्या ध्यवर्ति
ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय वर बिनती भाष-
ना बोली अधिक रिसायै ॥ नम फूलन की माल जोर
रै सु तुम्है पत्याय ॥ ३०६॥ टीका ॥ पीतम कौं सु-
दर बिनती भाषता अधिक रिसा करे के बोली जो
नम का फूलन की माल कौं धारणा करे सो तुमको प-
त्यावै ॥ यहाँ बिनती भाषता कविन बोली याते अ-
धमा नायिका है और नायक कौं विश्वास सिध्या
मानि नम फूलन की माल को धरयो सिध्या है या
ते सिध्या ध्यवर्ति है ॥ ३०६॥ अथ ललित
लक्षणा ॥ दोहा ॥ जो कह प्रस्तुत धर्म से वर्ननी
य वृत्तांत ॥ अ प्रस्तुत प्रति विव करि वर्नत ललित मु-
ख्यात ॥ ३०७॥ टीका ॥ जो कह प्रस्तुत का धर्म
को वरीदा जोरय वृत्तांत होय ॥ अ प्रस्तुत को प्रति
विव करि के वर्नन होय सो ललित है ख्यात जाह
३०७॥ अथ अधमा लक्षणा ॥ दोहा ॥

दोहा ॥ वर्जत निशि मै गवन करि दोनों माल ग-
 माय ॥ और भये वर्जकन के काहें पकरे पाय ॥ ३०८
 टीका ॥ वर्जता निशि मै गमन करि कै माल गमादि
 यो और भया पै वर्जवा वालान के परान मै पड्या सों का
 ई है यहाँ नायक मै परा पकड्या तो भी नही मनी
 याते अधमा नायिका है ॥ और माल गुमावा वाला
 प्रस्तुत को वरान करि कै नायक को हृत्तांत जनायोय
 ते ललित अलंकार है ॥ ३०८ ॥ अथ नायक लक्ष-
 णा ॥ दोहा ॥ सुन्दर शील जु वासु घर कील कला कु-
 ल वान ॥ शुचि उदार गुन वानि तिहि नायक कहत
 सुजान ॥ ३०९ ॥ अथ प्रथम द्वितीय प्रहर्षन
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रहर्षन सु विन जतन ही वांछि-
 नाय हो जाय ॥ वांछित तैं अधिकार्य की सिद्धि सु द्वि-
 त य गनाय ॥ ३१० ॥ टीका ॥ बिना जतन ही वांछित
 अर्थ हो जाय सो प्रहर्षन है ॥ वांछित तैं अधिक अ-
 र्य की सिद्धि होय सो दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३१० ॥
 अथ नायक प्रथम प्रहर्षन उदाहरन ॥
 दोहा ॥ कर सुरली पट पीत धर शीश मुकट उर मा-
 ल ॥ वन तैं आवत मग निरखि अति हर्षित वृ-
 ज वाल ॥ ३११ ॥ टीका ॥ हाथ में सुरली पीला कप-
 ड़ा कों धारण कर्या जया शीश पै मुकट हृदय में माला
 धरा जया वन तैं आवता मग में देखि कै वृज वाल
 अत्यंत हर्षी यहाँ जतन बिना ही नायक कों देखि-
 कै वांछित अर्थ हो गयो याते प्रथम प्रहर्षन है ॥
 ति म उत पा ॥ ३११ ॥ दोहा ॥

परन्यौं पति उपपति सुतौ पर नारिन में लीन ॥ वैसिक
 गनिका नाह यौ भाषत त्रिविध प्रवीन ॥ ३१२ ॥ टीका
 परन्यौं ज्यो पति है पैला की स्त्री न में लीन होय सो
 उप पति नायक है वेश्या को पति वैसिक है यौ ती
 न प्रकार को भाषे है प्रवीन है सो ॥ ३१२ ॥ अथ प
 ति नायक द्वितीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दो०
 धनुष भंजि सब सें सरस लखि राहै निज पीय ॥
 प्रापत दुर्लभ लाभ में अति हर्षानी सीय ॥ ३१३ ॥
 टीका ॥ सब सें सरस धनुष भंजि कै अपना पीत
 म कौ राहा देखि कै दुर्लभ लाभ में प्राप्त हो कै सी
 ना अत्यंत हर्षाई ॥ यहाँ राम चंद्र पति नायक है
 और राम चंद्र की प्राप्ति बाँछित सें अधिक है यतैं
 दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३१३ ॥ अथ पति भेद ॥ दो०
 अनुकूल रु दक्षिणा रु शठ धृष्ट चारि पति मूल ॥ प
 रनी इकहा नारि को हितकारी अनुकूल ॥ ३१४ ॥ टी०
 अनुकूल दक्षिणा शठ धृष्ट ये चारि पति के भेद हैं
 परनी जुई सक ही स्त्री को हितकारी होय सो अ
 नुकूल है ॥ ३१४ ॥ अथ तृतीय प्रहर्षन विषा
 दन लक्षणा ॥ दोहा ॥ जतन वस्तु जिहि हेर तैं व
 हो मिले सु तृतीय ॥ बाँछित तैं उलटो मिले विषादन
 सु गुरानीय ॥ ३१५ ॥ टीका ॥ वस्तु को जतन हेरतों
 बाही वस्तु मिले सो तीसरो प्रहर्षन है ॥ बाँछित सें
 उलटो मिले सो विषाद न राणी ॥ ३१५ ॥ अथ अ
 नुकूल तृतीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दोहा ॥
 सिय पिय वल वन हित सगो सग जेनर को ॥ ३१६ ॥

नवहो सने सनेह में ज्ञान लखे मग राग ॥ ३१५ ॥ टी०
 मिथ है सो पिय कों बुलावा कै वास्ते धाम सैं सखी
 को मग देखे ही नवहो सनेह में सने ऊये राम मग
 में जाते देखे यहाँ राम अनुकूल नायक है और राम
 का बुलावा कों सखी कों वाट देखता राम ही मिले या
 तैं तीसरो प्रहर्षन है ॥ ३१५ ॥ अथ दक्षिण वि-
 षादन उदाहरन ॥ दोहा ॥ गई बुलावन निजम
 वन बज्जत प्रिया पिय धाम ॥ सब को सम सनमानवा
 गे वन में घन प्रयास ॥ ३१७ ॥ टीका ॥ अपना भवन
 में बुलावा कै वास्ते बज्जत प्रिया है सो पिय के धा-
 म गई ॥ सब को बराबर सन्मान करि कै घन प्रयास
 हैं सो वन में गये यहाँ सब को सनमान समान क-
 र्यो यातैं दक्षिण नायक है ॥ और कृष्ण कों बुला-
 वा गई वै उलटा वन कों चल्या गया यातैं विषाद
 न है ॥ ३१७ ॥ अथ उल्लास लक्षणा ॥ दोहा ॥
 गुन दोषन करि एक के ज्ञानहि है गुन दोष ॥ चारि
 भेद उल्लास के वर्नत कवि सति कोष ॥ ३१८ ॥ टीका
 एक के गुन दोष करि कै और कों गुन दोष होय ॥
 उल्लास के चारि भेद वर्ने है ॥ सति के भंडार कवि हैं
 सो ॥ ३१८ ॥ अथ शठ प्रथम उल्लास लक्षणा
 दोहा ॥ सित वचनी कपटी वहै शठ नायक पर-
 कास ॥ इक के गुन सैं ज्ञान कों गुन होय सु उल्ला-
 स ॥ ३१९ ॥ टीका ॥ सीठा वचन दोलवा वालो हो
 य ॥ कपटी होय सो शठ नायक है प्रकास जाहुर ॥
 । न ज्ञान में और कों गुन होय सो प्रथम उल्लास

है ॥३१८॥ अथ शठ प्रथम उल्लास उदाहर
न ॥ दोहा ॥ तुव अधरा मृत ध्यान धरि बचै प्रिया
निशि प्रान ॥ अब अधरा मृत ध्यान धरि है हो अस
निदान ॥३२०॥ टीका ॥ तेरा अधरन का असृत को
ध्यान धरि के हे प्रिया राति में प्रान बच अब अधरा
मृत पान करि के असर होऊंगी निदान निश्चय यह
कपट में सीठी बात करे हे यातें शठ नायक है और न
यिका का अधरा मृत का गुन सैं नायक कों गुन भयो
यातें प्रथम उल्लास है ॥३२०॥ अथ धृष्ट द्विती
य उल्लास लक्षणा ॥ दोहा ॥ निलजनि उर अपरा
ध कर नायक धृष्ट गनीय ॥ होय दोष पर दोष सैं सो
उल्लास द्वितीय ॥३२१॥ टीका ॥ लाज रोहित डर रहि
त अपराध करे सो धृष्ट नायक ग नों ॥ पैला का दोष
सैं दोष होय सो दूसरो उल्लास है ॥३२१॥ अथ धृ
ष्ट द्वितीय उल्लास उदाहरन ॥ दोहा ॥ पायन म
रत पाय परि बोलै लाल सुजान ॥ तो वियोग मोभा
ल में क्यों लिख्यो अप्रान ॥३२२॥ टीका ॥
पायन की मारता जया पगन सैं पाडि के सुजान ल
ल बोल्यो तेरो वियोग मेरा भाल में अयान विधि
ने क्यों लिख्यो यहाँ निलजनि उर है यातें धृष्ट
धृष्ट है और मारि दो नायिका का दोष सैं ब्रह्मा
का दोष है यातें दूसरो उल्लास है ॥३२२॥ अथ तृ
तीय चतुर्थ उल्लास लक्षणा ॥ दोहा ॥ इक केरु
न सैं ज्ञान की दोष सु तृतीय प्रकास ॥ होय दोष सैं
॥३२३॥ टीका ॥ जहाँ है चौथो उल्लास ॥३२३॥

गुन में और कौं दोष होय सो तीसरो उल्लास है ज
हां दोष में गुन होय सो चौथो उल्लास है ॥३२३॥

अथ उपपत्ति तृतीय उल्लास उदाहरन ॥
दोहा ॥ प्रेम रूप गुन रस भरी है वृषभानु किशोरि ॥
मिलै निकुंजन एकली सो न सीव को खोरि ॥३२४॥

टीका ॥ प्रेम रूप गुन रस की भरी जड़ वृषभानु की
बेटी है सो निकुंजन में एकली नहीं मिलै सो भाग
को दोष है यहाँ राधिका में निकुंजन में मिलवा की
चाहे है याँ उपपत्ति है और राधिका का गुन में
नसीव को दोष है याँ तीसरो उल्लास है ॥३२४॥

अथ वैशिक चतुर्थ उल्लास उदाहरन ॥ दो०
पति में अति रागी रहे धन लालच लागि बाल ॥ याही
कारन ते मुदित रहे विहारी लाल ॥ ३२५॥ टीका ॥

पति में अत्यंत रागी रहे है धन का लालच में लागि
करि के बाल है सो याही कारन में विहारी लाल प्र
सन्न रहे है यहाँ धन लालच वाली में मुदित रहे या
तें वैशिक नायक है और धन लालच दोष में विहा
री लाल में मुदित हो वो गुन है याँ चौथो उल्लास है
३२५॥ दोहा ॥ और त्रिविधि नायक कहों मानी

अथम पिछानि ॥ वचन चतुर है तीसरो किया चतु
र उर जानि ॥ ३२६॥ **अथ मानी अतुल्य कल**
रा ॥ दोहा ॥ मान करे वनितान से मानी नायक सो

य ॥ अचला सु गुन दोष करे जहं गुन दोष न होय
३२७॥ टीका ॥ वनितान से मान करे सो मानी नाय

॥ त नै जहं दोष करि के गुन दोष नहीं होय सो

जा है ॥ ३२७ ॥ अथ मानी अवज्ञा उदाहरन ॥

दोहा ॥ दोष ठानि हठ ठानियो कित सीखे ये रज्या
ल ॥ रीरु खीज वर बाल की मन नहिं आनों लाल ॥

३२८ ॥ टीका ॥ दोष ठानि करिके हठ ठानियो ये
रज्याल कहाँ सीखे मंदर बाल की रीरु खीज है ला-
लमबमें नहीं आनों यहाँ हठ सों मानी नायक है औ-
र नायिका का रीरु खीज गुन दोष नहीं लग्या याते
अवज्ञा अलंकार है ॥ ३२८ ॥ अथ बचन चतुर

अनुज्ञा लक्षणा ॥ दोहा ॥ कौरे बचन में चतुरी
बचन चतुर पहिचानि ॥ दोषहि कौं गुन मानि चहै
तहाँ अनुज्ञा जानि ॥ ३२९ ॥ टीका ॥ बचन में चतुर
राई कौरे सो बचन चतुर पहिचानों दोष की गुन
मानिके चाह कौरे तहाँ अनुज्ञा जानों ॥ ३२९ ॥

अथ बचन चतुर अनुज्ञा उदाहरन ॥ दो-
हा ॥ सब घर के अनत में ही रह्यो निदान ॥ अब
डोर जगि हारि सुमिरि हों मानि याहि कल्यान ॥

३३० ॥ टीका ॥ सब घर के और तौर गये में ही र-
ह्यो निदान निश्चय अब डरोप के जागि के हारि कौं
सुमरों गो याकौं कल्यान मानि के यहाँ परकीया
नायिका कौं सुनावै है मैं अकेली हों याते बचन च-
तुर है ॥ और यकला रह वा डर वा दोष कौं गुन आ-

नि अंगीकार कस्यो याते अनुज्ञा है ॥ ३३० ॥ अथ
क्रिया चतुर लेख लक्षणा ॥ दोहा ॥ कौरे क्रि-
या में चतुरी क्रिया चतुर सो तेस ॥ गुन दोषन में दोष
गन कल्यान स है तेस ॥ ३३१ ॥ टीका ॥ क्रिया में चतुर

गई कौं सो किया चतुर नायक है ॥ गुन दोषन में दो
 ष गुन को कल्पना होय सो लेस अलंकार है ॥ ३३१ ॥
 अथ किया चतुर गुन में दोष लेस उदाहर-
 न ॥ दोहा ॥ आली बज्जत तियान में मोहि निरखि
 नंद लाल ॥ विहसि कैंत शिर धरत निति रूप भयो जं
 जाल ॥ ३३२ ॥ टीका ॥ हे आली बज्जत तियान में मो
 को दोरख के नंदलाल है सो विहसि के नित्य शिर पे
 कमल धरे है मेरो रूप है सो जंजाल भयो यहाँ ना-
 यक ने कमल साथ पै धरे के प्रणय जनायो याते
 किया चतुर नायक है और परणाम गुन है ताको दो
 ष सान्यो याते लेस है ॥ ३३२ ॥ अथ प्रोषित दो
 ष से गुन लेस उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्यारे विन
 परदेश में करते ज्ञान पयान ॥ पै यह सोर कठोरता
 नित्य जिवावत नान ॥ ३३३ ॥ टीका ॥ प्यारे विना
 परदेश में ज्ञान पयान करते परन्तु यह मेरी कठो-
 रता नित्य जिवावै है न ज्ञान और नही जिवावै है
 यहाँ परदेश में है याते प्रोषित नायक है ॥ और क
 ठोरता दोष से जीवो गुन है याते लेस अलंकार
 है ॥ ३३३ ॥ अथ अनभिज्ञ मुद्रा लक्षणा ॥
 दोहा ॥ नाह समुह तिय रसन में सो अनभिज्ञ वरु-
 नि ॥ प्रकृत अर्थ में और ह कढे सु मुद्रा मानि ॥
 ३३४ ॥ टीका ॥ तिय के रसन में नहीं समुह सो अन-
 भिज्ञ वरुनौ ॥ प्रकृति अर्थ में और भी कढे सो मुद्रा
 अलंकार जानौ ॥ ३३४ ॥ अथ अनभिज्ञ उदा-
 ति न उदाहरन ॥ अथ अनभिज्ञ उदा-
 ति न उदाहरन ॥ अथ अनभिज्ञ उदा-

भय वैन ॥ प्रयाम कही क्यों गर गहत ह्यौतन क-
 ऊ भय हैन ॥ ३३५ ॥ टीका ॥ राधिका है सो प्रया-
 स का गला सों लपटी वन में भय का वचन कह-
 करिके ॥ प्रयास ने कही गलो क्यों गहै है ह्यौत-
 नक भी भय नहीं है ॥ यहाँ राधा को प्रेम कृष्ण
 ने नहीं जान्यो सो अनभिज्ञ नायक है ॥ और प्रया-
 स गरवन में ॥ इन अक्षरन में कारो जहर पानी में
 यह अर्थ निकसे है याते मुद्रा है ॥ ३३५ ॥ अथ
 उत्तम नायक रत्नावली लक्षणा ॥ दोहा ॥
 करै जतन तिय मान हर सो उत्तम जिय जानि ॥
 प्रस्तुत पद क्रम से कहे रत्नावली वरगानि ॥ ३३६ ॥
 टीका ॥ तिय है सो मान को हर वाको जतनक-
 रै सो जीव में उत्तम जानौ क्रम से प्रस्तुत पद कहे
 सो रत्नावली वरगानों ॥ ३३६ ॥ अथ उत्तम ना-
 यक रत्नावली उदाहरन ॥ दोहा ॥ वानी श्री
 बदली निरखि गौरी की नंदलाल ॥ भाषि वचन स-
 धुरे सरल खुस कोर लीनी हाल ॥ ३३७ ॥ टीका ॥
 गौरी की वानी और श्री बदली देखिके नंदलाल
 ने सधुरे और सरल वचन भाषि के नुरत खुस कर-
 ली यहाँ बाल को प्रसन्न कर लीनी याते उत्तम ना-
 यक है और वानी श्री गौरी उत्पति पालन प्रलय
 के क्रम से निकसी याते रत्नावली अलंकार है ॥ ३३७ ॥
 अथ मध्यम तद्वन लक्षणा ॥ दोहा ॥ कर-
 त न रस रिस रिस चैती तिय सों मध्यम सोय ॥
 निज गुन ताज संगति गनहि गने सो

य ॥ ३३८ ॥ **टीका ॥** इस वाली तिय में प्रेम रोस
 नहीं करे सो मध्यम नायक है ॥ अपना गुन कौ
 ताज के संगति का गुन कौ राहे सो तदुन अलंकार
 है ॥ ३३८ ॥ **अथ मध्यम तदगुन उदाह-**
रन ॥ दोहा ॥ तिय अन बोली लखि तुरत ठरि
 रहे वृजनाथ पुनि हसती लखि जाय दिंग भये ह
 रि भरी वाय ॥ ३३९ ॥ **टीका ॥** तिय कौ तुरत अ
 न बोली देखि के वृजनाथ ठरि रहे फेरि हस-
 ती देखि के दिंग जा करि के वाय भरी के हारि भ-
 ये यहाँ अनबोली देखि ठरि के बोली तब मिल
 गये याने मध्यम नायक है और वाय भर वामे
 हरे भये सो पीला से कालो मिले तब हरयो होय
 है याने तदुन है ॥ ३३९ ॥ **अथ अधम पूर्व**
रूप लक्षणा ॥ दोहा ॥ कोल समय अधमने ल-
 खे लाज भीति तजि देय ॥ पूर्व रूप गहि संग गुन
 ताज पुनि निज गुन लेय ॥ ३४० ॥ **टीका ॥** कोल
 का समय में लाज भीति तजि दे सो अधम नायक
 है ॥ संगति का गुन लेकर फेरि ऊँकें ताज के अ-
 पना गुन कौ ले सो पूर्व रूप अलंकार है ॥ ३४० ॥
अथ अधम पूर्व रूप उदाहरन ॥ दोहा
 पिय लखि प्राशि वरनी प्रिया होत लाल रंगि रंग
 पुनि कर पकरत सरिन नै होत सेत ताजि रंग ॥
 ३४१ ॥ **टीका ॥** पिय कौ देखि करि प्राशि वरनी
 प्रिया है सो रंग में रंगि के लाल होय है फेरि
 गजानन ले कर चकरना रंग कौ ताजि के सेत होय है

यहाँ बिना समय हाथ पकाडि वारोँ अधम ना
यक है और पीतम का राग का संग सौँ लाल रंग
लियो फोर हाथ पकाडि ते आप को सेत रंग लि-
यो याते पूर्व रूप है ॥३४१॥ अथ धीर ललि
तद्वितीय पूर्व लक्षण ॥ दोहा ॥ सुखी कला नि-
धि निः फिकर धीर ललित जिय जोय ॥ मिटैं व-
स्तु नहिं गुन रहै पूर्व रूप भिद होय ॥३४२॥

टीका ॥ सुखी होय कला निधि होय निः फिक-
र होय सो जीव मै धीर ललित देखौ जो वस्तु का
मिल्या सँ गुन रह जाय सो पूर्व रूप को दूसरो भे-
द है ॥३४२॥ अथ धीर ललित पूर्व रूप
उदाहरण ॥ दोहा ॥ धीर कला निधि सुख स-
दन रम प्रताप प्रकास ॥ अस्त भये रवि के रहत
छाय धरा आलास ॥३४३॥ टीका ॥ धीर और
कलान की निधि सुख का घर जो रम हैं उनका
प्रताप को प्रकास है सो सूरज के अस्त भये पै
पृथ्वी आसमान में छाये रहै है यहाँ धीर ललि-
त नायक है और रवि अस्त तम हो वाको कारन
भयो तो भी तम न मिल्यो यातें दूसरो पूर्व रूप
है ॥३४३॥ अथ धीरोद्धत अतदगुन लक्ष-
ण ॥ दोहा ॥ धीरोद्धत गर्वी छली निज गुन वक्ता
जेय ॥ अतदुन सु संग ऊ भये गुन ताके नहि लेय ॥
३४४॥ टीका ॥ धीरोद्धत है गर्वी है छली है अ-
पना गुन को वक्ता जानौ ॥ संग भी भया पै ताके गुन
नही लेय सो अतदुन अलंकार है ॥३४४॥ अथ

धीरोद्धत अतद्गुन उदाहरन ॥ दोहा ॥

गर्वी लला व डाय लाहौ शिर सौर छलीन ॥ वसत

रग घर बाल मन तउ अनुराग नलीन ॥ ३४५ ॥

टीका ॥ हे लला गर्वी हौ व डाय लाहौ छलीन का

शिर सौर हौ रग को घर जो बाल को मन है ऊँमें

वैसे हौ तो भी अनुराग वही लियो यहाँ गर्वी छली

है याते धीरोद्धत नायक है ॥ और रग को घर जो

बाल को मन है तामें वैसे है तो भी अनुराग न-

ही लियो याते अतद्गुन अलंकार है ॥ ३४५ ॥ अ

थ धीर शान्त अनु गरा लक्षणा ॥ दोहा ॥

धीर शान्त शुचि श्रुति गुनी विनयी नायक गाय ॥

अनुगुन सो संगति भये पूरव गुन अधिकाय ॥

३४६ ॥ टीका ॥ शुचि होय श्रुति होय गुनी हो

य विनयी होय सो धीर शान्त नायक गावो संग-

ति भये पै पूरव गुन अधिकावे सो अनुगुन है ॥

३४६ ॥ अथ धीर शान्त अनु गरा उदाहरन

दोहा ॥ धीर शान्त शुचि नय सदन लहि संगति र-

घुचौर ॥ विनयी और हर लखन भी श्रुति विजयी

रगा धीर ॥ ३४७ ॥ टीका ॥ धीर धीरज बान शान्त

शुचि पीवित्र नीति के घर लक्ष्मणा है सो रामचंद्र

को संगति पावोर कै विनय बान भयो बैरीन को

सारवा बालो भयो अत्यंत विजयी भयो रगा धीर

भयो यहाँ नायक धीर शान्त है और लक्ष्मणा में रघु-

चौर को संगति सैं पीहला गुन अधिक भयो याते

अनुगुन अलंकार है ॥ ३४७ ॥ अथ धीरोद्दा-

तमी लित लक्षणा ॥ दोहा ॥ छमी गंभीर सत
 व्रत रु विजयी धीरो दात ॥ मीलित मीलित में जहाँ
 भेद न तनक लखात ॥ ३४८ ॥ टीका ॥ छमावान
 होय गंभीर होय अच्छया व्रत सहित होय विज
 यो होय सो धीरो दात है ॥ मीलित में जहाँ तनक
 भेद नही लखावै सो मीलित अलंकार है ॥ ३४८ ॥
 अथ धीरो दात मीलित उदाहर ॥ दोहा
 विजयी छमी गंभीर अति कोप्यो समर मझार ॥
 तब न लखन कै लखि पर्यो चंदन लाल लिलार ॥
 ३४९ ॥ टीका ॥ विजयी विजयवान छमी छमा
 वान अत्यंत गंभीर समर का बीच में कोप्यो त
 व लक्षणा का लिलार में लाल चंदन को तिलकन
 ही देखि पर्यो यहाँ नायक धीरो दात है ॥ लिलार
 का रंग में चंदन मिलि गयो याते मीलित है ॥ ३४९ ॥
 अथ दर्शन ॥ दोहा ॥ देखै तिय पिय हित स
 हित दर्शन ताहि बिचारि ॥ अवन स्वप्न पुनि बि
 व कहि साक्षात सु विधि चारि ॥ ३५० ॥ अथ सा
 मान्य उन्मीलित लक्षणा ॥ दोहा ॥ सो सा
 मान्य समान में नाहि न विशेष लखाय ॥ जब सी
 मेत में भेद है उन्मीलित तब गाय ॥ ३५१ ॥ टीका
 मान में विशेषन हो लखावै सो सामान्य है जब
 मीलित में भेद होय तब उन्मीलित गावो ॥ ३५१ ॥
 अथ अवरा दर्शन सामान्य उदाहरन ॥
 दोहा ॥ सुनि गुणाल गुन बाल के मुख अतिलानी
 त ॥ तब मसाल सख बाल के

च० भ०

त ॥ ३५२ ॥ टीका ॥ गुणाल के गुन सुनि करि के बा
 ल के मुख में अत्यंत लाली आवै है तब मसाल
 और बाल को मुख न्यारे नही जान्यो जाय यहां
 मसाल बाल से भेद नही याते सामान्य है ॥ ३५२ ॥
 अथ स्वप्न दर्शन उन्मीलि उदाहरन ॥ दो०
 स्वप्न सेत ते मिलि रहे केसर लागी भाल ॥ जागत-
 ही जानी परे होत सेत रंग बाल ॥ ३५३ ॥ टीका ॥
 स्वप्ना का सेत सौ भाल में लागी केसर हे सो मिलि
 रहे जागतां ही बाल को सेत रंग होता जानी परे
 है यहां मिली केसर जानि परी याते उन्मीलित
 है ॥ ३५३ ॥ अथ विशेषक गूढोत्तर लक्षणा
 दोहा ॥ है विशेष सामान्य से वहे विशेषक
 मानि ॥ उत्तर दीने भाव ते गूढोत्तर पहिचानि ॥
 ३५४ ॥ टीका ॥ सामान्य से विशेष होय वह
 शेषक मानों भाव से उत्तर दिया पे गूढोत्तर पहि-
 चाने ॥ ३५४ ॥ अथ चित्र दर्शन विशेषक
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत चित्र नंद लाल को
 भई चित्र बत नारि ॥ नीति पिछानी जाति है
 आवत सास निहारि ॥ ३५५ ॥ टीका ॥ नंद
 को चित्र देखता नारि है सो चित्र की नाई भई
 उसासन कौ आवता देखि के नीति पिछानी
 है यहां दो चित्रन से उसास ले वासों
 नो याते विशेषक अलंकार है ॥ ३५५ ॥
 अज्ञात दर्शन गूढोत्तर उदाहरन ॥

लाल लगात न लैर वा आज हमारी गाय ॥ ३५६ ॥
 टीका ॥ पहल पहल देखि के अभिलाखिनी है
 सो हिया में हर्षा करि के बोली है लाल आज ह
 मारी गाय है सो बछड़ान कों नहीं लगावे ॥ यह
 बाछरान कों नै लगावो नाम ले करि भीतर गयो चा
 है है यानै गदोत्तर है ॥ ३५६ ॥ अथ सरवी व-
 रानि ॥ चौपाई ॥ जासों प्रिया दुरावन राखे ॥ ता
 तिय कों सजनी सम भाषे ॥ मंडन सिद्धा ताके काम
 उपालंभ परिहास ललामा ॥ ३५७ ॥ अथ चि-
 त्र सुद्धम लक्षणा ॥ दोहा ॥ प्रश्नहि में उत्तर
 कटे सो चित्रा लंकार ॥ पर आशय लीख जहं कि
 या करै सु सुद्धम विचार ॥ ३५८ ॥ टीका ॥ प्र-
 ष्न में उत्तर कटे सो चित्रा लंकार है ॥ पैला का आ
 शय कों देखि के जहाँ किया करै सो सुद्धम जलं
 कार विचारो ॥ ३५८ ॥ अथ मंडन चित्र उदाहर-
 न ॥ दोहा ॥ अंजन दे बिंदुली दई नय पहिरा-
 य सुदार ॥ नख सिख साजि सिंगार पुनि काकीनै
 उपहार ॥ ३५९ ॥ टीका ॥ अंजन दे करि के बिंदु
 ली दई सुदार सुंदर नय पहिरा करि के नख सौं ले
 करि के सिख ताई सिंगार साजि के काई उपहार क
 र्यो हार यहाँ का उपहार कस्यो हार उपहार कस्यो
 यह उत्तर निकस्यो यानै चित्र जलंकार है ॥ ३५९ ॥
 अथ सिद्धा सुद्धम उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलि
 अलि पिय सों मिलन हित करि अति रति हित सा-
 धि ॥ यों सुनि सजनी और तिय चित दे मही लोधि

३६० ॥ टीका ॥ हे अलि पिय सों मिल बाँके वा
 स्ते चलि हित कों साधि करि कै अत्यंत रतिकारि
 जैसे सुनि करि कै सजनी की और तिय है सो मै
 ची बाँधि करि कै काँकी यहाँ मैवी बाँधि बासोंयों
 जतायो फसल सुदेगा जब मिलों गी यातें सूक्ष्म
 अलंकार है ॥ ३६० ॥ अथ पिहित व्याजोक्ति
 लक्षणा ॥ दोहा ॥ पिहित जानि पर बात को आ
 शय सहित जनाव ॥ व्याजोक्ति सु पर हेतु कहि
 जहँ आकार पुराव ॥ ३६१ ॥ टीका ॥ पैला की
 बात को आशय सहित जनावै सो पिहित अलं
 कार है ॥ पैला को हेतु कह करि कै जहाँ आकार
 कों छिपावै सो व्याजोक्ति अलंकार है ॥ ३६१ ॥
 अथ उपालंभ पिहित उदाहरन ॥ दोहा ॥
 प्यारी प्यारी सरखिन सों मुकुरव भूलि कहाय ॥ यों
 कहि अति हर्षाय हिय दीनों मुकुर दिखाय ॥ ३६२ ॥
 टीका ॥ हे प्यारी प्यारी सरखिन सों मुकुर वो है
 सो भूलि कहावै है ॥ जैसे कह करि कै हिया में अ
 त्यंत हर्षा करि कै काच दिखा दियो यहाँ दर्पन
 दिख के सुरत चिन्ह दिखाया यातें पिहित अलं
 कार है ॥ ३६२ ॥ अथ परिहास व्याजोक्ति
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ पान खवावत विन सम
 य कह्यो प्रिया गाहि सार ॥ शीत पवन तैं परिग
 ई आली अधर दरार ॥ ३६३ ॥ टीका ॥ विना
 समय पान खवावता प्रिया ने सार गाह करि कै क
 ह्यो शीत का पवन से हे आली अधरन में दरार

पोर गई यहाँ सखी नै दंत च्छात देखि विना समय
 पान खवायो यह सखी को पोरहास जानि नायिका
 नै सीत पवन को दगर कह करि आकार छिपायो या
 नै व्याजोक्ति अलंकार है ॥३६३॥ **दूती वर्णन ॥**
दोहा ॥ तिय पिय के संदेश बच कहै सु दूती बाम
 बिरह निवेदन मिलव नहि दै दूती के काम ॥३६४॥
अथ उत्तम दूती गूढोक्ति लक्षणा ॥ दो०
 उत्तम दूती मन हरै भाषि सधुर वर वात ॥ गूढो
 क्ति तु मिस आन के कहै आन सै बात ॥३६५॥
टीका ॥ सधुर और सुन्दर बचन भाषि करि कै म-
 न को हरै सो उत्तम दूती है ॥ और के मिस सै और सै
 बात कहै सो गूढोक्ति अलंकार है ॥३६५॥ **अथ**
उत्तम दूती गूढोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लख
 राधे कौं सात दिंग कहि कीरति सै बाम ॥ स्वामि-
 नि आज निकुंज मै कोरि है कोतुक प्रयाम ॥३६६॥
टीका ॥ राधिका कौं साता कै दिंग देखि कै बाम
 नै कीरति सै कही है स्वामिनि आज निकुंज मै
 प्रयाम कोतुक कोरे गे यहाँ सधुर बचन सै उत्तम
 दूती है और राधा की साता सै कहै है राधा कौं सु-
 नावै है यानै गूढोक्ति अलंकार है ॥३६६॥ **अथ**
मध्यम दूती विवृतोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥
 मध्यम दूती परुष मृदु बोले बचन बनाय ॥ श्लेष
 छिप्यो प्रगटाय जब तहँ विवृतोक्ति कहाय ॥३६७॥
टीका ॥ कठोर और कोमल बचन बना करि कै बो-
 लै सो मध्यम दूती है जब छिप्या जया श्लेष कौं

प्रगटावे तहाँ विवृतोक्ति कहावे है ॥ ३६७ ॥ अथ म-
ध्यम दूती विवृतोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उम-
गि उमगि बज्र दिनन से घेरि रहे सब ठाम ॥ बिष-
म वात उत्पात ते अब हटि हैं घन प्रयाम ॥ ३६८ ॥
टीका ॥ बज्रत दिनन से उमगि के सब ठाम घेरि रहे
भयंकर पवन और उत्पात ते अब घन प्रयाम हटै
गे यहाँ सीठा कठिन बचन से मध्यम दूती है और
घन प्रयाम काला बादल बिषम पवन से हटै या अ-
र्थ में श्लेष छिप्यो रह्यो परंतु उत्पात शब्द से घन
प्रयाम को अर्थ छप्पा और बिषम वात को अर्थनि-
न्दा के बचन निकसे याते विवृतोक्ति है ॥ ३६८ ॥
अथ अधम दूती युक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ कौ-
दत ता परुष कीह अधमा दूती सोय ॥ मर्म छिपावे
करि किया युक्ति अलंकारि होय ॥ ३६९ ॥ टीका
कठोर बचन कह करि के दूतता को सो अधमा दूती
है ॥ किया करि के मर्म को छिपावे सो युक्ति अलं-
कार होय है ॥ ३६९ ॥ अथ अधमा दूती युक्ति
उदाहरन ॥ दोहा ॥ अमित देखि पिय सौ रसी
मानि रही अनखाय ॥ वेग चली कीह दूतिका कर
को सास बढ़ाय ॥ ३७० ॥ टीका ॥ अमित देखि के
पिय सौ रसी मानि के अनखा रही जलदी चली अ-
से कह करि के दूतिका है सो सास बढ़ा करि के कड़
का यहाँ सास बढ़ा के कड़को याते अधमा दूती है
और प्यार सौ रसियो सास बढ़ावो किया करि के
प्यार सौ रसियो छिपायो याते युक्ति अलंकार है ॥

३७०॥ अथ विरह निवेदन लोकोक्ति ल-
क्षणा ॥ दोहा ॥ तिय प्रिय को जु वियोग दुख भा-
ये मन हित मानि ॥ कथै लोक कहना वती सो लोको-
क्ति वखानि ॥ ३७१॥ टीका ॥ जो तिय प्रिय का वि-
रह को दुख मन सै हित मानि करि कै भाये लोक की
कहना वती कथै सो लोकोक्ति वखानौ ॥ ३७१॥ अथ
प्रिय विरह निवेदन लोकोक्ति उदाहरन
दोहा ॥ निरखत मग तेरो लली तो बिन दुखित गुण-
ल ॥ चलि जलदी मिलि सति चले आज काल की
चाल ॥ ३७२॥ टीका ॥ हे लली तेरो मग देखैं हैं तो
बिना गोपाल दुखी हैं जलदी चलि कै मिलि आज
काल की चाल सति चले यहाँ आज काल लोको-
क्ति है ॥ ३७२॥ अथ छेकोक्ति - प्रोक्ति ल-
क्षणा ॥ दोहा ॥ और अर्थ लोकोक्ति मै कटै होय
छेकोक्ति ॥ अर्थ फिरै अवर श्लेष सौं जानि लेइ व-
जोति ॥ ३७३॥ टीका ॥ लोकोक्ति मै और अर्थ क-
टै सो छेकोक्ति अलंकार है ॥ अवर सौं श्लेष सौं अ-
र्थ फिरै सो वजोक्ति जानि ल्यौ ॥ ३७३॥ अथ प्रि-
या विरह निवेदन उदाहरन ॥ दोहा ॥ भई
विकल अति दूवरी विरह वावरी चाल ॥ भूलि ऊँ ला-
ल लखौ न तुम शुक लोचन की चाल ॥ ३७४॥ टीका
विकल भई अत्यंत दूवरी भई चाल है सो विरह सै
वावरी भई है लाल तुम भोलापन मै भी नही देखी
हो तो ताका नेत्रन की सो चाल है यहाँ शुक लो-
चन की चाल यह लोकोक्ति है और ई में यह अर्थ

निकस्यो जैसे सुवो नेत्र बदल ले है तैसे तुम बदल
 ल्यो हो यह केकोक्ति है ॥ ३७४ ॥ अथ मिलाय
 वकोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लाई आज दग
 ज मति रति से लोनी वाल ॥ इहि रस वस है रसि नि-
 शा याहि भूलि हो लाल ॥ ३७५ ॥ टीका ॥ आज ब-
 डी मति कीरति से सुंदर वाल लाई हो ईका रस में
 वस होकरि कै रावि में रसि कीरि कै है लाल याको
 भूलो गा अर्थात् नही भूलो गा यह स्वर सों श्लेष
 फेर्यो याते वकोक्ति है ॥ ३७५ ॥ अथ सरवा ब
 रानि ॥ दोहा ॥ पीठ महु विट चेतक रु कर्म सचि
 व पहिचानि ॥ बहुरि विदूषक पांच विधि नायक
 सरवा बखानि ॥ ३७६ ॥ अथ पीठ महु स्वभा
 वोक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ मानवतीहिम नासके
 पीठ महु निधारि ॥ वर्गान जाति स्वभाव को स्वभा-
 वोक्ति लंकार ॥ ३७७ ॥ टीका ॥ मानवती के नाई
 मनासके सो पीठि महु नायक है ॥ जाति को और
 स्वभाव को वर्नन होय सो स्वभावोक्ति अलंकार
 है ॥ ३७७ ॥ अथ पीठि महु स्वभावोक्ति उ
 दाहरन ॥ दोहा ॥ मुकुट लकुट पट पीत धरला
 य ललो घर हाल ॥ पायन पारि मुगारि कौ हार्षित की-
 नी वाल ॥ ३७८ ॥ टीका ॥ मुकुट और लाकड़ी पीत
 पट कौ धारण करि कै ललो कै घर नुरत हो ला करि कै
 मुगारि कौ पगन में पट कि कै वाल कौ हार्षित करी यहौ
 जाति को वर्गान है याते जाति अलंकार है ॥ ३७८ ॥
 दोहा ॥ जोगी नै जोगी धरि लखि वैरी शिर नाय
 जोगी का पवन न है शिर नाय

वात बनाय विनोद की लीनी वेग बुलाय ॥ ३७८ ॥
टीका ॥ त्योंरी और मौन मरोरि धरि कै शिर नवा-
 ये दृय वैठी देखी कै विनोद की बान बना करि कै ज-
 लदी बुला लीनी यहां त्योंरी मौन मरोरि धरि वो सु-
 भाव है याते स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ३७८ ॥ अथ
वित भाविक लक्षणा ॥ दोहा ॥ वित सो काम
 कथान में चतुराई सरसात ॥ भाविक भावी भूत को ज-
 हें चरान साक्षात ॥ ३७९ ॥ **टीका ॥** काम कथान में
 चतुराई सरसावै सो वित है भावी भूत को जहाँ साक्षा-
 त वरण होय सो भाविक अलंकार है ॥ ३७९ ॥ अथ
वित भाविक उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलौ लाल-
 लालच भरी ललना तुम्हें बुलात ॥ लखौ लाडली सदन
 में रमा सदन छवि छात ॥ ३८० ॥ **टीका ॥** हे ला-
 ल चलौ लालच की भरी ऊई ललना तुमको बुलावै है
 देखौ लाडली का सदन में रमा कासा सदन की छवि
 छावै है यहाँ रमा को सदन यहिलै हो और आगे र-
 है गो सो राधिका का भवन में वर्तमान काल में बन्यो
 याते भाविक अलंकार है ॥ ३८० ॥ अथ **चेटक**
नर्म सचिव लक्षणा ॥ दोहा ॥ चेटक चतुर मि-
 लाय में जानि कार तिय चित ॥ नर्म सचिव हरि को
 सरख दे मिलाय तिय मित ॥ ३८१ ॥ अथ **उदात्त**
लक्षणा ॥ दोहा ॥ पर के ग्लाध्य चरित्र को चिन्ह
 जनावन हार ॥ बर्नन संपति चरित को द्विविध उदा-
 त उदार ॥ ३८२ ॥ **टीका ॥** पैला का ग्लाध्य चरित्र
 का चिन्ह को

नैन होय सो उदात्त है सो दो तरह को है हे उदार ॥
 ३८३ ॥ अथ चेटक प्रथम उदात्त उदाहरण ॥
 दोहा ॥ लली चली कित जात है भूलि गेल मग मां
 हि ॥ भली भाँति धसि देखि हरि रास ठाम यह आहि
 ३८४ ॥ टीका ॥ हे अली कहाँ चली जाय है गेल भू
 लि कै मग कै माँहि भली भाँति सौं धसि करि कै देखि
 यह हरि को रास ठाम है यहाँ रास स्थान कृष्ण का
 प्लाध्य चरित्र को वर्नन है याने प्रथम उदात्त है ॥
 ३८५ ॥ अथ नर्म सचिव द्वितीय उदात्त उ
 दाहरण ॥ दोहा ॥ लै गोरो रस लैन मिस राधे कौं
 भुलवाय ॥ रसानाथ सम सदन थित हरि लखि रही
 लुभाय ॥ ३८५ ॥ टीका ॥ गोरस लेवा का मिस सौं
 राधे कौं भुलवाय कै ले गयो ॥ विष्णु का भवन स
 मान भवन में कृष्ण कौं वैद्या देखि कै ललचा रही
 यहाँ गोरस लेवा का मिस सौं भुलवा करि ले गयो य
 नै नर्म सचिव है ॥ और कृष्ण का संपाति चरित्र को व
 र्णन है याने दूसरो उदात्त है ॥ ३८५ ॥ अथ विदू
 षक अत्युक्ति लक्षणा ॥ दोहा ॥ वेष रूप व
 चनादि कौं बदलि करे जो हास ॥ हरि राधा के मेल
 में कहत विदूषक तास ॥ ३८६ ॥ टीका ॥ वेष रू
 प वचनादिक कौं जो बदलि करि कै हास्य करे ह
 रि राधिका का मेल में ताँकों विदूषक कहें हैं ॥
 ३८६ ॥ दोहा ॥ अद्भुत कूट उदारता सूरतादि को
 होय ॥ जहँ अनन अत्युक्ति सो वज्र प्रकार की जो
 को पेंवने से है अलक्ष्य सूरतादि को कूट अद्भुत

वर्नन होय सो बज्जत प्रकार की अत्युक्ति है ॥३८७॥
अथ विदूषक अत्युक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥
 चङ्ग घालीगी निकुंज के वन में अति शय लाय ॥ वे
 दौ सँदि किंवार तुम से कीढ देझ भुजाय ॥३८८॥
टीका ॥ वन में निकुंज के च्यारों ओर में घरी-
 लाय लगी है तुम किंवार जुडि करि कै वेठी में क-
 टि के बुरा दौ हों यहाँ लाय को अति शय वर्नन
 है याते अत्युक्ति है ॥३८८॥ **अथ दूत वरी**
न ॥ दोहा ॥ दूत निस्पृष्टार्थ तु प्रथम द्वितीय मि-
 तार्थ उदार ॥ सु संदेश हारक तृतीय कावि गुलाब
 निर्धार ॥३८९॥ **अथ निस्पृष्टार्थ निरुक्ति**
लक्षणा ॥ दोहा ॥ जानि दुजन को भाव बर है उत्तर
 शुभ उक्ति ॥ अन्य अर्थ है योग में नामन को सुनि-
 रुक्ति ॥३९०॥ **टीका ॥** दोनून को श्रेष्ठ भाव जानि
 के शुभ बचन से उत्तर दे और का योग से नामन
 को और अर्थ होय सो निरुक्ति है ॥३९०॥ **अथ**
निस्पृष्टार्थ निरुक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥
 न अति चाहत राम को तुहि अति चाहत राम ॥
 तुम हर्ये हो होय गो साँचो रावन नाम ॥३९१॥
टीका ॥ न राम को अत्यंत चाहती है तोको रा-
 म अत्यंत चाहते हैं तुम प्रसन्न होवो गो साँचो
 रावन नाम होय गो यहाँ जानकी का हरन जोग से
 रावण को रोवणो साँचो नाम भयो याते निरुक्ति
 है ॥३९१॥ **अथ सितार्थ प्रतिषेध लक्षणा**
दोहा ॥ काय प्रसारा काजहि कर सो सितार्थ पाव

चानि ॥ कथन निषेध प्रसिद्ध को प्रति षेध सु उर-
 ज्ञानि ॥ ३८२ ॥ टीका ॥ प्रसारा कह करि के काज
 करे सो सितार्थ है प्रसिद्ध निषेध को कथन होय
 सो प्रति षेध हृदा से जानौ ॥ ३८२ ॥ अथ सित-
 र्थ प्रति षेध उदाहरण ॥ दोहा ॥ चलि निकुं-
 ज में लखि तालो नाचत है दे तार ॥ सोहन नंद कुमा-
 र नहि है मन्मथ अवतार ॥ ३८३ ॥ टीका ॥ हे
 जाली निकुंज में चलि के देखि ताल देदे करि के नाचै है मोह
 न है सो नंद कुमार नही है कामदेव का अवतार है यह कृष्ण
 को निषेध करि के कामदेव को अवतार चहरायो याते तषेध
 अलंकार है ॥ ३८३ ॥ अथ संदेश हारक विधि लक्षणा
 दोहा ॥ सु संदेश हारक कहै कही बात है साथ ॥
 सिद्ध करे जब सिद्ध कौं तब विधि भूषण होय ॥
 ३८४ ॥ टीका ॥ कही बात कौं कहे सो संदेश हा-
 रक है ॥ जब सिद्ध कौं सिद्ध करे तब विधि अलंका-
 र होय है ॥ ३८४ ॥ अथ संदेश हारक विधि
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ लाल कह्यो करि लालसा
 आज रास में आज ॥ प्यारी प्यारी होय गी जब दे
 है तजि लाज ॥ ३८५ ॥ टीका ॥ लाल ने चाह करि के
 कह्यो आज रास में आवो हे प्यारी लाज कौं तजेगी
 तब प्यारी होय गी यहाँ प्यारी सिद्ध अर्थ को फेरि
 सिद्ध करी याते विधि अलंकार है ॥ ३८५ ॥ अथ हे
 तु लक्षणा ॥ दोहा ॥ कारन कारज संग है हेतु सु-
 प्रयम पिछानि ॥ कारन कारज एक है हेतु द्वितीयव-
 स्थानि ॥ ३८६ ॥ टीका ॥ कारन कारज साथ होय सो

पहिलो भेद पहिलानो ॥ कारन कारज एक होय सो दूसरो
 भेद वखानो ॥ ३८६ ॥ दोनून के उदाहरन ॥ दोहा ॥
 होत दूर दुख तुरत ही लेत प्रियाम को नाम ॥ है गुला-
 ब हरि जनन के कृपा कृपा सुख धाम ॥ ३८७ ॥ टीका ॥
 प्रियाम को नाम लेता ही तुरत दुख दूर होय है गुला-
 ब कवि कहै है हरि जनन के कृपा की कृपा है सोई
 सुख को घर है यहाँ प्रियाम को नाम लेता ही दुख दूर
 होय है ई में कारन कारज संग है यातें प्रियम हे-
 तु है और कृपा की कृपा है सोई सुख को घर है ई-
 में कारन कारज एक है यातें दूसरो हेतु है ॥ ३८७ ॥
 छप्पय ॥ रसवत १ प्रेयस २ दोय तृतीय ऊर्जि स्वैत
 जानौ ॥ चवथ समाहित ५ नाम पंचम भावोदय ५
 मानौ ॥ भाव संधि ६ षट भाव शबलता शौचम कहिये
 प्रत्यक्ष अनुमान ७ दशम उपमाने निबोहिये ॥ पुनि शब्द रू अर्थोपनि पुनि
 अनुपलब्धि संभव लहे ॥ रातिहय १५ सहित सब पंच दश-
 कवि गुलाब भूषण गहौ ॥ ३८८ ॥ रसवत लक्षणा ॥
 दोहा ॥ इक रस रसको अंग है कै स्याई को होय ॥ के
 व्यभिचारी भाव को अंग सुरस वत जोय ॥ ३८९ ॥ टीका ॥
 एक रस दूसरा रसको अंग होय अथवा स्याई भाव
 का अथवा व्यभिचारी भाव को अंग होय सो रसवत
 अलंकार है ॥ ३८९ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ जयति
 जयति योगींद्र मुनि कुंभज महा अनूप ॥ देखे ताके लु-
 लुक में कच्छप सत्स्य स्वरूप ॥ ४०० ॥ टीका ॥ योगी-
 ण्ड महा अनूप अगस्त्य मुनि सर्वोत्कर्षिता वर्तते ॥ जा-
 की चुल में कच्छप सत्स्य स्वरूप प्रसार देगे ॥

मुनि विषय करीत भाव को अंग अद्भुत रस है या-
 नै रसवत है ॥ ४०० ॥ **प्रेय लक्षणा ॥ दोहा ॥** भा-
 व होय अंग भाव को कै रस को अंग चार ॥ सु है प्रेय
 कहै चाहि कौं कवि भावा लंकार ॥ ४०१ ॥ **टीका ॥** भा-
 व को अंग भाव होय अथवा रस को अंग भाव होय
 सो प्रेयो लंकार है याही कौं कवि है सो भावा लंकार कहै है
 है ॥ ४०१ ॥ **उदाहरण ॥ दोहा ॥** कब वसि मधि
 धाराणासी धरि कोपीनहि चीर ॥ हे हर शिव शंकर ज
 पन फिरि हौं गंगा तीर ॥ ४०२ ॥ **टीका ॥** कोपीन मात्र
 चीर धाराणा करि कै कासी में वसि कै ॥ हे हर ॥ हे शिव हे
 शंकर ॥ जैसे जपतो जूवो तीर पै कब फिरि गो ॥ इहाँ-
 शांत रस को चिंता संचारी अंग है यातै प्रेयस है ॥
 ४०२ ॥ **ऊर्ज स्थित लक्षणा ॥ चंद्रायणा ॥** रसा भा-
 स जहँ अंग भाव को होय वर ॥ अथवा भावा भास भाव
 को अंग तर ॥ सो ऊर्ज स्थित होय भाव रस अनुचितहि
 भावा भास रु रसा भास क्रम सहित लीह ॥ ४०३ ॥
टीका ॥ जहाँ भाव को अंग रसा भाव होय अथवा
 भाव को अंग भावा भास होय सो ऊर्ज स्थित अलंकार
 होय है ॥ अनुचित भाव है सो भावा भास है ॥ और अ-
 नुचित रस है सो रसा भास है ॥ ४०३ ॥ **उदाहरण ॥**
दोहा ॥ वन वन भीलन संग रसत नव बैरिन की बाम ॥
 अरु अरि पुव गुन गनत निति प्रवल प्रतापी राम ॥ ४०४ ॥
टीका ॥ हे प्रवल प्रतापी राम तेरे बैरिन की स्त्री भी-
 लन के संग वन वन में रसती है यहाँ प्रभु विषय कर-
 ति भाव को अंग रसा भास है यातै ऊर्ज स्थित है ॥ और

तेरे और तेरे गुन सदा रानते हैं ॥ इहाँ प्रभु विषय क
 रति भाव को अंग भावा भास है ॥ याते ऊर्ज स्थित अ
 लंकार है ॥ ४०४ ॥ समाहित लक्षणा ॥ दोहा ॥
 अंग होय रस को जहाँ भाव शांति कै होय ॥ भाग शां
 ति अंग भाव को जानि समाहित सोय ॥ ४०५ ॥ टी०
 जहाँ रस को अंग भाव शांति होय अथवा भाव को
 अंग भाव शांति होय सो समाहित जानै ॥ ४०५ ॥ उ
 दाहरन ॥ दोहा ॥ पिय ठाढ़े में मान लखि नित्य
 इत रही विजोय ॥ देखत हैंसि दीनों ललन नित्य तब
 दीनों रोय ॥ ४०६ ॥ टीका ॥ मान देखि करि के पिय
 है सो ठाढ़े है रहे इत कों नित्य है सो विसेस देखि
 रही ॥ देखते पिय ने हैंसि दियो तब नित्य ने रोय दि
 यो इहाँ अंगार रस को अंग कोप शांति है याते समा
 हित है ॥ ४०६ ॥ भावोदय लक्षणा ॥ दोहा ॥
 होय अंग रस को जहाँ भावोदय कै होय ॥ भावोदय
 अंग भाव को है भावोदय सोय ॥ ४०७ ॥ टीका ॥
 भाव को उदय होय सो भावोदय ॥ जहाँ रस को अंग
 भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो भावोदय अलंकार है ॥ ४०७ ॥

उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनि गुन सोहन के रहै हिय
 जलसी अति वास ॥ चहन विचारि विचारि उर कब
 मिलि है घन प्रयास ॥ ४०८ ॥ टीका ॥ सोहन के गु
 न सुनि कै ब्राम है सो हिया में जलसी रहै है ॥ उर
 में विचारि विचारि कै चाहती है घन प्रयास कब
 मिलै रे ॥ इहाँ अंगार रस को अंग है औत्सुक्य संचारी को उदय है याते भावोदय है ॥ ४०८ ॥

ब० भ०

भाव संधि लक्षणा ॥ चंद्रायणा ॥ भाव संधि
 जहं अंग रसहि को के जहां ॥ भाव संधि है अंग भाव
 को बर तहां ॥ भाव संधि है जुरें विरुद्ध जु भाव ही ॥ भा
 व संधि तिहि नाम समस्त बतावही ॥ ४०८ ॥ टीका
 जहां रस को अंग भाव संधि होय ॥ अथवा भाव को अ
 ग भाव संधि होय तहां भाव संधि अलंकार है ॥ जो वि
 रुद्ध भाव जुरें तिस को सम्पूर्ण कवि भाव संधि नाम
 बतावे हैं ॥ ४०८ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलत वीर
 संग्यास कौ लीष विलषी निज बाल ॥ अरुन वरन तन में
 उठे विपुल पुलक तनकाल ॥ ४१० ॥ टीका ॥ वीर नैन
 ग्राम को चलतें विलषी ऊई अपनी स्त्री देखी ताही सम
 य अरुन वरन तन में बज्रत रोस उठे ॥ इहां प्रभु विषय
 करति भाव को अंग रसगी प्रेम रस उत्कंठा की संधि है
 याते भाव संधि है ॥ ४१० ॥ भाव शबलता लक्षणा
 चंद्रायणा ॥ भाव शबलता होय अंग रस को मता ॥
 के भावहि को अंग भाव की शबलता ॥ भाव शबलता से
 य भाव जहं बज्रत हो ॥ उपजे तहां सुभाव शबलता
 कवि कही ॥ ४११ ॥ टीका ॥ रस को भाव अंग भाव श
 बलता होय अथवा भाव को अंग भाव शबलता हो
 य सो भाव शबलता अलंकार है ॥ जहां बज्रत भाव उ
 पजे तहां कवि ने भाव शबलता कही है ॥ ४०९१ ॥
 उदाहरन ॥ दोहा ॥ वंशीधर वन माल धर हरि उर
 माहि रहाय ॥ कित में कित वह कित मिलन सजनी व
 त वनाय ॥ ४१२ ॥ टीका ॥ वंशीधर वन माल धर हरि
 में रहीं हैं ॥ कित में कित वह कही मिलाप है

हे सजनी तू व्योत बताय हौं वंशीधर बनमाल धर यह-
 तो स्मरणा ॥ कहाँ मैं कहाँ वह यह वितर्क ॥ कहाँ मिलन
 यह दीनता ॥ तू व्योत बता यह उत्कंठा यह भाव शवल
 ना है सो विप्र लंभ अंगार रस को अंग है यातें भाव शव
 लजा अलंकार है ॥ ४१२ ॥ अथ प्रसारा लंकार लि
 ख्यते ॥ प्रत्यक्ष लक्षणा ॥ दोहा ॥ इंद्रिय अरु
 मन ये जहाँ विषय आपनों पाय ॥ ज्ञान करें प्रत्यक्ष ति
 हि कह गुलाब कवि राय ॥ ४१३ ॥ टीका ॥ जहाँ इंद्रिय
 और मन ये हैं सो आपनों विषय पाकर के ज्ञान करें ति
 सकों गुलाब कहै है कविराज है सो प्रत्यक्ष अलंकार है
 ४१३ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ लषन सुनहु जिहि का
 रनैं होत जेज धनु धारि ॥ मन मानत है देख यह है
 वह जनक कुमारि ॥ ४१४ ॥ टीका ॥ रामचंद्र की उक्ति
 है लक्ष्मणा सुनौ ॥ जाके वासै धनुष उठायवे को जज्ञहै
 त है मेरा मन सानै है देख यह वही जनक कुमारी है
 इहाँ मन नेत्रन सौं प्रत्यक्ष है यातें प्रत्यक्ष अलंकार है
 ४१४ ॥ अनुमान लक्षणा ॥ दोहा ॥ कारण के जानै
 जहाँ कारज जान्यो जाय ॥ है अनुमाने अलंकारी सु कवि
 गुलाब के भाय ॥ ४१५ ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ चट-
 काली दधि मथन ध्वनि चरगायुध ध्वनि पाय ॥ जानि
 सर्वरी अंत तिय रीह पिय हिय लपटाय ॥ ४१६ ॥
 टीका ॥ चिरीन की ध्वनि दधि मथन ध्वनि मूर्गी की
 ध्वनि सुनि के राति को अंत जानि के तिय है सो पिय
 का हिया सौं लपटाय रही ॥ इहाँ चटकाली दधि मथ-
 न मूर्गी की ध्वनि कारन जानै तें निशान्त कारज जान्यो

याते अनुमान है ॥४१६॥ उपमान लक्षणा ॥ दो
 हा ॥ उपमा की सादृश्य तैं विन देख्यो उपमेय ॥ जानि
 परे उपमान सो अलंकार है जेय ॥ ४१७ ॥ टीका ॥ उ-
 पमान की सादृश्य तैं विना देख्यो उपमेय जानि परे सो
 जानिबे जोर्य उपमान अलंकार है ॥ ४१७ ॥ उदाहर-
 णा ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण सम सुन्दर लसे रीब सम तेज
 विशाल ॥ सागर सम गंभीर है सो दशरथ को लाल ॥
 ४१८ ॥ टीका ॥ कामदेव की समान सुंदर लसे है। स-
 र्य समान विशाल तेज है समुद्र समान गंभीर है सो रा-
 म चंद्र है इहाँ कामादि उपमानन तैं रामचंद्र जाने गये
 याते उपमान है ॥ ४१८ ॥ शब्द लक्षणा ॥ दोहा ॥
 जहाँ शास्त्र अरु लोक को बचन प्रमाण बखानि ॥ सो
 शब्दालंकार है भाषत सु कवि सुजान ॥ ४१९ ॥ टीका
 जहाँ शास्त्र और लोक का बचन का प्रमाण को बखा-
 न होय सो शब्दालंकार है सु कवि सुजान हैं सो भाष-
 ते हैं ॥ ४१९ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ धर्म विना न-
 हि सुख लहे गुरु विन लहे न ज्ञान ॥ ज्ञान विना नहि
 मुक्ति है पाँच पाँच मरे अज्ञान ॥ ४२० ॥ टीका ॥
 धर्म विना सुख नहि मिले गुरु विना ज्ञान नहि मिले
 ज्ञान विना मुक्ति नहि होय। अज्ञान है सो पाँच पाँच
 के मरे है ॥ इहाँ शास्त्र प्रमाण है। याते शब्द
 है ॥ ४२० ॥ अर्थ अर्थपति लक्षणा ॥ दोहा
 जहाँ व्यर्थ से अर्थ को और जोर से थाप ॥ अर्थपि-
 ति अलंकार सु भाषत सु कवि सदाप ॥ ४२१ ॥ टी-
 का ॥ व्यर्थ भये अर्थ को और जोर से थापे सो अर्थ

पति अलंकार गर्व सहित सुकवि भाषते हैं ॥३२॥

उदाहरण ॥ दोहा ॥ तिय तेरे कीट है यहै तैं की
नो निर्धार ॥ जो न होय तो को धरै विपुल पयोधर-
भार ॥ ४२१ ॥ टीका ॥ हे तिय तेरे कीट है यह मैंने
निश्चय कियो है जो नहि होय तो भारी कुच भार-
कों कौन धारै है इहाँ नहि यह व्यर्थार्थ कुच धारण
योग करि उहरायो याते अर्थपति है ॥ ४२१ ॥ अ-

थ अनुप लब्धि संभव लक्षणा ॥ दोहा ॥
जानि परै नहि वस्तु कहु अनुप लब्धि है सोय ॥
जहँ संभव है वस्तु को संभव नाम सु होय ॥ ४२२ ॥
टीका ॥ जहाँ कहु वस्तु नहि जानि परै सो अनुप-
लब्धि अलंकार है जहाँ वस्तु को संभव होय सो संभ-
व नामक अलंकार होय है ॥ ४२२ ॥ अथ अनुप लब्धि

उदाहरण ॥ दोहा ॥ नहि तेरे कीट सब कहत कुच
यति विन आधार ॥ इन्द्र जाल यह कास की लोक कर
त निर्धार ॥ ४२३ ॥ टीका ॥ तेरे कीट नहि है ॥ सब
कहते हैं कुचन की स्थिति बिना आधार है ॥ यह का-
सदेव को इन्द्रजाल है रासैं लोक निश्चय करते हैं इ-
हाँ कीट को अभाव है ॥ याते अनुप लब्धि है ॥ ४२३ ॥

अथ संभव को उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनी नहे
खी तुव सहस्र हे वृषभानु कुमारि ॥ जानत हो कहैं
होयगी विपुला धरनि विचारि ॥ ४२४ ॥ टीका ॥
हे वृषभानु कुमारि । तो समान देखी है न सुनी है
परंतु पृथ्वी बड़ी विचारि कै जान्यौं हौं कोई हो-
यगी । इहाँ वस्तु को संभव है याते संभावना अलंकार है

४२५॥ अथ रीतिहय लक्षणा ॥ दोहा ॥ सु रीति
 हय प्राचीन की उचलि आई जु कहानि ॥ ताको वक्ता प्र-
 यम को नहि न परे पहिचानि ॥ ४२६॥ टीका ॥ जो कोई
 प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रयम वक्ता न
 ही पहिचान्यो परे सो रीतिहय अलंकार है ॥ ४२६॥
 उदाहरण ॥ दोहा ॥ हे सीता उर धीर धरि जानि ध-
 रि नने अपघात ॥ जीवन सो नर सुख लहै यहै लोक
 की बात ॥ ४२७॥ टीका ॥ विजय की उक्ति ॥ हे सी-
 ता हृदय में धीरज धरि मन में अपघात मति धरे ॥ जो
 आदसी जीवै सो सुख पावै ॥ यह लोक की बात है ई-
 हाँ जीवन सो नर सुख लहै यह लोक कहानी है ॥
 याने रीतिहय है ॥ ४२७॥ इति प्रमारा लंका
 राः ॥ अथ संस्तीष्ट शंकर तिरव्यते ॥ दो-
 षमरा शब्दरु अर्थ के आपस में मिलि जाहि ॥ संस्तु-
 टि रु शंकर तहाँ ये जुग नाम कहाँहि ॥ ४२८॥ टीका ॥
 जहाँ शब्द और अर्थ के अलंकार आपस में मिलि जा-
 हि तहाँ संस्तीष्ट और शंकर ये दो नाम कहाँवै हैं ॥
 ४२८॥ अथ संस्तीष्ट लक्षणा ॥ दोहा ॥ एक अलं-
 कार को रहै नहि दूसर की चाह ॥ बाँध कह इक आ-
 न को होय नहि किछु राह ॥ ४२९॥ जुदे जुदे भासे
 सकल अपनी अपनी वाम ॥ तिल नंडल की रीति करि
 है संस्तीष्ट सु नाम ॥ ४३०॥ टीका ॥ एक अलंकार
 को दूसरे अलंकार की चाह नही रहै और एक अलं-
 कार दूसरे अलंकार को बाधक भी किसी राह में नहीं
 ४३०॥ तिल नंडल की रीति करि के सब अपनी

अपनी ओर पर जुदे जुदे भासैं सो संस्तीष्ट नाम है ॥३३०॥
अथ संस्तीष्ट भेद ॥ दोहा ॥ अर्थ अर्थ के भूषण
 रु शब्द शब्द के होय ॥ अर्थ अर्थ के होय यौ त्रय सं-
 स्तीष्ट विजोय ॥४३१॥ **टीका ॥** अर्थ अर्थ के अलंका-
 र होय और शब्द शब्द के अलंकार होय और अर्थ
 शब्द के अलंकार होय जैसे तीन संस्तीष्ट देखौ ॥४३१॥
अथ शंकर लक्षणा ॥ दोहा ॥ पय पानो की रीति
 कार होय परस्पर तीन ॥ ताकों संकर नाम ही भाषत परस
 प्रवीन ॥४३२॥ **टीका ॥** दूध जल की रीति कार के अलं-
 कार परस्पर तीन होय ताकों परस प्रवीन है सो संकर ना-
 म भाषते हैं ॥४३२॥ **अथ शंकर भेद ॥ दोहा ॥**
 है अंगारी भाव १ अरु सस प्राधान्य २ वखानि ॥ संदेह
 ३ रु इक वाचकानु प्रवे ४ चव सानि ॥४३३॥ **टीका ॥** अं-
 गारी भाव शंकर है और सस प्राधान्य शंकर वखानी
 संदेह शंकर ३ और एक वाचकानु प्रवेश शंकर जानी
 ये चारि भेद हैं ॥४३३॥ **अथ अंगारी भाव ल-
 क्षणा ॥ दोहा ॥** वीज वृक्ष के न्याय करि इक इक
 को अंग होय ॥ सो अंगारी भाव है काव गुलाब सति-
 जोय ॥४३४॥ **टीका ॥** वीज वृक्ष के न्याय करि केर
 क अलंकार दूसरे अलंकार को अंग होय सो अंगारी
 भाव शंकर है गुलाब काव के मत में देखौ ॥४३४॥
अथ सस प्राधान्य शंकर लक्षणा ॥ दोहा ॥
 दिन दिन पति के न्याय करि संग प्रगटै संग भास ॥ न
 स सस प्राधान्य ही काव गुलाब कह तास ॥४३५॥
टीका ॥ दिन स न्याय करि अलंकार साथ हो प्रगटै

साध ही सासें मुलाव काबि है सो ताकों जान सम प्रा-
 चान्य कहै है ॥४३५॥ अथ संदेह शंकर लक्ष-
 णा ॥ चंद्रायणा ॥ प्रथम मिटायें द्वितीय अलंकार
 सास हो ॥ द्वितीय मिटायें प्रथम विशेष प्रकास ही ॥ वा
 जन इक कों एक राति दिन न्याय करि ॥ तिहिं शंकर सं-
 देह कहत काव मोद धरि ॥४३६॥ टीका ॥ पहिलो अ-
 लंकार मिटायें सैं दूसरो अलंकार भासे दूसरो अलंकार
 मिटायें सैं पहिलो अलंकार भासे राति दिन न्याय करि
 क कों एक बाधै नही ताकों संदेह शंकर कहत हैं ॥ काव
 मोद धरि कै ॥४३६॥ अथ एक वाचकानु प्रवे-
 श शंकर लक्षणा ॥ दोहा ॥ न्याय नृसिंहा कार
 करि पद रु वाक्य इक साहि ॥ जुग भूषणा इक वाचका
 प्रवेश कहि ताहि ॥४३७॥ टीका ॥ नृसिंहाकार न्य-
 य करि एक पद और एक वाक्य में दोय अलंकार है
 य ताकों एक वाचकानु प्रवेश संकर कहौ ॥४३७॥ अ-
 र्थ अर्थ की प्रथम संस्तीष्ट को उदाहरन
 दोहा ॥ शशि सो उज्जल मुख लसै खंजन हैं सनु नै
 अधर नासिका विवशुक सधुर सुधा सैं वेन ॥४३८॥
 टीका ॥ शशि सो उज्जलो मुख लसै है ॥ नैन हैं सो सानों
 जन हैं ॥ अधर और नासिका हैं सो किं दूरी और शुक
 सुधा से जीवे बचन हैं यहाँ उपमा उत्प्रेक्षा यथा संरज
 यालंकार करि संस्तीष्ट है ॥४३८॥ द्वितीय संस्ती
 को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कर जो कर को बर चुरो
 धरि देह ॥ जल सुकरत परवा पवन मुख सैं
 ॥४३९॥ टीका ॥ सुंदर कर का चुरो करकि गई है धी

रिखे धूसरी देह है ॥ क्यों नटे है ॥ पिछानी परे है ॥ सुख सौं
 सनेह में सनी है ॥ इहाँ यम कहे कानु प्राप्त शब्दालंकारन
 को संसृष्ट है ॥ ५३८ ॥ **तृतीय संसृष्टि को उदा-**
हरन ॥ दोहा ॥ दृग से दृग हैं याहि के मुख सो मुखही
 आहि ॥ कर से कर कुच से कुचीह उपमा उपजै काहि ॥ ५४०
टीका ॥ याके दृग से याके ही दृग हैं ॥ मुख सो मुख ही है
 कर से कर ही हैं ॥ कुच से कुच ही हैं ॥ उपमा कौन कौं उप
 जै ॥ यहाँ छेकानु प्राप्त अनन्वय शब्दार्थ लंकार की संसृ
 ष्टि है ॥ ५४० ॥ **इति संसृष्टिः ॥ अथ अंगारगी**
भाव शंकर उदाहरन ॥ दोहा ॥ हलत पवन तें
 तरुन तर दीखत छाह अचूक ॥ शशि हरि नैं तम राजह
 ने मानज तिनके दूक ॥ ५४१ ॥ **टीका ॥** पवन सैं हालते
 लुलन के नीचे जो अचूक छाया दीखती है सो सानों शशि
 सिंह नैं तम रूप हाथी मारे हैं तिनके दूक हैं ॥ यहाँ श-
 शि हरि तम राज रूपक है सो उत्प्रेक्षा को अंग है याते
 अंगारगी भाव शंकर है ॥ ५४१ ॥ **अथ सम प्राधान्य**
शंकर उदाहरण ॥ दोहा ॥ लीघत तुंग पयोधर
 सुर विनुरगा वलि चार ॥ मध्य अरुणा नायक मनुज न-
 भ श्री मरकत हार ॥ ५४२ ॥ **टीका ॥** ऊँचे मेघन कों उ-
 लाडती जई सूर्य का घोडान की पंक्ति है सो हमारी रु-
 द्धा करी सो सानों मध्य में है लाल मरिण जाके जैसे आ-
 काश लक्ष्मी को पद्मा को हार है ॥ इहाँ श्लेष उत्प्रेक्षा
 समा सोक्ति साथ ही प्रगटते हैं साथ ही भासते हैं या-
 तें सम प्राधान्य शंकर है ॥ नभ श्री में नायिका व्यव-
 हार को आरोप है ॥ सो समा सोक्ति है ॥ नायक नाम सम

तो जोर हार की सीमा को है ॥ नायको नेतारि जेपे हार
 सध्यसरा व प्रीति विज्याः ॥ ४४२ ॥ अथ संदेह शं
 कर उल्लाहरा ॥ दोहा ॥ अस्तु सिंधु साथ काम
 राते विधि अनुसासन जोय ॥ काँडे शशि अकलंक तो
 राधा मुखसम होय ॥ ४४३ ॥ टीका ॥ काल और गति है
 सो ब्रह्मा की आज्ञा देख के अस्तु के समुद्र को साथ
 के कलंक रहित चंद्रमा को काँडे तो राधा के मुख की समा
 न होय ॥ यहाँ जो यों होय तो यों होय जैसा
 संभावना अलंकार है और जैसा चंद्रमा होय न राधा
 का मुख की बराबरी होय यह सिद्धा बरानि है या
 ते सिद्धाध्यवसिति है ॥ ४४३ ॥ पुनः ॥ दोहा ॥
 र्य सहा विष उगलतो बसत मूल के साहि ॥ तो वरफत
 जुत सुतर नें कहा प्रयोजन आहि ॥ ४४४ ॥ टीका ॥
 बल्लत जहर कों उगलतौ ज्यो सर्प मूल में बसे है तो जे
 प पाल सहित सुंदर वृक्ष सों काँडे प्रयोजन है ॥ यहाँ
 प्रस्तुत सर्प वृक्षांत बरानि हैं अ प्रस्तुत राजा के पास रह
 वे वारे खल को वृक्षांत की प्रतीत होय है याँ सभासो
 लि है ॥ अथवा प्रस्तुत खल वृक्षांत जनायवे वा
 स्ते अप्रस्तुत सर्प वृक्षांत कयन है याँ अप्रस्तुत प्र
 शंसा है ॥ अथवा वरार्य सान सर्प के वृक्षांत कहवें तें
 पास रहवें वारे खल को वृक्षांत अगट होय है ये दोन
 प्रस्तुत हैं याँ प्रस्तुतांकर है निश्चय न भयो याँ सं
 देह शंकर है ॥ ४४४ ॥ अथ एक वाचकानु प्र
 दे शंकर ॥ दोहा ॥ हे हार दोन दयालु मे यह मा
 गो सिर नाय ॥ तुव पद पंकस आसरे मन मधुकर लगी

जाय ॥ ६६५ ॥ टीका ॥ हे हरि दीन दयाल में यह शिर नवाय करि कै सो
 गौ हौं तुम्हारे चरग कमल के आसरे मेरो मन भ्रमर लागि जाय ॥ इहाँ पद पं
 कज मन मधुकर में रूपक छेकानु प्राप्त है यातैं एक वाचकानु प्रवेश संक
 र है ॥ काहू के मत में शब्दार्थी लंकार को ही एक वाचकानु प्रवेश होय है
 काहू के मत में आर्थी लंकार को ही होय है ॥ जहाँ शब्दार्थी लंकार जु
 दा जुदा होय तहाँ संख्यि है अरु जहाँ एक पद में दोनू होय तहाँ एक
 वाचकानु प्रवेश संकर है ॥ ६६५ ॥ टीका ॥ चंद्रकला टीका करी मोती
 लात सहाय ॥ मोती शंकर ने लिरव्यो सोधि ग्रंथ सुख दाय ॥ ६६६ ॥

इति बनिता भूषण सम्पूर्णम् शुभम् ॥

बनिताभूषण का शुद्ध शुद्ध पत्र लिरव्यते ॥

पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१	नहा	नही	१२	संग	संग
२	अनन्यय	अनन्यय	१३	वाडत सराय	वाडत सराय
३	नायका की	नायका की	१४	सांवेह	सांवेह
४	उर में	उर में	१५	कामांधा	कामांधा
५	अवगर्थ	अवगर्थ	१६	सांजी	सांजी
६	सलक	फलक	१७	सैन	सैन
७	न्यनत दूष	न्यनत दूष	१८	पति की	पति की
८	जोगत	जोगत	१९	छिपावै	छिपावै
९	देवर	देवर	२०	दरवाजा	दरवाजा
१०	मध्य	मध्या	२१	सखी को	सखी को
११	यावना	योवना	२२	तिहिं पति	जिहिं पति
१२	उराय	उराय	२३	जानै	जानै
१३	रसा लखा	रसा लखावै	२४	नानक	मानक
			२५	आस पस	आस पस
			२६	अधर ने	अधर में

२३	२३	रति में	रति में	२३	२०	नहावा कों	नहावा कों
२३	२२	मसाल की प्र-	मसाल की प्र-	२३	२१	नाथिक कों	नाथिक कों
		कासे	कासे तो मध्य	२५	१८	डराय	डराय
			धीरा धीरा ना-	२६	१७	आवति	आवति
			यिका है	२६	२३	लो	लो
२८	१६	कोप	कोप	२७	५	हर्ष	हर्ष
२६	३	अविद्या	अविद्यास्पदा	२७	१८	गनिक	गनिक
२६	११	चंत	चेत	२७	२०	दायकी	दायक की
२६	२२	तिय सौ है सो	तिय है सो	२८	२३	इष्टजन	इष्टजन
२६	२३	धीर है	धारे	२८	२४	मसले	मसले
२०	१	सहन	बहन	२८	६	पीर की	पीर कों
२०	३	रुयो है	रुखा है	२८	१५	रूप र	रूप र
२०	१६	नरै	इकतै	३०	१	जैसे	जैसे
२०	२५	प्रीत	प्रीति	३०	१४	अरिगन	अरिगन
२१	१	सापान्हव	सापान्हव	३१	१०	धर्म की	धर्म को
२१	१३	शयो युक्त	शयो युक्त	३१	४	गये	गये
२१	१४	साव	साव्ह	३१	१६	संग से नता	संग से नता
२२	३	कटक लगे	कटक लगे	३१	२३	सोम	शोम
२२	१०	गुहा को	गुहा	३५	२	सिय	जिय
२२	११	जोय है	जोय हैं	३५	१६	समा शोनि	समा सोनि
२२	२२	अशंव धातिर	अशंव धातिर	३५	२३	कला	कली
		य	तिशय	३६	५	बांचित	बांचित
२२	२६	मुर्झित	मुर्झित	३६	१२	होय	होय
२३	५	पंग	पंग	३६	२०	पीर कुरां कुर	पीर
२३	५	कटि है	कटि हैं	३८	३	उपना	उला

३८	१५	काय	कार्य	५३	७	नै	सौ
३८	१६	सारूप निबंधन	सारूप्यनिबंधन	५३	१३	रंगे	सुख
४०	४	सोता का	सोता का	५३	१४	सुख	द्वितीय
४०	८	नायक	नायिका	५४	४	द्वितीयलक्षण	स्वरा
४०	११	निबंधन	निबंधना	५५	८	वरषापरस	वरषायरस
४२	२	बात सो	बात सों	५५	२१	कृष्णा	कृष्णा
४२	१२	लाख को ल	लाख को ला	५५	२५	सबलती	सबलती
४२	१२	कया मैं	यामैं	५६	५	नीचो	नीची
४२	१७	सांति मैं	सांति मे	५६	१८	समाव	सत्ता
४३	३	से	सैं	५७	१५	मायो	मायो
४३	८	कसाहि क	कसाहि क	५८	११	बर्ना	बनिता
४५	२	ले	सैं	५८	१२	यहाँ जिसको	जिसको
४५	४	चिताहि	चिताहि	५८	१७	सुरंग	सुरंग
४६	१७	वाय	सुवाय	६०	७	वतावत	बतावते
४७	१०	चित्तो	चित्तो	६१	८	रंग	संग
४७	१०	उक्ता	उक्ता	६३	७	भूवतैं	भूवतैं
४७	११	अंगराई	अंगराई	६३	२१	करा मूंदरी	करा मूंदरी
४८	११	वरतुने	वस्तु तैं	६५	२१	करि ही	कटि हो
४८	२५	घर घर	घर	६६	२३	हैंसी जमाय	हैंसी जमाय
४८	२४	थाम	थान	६८	२	पंछी	पंछी
५०	८	सजे	सजे	६८	२४	साभरन	साभरन
५०	११	अति हेतु है	अति हेतु है	६८	१४	मुख	मुख
५१	२३	सीज सेज	सीज सेज	७१	१	झल साप	झलसाय
५२	१३	उसाहि	उसाहि	७१	१५	जगत न	जगजन
५३	१	कलसन की	कलान की	७३	४	संभवना	संभावना
×	×	×	×	७३	२१	वृत्ता	वृत्ता

२०	२३	गुनवान	गुणवान	२०	२२	खारि के कड़का	खारि के कड़की
२१	२४	गुनाखान	गुनाखान	२१	२५	नाई	नाई
२२	२५	गुनाखान	गुनाखान	२२	२६	नायक है	सखा है
२३	२६	गुनाखान	गुनाखान	२३	२७	जय	जये
२४	२७	गुनाखान	गुनाखान	२४	२८	चरीन	बरीन
२५	२८	गुनाखान	गुनाखान	२५	२९	पताछ	पताछ
२६	२९	गुनाखान	गुनाखान	२६	३०	गोरो	गोरो
२७	३०	गुनाखान	गुनाखान	२७	३१	विदूषक	विदूषक
२८	३१	गुनाखान	गुनाखान	२८	३२	लगी	लगी
२९	३२	गुनाखान	गुनाखान	२९	३३	हर्षे हो	हर्षे हो
३०	३३	गुनाखान	गुनाखान	३०	३४	शानहय	शानहय
३१	३४	गुनाखान	गुनाखान	३१	३५	भाव का	भाव का
३२	३५	गुनाखान	गुनाखान	३२	३६	आग शांति	आग शांति
३३	३६	गुनाखान	गुनाखान	३३	३७	सदाप	सदाप
३४	३७	गुनाखान	गुनाखान	३४	३८	सैं कीनों	सैं कीनों
३५	३८	गुनाखान	गुनाखान	३५	३९	जानत हौ	जानत हौ
३६	३९	गुनाखान	गुनाखान	३६	४०	अपघात	अपघात
३७	४०	गुनाखान	गुनाखान	३७	४१	कौ	कौ
३८	४१	गुनाखान	गुनाखान	३८	४२	बाधक	बाधक
३९	४२	गुनाखान	गुनाखान	३९	४३	नहि किंज	नहि किंज
४०	४३	गुनाखान	गुनाखान	४०	४४	आसे	आसे
४१	४४	गुनाखान	गुनाखान	४१	४५	तंडल	तंडल
४२	४५	गुनाखान	गुनाखान	४२	४६	नप्रवे	नप्रवे
४३	४६	गुनाखान	गुनाखान	४३	४७	अंगागी	अंगागी
४४	४७	गुनाखान	गुनाखान	४४	४८	अंगागी	अंगागी
४५	४८	गुनाखान	गुनाखान	४५	४९	अंगागी	अंगागी
४६	४९	गुनाखान	गुनाखान	४६	५०	अंगागी	अंगागी
४७	५०	गुनाखान	गुनाखान	४७	५१	अंगागी	अंगागी
४८	५१	गुनाखान	गुनाखान	४८	५२	अंगागी	अंगागी
४९	५२	गुनाखान	गुनाखान	४९	५३	अंगागी	अंगागी
५०	५३	गुनाखान	गुनाखान	५०	५४	अंगागी	अंगागी
५१	५४	गुनाखान	गुनाखान	५१	५५	अंगागी	अंगागी
५२	५५	गुनाखान	गुनाखान	५२	५६	अंगागी	अंगागी
५३	५६	गुनाखान	गुनाखान	५३	५७	अंगागी	अंगागी
५४	५७	गुनाखान	गुनाखान	५४	५८	अंगागी	अंगागी
५५	५८	गुनाखान	गुनाखान	५५	५९	अंगागी	अंगागी
५६	५९	गुनाखान	गुनाखान	५६	६०	अंगागी	अंगागी
५७	६०	गुनाखान	गुनाखान	५७	६१	अंगागी	अंगागी
५८	६१	गुनाखान	गुनाखान	५८	६२	अंगागी	अंगागी
५९	६२	गुनाखान	गुनाखान	५९	६३	अंगागी	अंगागी
६०	६३	गुनाखान	गुनाखान	६०	६४	अंगागी	अंगागी
६१	६४	गुनाखान	गुनाखान	६१	६५	अंगागी	अंगागी
६२	६५	गुनाखान	गुनाखान	६२	६६	अंगागी	अंगागी
६३	६६	गुनाखान	गुनाखान	६३	६७	अंगागी	अंगागी
६४	६७	गुनाखान	गुनाखान	६४	६८	अंगागी	अंगागी
६५	६८	गुनाखान	गुनाखान	६५	६९	अंगागी	अंगागी
६६	६९	गुनाखान	गुनाखान	६६	७०	अंगागी	अंगागी
६७	७०	गुनाखान	गुनाखान	६७	७१	अंगागी	अंगागी
६८	७१	गुनाखान	गुनाखान	६८	७२	अंगागी	अंगागी
६९	७२	गुनाखान	गुनाखान	६९	७३	अंगागी	अंगागी
७०	७३	गुनाखान	गुनाखान	७०	७४	अंगागी	अंगागी
७१	७४	गुनाखान	गुनाखान	७१	७५	अंगागी	अंगागी
७२	७५	गुनाखान	गुनाखान	७२	७६	अंगागी	अंगागी
७३	७६	गुनाखान	गुनाखान	७३	७७	अंगागी	अंगागी
७४	७७	गुनाखान	गुनाखान	७४	७८	अंगागी	अंगागी
७५	७८	गुनाखान	गुनाखान	७५	७९	अंगागी	अंगागी
७६	७९	गुनाखान	गुनाखान	७६	८०	अंगागी	अंगागी
७७	८०	गुनाखान	गुनाखान	७७	८१	अंगागी	अंगागी
७८	८१	गुनाखान	गुनाखान	७८	८२	अंगागी	अंगागी
७९	८२	गुनाखान	गुनाखान	७९	८३	अंगागी	अंगागी
८०	८३	गुनाखान	गुनाखान	८०	८४	अंगागी	अंगागी
८१	८४	गुनाखान	गुनाखान	८१	८५	अंगागी	अंगागी
८२	८५	गुनाखान	गुनाखान	८२	८६	अंगागी	अंगागी
८३	८६	गुनाखान	गुनाखान	८३	८७	अंगागी	अंगागी
८४	८७	गुनाखान	गुनाखान	८४	८८	अंगागी	अंगागी
८५	८८	गुनाखान	गुनाखान	८५	८९	अंगागी	अंगागी
८६	८९	गुनाखान	गुनाखान	८६	९०	अंगागी	अंगागी
८७	९०	गुनाखान	गुनाखान	८७	९१	अंगागी	अंगागी
८८	९१	गुनाखान	गुनाखान	८८	९२	अंगागी	अंगागी
८९	९२	गुनाखान	गुनाखान	८९	९३	अंगागी	अंगागी
९०	९३	गुनाखान	गुनाखान	९०	९४	अंगागी	अंगागी
९१	९४	गुनाखान	गुनाखान	९१	९५	अंगागी	अंगागी
९२	९५	गुनाखान	गुनाखान	९२	९६	अंगागी	अंगागी
९३	९६	गुनाखान	गुनाखान	९३	९७	अंगागी	अंगागी
९४	९७	गुनाखान	गुनाखान	९४	९८	अंगागी	अंगागी
९५	९८	गुनाखान	गुनाखान	९५	९९	अंगागी	अंगागी
९६	९९	गुनाखान	गुनाखान	९६	१००	अंगागी	अंगागी

२०८।२४ नुप्रवे = नुप्रवेण २०८।२४ पुंक्स = पुंक्स

५३१७९ = ५३१७९

नामसिंधुकोशको

प्रथमभाग

अर्थात्

गुलावकोशको संक्षेप अमरकोशको प्रथमकाण्डको
विद्विषेष्ट

श्रीयुतचहुवारावशावतंसहडुकुलकलश
बुन्दीन्द्रमहाराजाऽधिराजमहारावराजाजी
श्रीश्रीश्रीश्रीश्री १०८ रामसिंहजी के कवि
रावजी श्रीगुलाव सिंह जी कृत ॥



आगरा

नगरे वेलनगंजे श्री पारदित केशव प्रसाद
शर्मा द्विवेदि प्रबंधेन विद्यारत्ना
करयंत्रे मुद्रितः

श्रीगणेशायनमः
श्रीसरस्वत्यैनमः॥

अथनामसिंधुकोशालि-

दोहा

गरापति गिरिजा गिरिश गुरु गंग गिरा गोपाल।
रविरविजा वृष भानुजा कविता करुह रूपाल ॥१॥

अथ गुरु प्रशंसायां द्व्यर्थिका दोहा ॥

विवुध ईश द्विज राज कुल ईश सुबोधक वीश ॥ करुणा कर
करुणा करुह जगन्नाथ जगदीश ॥२॥ नृप प्रशंसायां-

द्व्यर्थिका दोहा ॥ ईश दिगीश न वीचि अरु दानिन माहि
महान ॥ प्रगात अभय कर अपर शिव राम सिंह चहुवान ॥

३ ॥ बुंदीपति नृप मुकुट मनि गुन सागर मतिथान ॥
सिंह नै अति कियो कवि गुलाव को माने ॥ ४ ॥ ग्राम निलि

ताजी मगज भूषन वसन विशाल ॥ अति धन सादर देकरी
परम रूप प्रतिपाल ॥ ५ ॥ पुनि करे पंच मुसाहि वरु सामि

ल राखि सलाह ॥ दियो प्रकृति अधिकार मुहि राम सिंह न
रनाह ॥ ६ ॥ श्री जत जस जुत विजय जुत जुत मन वांछित का

म ॥ राजौ महि सिर शेष लौ सुतन सहित नृप राम ॥ ७ ॥
अथ ग्रन्थ नियम लिख्यते ॥

दोहा

रामाश्रममत जुत अमर शेष विकाराडहु लीन ॥ देखि मेदि
 नी आदि किय कोश गुलाव नवीन ॥ ८ ॥ विस्तर कोश गु
 लाव को तजि तिहि सारहि लेय ॥ नामसिंधु कीनौ विषा
 द चारि भाग तिहि जेय ॥ ९ ॥ संवत् प्राशि दिश निधि अव
 नि चैन मास गुरुवार ॥ कृष्ण पक्ष तिथि पंचमी भयो ग्रन्थ
 अवतार ॥ १० ॥ तुस्तु सुतौ सोतो सतू अन्त माहि जिहि आया
 अथो अगौ अथ आदि जिहि सोपर माहि मिलाय ॥ ११ ॥
 पूरव पर संयोग मै पुनि अरु औरु आदि ॥ हीहू हिहू नाम
 त मै कहें निजार्थ ये वादि ॥ १२ ॥ संयोगी को आदि लघु
 गुरु विकल्प करि देखि ॥ क्वचित् वपुडी बादि को दीरघ
 घुपेखि ॥ १३ ॥ नाम विशेषरा कहें क्रिया सम्बोधन कल
 हीन ॥ कारि स्वर व्यंजन एक को कहें तुकांतर चि दीन ॥ १
 ४ ॥ धाट तिष्ठ रुवरीं दृष्टि गणय अरु बादि ॥ ऐन पाठ प
 ॥ रुशवद धस्ते अप अंकादि ॥ १५ ॥ साधु सोतु अरु
 को कीन उकार अकार ॥ भाषा विधि कहु अविधि दूध स्यो
 तुकांत प्रकार ॥ १६ ॥ अथ दोहाया लक्षणां ॥ दोहा ॥
 षट् कल द्वै कल द्वि कल पुनि ड कल लघु द्वै कल जोय
 द षट् कल द्वि कल गुरु ड कल लघु दोहा होय ॥ १७ ॥ कहें
 षट् कल चौ कल त्रि कल हीन कीन जति भंग ॥ जगन
 निषेधन कीन कहें शब्द शुद्ध के संग ॥ १८ ॥ अने कार्य

स्त्रीव सो अन्त स्थान मधि जोय ॥ रामा श्रम मत सैं धस्यौ षव
 र्यात में सोय ॥ १८ ॥ वर्षा भूजल वर्ग को वर्षा भू करिलीन
 ॥ अमर शब्द इत्यादि कहें वदलि अधिक कम कीन ॥ २० ॥
 सुर नर वानी माहि जो है है परम प्रवीन ॥ सो या श्रम कौ जा
 नि है नाहि जनि है डक हीन ॥ २१ ॥

अथ नाम सिंधु को प्रथम भाग लिख्यते ॥ दो०
 स्वर्ग' व्योम दिश' काल धौ' शब्दादि कति हि संग ॥ नाट्य
 भोगि पाताल दश नरक रुवारित रंग ॥ २२ ॥ अथ स्वर्ग त
 रंग लिख्यते ॥ स्वर्ग नाम ॥ दोहा ॥ स्वर्ग' नाक' स्वर' त्रि
 दिव' पुनि त्रिदशालय' सुरलोक' ॥ दिव' रुचि विष्ट पद्यों नभ
 रु शक्र भवन स्वर्लोक' ॥ २३ ॥ देवलोक अवरोह' पुनि मं
 सैरि भ' मानि ॥ वहरि फलोदय अरु ख' जुत अष्टादश उर
 आनि ॥ २४ ॥ देव' देव माता नाम ॥ दोहा ॥ सुर' सुमन
 स' निर्जर' अमर' त्रिदश' दिवौकस' देव ॥ सुपर्वा' रुदि विष्ट
 विबुध' ऋजु त्रिदिवेश' सुभेव ॥ २५ ॥ आदितेय' रु' निलि
 प' पुनि अमृतं धस आदित्य ॥ ऋतु भुज लेख रु देवता व
 हिं मुख रु अमर्त्य' ॥ २६ ॥ वृंदा रु अ' स्वप्न' पुनि दान वारि
 गी वारा ॥ देवत' स्वाहा भुक्' वसुल' पूजित' शौभ' प्रमारा ॥
 २७ स्वर्गी' दुष्ट द' चिरायुष रु जानि नभस्स द' सोय ॥ अदिति नंद
 ह अदिति तो मु' माता ऋ' हु होय रु देव गरा नाम ॥ दोहा
 ॥ रुद्र' महाराजिके' तुषित' आभास्वर' आदित्य' ॥ अनिल'

विश्वं वसु सा^{३२}ययेन वहिदेव गरानित्य ॥२८॥ क्रमते रु
 द्रादि गरान की संख्या ॥ दोहा ॥ ग्यारह दोसै वीस अ
 रुकानिस चौसठि जोय ॥ द्वादश उनचास रुद्र प्र सुआठ
 रुद्र प्र होय ॥ ३० ॥ देव योनि नाम ॥ दोहा ॥ सिद्ध पिशा
 च रुगंधर्व किन्नर राक्षस यक्ष ॥ गुह्यक विद्याधर दशहि
 भूत अस्सरा दक्ष ॥ ३१ ॥ असुर नाम ॥ दोहा ॥ ऋक शिष्य
 दिति सुत असुर दैत्य दनुज इंद्रारि ॥ पूर्व देव दैतेय दशसुर
 द्विष दानव धारि ॥ ३२ ॥ बुद्धि नाम ॥ दोहा ॥ धर्म राज
 वीर जिन तथागत रुभगवान ॥ सुगत मारजित लोक
 जित अद्वयवादी आन ॥ ३३ ॥ बुद्ध विनायक श्रीचन
 ण्डल मुनि षडभिज्ञ ॥ शास्ता और मुनींद्र पुनि समंत
 हो विज्ञ ॥ ३४ ॥ शाक्य मुनि नाम ॥ दोहा ॥ अर्क बंधु
 र्य सिद्ध माया देवी पुत्र ॥ शाक्य सिंह शौद्धोदनि रु गौतम
 जुत षट् अत्र ॥ पितामह चतुर्भुज नाम ॥ दोहा ॥
 गर्भ रु आत्म भू परमेष्ठी विधि जानि ॥ सुरजेष्ठ लोकेश
 वेधा धाता मानि ॥ ३६ ॥ द्रुहि रा विधाता विश्वस्वज
 लासने रु विरंचि ॥ अज्र योनि चतुरानन रु स्रष्टृ स्वयं भू
 वंचि ॥ ३७ ॥ कंज प्रजापति हंसारथ ब्रह्मा अज्जज धारि ॥
 विष्णु कृष्ण विष्णु श्रवा दामोदर दैत्यारि ॥ ३८ ॥
 वैकुण्ठ विधु हृषीकेश गोविन्द ॥ पीताम्बर गरुड ध्वज
 इंद्रावज उपेन्द्र ॥ स्वभू पुंडरीकाक्ष अज केशव माधव सो

य ॥ विष्वक्सेन जनार्दन रुशोरि अधोक्षज होय ॥ ४० ॥ चक्र
 पारि शार्ङ्ग हरी रूप द्यनाभ उरधारि ॥ वासुदेव श्रीपति
 अजित वनमाली कंसारि ॥ ४१ ॥ विश्वंभर पुरुषोत्तम रुमधुरि
 अच्युत मानि ॥ कैटभजित देवकी सुत सुवलि ध्वंसी जानि
 ॥ ४२ ॥ वसुदेव वलदेव नाम ॥ दोहा ॥ कृष्ण जनक व
 सुदेव सो आनक दुंदुभि तीन ॥ प्रलंब वल भद्र अरु अच्यु
 ताग्रज सुवीन ॥ ४३ ॥ राम रेवती रमण वल हलायुध स्वल
 देव ॥ कामपाल मुसली हली रौहिरोयति हिंभेव ॥ ४४ ॥
 सीर पारि नीलांबर रुसं कर्षण विख्यात ॥ कालिंदी भेदन
 रुलखिता लांकहु दशसात ॥ ४५ ॥ काम अनिरुद्ध ना
 म ॥ दोहा ॥ मदन मार मन्मथ अतनु मीन केतन रु काम
 प्रद्युम्न रु मनसिज रु स्मर दर्प करति पति नाम ॥ ४६ ॥
 पुष्प चाप अरु पंचशर शंवरारि कंदर्प ॥ अत्मभू रु कुसु
 मेषु पुनि मकर ध्वज सो थर्प ॥ ४७ ॥ केतु अनन्य जे ब्रह्म
 विश्व केतु ह शुद्ध ॥ विश्व केतु च व ब्रह्म सू उषा प्रति रु अनि
 रुद्ध ॥ ४८ ॥ लक्ष्मी हरी शंख नाम ॥ दोहा ॥ श्री लक्ष्मी
 पद्मालया पद्मा कमला मानि ॥ हरी प्रिया हरी शंख तो पां
 चजन्य जिय जानि ॥ ४९ ॥ हरी चक्र गदा रक्झ मणि न
 म ॥ दोहा ॥ चक्र सुदर्शन अथ गदा कौमोदकी विचारि ॥
 खड्ग तु नंदक कौस्तुभ तु मणि उरकी निर्धारि ॥ ५० ॥ गरुड
 नाम ॥ दोहा ॥ तार्क्ष्य स्वर्गेश्वर विष्णु रथ गरुत्मान रु सुप

गी॥ वै न तेयं नागांतकं सुपन्नगाशनं हवरा ॥ ५२ ॥
 देवनाम ॥ दोहा ॥ शंभु महेश्वरं प्रविशिवं शूलं ईश्वरं
 ईशं ॥ खंड परशुमृत्युंजयं रुद्रं शंकरं गिरिशं गिरीशं ॥ ५
 भीमं रुद्रं कपालभृत् शशि शेरवरं श्रीकंठं ॥ महादेवं
 भवं धूर्जटे रुद्रं प्रमथाधिपं शितिकंठं ॥ ५३ ॥ गंगाधरं
 रांतकं रुद्रं चैव कपशुपातिं जाणु ॥ रुद्रं वृषध्वजं स्मरहरं
 गिरिजापतिं पुनिस्थाणु ॥ ५४ ॥ कपदी रुद्रं
 तु ध्वंसी ईशानं ॥ वरूपाक्षं अंधकारिणं रुनीललोहि
 तं सुआनं ॥ ५५ ॥ कृत्तिवाससं रुद्रं त्रिलोचनं व्योमकेशं भू
 तेशं ॥ खंडकेशानुरेताभर्गं पंचाननं रुद्रं पेशं ॥ ५६ ॥ शि
 वकीजटाधनुषा पारिव्रतनाम ॥ दोहा ॥
 सुजटासुकुटाजगवधनुषा पिनाकं ॥ प्रमथं तु कहियं
 पारिव्रतं भाततु सप्रहिताकं ॥ ५७ ॥ सप्तमातानाम
 हा ॥ ब्रह्मराणी महेश्वरी कौमारी वाराहि ॥ इन्द्राणी
 रुद्रैस्सर्वी चामुंडा जूत आहि ॥ ५८ ॥ ऐश्वर्यं अष्टसिद्धि
 पार्वती नाम ॥ दोहा ॥ भूतिविभूतिं रुद्रं ऐश्वर्यं तासु भेद
 अठजोय ॥ अशिमा लक्ष्मि प्रापति रुद्रं महिमा गरिमा
 य ॥ ५९ ॥ प्राकाम्यं रुद्रं ईशत्वं पुनिजुतिवशित्वं
 ॥ उमो अपर्याणी ईश्वरी चंडिका सुगौरी ॥ ६० ॥ काली
 मवती शिवा शक्तिं खंडानी सोय ॥ रुद्राणी कात्यायनी
 ती भवानी होय ॥ ६१ ॥ सर्वमंगला पार्वती दुर्गा आर्या

खि॥सर्वाणी'दाक्षायणी'मेनकात्मजा'देखि॥६२॥ए
 कदंतनाम॥दोहा॥गरापविनायक'गजवदन'लंबोदर
 रुद्धिदेह॥विघ्नराज'है'व'अठ'द्वै'मातुर'मतिगेह॥६३॥स्वा
 मि'कार्तिक'।इन्द्रनाम॥दोहा॥कार्तिकेय'शरजन्म
 पुनि'महासेन'गुहस्कंद॥सेनानी'शिरिवाहन'सुवहरीपा
 र्पती'नंद॥६४॥कौंचदार'रा'रुष'इन्दन'तारक'जित'रुकु
 मारे॥वाहलेय'पुनि'शक्तिधर'बाणमातुर'निर्धार॥६५॥
 स्वामि'विशाख'रु'अग्निभू'सिद्धसेन'हूथाट॥इन्द्र'विडौज
 वज्रधर'सुनासीर'स्वाराट॥६६॥मरुत्वान'मघवा'दृषा
 सुरपति'सूत्रामोरु॥वास्तोष्पति'संकंदन'रुसोय'दिवस्प
 ति'चारु॥६७॥जिष्णु'पुरंदर'गोत्र'भिदले'खर्षभ'पुरहूत॥
 आखंडल'दृद्धश्रवा'वासव'मातलि'सूत॥६८॥पाकशा
 सन'रुदुश्यवन'नमुचि'सूदन'रुसोय॥सहस्राक्ष'शतम
 न्यु'पुनि'मेघवाहन'सुहोय॥६९॥बलाराति'कौशिक'खदि
 र'रुजंभ'मेदीथाट॥ऋभुक्षा'रु'दृत्रघ्न'पुनि'हरिहय'रु'तुराधा
 ट॥७०॥प्राची'नगरी'हय'नाम॥दोहा॥ताकी'पि
 या'पुलोमजा'शची'इन्द्राणी'साजि॥नगरी'तौ'अमराव
 ती'उच्चैश्रवा'तु'वारि॥७१॥सूत'वन'सदन'सुता'ग
 जनाम॥दोहा॥सू'मातलि'वन'सुतौ'नंदन'मन'मे
 मानि॥रै'जयंत'प्रासा'दह'सुत'जयंत'उर'आनि॥७२॥द
 हुरि'पाकशासन'जुगल'गजतु'अभ्रमातंग॥ऐरावत'ऐ

रावरा रुअम सुवल्लभ संग ॥ ७३ ॥ वज्रनाम ॥ दोहा ॥ वज्र
 हादिनी कुलिश पवि मिदुर अशनि दंभो लि ॥ शंख स्वरु
 णात कोटि दशनाम शस्त्र केवो लि ॥ ७४ ॥ विमानादि पी
 वृषांत ४ के नाम ॥ दोहा ॥ व्योमयान तु विमानै जुग सुर
 ऋषि नारद आदि ॥ सभा सुधर्मा ही अयो सुधा अमृत जुग
 वादि ॥ ७५ ॥ वियङ्गना सुमेरु नाम ॥ दोहा ॥ स्वर्णादी तु मंदा
 किनी सुरदीर्घिका ऽथ मेरु ॥ अरु हेमाद्रि सुरालय रत्न सानु रु
 सुमेरु ॥ ७६ ॥ देवतरु नाम ॥ दोहा ॥ देवतरु तु हरिचंद
 न रुपरिजात संतान ॥ कल्प वृक्ष मंदास्तुत पांचवरवानत
 जान ॥ ७७ ॥ सनत्कुमार स्ववैद्य अप्सरानाम ॥ दोहा
 ॥ सनकादिक वैधात्र अरु सनत्कुमार द्विधारि ॥ स्ववैद्य तु
 नासत्य अरु आश्विन दत्त विचारि ॥ ७८ ॥ आश्विनेय अश्वि
 नी सुत ये षट् जुग जुग जानि ॥ स्ववैश्या तौ अप्सरा जुग अथ
 मेद पिछानि ॥ ७९ ॥ अप्सरा भेद ॥ दोहा ॥ सात घटाची
 मेनका सुकेशी रुंभा हि ॥ पुनितिलोत्तमा उर्वशी रुमंजुघो
 षी आहि ॥ ८० ॥ गन्धर्व अग्नि वडवानल नाम ॥ ८१
 ॥ हाहा हूहू आदि हे सुरगन्धर्व हि मित्र ॥ ८२ ॥
 रुवीति होत्र आप्यित ॥ ८३ ॥ अनल धनंजय वायु सरव आश्र
 पाश सोमानु ॥ जात वेद पावक ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥ बर्हिः शुष्मा हुतभुक् रुतनूनपाद रुवन्धि ॥ शुक्र
 रुतवर्मा दहन आशु शुष्म री रु अग्नि ॥ ८६ ॥ हव्यवाहन

रुदमुनसं सुशुचि रुज्ज्वर्धुय होय ॥ शिखावान सप्तार्चि औ
 हिरण्यरेतो सोय ॥ ८४ ॥ चित्रभानु पुनि विभावसु रोहिता-
 श्वं तेनीस ॥ और्व तुवाडव तीन जुत, वडवानल ही दीस ॥
 ८५ ॥ भूलादितीन के नाम ॥ दोहा ॥ अर्चि ज्वाले की
 ल रुशिखा हेति रुटम, भूल थाप ॥ स्फुलिङ्ग सोतौ अग्नि
 कर्ण संज्वर तौ संताप ॥ ८५ ॥ काल राक्षस नाम दो
 हा ॥ धर्म राज यम दंड धर अन्तक यमुना भ्रात ॥ शमन प्रोते
 पति पितृ पति रुवैव स्वत रुक्तान्त ॥ ८७ ॥ आद्वदेव यमरा
 ज अरु संवत्ती दशतीन ॥ अस्त्रप कौराप रात्रिचर रात्रिचर
 सुप्रवीन ॥ ८८ ॥ आशर नैर्ऋत पुराय जन यातु धान क व्याद
 ॥ यातु रक्षस रुकवुर सुनिकषात्मज मनुजाद ॥ ८८ ॥ पा
 शी वायु शरीर वायु नाम ॥ दोहा ॥ वरुण प्रचेता अ
 प्यति रुयादः पति चवपाठ ॥ वायु मातरिष्वा पवन स्पर्शन
 दशजुत आठ ॥ ८९ ॥ दात प्रभजन नमस्वत एषदश्वरुप
 वमान ॥ अनिल समीरा गंधवह गंधवाह जगजान ॥ ९० ॥
 मारुत मरुतरु आशुग सु जगत प्राण रु समीर ॥ प्राण अ
 पान समान चव व्यान उदान शरीर ॥ ९१ ॥ भिन्न भिन्न
 शरीर वायु स्थान नाम ॥ दोहा ॥ उरमै प्राण अपान
 गुदनामिहि मां हि समान ॥ अरु कंठस्थ उदान है सवश
 रीरगत व्यान ॥ ९३ ॥ भंभानिल के मलयानिल के
 वेग के नाम ॥ दोहा ॥ भंभानिल प्रावृषिज जुगमलया

नितं वसन्तं ॥ विमं तुरं हंसं तुरसे रयं स्वदे अरुज वैषट सन्त ॥
 ८४ ॥ श्रीघ्ननाम ॥ दोहा ॥ श्रीघ्न त्वारितं लघुं क्षिप्रं अरं अ
 निलं वितं द्रुतं सोय ॥ सत्वरं तूरीं रुचं पलं पुनि आशुं एक दश
 होय ॥ ८५ ॥ निरन्तरनाम ॥ दोहा ॥ सन्ततं नित्यं अनारतं
 रुआवेरतं अनिशं अग्रान्तं ॥ सततं निरन्तरं अनवरतं दश अज
 सौं जुत शान्त ॥ ८६ ॥ अतिशयके। कुवेरके। नाम ॥ दो
 हा ॥ अतिशयं भरं अतिवेलं भृशं तीव्रं गाढं उद्गाढं ॥ अत्यर्थं
 अतिमात्रं दृढं पुनि एकान्तं रुवाढं ॥ ८७ ॥ निर्भीरं और नि
 तांतं ये चौदय नाम वखानि ॥ धनदं धनाधिपं वैश्रवणं श्री
 दं सेल विलं मानि ॥ ८८ ॥ पुण्य जनेश्वरं यज्ञपतिं त्र्यंबक
 सखं रुकुवेरं ॥ किन्नरेशं पौलस्त्यं पुनि नरवाहनं तिहिंटे
 र ॥ ८९ ॥ गुह्यकेश्वरं रुकुतनुं वसुराज राजं रुनिधीशं ॥ एक
 पिंगं रुपिशाचं कौं मनुष्यधर्मां वींश ॥ ९० ॥ कुवेर वना। सु
 ता। पदापुरी। यान। नाम ॥ दोहा ॥ वनकुवेरको चैत्र
 रथं नलकूवरं तो पूत ॥ पदहरगिरिं अलकां पुरीपुष्पकं यान
 जमूत ॥ ९१ ॥ किन्नर। निधिनाम ॥ दोहा ॥ किन्नरतै
 किंपुरुषं मयुं तुरंग वदनं हृचारि ॥ निधिं शेवधिं जुगभेदन
 वपद्मादिक उरधारि ॥ ९२ ॥ निधिभेद नाम ॥ दोहा ॥
 पद्मं शंखं कच्छपं मकरं नीलं रुखवं मुकुन्दं ॥ शब्दार्णावमै हं
 लिखे महापद्मं अरु कन्दं ॥ ९३ ॥

॥ इति स्वर्गतरङ्गः ॥

॥ अथ व्योम तस्मिन् लिख्यते ॥

॥ आकाश नामा दोहा ॥

अम्ब व्योमे पुष्करवियत अंबर गगन अनन्त ॥ सुरवर्त्म 'रु आका
शं नम अन्तरिक्ष दिव सन्त ॥ १ ॥ द्यौ 'रु विहाय से दिक्षु पद मरु
ते कुनाभि पिछानि ॥ मेघ वर्त्म अक्षर ख जुत वीस हि नाम
वरवानि ॥ २ ॥ इति व्योम तस्मिन् ॥

अथ दिक् तरंग लिख्यते दिशा दिश्य नामा दो.
दिक् काष्ठा आशा हरित कंकुम पाच ही जानि ॥ प्राची 'पूर्वा'
दक्षिणा दिशा अवाची 'मानि ॥ १ ॥ प्रतीची 'तु दिशा पश्चिमा'
उत्तर उदीची 'होय ॥ जो ककु उपजे दिशान मै दिश्य कहाँ वै सो
य ॥ २ ॥ क्रम तै पूर्वादि दिक् पति नाम ॥ दोहा ॥ इन्द्र
वर्न्हि पुनि पितृ पति 'रु नै चर्यत वरुणा विचारि ॥ मरुत कुवेर
रु ईश 'ये आँठौ दिक् पति धारि ॥ दिग्गज नाम ॥ दोहा ॥
ऐरावत पुंडरीक रु वामन कुमुद सुनीक ॥ अंजन 'रु पुष्प दंत
पुनि सार्व भौम सुप्रतीक ॥ ४ ॥ दिक् कारिणी नामा दोहा
अभ्र मु कपिला पिंगल अनुपमा नाम करि ॥ रु शुभ्र दन्ती
अंगना अंजनावती वरि ॥ ५ ॥ विदिश मध्या नामा दो.
दिशि विचि अपादिश विदिश अरु प्रदिश तीन ही मानि ॥ अं
तराल अम्यन्तर सुमध्य मात्र जुग जानि ॥ ६ ॥ मण्डल के मेघ
के मेघ पंक्ति के नाम ॥ दोहा ॥ चक्र वाले मण्डल जुग
ल गोलाकार अभूत ॥ मेघ अम्ब वारि दे मुँह रत डित्वान जी

वृत्ते ॥ ७ ॥ धूमयोनिजलमुके अपर धारा धर धन मानि ॥ वारि
 वाह स्तनयितु जल धर रु अं वु भृत जानि ॥ ८ ॥ कंधर गाड व
 वातर ध वलाह के हु दश आठ ॥ मेघ हृन्द का दे विनी धन मा
 नी त्रय पाठ ॥ ९ ॥ मेघोत्पन्न वस्तु के । गर्जन के । वीजु
 री के । नाम ॥ दोहा ॥ मेघ भवंतु अभियं इक हिर सित तु ग
 र्जित चारु ॥ स्तनित मेघ निघोषि च वहा दिनी तु शं पारु ॥ १० ॥
 शत हृदां रु ऐरावती क्षरा प्रभा च पला रु ॥ चंचला रु सौदा
 मिनी तडित दामिनी चारु ॥ ११ ॥ वज्र घोष के । मेघ ज्यो
 तिके । नाम ॥ दोहा ॥ स्फुर्जथु तौ इक शब्द यह वज्र घोष
 मे जानि ॥ मेघ ज्योति इरं मद सुपर मै मिली पिछानि ॥ १२ ॥
 इन्द्र धनुष के । वर्षा के । खुर्द के नाम ॥ दोहा ॥ इन्द्र
 रुधं है शक्र धनु रोहित तौ वज्रु आह ॥ वर्षा ऋषि वर्षन विना
 अवग्रह रु अवग्राह ॥ १३ ॥ निरन्तर मेघ धारा के । फुहा
 रा के । ओला के । नाम ॥ दोहा ॥ त्रय धारा संपात पुनि आ
 सार रु फर आहि ॥ शीकर सो तौ अं वु करा वर्षो पलं कर का हि
 ॥ १४ ॥ दुर्दिन के । अन्तर्द्धान के । चन्द्र मा के । कला के
 । विंव के । नाम ॥ दोहा ॥ घन छाये दिन दुर्दिन हि अपवारा
 ता पिधान ॥ अंतर्द्वा व्यवधा वडुरि तिरोधान अपिधान ॥ १५ ॥
 आच्छादन अंतर्द्वा ये आठौ अंतर्द्धान ॥ चन्द्र चन्द्र मा इन्दु विध
 क मुद वंधु शशि जान ॥ १६ ॥ नक्षत्रेश कला निधि रु जैवात्क
 मु भ्राशु ॥ अज क्षपा कर निशापति सोम मृगा के सुधाशु ॥ १७ ॥

ओषधीशं द्विजराजं पुनिग्लौं रुहिमांशुं हवीस ॥ कलातुषो
 डप्रा मोवटहि विवेतु माण्डलं दीस ॥ १८ ॥ टुकके । आधामे
 । चांदनी के । नाम ॥ दोहा ॥ खण्ड अर्द्ध भित्त रुद्रा कल
 अर्द्ध तु आधहु जानि ॥ ज्योत्स्ना सोतौ कौमुदीं त्यतिय च
 द्रिका मानि ॥ १९ ॥ निर्मलता के । चिन्ह के । नाम । दो
 हा ॥ दोय प्रसाद प्रसन्नता चिन्ह तुलां कन लेखि ॥ लक्षण
 लक्ष्म कलंक अरु अंक सहित षट् देखि ॥ २० ॥ अतिकृ
 विके ॥ कृविके ॥ पाला के । नाम ॥ दोहा ॥ सुखमाति
 कृवि कांति तौ कृविद्युति शोभा चार ॥ अवप्रयाय नीहार
 हिम मिहिको तुहिन तुषार ॥ २१ ॥ महा पाला के । जाड़ा
 के । नाम ॥ दोहा ॥ हिमानी तुहिम संहति हिशि शिर
 तुशीतल शीत ॥ हिम रुसुषीम तुषार जड अरु मजूड ज
 गमीत ॥ २२ ॥ ध्रुव के । अगस्त्य के । अगस्त्य नारिके ।
 तारान के । नाम ॥ दोहा ॥ जु औत्तान पादि सुध्रुव रुधू
 जी लौकिक तीन ॥ अथो कुंभ संभवं सुतौ कल शी सुत रुप्र
 वीन ॥ २३ ॥ मैत्रावरुण । अगस्त्य तिर्हि लोपा मुद्रा नारि ॥
 भ तु तारा नक्षत्र उडु ऋक्ष तारका धारि ॥ २४ ॥ दाक्षाय
 णी के । अश्विनी के । दिशाखा के । नाम ॥ दोहा ॥ अ
 श्विनी आदि जु तारका दाक्षायणी हि आहि ॥ अश्वयुज
 तु अश्विनी जुग विशाखा तुराधा हि ॥ २५ ॥ पुष्य के । धनि
 ष्टा के । पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा के । नाम । दो

पुष्पनिष्य अरुसिध्यं त्रयप्रविष्टा तु द्विधनिष्ठ ॥ प्रोष्ठपदां तौ
 मंगलभाद्रपदा हीतिष्ठ ॥ २६ ॥ मृगशिरके ॥ नाम ॥ दोहा
 मृगशीर्षे तु मृगशिरं त्यतिय आग्रहायणि इदीस ॥ इल्लव
 तारा पौनर्वते वसन सुमृगशिरसीस ॥ २७ ॥ बृहस्पति । ना
 म ॥ दोहा ॥ सुगचार्य गुरु वृत्ति चिघरा जीव बृहस्पति
 जानि चित्रशिरखंडिजे आंगिरसं वाचस्पति गुरु मानि ॥ २८
 शुक्रके । मंगलके । नाम ॥ दोहा ॥ शुक्रदैत्यगुरु
 काव्य कवि उशना भार्गव होय ॥ लोहितान्ग अंगार कुज भौ
 म मही सुत सोय ॥ २९ ॥ बुधके । शनि के । राहु के ।
 नाय दोहा ॥ रौहिरोय बुध सौम्य त्रय मंद शनैश्वरं सै
 रि ॥ सैहिकेय स्वर्भानु तम राहु विधुंतुद जोरि ॥ ३० ॥ सप्त
 ऋषि ॥ नाम ॥ दोहा ॥ अत्रि पुलस्त्य वशिष्ठ ऋषु पु
 लह गरीच वरवानि ॥ सहित अंगिरा सप्त ऋषि चित्रशिरख
 ङी जानि ॥ ३१ ॥ राशिके । सूर्यके । नाम ॥ दोहा ॥ राशिउ
 द्यतौ लग्न है तेतु मेष दृष आदे ॥ मिथुन कर्क सिंह कन्य
 का तुल वृश्चिक धनु वादि ॥ ३२ ॥ मकर कुम्भ मीन इदिद
 श अश्लेष अर्यमा सोय ॥ सूर सूर्य आदित्य अरु द्वादशात्म र
 वि होय ॥ ३३ ॥ ब्रह्म प्रभाकर दिवाकर उस्मर शिमे हार दश्व ॥
 मिहरे विकत्तेन अहस्कर चित्रमानु सप्राश्व ॥ ३४ ॥ द्युमणि
 अरु भास्कर तरणि ग्रहपति अरु विवस्वान ॥ अर्क अह
 नि निभाव स मारुत रु मास्वान ॥ ३५ ॥ सहस्रांशु पूषा

तपने भानु त्विषां पति हंस ॥ मित्र विरोचन विभाकर सविता सप्त
 रुत्रिंस ॥ ३६ ॥ माठर सूरसूत । नाम ॥ दोहा ॥ माठर पिंग-
 ल दंड त्रय पारि पार्श्व कजुसूरा । अरुणा अनूरु रुकाशय पि सु
 गरुड भ्रातं गुन पूर ॥ ३७ ॥ परिवेष के किरा के भा के
 आतप के । कोष्म के नाम ॥ दोहा ॥ उपसूर्य कं मण्डल
 परिधि परिवेष हचत्वारि ॥ किरा मयूख गमस्ति करं उरु अं
 शु च्यो धारि ॥ ३८ ॥ दीधिति भानु मरीचि पुनि धृष्टि एक द
 श होय ॥ भानु भास रुचि रुक् प्रभा कृति द्युति दीप्ति विजो
 य ॥ ३९ ॥ रोचि शोचि त्विष ही अथो आतप द्योत प्रकाश ॥
 कोष्म क वोष्म क दुष्म पुनि मंद उषा च वभास ॥ ४० ॥ ती-
 द्दरा के । मृग तल्लमा के । नाम ॥ दोहा ॥ तिग्मं तीक्ष्ण
 रक् तीनये आति उत्सहि के नाम ॥ मृग तल्लमा तुमरी चिका
 सिकता मधिजो घाम् ॥ ४१ ॥ इति दिक्तरंगः

अथ काल तरंग लिख्यते ॥ समय के । परि
 वा के नाम । दो०

काल तु दिष्ट अनेह अरु समय नाम हैं चारि ॥ पक्षाति प्रति
 पदे दोय अथ तादिक तिथि उरधारि ॥ १ ॥ दिन के । प्रभात
 के । नाम ॥ दोहा ॥ घस्र अहन वासर दिवसे दिन अथ स
 त प्रभात ॥ प्रत्युष दिन मुख ल्प उष प्रत्युष रुकाहि प्रातै ॥
 २ ॥ साय । संध्या प्रातर ध्यादि नाम ॥ दोहा ॥ सा
 य तुरा कदिनांत ही यपित प्रस्तु संध्या हि ॥ सो प्राह रमध्या

न्न'पुनित्रय अपराह्'हिआहि॥३॥ त्रिसंध्य। रात्रिनाम।
 दोहा॥यंतीनौतुत्रिसंध्य'इकअथशर्वरो'विचारि॥निशा
 रात्रि'निशीथिनी'क्षरादाक्षपा'निहारि॥४॥ तमो'त्रियाम
 यामिनी'रजनी'द्वादशसोय॥तमस्विनी'रुविभादरी'अथो
 अंध्यारी'होय॥५॥ अंध्यारी'चांदनी'पक्षिणी'नाम।
 दोहा॥देयतमिस्रातामसी'ज्योत्स्नी'चांदनि'जानि॥वर्तमा
 नआगमदिवसनिशि'पक्षिणी'वरवानि॥६॥ गगारात्र।
 रजनी'मुख। अर्द्धरात्र। यामनाम॥दोहा॥गगारात्रतु
 वहरात्रि'है'रजनी'मुखंतुप्रदोष॥अर्द्धरात्रतुनिशीथ'कहिया
 मंतुप्रहर'अदोष॥७॥ सर्वसंधि। पंचदशीनाम॥दो०
 अन्तरप्रतिपदपंचदशि'पर्वसंधि'सोजोय॥पंचदशी'पक्ष
 त'जुगपून्यौ'मावसहोय॥८॥ पून्यौ'अमावास्या'नाम
 दोहा॥द्विपौर्णमासी'पूर्णिमा'अनुमति'शशिकलहीन॥
 शशि'पूरणाराका'अथोअमावास्या'प्रदीन॥९॥ रुहस्येन्द
 संगम'दर्श'अमावस्या'चौचीन॥सोयसिनी'वाली'कुहूश
 शिजुतशशिकलहीन॥१०॥ ग्रहणाके। उपरक्तके। ना
 म॥दोहा॥ग्रह'रुग्रहणा'उपराग'त्रयअथउपरक्त'प्रभा
 न॥सोपप्लव'जुगनामये'रहुग्रसितशशिमान॥११॥ आ
 काशादिमेंअग्निविकार। पुष्यवंतनाम॥दोहा॥अ
 ग्न्युत्पात'उपाहित'सुअग्निविकारनमादि॥एकउक्तिमें
 रू'शशिपुष्यवन्त'इकवादि॥१२॥ निमेषादिअयनांत

समयनाम॥ दोहा॥ अष्टादशदिनिमेष'कीकाष्ठा'होतनिदा
 न॥ तीसहिकाष्ठाकीकला'कलातीसक्षरा'जान॥ १३॥ द्वाद
 शदिनकोजगविदित'एकमुहूर्त'हिहोय॥ तिनतीसनकोप्र
 गटहीरकरैन'दिन'जोय॥ १४॥ निशवासरपेंदरहनको'एक
 पक्ष'जियजानि॥ पूर्वशुक्लपक्ष'दूसरो'कृष्णपक्ष'मनमानि॥
 ॥ १५॥ जुगपक्षनकोमास'है'तिन'द्वैकी'ऋतु'जोय॥ तिनती
 ननको'अयन'सो'उत्तर'दक्षिण'होय॥ १६॥ वत्सर'तुलामे
 ष'संक्रांतिके'अगहन'के'नाम॥ दोहा॥ + ॥ ते'जुग
 वत्सर'विषुवत्'तु'विषुव'समजु'दिन'रैन॥ मार्ग'मार्गशी
 र्ष'रु'सहां'आग्रहायणीक'अैन॥ १७॥ पूष'माह'फागुन
 नाम'दोहा॥ पौष'तु'तैष'सहस्य'त्रयमास'तु'तपा'द्विमा
 नि॥ फाल्गुन'सो'तौ'फाल्गुनिक'त्यतिय'तपस्य'वरानि॥
 १८॥ चैत्र'वैशाख'ज्येष्ठ'आषाढ'नाम॥ दोहा॥
 चैत्र'तु'चैत्रिक'मधु'त्रयहि'माधव'तौ'वैशाख'॥ राध'ह्रज्येष्ठ'
 तु'शुक्ल'जुग'आषाढ'तु'शुचि'मास॥ १९॥ श्रावण'भाद्र
 आसोज'नाम॥ दोहा॥ श्रावणिक'तु'श्रावण'नभस'भा
 द्र'पद'स्तु'नभस्य॥ भाद्र'पौष'पद'आश्विन'तु'इष'रु'आश्व
 युज'पस्य॥ २०॥ कार्तिक'के'हेमंता'दिषट्'ऋतु'के'
 नाम॥ दोहा॥ कार्तिक'सो'तौ'कार्तिकिक'ऊर्ज'रु'बाहुल'
 चासि॥ ऋतु'तौ'षट्'हेमंत'अथ'शिशिर'एक'निर्धारि॥ २१॥
 पुष्य'समय'तौ'सुरभि'अरु'त्यतिय'वसन्त'वरानि॥ ग्रीष्म'तु

उत्सर्गं तप उस्मोपगमं पिच्छानि ॥ २२ ॥ उत्सर्गमस्मिन्निदाघं जु
 तस्य हि नाम प्रमान ॥ वर्षी प्रावृट् दोय अथ प्रारद तु एकनि
 दान ॥ २३ ॥ संमतादिमन्वंतरांत समयनाम ॥ दोहा
 संवत्सरं वत्सरं समाहायनं सरत्तु अब्द ॥ नरड्क मासं प्र
 सिद्धं है पितरै न दिन ॥ शब्द ॥ २४ ॥ एक वर्ष मान वन को
 जानि देव दिन रैन ॥ प्र्यामसेत नर पक्षते पितरन के दि
 न रैन ॥ २५ ॥ उत्तर दक्षिण अयन ते देवन के दिन राति ॥
 देवन के जुग सहस्र युग जानि ब्रह्म दिन राति ॥ २६ ॥ ब्रह्मा
 के दिन रैन ते कल्प नरन के जानि ॥ इक हत्तर युग सुरन के
 मन्वंतर मनमानि ॥ २७ ॥ प्रलय के पाप के पुण्य के
 नामे ॥ दोहा ॥ प्रलय कल्प संवत्सरे कल्पान्त हूपच हो
 य ॥ किल्बिष कल्प पाप मा पाप पंक है सोय ॥ २८ ॥ क
 षं वृजिनं दुष्कृतं दुरितं अंहरानं अघं जानि ॥ धर्म पुण्य वृष
 य संरु सुवृत्त पांचये मानि ॥ २९ ॥ आनन्द नाम ॥ दोहा
 आनन्दयु आनन्द सुख प्रीति प्रमद मुद मोद ॥ शर्म शांत से
 मत हर्ष द्वादश नाम प्रमोद ॥ ३० ॥ कल्याण नाम ॥
 दोहा ॥ श्वे श्रेयस शुभ मद्र शिव कुशल
 शास्त भव्य भावुक यविक मंगल द्विदश मुजान ॥ ३१ ॥
 अच्छे शुभद के नाम ॥ दोहा ॥ तल्लज उद्धमतल्लिका
 अरुमचर्चिका मानि ॥ और प्रकार ड प्रशस्त अ
 धि अयं जानि ॥ ३२ ॥ पूर्व कर्म के कारणा के आदि

कारण के नाम ॥ दोहा ॥ भागधेय दैव रु नियति दिष्ट भा
 ग्य विधि जान ॥ कारण बीज रु हेतु त्रय कारण आदि निदान
 ॥ ३३ ॥ शरीराधिदैवत के । सत्त्वादिगुण साम्याव
 स्या के । अवस्था के । गुण के । नाम ॥ दोहा ॥ क्षेत्रज्ञ तु आ
 त्मायुरुष प्रकृति प्रधान सुदोय ॥ जानि अवस्था कालकृत सत्त्वं
 रज तम गुण होय ॥ ३४ ॥ जन्म के । प्राणी के । नाम ॥ दोहा ॥
 उद्भव जन्म रु जनन जनु जनि उत्पत्ति कुमानि ॥ चेतन जन्मी
 जन्युषट्जंतु शरीर प्राणि ॥ ३५ ॥ जाति के । व्यक्ति के चित्त
 के । नाम ॥ दोहा ॥ जाति जात सामान्य त्रय व्यक्ति तु पृथक् स्वरूप
 रूप ॥ चित्त चेतन हृद हृदय मन मान संस्वान्त अनूप ॥ ३६ ॥

इति कालतरंगः

अथ धीतरंगालिख्यते । बुद्धि के । मनसकामकानाम ।
 दोहा ॥ प्रज्ञाधिषणा श्रेमुषी बुद्धि मनीषा सोय ॥ धी मति सं
 वित चेतना प्रज्ञा प्रतिपत् होय ॥ १ ॥ ज्ञाप्ति चित् रु उपलब्धि
 अथ धारणा वाली धीय ॥ मेधा ही संकल्प तौ मान स्वर्ग मनी
 य ॥ २ ॥ मनस्कार के । चर्चा के । वासना के । तर्क के ।
 नाम ॥ दोहा ॥ मन सुखादि में लीन है चित्ताभोग सुजानि
 ॥ मनस्कार जुग ही अथो चर्चा संख्या मानि ॥ ३ ॥ त्रिय विचार
 वासना सुतौ भावना चार ॥ तृतीय विमर्श हि ऊह तौ तर्क रु अ
 ध्याहार ॥ ४ ॥ संदेह के । निराय के । नास्तिकता के । दो
 ह चिंतन के । नाम ॥ दोहा ॥ संदेह तु संशय चतुरहा परवि

निकृत्सीहि ॥ निरीयतौ निश्चयं जुगलमिध्याद्यष्टितुआ
 हि ॥ ५ ॥ नास्तिकता जुगजहंगनै परलोकादिअभाव ॥ दोह
 चिंतनंतु दूसरो व्यापाद'हि ठहरव ॥ ६ ॥ सिद्धान्तके भ्रम
 के नाम ॥ दोहा ॥ सिद्धान्त तुराद्वांत जुग निरीय अन्त प्रमा
 ना ॥ भ्रम मिथ्या मति भ्रांति त्रय समुभै आनहि आन ॥ ७ ॥
 अंगीकार नाम ॥ दोहा ॥ अभ्युपगम आश्रव नियम प्र
 तिज्ञान रुसमाधि ॥ आगू संवित् संश्रव रुनवम प्रतिश्रव
 साधि ॥ ८ ॥ ज्ञान के ॥ विज्ञान के ॥ मोक्ष के ॥ अहंमति
 के नाम ॥ दोहा ॥ मुक्ति बुद्धि तौ ज्ञान है शिल्प शास्त्र वि
 ज्ञान ॥ मोक्ष मुक्ति कैवल्य पुनि निश्चय संनिर्वाण ॥ ९ ॥
 श्रेय अमृत अपवर्ग अथ अहंमति रुअज्ञान ॥ तृतीय अवि
 द्या ही अथोपेच विषय ये जान ॥ १० ॥ रूपादि विषय के ॥
 इन्द्रियार्थ के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ रूप शब्द गंध रस सुपंच
 स्पर्श पिछानि ॥ इन्द्रियार्थ तौ विषय अरु गोचर तीन वस्वानि
 ॥ ११ ॥ इन्द्रिय नाम ॥ दोहा ॥ इन्द्रिय सो तौ विषय अरु
 तृतीय हृषीक'हि होय ॥ ता सुभेद जुग कर्म अरु ज्ञान इ
 न्द्रिय हुजोय ॥ १२ ॥ कर्म इन्द्रिय के ॥ ज्ञान इन्द्रिय के ॥
 नाम ॥ दोहा ॥ कर पद वारी लिंग गुद इन्द्रिय कर्म निद
 न ॥ नयन कर्ण त्वच नासिका रसना मन षट् ज्ञान ॥ १३ ॥
 पद रस के ॥ जन मन हारी सुगंध के ॥ नाम ॥ दोहा ॥
 तुवर कपाय हि अथ मधुर लवण तिक्त कटु मानि ॥ अम्ल हुगंध

तु परिमल सुमलें उपजत जानि ॥ १४ ॥ आमोद के । निर्हारी के
 नाम ॥ दोहा ॥ आमोदतु अति मनहरन निर्हारी तौ ख्यात ॥
 द्वितीय समाकर्षी यहै गंध दूरित आत ॥ १५ ॥ अत्युत्तम गंध
 के । कर्पूर तांबूलादि मुख सोधक गंध के नाम । दोहा ॥
 धारा तर्पणातु सुरभि पुनि है सुगंध चत्वारि ॥ इष्ट गंध मुख वासन
 तु आमोदी जुग धारि ॥ १६ ॥ आमोदादि चार के स्थान ॥ ना
 म ॥ दोहा ॥ आमोदतु कस्तूरि मै मुख वासन तु कर्पूर ॥ वकुल
 माहि परिमल मनत सुरभि तु पंचक पूर ॥ १७ ॥ अनिष्ट गंध
 युक्त के । अपक्व मासादि गंध के । श्वेत के नाम । दोहा ॥
 पूत गंधि दुर्गन्ध जुग आम गंधि तौ जोय ॥ विस्त्रिहि श्वेत तु शु
 क्ल शुचि शुभ्र विशद सित सोय ॥ १८ ॥ अवलक्षरु अवदात
 पुनि पांडुर अर्जुन गौर ॥ धवल श्वेत ही हरिण तौ पांडुर पांडु न
 और ॥ १९ ॥ धूसर के । श्याम के । नाम ॥ दोहा ॥ इषत्पांडु
 तु धूसर हि श्यामल मेचक श्याम ॥ काल नील कृष्ण रु अमि
 त ये हैं सात तमाम ॥ २० ॥ पीत के । हरित के । रक्त के । शोण
 के । नाम ॥ दोहा ॥ पीत गौर हरिद्राभ त्रय हरित हरित पाल
 श ॥ रोहित लोहित रक्त त्रय शोण को कन दभास ॥ २१ ॥ अ
 रुण के । पाटल के । श्याव के । धूमल के । नाम । दोहा ॥
 गुप्तराग सो अरुण है पाटल श्वेत रु लाल ॥ श्याव कपिश धू
 मल सुतौ धूम्र हलोहित काल ॥ २२ ॥ अत्यन्त गौर वालक
 के । केश समरंग के । चित कवरा के ॥ नाम ॥ दोहा ॥

कदापि पिंगल कपिल षट्पि सङ्ग कडार ॥ रात चित्र कर्बु
 र कल्याण हि निधीर ॥ २३ ॥ इति धी तंयः

अथ शब्दादितं ग लिख्यते ॥ वाराणी के उक्ति के नामादि

तत्त्वती नी भारती ब्राह्मी भाषा वाक्य उक्ति लिपित भाषित व
 न्त वच व्याहार हिताक ॥ १ ॥ विगरे शब्द सुधरे शब्द

वाक्यार्थ ॥ दोहा ॥ अपभ्रंश अपशब्द जुग शब्द तु शुद्ध कहा
 व ॥ नाम क्रिया च यवाक्य कै कारक क्रिया मिलावीर वेद के

त्रयी धर्म अथवा धर्म के भिन्न र वेद के त्रयी का नाम
 दोहा ॥ आम्नाय तु श्रुति वेद त्रय त्रयी धर्म विधितास ॥ ४ ॥

क डद साम रुक् युष इक त्रयी तु तीनौ भास ॥ ३ ॥ वेदांग के
 प्रगाव के नाम ॥ दोहा ॥ शिक्षा कल्प र व्याकरा ज्योति

पे कन्द निरुक्त ॥ वेद अंग षट् प्रगाव तौ ओंकार ह जुग उक्त ॥
 ५ ॥ इति हास के स्वर के आन्वीक्षिकी के दंडनी

ति के नाम ॥ दोहा ॥ पुरावत्त इति हास जुग स्वर इक भे
 द तु तीन ॥ उदात्त अनुदात्त रुस्वरित आन्वीक्षिकी तु तीन ॥ ५ ॥

गौतमादिकरि गचित य ह विद्या तर्क विचारि ॥ दंडनीति गुरु
 आदिकृत अर्थ शास्त्र निर्धारि ॥ ६ ॥ अनुभव के पुराणा

के नाम ॥ दोहा ॥ अथ दोष तु आख्यायिको उपलब्धार्थी
 मानि विदित पुराणा ज नाम स तु पंच लक्षणा हु जानि ॥ ७ ॥ पं

च लक्षणा ॥ दोहा ॥ वंश सर्ग प्रति सर्ग अरु मन्वंतर परमा
 न ॥ मन्वा इक संस्थापन लक्षणा पंच पुराण ॥ ८ ॥ कथादि

५ के नाम ॥ दोहा ॥ रचनादिस्तरवाक्यकी कथा नाम एक हो
 त ॥ प्रवल्हिका तु प्रहेलिका धर्मसंहिता सोत ॥ ८ ॥ दूजी मयति
 संग्रह सुतो समाहति हि निर्धार ॥ असमासार्थी समास्यो नुक
 कवि पारिस्वकार ॥ ९ ॥ लोक प्रवाद के । वार्ता के । नाम ॥
 दोहा ॥ किंवदंति किंवदंती लतिय जन श्रुति प्रांत ॥ वार्ता सु
 तो प्रवृत्ति च वज्रुत उदंत वृत्तान्त ॥ १० ॥ नाम के नाम ॥ दोहा
 संज्ञा सोतौ गोत्र पुनि आह्वय अरु अभिधान ॥ आख्या जाहो
 नाम अरु नाम धेय जुत नान ॥ ११ ॥ हेला का । बहुतन का
 हेला का । मुकदमा के । नाम ॥ दोहा ॥ हति सुतो आक
 रणा आह्वान सुत्रय धार ॥ बहुतन कृत संहति है जुग विवाद व्य
 वहार ॥ १२ ॥ वचनारंभ के । उपोद्घात के । सौगन्ध के । प्र
 श्न के । नाम ॥ दोहा ॥ उपन्यास तौ बड मुखरु वचनारंभ वि
 मानि ॥ उपोद्घात तौ दूसरो उदाहार सो जानि ॥ १३ ॥ कहि है जो उ
 पयोगि तिहि अर्थ हि वर्णान जोग ॥ प्रापन तु प्रापय हि प्रश्न तौ
 प्रच्छात्रय अनुयोग ॥ १४ ॥ उत्तर के । अभ्याख्यान के ।
 नाम ॥ दोहा ॥ उत्तर तौ प्रति वाक्य जुग अभ्याख्यान तु क्षेय
 ॥ सुमिथ्या मिथोग जु कहै तै धन लियो सुदेय ॥ १५ ॥ अभि
 प्रापनाम ॥ दोहा ॥ जु मिथ्या भिसंप्रान सुतौ है अभि प्रा
 प हि भाय ॥ पाप सुपानादिको मिथ्या जहो लगाय ॥ १६ ॥
 प्राणाद के । यश के । स्तुति के । नाम ॥ दोहा ॥ प्राणाद
 स्तु अनुराग सै उपजे शब्द वखानि ॥ कीर्ति समज्ञा वश नुति तु

मतं कर्त्ता वस्तुति जानि ॥ १८ ॥ आम्नेडित के। घोषणा के नाम ॥ दोहा ॥ दोयतीन वर उक्त सो आम्नेडित निर्धारि ॥ उ
 च्छुप्त तौ घोषणा घोषणा तीनि निहारि ॥ १८ ॥ काकु। दोहा
 काम क्रोध मद शोक भय आदिक करि कहूं होय ॥ जो बोली
 को बदालि वो काकु कहवै सोय ॥ २० ॥ निंदनाम ॥ दोहा
 कुला गहरा जु गुप्ता निर्वीदरु परिवाद ॥ अवर्ण आक्षेप रुन
 वदा उपक्रोश अपवाद ॥ २१ ॥ निष्ठुर वचन के। दोष लगा
 के डराने के। खिजाने के। नाम ॥ दोहा ॥ पारुष्य तु अति
 वाद अथ मर्त्सन वच अपकार ॥ उपा लंभ जु तनिंद सो परिभा
 षणा निर्धार ॥ २२ ॥ परस्त्री मैथुन निमित्त वचन के। संवो
 धन पूर्व क वार्ता करने के। अनर्थ वचन के। नाम ॥ दोहा
 मैथुन प्रति आक्रोश सो आक्षारणा कुजाप ॥ आभाषणा आलाप
 जुग वच विन अर्थ प्रलाप ॥ २३ ॥ अभिप्रोक्त युक्त भाषणा के
 विलाप के। परस्पर विरुद्ध भाषणा के नाम ॥ दोहा ॥ अ
 नुलाप तु मुह भास है परिदेवन तु विलाप ॥ विरोधी कति विप्रला
 प हि मिथु भाषणा संलाप ॥ २४ ॥ सुन्दर वचन के। क्लिपे हुये
 वचन के। संदेश के। अमंगल वाक्य के नाम ॥ दोहा ॥
 सुप्रलाप तौ सुवचन हि निह्व तौ अपलाप ॥ वाचिक तौ संदे
 श वच रुप्रती अशुभ हि जाप ॥ २५ ॥ शुभ वचन का। अति
 भिष्ट वचन का। योग्य वचन का। नाम ॥ दोहा ॥ क
 न्यो तु वच शुभात्मिका सात्व तु अतिशय मीठ संगत तौ हृदय

गर्म सुमिलित जुक्ति वच ईठ ॥ २६ ॥ कठोर वचन के । शिथिल
 वचन के । प्रिय सत्य वचन के । पूर्वापर विरुद्ध वचन
 के नाम ॥ दोहा ॥ परुष तु निष्ठायाम्यतो अश्लील ह जुग
 जानि ॥ सून्दरतौ प्रिय सत्य अथ संकुल ल्लिष्टि दिमानि ॥
 २७ ॥ अधिक हे वचन का । थूक सहित वचन का । हल
 बल हे वचन का । नाम ॥ दोहा ॥ पूर्वापर सु विरुद्ध अथ
 लुप्त वर्णा पद ग्रस्त ॥ सनिष्ठे व अंबूकृत हित्वरितो दित तु निर
 स्त ॥ २८ ॥ अशुभ वचन का । अकथन योग्य के भुठ
 ईका । भूठ का नाम ॥ दोहा ॥ अवद्ध सो तु अनर्थ जुग अ
 न अक्षरं सु अवाच्य ॥ आहत सुतौ मृगार्थक हिवितथं तु अ
 न्त हिवच्य ॥ २९ ॥ उपहास सहित वचन का । रति सम
 य का शब्द का नाम ॥ दोहा ॥ सोल्लुंठन सोत्प्रास जुग
 वच उपहास समेत ॥ रतिकूजित तौ मरिगत जुगर वरति सम
 य सचेत ॥ ३० ॥ अप्रगट वचन के । सत्य के नाम । दो
 अविस्पष्ट तौ म्लिष्ट जुग ओठन मधिकी वानि ॥ सत्य सुतौ
 ऋत तथ्य अरु सम्यक् चारि वरवानि ॥ ३१ ॥ शब्द मात्र के
 पत्र वस्त्रन के शब्द के । आभूषण के शब्द के ना
 म ॥ दोहा ॥ शब्द निनद ध्वनि ध्वान रव स्वन निर्घोष निन
 द ॥ निर्हाद रुनिस्वान पुनि निस्वन आरव नाद ॥ ३२ ॥ अरु वि
 राव आरव नृणां गताः संराव मर्मर स्वन दल वस्त्र को शिंजि
 त भूषण भाव ॥ ३३ ॥ वीणा शब्द नाम ॥ दोहा ॥ काराक

गाननिष्कारां अरुक्कां है जो वीन ॥ कृषातं प्रादि प्रकारां अ
रुक्कां दिग निवीन ॥ ३४ ॥ वडे हल्ला के । पक्षीन के
वोली के । गूँज के । गाने के नाम ॥ दोहा ॥ कोलाहल
कलकल जुगल वाशितं रुततिरचान ॥ प्रति श्रुति सुप्रति
ध्वनि हि अथ जुग गीत रुगान ॥ ३५ ॥

इति श्रद्धादितरंगः ॥

अथ नाट्यतरंगालिख्यते ॥ सप्तस्वरनाम ॥ दोहा ॥
ऋषभं मृदु गंधारं पुनि मध्यमं धैवतं मानि ॥ पंचमं गौर
निषादं स्वरं सप्त राग के जानि ॥ १ ॥ क्रम तै सप्त स्वरन के अ
लापक नाम ॥ दोहा ॥ गौरं रुमयूरं अजादि पुनि कौंचं अ
र्धं निर्धार ॥ कोकिलं गजं इल स्वरन के क्रम तै करत उचा
रा ॥ २ ॥ काकली । कल । मन्द्र । तार ॥ नाम ॥ दोहा ॥
काकली तु सूक्ष्म सुध्वनि कलं तौ अस्फुट बीठ ॥ मंद्रं सुतो
गंभीर ध्वनितारं उच्च अति डंठ ॥ ३ ॥ एक ताल । वीरागा । प
रिवादिनी नाम ॥ दोहा ॥ एक तालं तौ नीक अति जुखे
लयहि निर्धार ॥ वीरां विपंची वल्लकीं परिवादिनि मुनिता
रा ॥ ४ ॥ तत । आनद्ध । सुषिर । धन । नाम ॥ दोहा ॥
ततं वीरादिक वाद्य है अनाद्ध तु मुरजादि ॥ वंशादिक तौ
७ ॥ है धन तु कांश्य तालादि ॥ ५ ॥ वाद्य । मुरज । मुरज भेद
। मुरज स्वरूप नाम ॥ दोहा ॥ ये चारिहुं तौ वाद्य पुनि अ
रुक्कादि ॥ मुरज मृदंगं दे दीयति हि मेद अंक्य है मित्र

॥२६॥ आलिंग्यैरुज्ज्वलं त्रयहि अंक्यं तु हरद्वै रूपं ॥ आलिंग्य
 तु गोपुच्छसमं यवसमज्ज्वलं जप ॥ ७ ॥ ठक्का के । भेरी के
 । नगारा के । नाम ॥ दोहा ॥ जसहित जो आगै बजै यशः
 पटह ठक्काहि ॥ मेरा दुंदुभि दोय अथ आनक पटह द्दिआ
 हि ॥ ८ ॥ कोरा । वीणा दंड । वीणा दंड के नीचै जो दाह
 भांड ता के नाम ॥ दोहा ॥ वीणादिक जातै बजै कोरा क
 हावै सोय ॥ वीणा दंड प्रवाल अथ कुम्भ प्रसेवक होय ॥ ९ ॥
 ताररहित वीणा सर्वांग के । जामै तार तथै ता के भि
 न्न भिन्न वाजान के । नर्तक के । नाम ॥ दोहा ॥ कोलं व
 क तो काय है निबं धन तु उपनाह ॥ बाजा डमरु रुमड्ड पुनि
 डिंडिम भ्रमर आह ॥ १० ॥ मईल प्रगाव दिक अपर वाजा
 भेद विचारि ॥ नर्तक जुगला सिका नाचन हारि निहारि ॥
 ११ ॥ धीरो । तेज । समनाच । ताल ॥ दोहा ॥ विलंबि
 त तु है तत्त्व गति द्रुत तो औघ निदान ॥ मध्यम गति चन्द
 ताल तो काल किया को मान ॥ १२ ॥ लय । तांडव । तीर्यत्रि
 क । नाम ॥ दोहा ॥ गीत वाद्य पादादि धिति क्रिया काल
 सम होय ॥ सो लय एकाहि तांडव तु नटन रनर्तन जोय ॥ १३ ॥
 नृत्य नाट्य लास्य हृषट्टि अथ तीर्यत्रिक सोय ॥ नाट्य जुग
 ल ये नृत्य अरु गीत वाद्य मिलि होय ॥ १४ ॥ नाचक । नाम
 दोहा ॥ भ्रकुं स और भ्रकुं स है भ्रकुं स हृत्रय जानि ॥ नर्तक न
 री वेष धर पुरुष नाम मन मानि ॥ १५ ॥ नाट्य उक्ति नाम ।

॥ दोहा ॥ गरिका कहिये अज्जुका नाट्य उक्ति मै जान ॥ भगिनी
 पाते आवन है भाव जानि विद्वान ॥ १८ ॥ जनक तु आवक जानि
 पे युवाज तौ कुमार ॥ भर्तृदारक हुन्द पति तौ भद्वारक निधर
 ॥ १९ ॥ देव हुताकी सुता तौ भर्तृदारिका होय ॥ देवी तौ अभिषेक
 कृत इतर भद्रिनी जोय ॥ २० ॥ अबल्लराय अवध्य है राष्ट्रिय
 तौ नृप प्रयाल ॥ अम्या माता अनत हू वासू कहिये वाल ॥ २१ ॥
 आर्य तु भारिष अत्तिका भगिनी वडी बखानि ॥ निष्ठा तौ निर्वह
 रा है संधि पंचमी मानि ॥ २२ ॥ पंच संधि नाम ॥ दोहा ॥
 मुख अरु प्रति मुख गर्भ कहि पुनि अवमर्श पिछानि ॥ अरु
 निर्वह रा हु पंच ये नाटक संधि बखानि ॥ २३ ॥ नीचादि ३
 बुलीने के नाम ॥ दोहा ॥ हुंडै हुंजै हला चय यथा संख्य अ
 दान ॥ नीचा चेटी सखी प्रति नाट्य उक्ति इति जान ॥ २४ ॥
 अंग विक्षेप ॥ व्यंजक ॥ आंगिक ॥ सात्विक ॥ दोहा ॥ दो
 ष अंग विक्षेप अरु अंगहार है सोय ॥ नृत्य विशेष हि
 तु अभिनय दूसर जोय ॥ २५ ॥ हस्तादिकारि मनगत हि अर्थ
 प्रकाश न होत ॥ भटकै वो भ्रू आदिको आंगिक सात्विक सोत
 ॥ २६ ॥ स्वात्त्विक भाव यथा ॥ दोहा ॥ स्तंभ स्वेद
 र भंग कंप पहिचानि ॥ अश्रु प्रलय वैवर्ण्य अठ सात्विक मा
 व बखानि ॥ २७ ॥ नवरस ॥ षट्गार ॥ वीर ॥ नाम ॥ दोहा ॥
 रस षट्गार रु वीर पुनि करुणा रौद्र रु हासि
 मत्स्य पुनि अद्भुत आठविकासि ॥ २८ ॥ नवम शांत रस काव्य

मिहोत नाट्य में नाहि ॥ शुचि उज्ज्वल शृंगार ॥ त्रय वीर वृद्धि उ
 त्साह ॥ २७ ॥ करुणा । हास्य । नाम ॥ दोहा ॥ कारुण्य तु करु
 णा घृणा कृपा दया अनुकंप ॥ अनुक्रोश अथ हास हस हास्य ती
 नये जंप ॥ २८ ॥ वीभत्स । अद्भुत । भयानक । रौद्र । त्रास ।
 नाम । दोहा ॥ विकृत सुतौ वीभत्स है अद्भुत विस्मय चित्र ॥
 आप्श्य है अथ भयानक दारुण प्रतिभय मित्र ॥ २९ ॥ भैरव
 भीषण भीष्म अरुमीमं भयंकरं घोर ॥ रौद्र उग्र जुग त्रास डर
 साध्वसं भीति न भौर ॥ ३० ॥ भाव । अनुभाव । अहंकार ।
 नाम ॥ दोहा ॥ मन विकार तौ भाव है तिहि बोधक अनुभाव
 ॥ अहंकार अभिमान पुनि गर्व तीन दरसाव ॥ ३१ ॥ मान । अ
 वमान । लज्जा । नाम ॥ दोहा ॥ चित्त समुन्नति मान अथ
 निरस्क्रिया अवमान ॥ परिभवं रीढ़ा अवज्ञा अहं बहेल सु
 जान ॥ ३२ ॥ असूक्ष्मा रूप परिभाव पुनि नवम अनादर होय
 ॥ लज्जा ई व्रीडा त्रपा मंदाक्ष ह यच जोय ॥ ३३ ॥ अपत्रपा
 । क्षांति । नाम ॥ दोहा ॥ लज्जा परसै होय सो अपत्रपा इक
 धारि ॥ क्षांति तिति क्षा हो बखुस पर को उदय निहारि ॥ ३४ ॥
 अभिध्या । ईर्ष्या । असूया । नाम ॥ दोहा ॥ अभिध्या
 तु परधन च ह सु ईर्ष्या तौ अक्षांति ॥ असूया तु परगुणान मे दो
 ष धरणी मन कांति ॥ ३५ ॥ वैर के । मन्यु के । पक्षिताने के
 । नाम ॥ दोहा ॥ वैर विरोध विद्वेष त्रय मन्यु शोक शुक था
 प ॥ पशु क्षापी तु विव्रती तारुनिय अनुनाय ॥ रोष के । शील

के। चित्तविभ्रमके। प्रेमके। तर्षके। लालसाके। नाम
 ॥ दोहा ॥ मतिघां रोष अमर्ष रुद कोप क्रोध कुध सात ॥ शील
 तु शुद्ध चारित्र्य हे चित्तविभ्रम तु तात ॥ ३७ ॥ उन्माद ह प्रेमा सुते
 मयतां हार्द वषानि ॥ प्रेम स्नेह अथ तर्ष लड इच्छा वांछा जा
 नि ॥ ३८ ॥ स्तहां ईहां मनोरथ दोहद कांक्षा काम ॥ लिप्सा अ
 भिलाष हि अति तु सोय लालसा नाम ॥ ३९ ॥ धर्म चिन्ता
 के। आधिके। स्मरणाके। कामादिसैं उत्पन्न स्म
 रणाके। उत्साहके। अति उत्साहके। नाम ॥ दोहा ॥
 द्विधर्म चिन्ता उपाधि हि व्यथा मानसी आधि ॥ आध्या
 ने तु चिन्ता ह स्मृति अथ उत्कलिका साधि ॥ ४० ॥ उत्कण्ठ
 उत्साहेतौ अध्यवसाय द्विमानि ॥ उत्साहं जु अति शक्ति जु त
 सो इकावीर्य वरानि ॥ ४१ ॥ कपटके। अकर्तव्यके। ना
 म ॥ दोहा ॥ कपट शाक्य कैतवं उपाधि कुस्यति निकृति अत
 व्याज ॥ हंस रुक्म प्रमादतौ अनवधानता साज ॥ ४२ ॥ को
 तुहलके। हावके। क्रीडा मात्रके। नाम ॥ दोहा ॥
 कोतुहल कोतुक कुतुक कुतुहल ह चत्वारि ॥ हेला लीला कु
 र्त्तनिर्त विभ्रम ललित विचारि ॥ ४३ ॥ किल किंचित विवोद म
 दिधि चित्त विहृत विलास ॥ तनयं मौग्धं विक्षेप पुनि मोह
 पितं तु मकास ॥ ४४ ॥ हाव सँजोग सिंगार भवदम्पति क्रियव
 त्तानि ॥ क्रीडा खेल परिहसनं नर्म केलि द्रव मानि ॥ ४५ ॥
 मोहरके। बाल लीलाके नाम ॥ दोहा ॥ लक्ष्य व्याज

उपदेश त्रय आच्छादननुस्वरूप ॥ क्रीडा खेला कूर्दन सुवालका
लीला रूप ॥ ४६ ॥ साधारण मूर्च्छा के । स्वेद जा गमी के ।
शोक में मुरवादि भाषने के । नाम ॥ दोहा ॥ नष्ट चेष्टा
प्रलय जुगधर्म निदाधरु स्वेद ॥ जु आकार गुप्ति सुगनो अवहि
त्या जुगभेद ॥ ४७ ॥ हर्ष सै शीघ्र कार्य करने आदि ३
के । नाम ॥ दोहा ॥ संभ्रम तौ संवेग जुग आच्छुरित कतौ हा
स ॥ अभिप्राय जुत वेग जुत स्मित तौ थोरो हास ॥ ४८ ॥ मध्य
महास्य के । रोमांच के । रोने के । जमुहार्ड के । नाम ॥
दोहा ॥ समविहसित रोमांच तौ रोम हर्षण हि दोय ॥ क्रंदि
तरुदित रुकुष्ट त्रय जंभ तु जंभरा होय ॥ ४९ ॥ अयोग्य
वचन अथवा स्वीकार करि बदलवा के । स्वधर्म सै
डिगवो अथवा गुढ लियौ चलिबो अथवारि पट पड
वा के । नौद के नाम ॥ दोहा ॥ विसंवाद विप्रलंब हिस्वल
नेतुरिंगरा दीय ॥ स्वप्न स्वाप निद्रा शयन संवेश ह पच होय ॥
५० ॥ ऊंगवा के । भ्रू भंग के । क्रूर दृष्टि के । स्वभाव के
किंप के । उत्सव के । नाम ॥ दोहा ॥ प्रमीला तु तंद्री भ्रुकु
टिं भ्रुकुटि भ्रुकुटि विरूप ॥ होय अदृष्टि असौम्य दृग संसिद्धि
स्तु स्वरूप ॥ ५१ ॥ प्रकृति स्वभाव निसर्ग पचवे पयुं कं पसु दोय ॥
५२ ॥ अणामह उद्धव उद्धर्ष उत्सव पंचम होय ॥ ५२ ॥

इति नाट्यतरंगः ॥

अथ पातालः ॥ गितरंगालेख्यते ॥ पाताल के । कंद

के। खाडा के। नाम॥ दोहा॥ नाग लोक वलि सदा पुनि
 अंधा भुवन पाताल॥ पंचरसा तल कुहरतौ शुषिर रुवि वर सा
 ल॥ १॥ छिद्र निर्व्ययन रोके विलेख प्रवभ शुषि होय॥ वपा स
 क दृश अवट तौ गर्त भूमि विल होय॥ २॥ छिदी वस्तु के। त
 म के। अति तम के। नाम॥ दोहा॥ शुषिर सरंध्र वरवानि
 अथ अंधकार तम ध्वांत॥ तिमिर तमिस्र सुपंच अथ अंधत
 म सं अति ध्वांत॥ ३॥ क्षीरा तम के। संतमस के। नाग
 के। नाग स्वामी के। नाम॥ दोहा॥ क्षीरा ध्वांत तौ अवत
 म सं संतमस तु तम जाल॥ काद्र बेय तौ नाग जुग शेष अनं
 त सुपाल॥ ४॥ वासुकि आदि ४ के। नाम॥ दोहा॥
 वासुकि तौ अहिराज अथ गो नस तिलि स थर्प॥ अजगर वाह
 ल सुयु त्तिय अलग र्द तु जल सर्प॥ ५॥ राजिल के। चीत
 ल के। कौंचली उतार के। नाम॥ दोहा॥ राजिल डंडु भ
 द्विमुख पुनि चाकौ र्द च द उक्त॥ मालु धान मातुल सर्प मुक कंचु
 क नि मुक्त॥ ६॥ सर्प नाम॥ दोहा॥ भुजंग भुजंग म गूढ पद व्या
 ल सरी स्तर्प सर्प॥ आशी विष विष धर फराणी पन्न ग भोगी थर्प॥
 ७॥ दं द शूर कंचु अवा जि ह्म ग उर ग भुजंग॥ अहि प्रदा कुं द
 वी कर रुका को दर ति हिं संग॥ ८॥ दीर्घ पृष्ठ अरु कुंडली पव
 नाशन मन मानि॥ चक्री औ विलेशय सुपंच विंश उर आनि॥
 ९॥ आहियादि ३ के। नाम॥ दोहा॥ विषास्थ्यादि आह
 य अथ स्फटां रुफणा निहारि॥ कंचुक अरु निर्मोक जुग सर्प

कांचली धारि ॥१०॥ विषके । स्यावरविषभेदके । नाम ॥
 दोहा ॥ स्वेड गरलं विषं तीन अथ काल कूटका कोल ॥ हलाहल
 रुसौ राष्ट्रिक रुशौलिके ये वधबोल ॥११॥ वत्सनाभं दारदबह
 रि ब्रह्मपुत्र उरआनि ॥ और प्रदीपन सहित ये नव विषभेद व-
 खानि ॥१२॥ गारडुके । अहिग्राहके । नाम ॥ दोहा ॥ विष
 वैद्य रुजांगुलिक जुग गारडुजग में जोय ॥ व्यालग्राहि अहि
 तुंडिक रुआहितुंडिकं हु होय ॥१३॥

इति पातालभोगितरंगः

अथ नरकतरंग लिख्यते ॥ नरकादि ३ के । नामादो-
 दर्गति नरकं नरकं पुनि निख जानि चत्वारि ॥ तपन अवीच
 रौरव रुमहारौरव सुधारि ॥१॥ कालसूत्र संहार पट आदि
 भेद बहु जोय ॥ प्रेत तु प्राणी नरक के वैतरणी नदि होय ॥२॥ निऋत
 तके । हठसै नरक में पटकने के । अथवा वेगारिके । अ-
 थवा भद्राव्यकरा के । तीव्रदुःख के । नाम ॥ दोहा ॥
 निऋत सो तौ अलक्ष्मी अजू विष्टि विगारि ॥ तीन कारणा या
 तना तीव्रवेदना धारि ॥३॥ मनव्यथा । तनुव्यथा । नाम ॥
 दोहा ॥ आमनस्य पीडा व्यथा वाधा दुःख सुशील ॥ कठमप्र
 सूतिज तीन तौ कष्ट कृच्छ्र आभील ॥४॥

इति नरकतरंगः

अथ वारितरंग लिख्यते ॥ सिंधु । सिंधुभेद । आप । ना-
 म ॥ दोहा ॥ सिंधु अब्धि अर्णव उदधि जल निधि साग जोय

अक्रु पागलाकरु सरितं अपांपति होय ॥ १ ॥ सरस्वानय दः
 पति रुससुद्र पागवार ॥ उदन्वान अथ भेदति हिंदि मंडोद
 उदार ॥ २ ॥ क्षीरोद रुल वरोद पुनि इक्षु सोद सुरोद ॥ अरु
 छतोद स्वादद अथ आपे रुसलिल समोद ॥ ३ ॥ वार सर्वतो
 मुखे अथ तं पुष्कर शंवर क्षीर ॥ मेघ पृष्ण कीलाल वने अ
 र्णो सं अमसे नीर ॥ ४ ॥ जीवन घन रस अंबु पर्व कमल पाथ
 जल तोये ॥ वार इन्दु पानीय पुनि भुवन कवंच ह होय ॥
 ॥ ५ ॥ जल विह्वति वीचि नाम ॥ दोहा ॥ आप्य रुअ
 मय जल विह्वति वीचि तु मंग तरंग ॥ अर्ध चारि उल्लोल
 तो कल्लोल ह अति मंग ॥ ६ ॥ भौंर पृषत नामा दो
 जल ममरा आवर्त है भौंर जल मै जोय ॥ पृषत विंदु विमु
 व पृषत जल कन पंचम होय ॥ ७ ॥ वक्र मम नाम ॥
 दोहा ॥ वक्र रुल जल अध धसै सो वक्र रुप द भेद ॥
 तो जल निर्गम जुगल जलगन कढै अखेद ॥ ८ ॥ कूला
 दि उके नाम ॥ दोहा ॥ कूल सुतो पचरो धस रुतर पु
 नि तीर प्रतीर ओलो तीर अवार इक्षु पार तु पै लो तीर ॥ ९ ॥
 टापू पुलिन नाम ॥ दोहा ॥ तिनको अन्तर पात्र है
 अंतरीप तो द्वीप ॥ जल तै निकस्यो तट सुतो
 विकुल दीप ॥ १० ॥ सैकत निषधर नाम ॥

यं अयस्फटि रिकता मयं जायै नि पन्न जंवाले ।

कायें सागर जोय

उपरा के

दिवुस्किमेंजलनिमित्तखाडाके। नाम॥ दोहा॥ जलोच्छ्र
 संपारवाहं जुग दृढवारिगतराह॥ कूपकंतीनविदारकं रुवेरी
 है कविनाह॥ १२॥ नाव्यादि ३ के। नाम॥ दोहा॥ नाव्य
 तुनावउतरजलनौतुतरशितीन॥ उडपेतुप्रवअरुके
 लचयत्यराकृतनौकावीन॥ १३॥ सोतके। उतराईके। प
 थरवाकाष्ठकी नौकाकारवेडीके॥ नाम॥ दोहा॥
 सोतसंस्वतरुप्रवाहजलआतरतौतरपण॥ उतराईको
 मोलजुगद्रोणीसोतौगराण॥ १४॥ अंबुवाहिनीकाष्ठकीसा
 यात्रिकंनौजानि॥ पोतवरीकंजुगनाविकंतुकराधारम
 नगानि॥ १५॥ जलजीवादिसेवचायनौकाकोंचलावे
 ताके। नावरज्जुबंधवाकेकाठके। नाम॥ दोहा॥
 पोतवाहअरुनियामकमगलखथितमुखकाठ॥ कूपकंरु
 रादृष्टकजुगलरजुबंधननौकाठा॥ १६॥ नावकेवगलव
 धे। पीठयैबंधेचालनकाष्ठके। नाम॥ दोहा॥ नौका
 दंडरुक्षेपरांनाववगलगतकाठ॥ केनिपातकरुअरिचमुचा
 लनपीठिहिकाठ॥ १७॥ अम्बि। सेकपात्र। नाम॥ दोहा॥
 अम्बिकाष्ठरुजुगनावमेलकुचरण॥ सेकपात्रसेचनजु
 गलनौगतजलानिकसान॥ १८॥ आधीनाव। अतिनु॥ नाम
 दोहा॥ अर्धनावयहनामतौआधीनौकाजोय॥ कौउत्तघननाव
 कोअतिनुकहावेतोय॥ १९॥ निर्मल। मलिन। नाम॥ दोहा
 नितसौलनतौअच्छअरुद्वितीयप्रसन्नवरवानि॥ कलुषअन

चरु आविल'हुतीन मलिन जलजानि ॥ २० ॥ गहिरे के । उन्ना
 न के । अथाह के नाम ॥ दोहा ॥ निम्न सुतौ गंभीर अरु तति
 य गंभीर'ह साध ॥ सो उलटो उन्नान' अथ अतल स्पर्श अगाध
 ॥ २१ ॥ मल्लाह के । जाल के । शरासूत्र के । नाम ॥ दोहा ॥
 धीवर तौ के वर्तकरु दास'ह जाल'तु जोय ॥ शानाय'हि शरासूत्र
 नौ द्वितीय पवित्रक' होय ॥ २२ ॥ मत्स्य स्थापन पात्र के । का
 ठ के । मीन के । मीन वाल के । नाम ॥ दोहा ॥ मत्स्या धार्म
 क वेसा' मत्स्य वेधन तु चार ॥ वडिश' अंडज तु मीन भष पथुरो
 मां रु विसार ॥ २३ ॥ वैसारिण' प्रकुली' अठम मत्स्य' नाम ही होत
 ॥ शकुलार्भक' तौ गड़क' जुग मीन मात्र के पोत ॥ २४ ॥ बहुत दांत
 वाली मच्छी के । सूंस के । वेगसा के । सहरी के । नाम ॥ दो
 हा ॥ सहस्र दंष्ट्र' पाठीन' जुग शिशुक' उलूपी' दोय ॥ नलमी
 न' तु चिल चिम' जुग लप्रोष्ठी' सफरी' दोय ॥ २५ ॥ वरवे ॥ सु
 द' अंड मत्स्यन को संध जु होय ॥ पोता धान' वखानै ता कौ लो
 य ॥ २६ ॥ भिन्न भिन्न मत्स्य नाम ॥ दोहा ॥ रोहित' महु
 र' शाल' ति मि प्रकुल' ति मिंगिल' होय ॥ राजीवौ' दि क एक डक
 मत्स्य विशेष हि जोय ॥ २७ ॥ जलजीव । भिन्न भिन्न जल
 जीव । नाम ॥ दोहा ॥ यादस' तौ जलजीव' तिन के भेद अपार ॥ उद्
 शुक' कुंभीर' अरु ग्राह' मकर' शिशुमार ॥ २८ ॥ कुलीर । कमठा
 दि । ४ के । नाम ॥ दोहा ॥ कर्कट कस्तु कुलीर' जुग कूर्म' तु क
 च्छप' धीर ॥ ग्राह' सुतौ अवहार' जुग नक्र' सुतौ कुंभीर ॥ २९ ॥

कैचुवाके। गोहके। नाम॥ दोहा ॥ महीलता गंडूपदरुहे
 किंचुलकं प्रवीन॥ चवथ केचुका निहाका गोह गोधिका तीन॥
 जेक। सिंधु सीय। शंख। नाम॥ दोहा ॥ जोक जलौकार
 नूप। और जलौक स होय॥ मुक्ता स्फोट तु शुक्ति जुग शंख कं
 बुजुग जोय॥ ३१॥ सुद्र शंखादि ५ के नाम॥ दोहा ॥
 सुद्र शंख तौ शंख नरख शंख का जल शुक्ति॥ भेक तु पर्व मंडूक
 पुनि बषी भूजुत जुक्ति॥ ३२॥ दर्दर दादर मीडा का शालूर ह अ
 थ दूहि॥ गंडूप दी शेली जुगल भेकी वर्षा भू हि॥ ३३॥ कम
 ठी आदि ३ के नाम॥ दोहा ॥ कमठी तौ कूर्मी डुलि हि
 अंगी मद्गु नारि॥ दीर्घ कोशिका तौ द्वितिय दर्नी मा जल चा
 रि॥ ३४॥ जलाधारादि ३ के। नाम॥ दोहा ॥ जलाधा
 र तु जलाशय हि हृद अगाध जल जानि॥ आहाव तौ निपान
 जुग कोठा खेल वखानि॥ ३५॥ कूप। त्रिका वीना हान
 म॥ दोहा ॥ अंधु कूप उदपान प्रहि चारि त्रिका इका आह॥
 दास्यंत्र स्नुधरा हित मुख बंधन वीनाह॥ ३६॥ चोकोने
 ताल के। अकृत्रिम ताल के। सकल म ताल के। ना
 म॥ दोहा ॥ पष्करिणी तौ स्वात अयदे स्वात तु अखात पद्माकर
 तु तडाग जुग अति जल जुत जल जात॥ सामान्य तडाग के। त
 लाई के। नाम॥ दोहा ॥ सरसी सर का सार त्रय कृत्रिम ताल
 निहारि॥ ३७॥ पल्लव सोतौ अल्प सर त्रय दे शत विचारि॥ ३८॥
 वाकडी के। खाई के। नाम॥ दोहा ॥ वापी सोतौ दीर्घिका

तीन दावडी जानि ॥ खेयंतुपरिखा जग विदित खाई नाम वखा
नि ॥ ३८ ॥ बंध के । थावला के । नाम ॥ दोहा ॥ आधार
तु जुगबंध अय आलवाल आवाप ॥ आवाल ह जग थावलो
तरु जड जलहित थाप ॥ ४० ॥ नदी नाम ॥ दोहा ॥ शैवलि
नी तुतरंगिराणी हृदिनी नदी निहारि ॥ द्वीपवती तटिनी धुनी
सरित आपगा धारि ॥ ४१ ॥ सोस्वती रुनिन्नाग रोधो वक्रा दे
खि ॥ निर्भरि राणी कूलं कषा ओर स्रवती पखि ॥ ४२ ॥ गंगा ।
यमुना । नाम ॥ दोहा ॥ गंगा तौ धर्म द्रवी विष्णु पदी उर
आनि ॥ त्रिस्तोता भागीरथी सुरनिम्न गावखानि ॥ ४३ ॥ जन्हु
सुता अरुभीषसू आठ त्रिपथगा धारि ॥ कालिंदी प्रगन स्वस
यमुने रवि सुता चारि ॥ ४४ ॥ रिवा । नाम ॥ दोहा ॥ रेवा
सोतौ नर्मदा सोमोद्भव रु सोय ॥ चौथे मेकल कन्य का मेक
ल नयवि गिरि होय ॥ ४५ ॥ कर्तोया । नाम ॥ दोहा ॥
कर्तोया तौ दूसरी तु सदा नीर जानि ॥ गौरी कन्या दान के
जल भव सरिता यानि ॥ ४६ ॥ सहस्र बाहू की नदी के ।
व्यास के । सतलज के नाम ॥ दोहा ॥ सैतवाहिनी वा
हुदी द्विविपासां स्तुविपाट ॥ तीन शतद्रु पुट्रिज ॥
नाम सुचाट ॥ ४७ ॥ सोन भद्र के । नहरि के । नाम
हा ॥ सोन भद्र तौ शोरां नय हिरण्यवाह ह होय ॥ कन्या
तौ कप्रिया अजय नती जग जोय ॥ ४८ ॥ बेनवती आदि
के भिन्न भिन्न । नाम ॥ दोहा ॥ बेनवती रुशावती रु

चन्दभागा जानि ॥ कावेरी र सरस्वती भिन्न भिन्न पहिचानि ॥ ४८ ॥
 नदी संगम के । पनार के । नाम ॥ दोहा ॥ संभेद तु मिलनौ
 सति सिंधु संगम होय ॥ जलनि कसन को मग सुतौ एक परा
 ली होय ॥ ४९ ॥ शानिका । सारव । नाम ॥ दोहा ॥ नदी दे
 विका मै जु है सो दाविक इक जानि ॥ सरयू सरिता मै जु है सो सा
 रव रर आनि ॥ ५० ॥ संध्याविका सीथे त कमल के । रक्त
 कल्हार के । कुमुद कमलधारण के । नाम ॥ दोहा ॥
 सो गंधिक कल्हार जुगरक्त संधिक तु हेरि ॥ हल्लक हू है कुव
 लय तु ज्यल दोय निवेरि ॥ ५१ ॥ कालिक कमल के । उज्ज्वल
 कमल के । नाम ॥ दोहा ॥ नीला कुज इंदीवर सुनील रंग में
 जानि ॥ सित में कै रव कुमुद ॥ अथ इन के कन्द वरवादि ॥ ५२ ॥
 कमल कन्द के । जल कुंभी के । सिंदाल के ॥ नाम ॥
 दोहा ॥ शालूक हि अथ कुंभिका सुवारि परी ॥ दोय ॥ जलनी
 ली शैवाल पुनि शैवाल द्वय होय ॥ ५३ ॥ कुमुदिनी । वाकु
 मुद युक्त देश के । कमलिनी के । नाम ॥ दोहा ॥ कुमु
 दती तौ कुमुदिनी ॥ ठौर कुमुद जुत धारि ॥ विसिनी नलिनी कम
 लिनी जुत सरे जिनी चारि ॥ ४४ ॥ कमल । नाम ॥ दोहा ॥
 पंकेरुह सारस कमल सहस्र पत्र शत पत्र ॥ पद्म कुशेशय ताम
 रस विस प्रसूनरु अत्र ॥ ४५ ॥ पुष्कर अमोरुह नलिन अरविंद र
 राजोद ॥ जानि महोत्पल सोलवौ ॥ पुंडरीक सित सीव ॥ ५६ ॥ लाल
 कमल के । कमल की डांडी के । मृगाल के । न

स्तोत्पलतौ कोकनदस्तसरोरुहजोय॥ नालो नालम्यरा
लतौ विसंजुगमूलहिहोय॥ ५७॥ कमलादिकेगनके।
कमलकीजडके। कमलपुष्पमध्यमें जो कालरहि
तोहेउरके॥ नाम॥ दोहा॥ खण्डतुपद्मसमूहअयसि
फाकंदकरहाट॥ किंजल्कतुकेसरतृतीयकेशरसहितसु
चाट॥ ५८॥ कमलकेनवपत्रनके। कमलाक्षके।
नाम॥ दोहा॥ नवदलतौ संवर्तिकापद्मादिकनवपान
॥ कीजकोशको नामतौ द्वितियवराटकनान॥ ५९॥

इति दारितरंगः सः

इति गुलावसिंहस्थितौ नामानुशासने॥ स्वरादिभागः प्र
थमः साङ्गरावसमर्थितः ॥ १॥

श्लोक

युष्माक्यङ्गनिशाकरैर्विरहिते वर्षेषु भवैकमे
ज्येष्ठे मासि सितेदले हरितिथौ श्रीसौम्यवारे शुभे॥
कोशे यद्दिगुलावसिंहरचितस्स्वीये शिलायंत्र
के श्रीमत्केशवशर्मणाऽर्गलपुरे मुद्राङ्कतां प्रा

पितः॥

दृष्टि	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	दृष्टि	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	द्वार्थिक	द्वार्थिक	१४	१६	मानु	मानु
३	९	लीव	लीव	१४	२१	अहर्बति	अहर्पति
३	९	अंतस्थान	अंतस्थान	१५	६	गमस्ति	गमास्ति
३	१५	कृज्जु	कृभु	१५	१६	कल्प	कल्प
४	५	राक्षस	राक्षस	१६	१०	सर्वसंधि	पर्वसंधि
४	८	बुद्धि	बुद्ध	१७	१५	शुक्ल	शुक्ल
६	१३	पारिखद	पारिषद	१७	१७	पोष्ट	मौष्ठ
६	१८	जुति	जुत	१८	१	उस्मकतप	उस्मकउस्मक
७	६	पार्वतीनंद	पार्वतीनंद	१८	३	संवतादि	संवतादि
७	११	गोत्रमिद	गोत्रमिद	१८	१७	श्वे	श्व
८	७	सुरालयरत्न	सुरालयरत्न	१८	१७	मद्र	मद्र
८	६	परिजात	परिजात	१६	१८	विय	विय
८	२१	रुस्मवर्त्मी	रुस्मवर्त्मी	१६	२०	निरार्य	निरार्य
६	२	रोहिताश्व	रोहिताश्व	२१	१	मल्ले	मसल्ले
६	७	प्रेतिपति	प्रेतपति	२१	२	आमोदतु	आमोदतु
६	१६	नामि	नाभि	२१	३	द्वितीय	द्वितीय
१०	१	वसंत	वासंत	२१	६	चारके	चारके
१०	१	रंहसंतुरस	रंहसंतुरस	२१	७	कपूर	कपूर
१०	७	अत्यर्थ	अत्यर्थरु	२१	८	पंचकपूर	चंपकपूर
१०	६	चौदय	चौदह	२६	६	मासादि	मासादि
१०	१०	यज्ञपति	यज्ञपति	२१	१०	मिस्त्र	मिस्त्र
१०	२०	कंद	कुंद	२२	२	कर्दुरकल्माष	कर्दुरकल्माष
२	२	जलधार	जलधार	२२	१५	उदाताऽनुदात्त	उदाताऽनुदात्त
२	६	सुर्जथु	सूजथु	२३	६	आकारण	आकारण
१२	३	वृष्टि	वृष्टि	२३	१६	क्षेय	क्षेय
१६	१	निध	निधु	२३	१७	मिथ्यामिथोग	मिथ्यामिथोग

श्री	गति	अशुद्ध	शुद्ध	श्री	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	२	प्रणादस्तु	प्रणादस्तु	२६	२	विप्रतीतार	विप्रतीसार
२३	३	नानि	तीन	३०	६	अभिलाष	अभिलाष
२४	१६	मिथुमाषणा	मिथुमाषणा	३०	११	उत्साह	उत्साह
२४	२१	हृदय	हृदय	३०	१८	तनप	तनप
२५	३	निष्ठर	निष्ठर	३०	२०	परिरुसन	परिरुसन
२५	४	क्लिष्ट	क्लिष्ट	३२	१६	ओविलेशय	ओविलेशय
२५	५	अथकहे	अथकहे	३३	१०	दुर्गति	दुर्गति
२५	७	अथशून्य	अथशून्य	३३	१५	अज	आज
२५	१३	खरति	खरति	३४	१	यदःपति	यादःपति
२६	१	अरुक्का	करानिक्का	३४	३	इक्षुसोद	इक्षुसोद
२६	८	ऋषभ	ऋषभ	३५	७	स्वतरु	स्वतः
२६	१०	गौररु	गौररु	३५	२१	लज	जल
२६	१८	अनाद	आनद	३६	१४	संघजु	संघनु
२७	४	पटरु	पटरु	३६	१८	जीवतिनके	जीवहैंतिनके
२७	११	अपर	अपर	३७	३	सिंधुसीय	सिंधुसीप
२७	१२	नर्तकी	नर्तकीतु	३७	१३	वीनाहा	वीनाह।
२७	१४	गसि	गति	३७	१६	सकलमताल	सकलमताल
२७	२०	भकुंस	भुकुंस	३७	१७	अय	अय
२८	३	भर्तृदारक	भर्तृदारक	३७	१६	कृत्रिम	कृत्रिम
२८	७	भारिष	भारिष	३८	६	स्त्रोस्वती	स्त्रोस्वती
२८	१०	नीचादि३	नीचादि३के	३८	६	निम्नागा	निम्नागा
२८	११	बुलोनेके	बुलानेके	३८	७	कमलाधारणा	कमलासाधार
२८	११	हंडे हंजे	हंडे हंजे				रा
२८	१५	हस्तादिकारी	हस्तादिकारी	४०	३	कालर	कालर
२८	१६	भटकैवो	भटकैवो				
२८	२७	स्वात्विक	सात्विक				

ना- सिंधुकोशको

द्वितीयभाग

अर्थात्

गुलाब कोशको संक्षेप अमरकोश द्वितीयकांड

कविद्विशेष

श्रीयुत चहु वारा वंशावतं हड्डकुल कलशवंदी
नू महाराजा अधिराज महाराव राजाजी श्री श्री
श्री श्री श्री १०८ रामासिंहजी के कवि रावजी श्री

गुलाबसिंहजी रूत

आगरा

गोरवेलनगंजे श्री. पिडित केशव प्रसाद शर्मा

वेदि प्रबंधेन विद्याल्लकरयंत्रे मुद्रितः

२५
२५
२५

नमो भगवते

३

१६

महोदधि

नमो भगवते

सुखी

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥१॥

अथनामसिंधुकोद्धृतीय

भाग लिख्यते



दोहा

उमारमा सीता गिरा राधा रमन मनाय॥
रत्नौभाग दूजोगुरुहि वार २ शिरनाय॥
तजिगुलावनिजकोशकोविस्तरसारसम्हारि
रत्नौभागदूजोसमुभितिलकअमरदेचारि॥

अथतुकांतनियमादोहा

होतुरुलाभिअसुप्तिगुनकीटसंजुडक्कीसु॥
धीजरुमिल्लअच्छनअतिशुक्रकहातुरुदीसु॥
भज्जसज्जुअरुधत्तिपुनिधत्तिआदिपहिचानि
भाषावदलरुस्वरवदलकियतुकांतहितजानि॥

भूमिरूपरगिरिवनोषधि'सिंहादि'करुन्त'मानि॥ब्रह्म'क्षेत्र'
'येदशतरंगह्य'जानि॥५॥ अथभूमितरंगलि
ख्यते॥ २०। मिट्टीके२। अच्छीमिट्टीके३। नाम
दोहा॥ भूअचलाविश्वभराभूमिअनेता॥ २१॥ कुव

धरणी'क्षिति'धरा'क्षोणी'वसुधा'होय॥८॥उर्वी'पृथिवी'ज्या
 रसा'सर्व'सहा'कुं'जानि॥९॥धर्मा'रु'धरित्री'काश्यपी'अवनि'
 नी'मानि॥१०॥पृथ्वी'गोत्रा'वसुमती'वसंधरा'महि'पेधि
 तु'मृत्तिका'सुन्दरतु'मृत्सा'मृत्सु'देवि॥११॥सवसस्य
 युक्तकोश'लोनी'मट्टी'के२।ऊषर'के२।नाम
 ऊर्वरा'तु'सवसस्य'प्रद'क्षार'मृत्तिका'सोतु॥ऊषा'हि
 तौ'द्वितीय'ऊषवान'ही'होतु॥१२॥स्थान'के२।
 के२।विन'जोते'के२।भूतल'के५॥नाम॥दोहा॥
 स्थली'स्थल'धन्वा'तु'मरु'खिल'तु'अप्रहत'दोय॥जगत'लो
 क'विष्टप'भुवन'जगती'पाँच'हि'होय॥१०॥हिन्दुस्तान'को
 श'प्राच्य'कोश'नाम॥दोहा॥भारत'वर्ष'तु'लोक'यह'अ
 ध'शरा'वती'कार॥पूर्व'रु'दक्षिण'
 ॥११॥उदीच्य'कोश'म्लेच्छ'देश'के२
 त्र'हिमालय'सै'दक्षिण'कुरु'क्षेत्र'सै'पूर्व'प्रयाग'सै'प
 ष्चिम'देश'के२।नाम॥दोहा॥अथ'उत्तर'
 पश्चिम'उत्तर'देश॥म्लेच्छ'देश'तत्पुं'त'जुग'मध्यम'
 ॥१२॥आर्या'वर्त'के२।राज्य'वा'देश'के२।देश
 के३।नडा'धिकादि'३के।नाम॥दोहा॥
 र्या'वर्त'विंध्य'हिमा'चल'माहि॥नी'वर्त'जन'पद
 देश'त'विषय'रु'आहि॥१३॥अप'वर्त'न'नडल'सुतौ'नड'प्राय
 पाय'कुसु'दान'वह'वेत'सवेत'स्वान'

घासजुतदेश को १। कीचजुतको १। सजलके २। ना
 म ॥ दोहा ॥ शादहरित शादूल इकहि पंकिल तु सजंवाल ॥
 जल प्राय तु अनूप अथ त्यों ही कच्छ रसाल ॥ १५ ॥ कंकरीजु
 तदेश के २। देशादिके २। बालूजुतदेश के २। देशादि
 के २। नाम ॥ दोहा ॥ शर्करांतु शर्करिल जुग दोय शर्करावान
 ॥ शर्करा सिकता सिकतल है सैकत सिकतावान ॥ १६ ॥ नदी
 मात्रिकादेव मात्रिक। नाम ॥ दोहा ॥ नदी वृष्टिजलतें
 भई कृषिकरपालित वेश ॥ नदी मातृक रुक्रम सहित देवमा
 तृक हि देश ॥ १७ ॥ सुन्दरपदेश सामान्य नटपदेश
 ॥ नाम दोहा ॥ उत्तम नटप जुत देश सो राजन्वान वखानि ॥
 राजवान तौ और सब देश नटपन के जानि ॥ १८ ॥ गवाडा के
 २। पहिले गवाडा को १। नदी पर्वतादिके समीप की
 भूमिके २। पुलके २। नाम ॥ दोहा ॥ गोस्थानक तौ गो
 ष्ट है सुभौ ॥ गोष्ठीन ॥ परिसर तौ पर्यन्त भू से तु तु आलु प्र
 वीन ॥ १९ ॥ बाँवी के ४। मार्ग के १७। नाम ॥ दोहा ॥ वा
 मलूर वल्मीक पुनि नाकुरु बाँवी चारि ॥ मार्ग अयन पद
 वी सरणि पद्धति पंथा चारि ॥ २० ॥ एक पदी स्तति वर्त्मनि
 सुवर्त्म रुअध्वा देधि ॥ वाट रूप द्यापय विदित गैल राह म
 ग पेषि ॥ २१ ॥ सुमार्ग ३। कुमार्ग के ५। नाम ॥ दोहा ॥
 सत्य अति पंथा तयति सुपंथा हुक्क ॥ विपथ कदध
 काप ग्रुव्यध्व दुरध्व कुराह ॥ २२ ॥ चौराहा ने १० कुव

टके २। दूर और सूना को १। कठिन को। नाम ॥ दोहा ॥
 घंटा टक जुगचतुष्पथ अथ अथ चारों प्रान्त तौ सु
 नौ परे दुर्गम मग कांतार ॥ २३ ॥ दो कोश को १ चार सै
 हाथ को १ राजमार्ग के २। पुर मार्ग को। नाम ॥ दो
 गव्यति स्तू कोश युगनल्वंतु करणत चारि ॥ घंटा पथ
 संसर रा जुग उपनिष्कर पुरधारि ॥ २४ ॥

इति भूमितरंगः

अथ पुरतरंग लिख्यते ॥ राजधानी के १ नाम ॥ दो
 हा ॥ पूः पत्तन नगरी पुरी पुट भेदन स्थानीय ॥ निगम
 सात नट्य नगर तै भिन्न जु पुर गरा नीय ॥ १ ॥ उपनग
 र को १। वेश्या घर के २। बाजार के ४। नाम ॥ दोहा ॥
 शारवानगर हिवेश तौ है वेश्या जन स्थान ॥ हट्ट निषद्या
 आपराहु सो बाजार जिहान ॥ २ ॥ गुदडी के २। गली के
 ४। नाम ॥ दोहा ॥ परपवीथिका विपरी जुग वस्तु विके
 घर हीन ॥ प्रतोली तु विशिख गली रथ्या चारि प्रवीन ॥ ३
 ॥ र्वाद सै निकसी मड्डी के कूहा के। वा प्रकारा धा
 र के २। डंडा के। वा। कोट के ३। वाडि के २। भीतिके
 नाम ॥ दोहा ॥ चयंतु वप्र जुग प्राल तौ दरगा तृतीय प्रा
 कार ॥ प्रचीन तु प्राचीर जुग मित्तितु कुड्ड उदार ॥ ४ ॥ हाड
 जुत भीतिको १। मंदिर के २। नाम ॥ दोहा ॥ एडक
 नडे प्रमंदिर तौ आगार विषम उदवसित सदा गद

सादनसदनअगार ॥५॥ भवननिकायनिकेतनरुनिशा
 तपस्त्यरुगेह ॥ आलयेनिलयेसभाकुटीशालावासहले
 ह ॥६॥ चौसालाके २। मुनिघरके २। यज्ञशालाके ३।
 हयशालाके १। नाम ॥ दोहा ॥ चतुश्शालसंजवनजु
 गउठजपराशालाहि ॥ चैत्यआयतनमखसदनमन्द
 रतुहयछहि ॥७॥ सुनारादिघरके ३। जलशाला
 के ३। नाम ॥ दोहा ॥ होयशिल्लिपशालाद्वितियआवेश
 नसुदकान ॥ जुपानीयशालासुतोपंपाकाप्याऊनाना
 ॥ विद्यार्थीपरिद्वजकादिस्थानके १। मध्यघर
 के १। घरभीतरघरके २। नाम ॥ दोहा ॥ मठतुथान
 शिष्यादिकोगंजांमदिरास्थान ॥ गर्भागारंतुवासग
 हभागमध्यघरजान ॥८॥ जन्मस्थानके २। भरोख
 के २। मंडपके २। धनवानके घरके १। नाम ॥ दो
 अरिष्टतौसूतेकागृहवातायनतुगवाह ॥ मंडपसुतो
 जनाप्रयहिहर्म्यधनिकगृहदक्ष ॥९॥ सुरन्यघर
 के १। राजसदनके ४। नाम ॥ दोहा ॥ सुरन्यगृह
 प्रसादहीराजसदनतौसौध ॥ उपकार्योउपकारिकोअ
 थन्यघरभिदशोध ॥१०॥ चतुर्द्वारतोरणके १। अ
 नेकमजलाके १। गोलाकारके १। विस्तीर्णसुन्दर
 के १। नाम ॥ दोहा ॥ स्वस्तिकएकहिसर्वतौभद्रहि
 नंधावर्त्त ॥ अथविच्छंदकआदिहृईश्वरगृहभिदवर्त्त

॥१२॥ रनिवास के ४। अटारी के २। दरवाजे से बाहर
 का चौतरा। बा चौपारिके ३। नाम ॥ दोहा ॥ अन्त
 पुर अवरोध पुनि अवरोधन शुद्धान्त अहं तुक्षोम प्रघा
 रांतो प्रघरा अलिंद विशांत ॥१३॥ देहली के २। अंग
 ना के ५। चौकठ मै नीचले काठ के १। नाम ॥ दोहा
 ॥ गृहावग्रहरां देहली अंगन अंगरा चारु ॥ प्रांगरा च
 त्वर अजिर पचशिला तु नीचल दारु ॥१४॥ चौकठ मै
 ऊपर के काठ के १। खिडकी के २। गुप्त द्वार के २। न
 म ॥ दोहा ॥ नासादा रुजु उपरि को अंतर्द्वार तु दोय ॥
 मच्छन हु पक्षक सुतौ पक्ष द्वार हि होय ॥१५॥ चैलाली
 के ३। छानिके २। नाम ॥ दोहा ॥ नीअं वली क रुती से
 पटल प्रांत वरवानि ॥ पटल सुतौ छदि लोक मै जाहर छ
 नि पिछानि ॥१६॥ छावने के अर्थ जो वक्र काष्ठ ता
 के २। कबूतर आदिके घर के २। नाम ॥ दोहा ॥
 बलभी तौ गोपान सी वक्र जुकादन दारु ॥ है कपोत पालि
 को सतु द्वितिय विटंक हि चारु ॥१७॥ द्वार बा पौलिके
 ३। द्वार के बाह्य भाग के २। वेदी बा चौतरा के २।
 नगर द्वार के २। नाम ॥ दोहा ॥ मती द्वार द्वार त्रय
 तोररा तु वहि द्वार ॥ वितर्हि सो तौ वेदिका गोपुर जुगपुर
 द्वार ॥१८॥ पुर द्वार का दुरा को १। किंवाड़ के ३। आगल
 को १। सीढी पगथ्या के २। नाम ॥ दोहा ॥ तहां खुरो

सो.हस्तिनख'अर'क'प्रा'द'किंवार'॥अर्गल'इक'आरोहण'
 तु.सोपान'हिनिर्धार'॥१८॥नसेनीकोभ्वारीभाइके२
 ।कजोडाके२।नाम॥दोहा॥निश्रेणि'तुअधिरोहिणी'
 समार्जनी'तुजानि॥शोधनी'हुअवकर'सुतोसंकर'कू
 डामानि॥२०॥निकलनेद्वारके२।अच्छास्थानके
 २।गांवके२।घरवजानेकीभूमिके२।नाम।दो
 हा॥सुखनिःसरण'निकर्षण'तुसन्निवेश'देदेया॥
 ग्राम'सुतोसंवसथ'जुगवास्तु'वेश्मभू'होय॥२१॥गोर
 वां।वा।पडोसके२।हृदके२।अहीरकागांवके२
 नाम॥दोहा॥उपश्लं'तुग्रामांत'जुगसीयासीमन'धी
 र॥जुआभी'पल्ली'सुतोधोष'हिग्रामअहीर॥२२॥जंगलि
 योकेगांवके२।नाम॥दोहा॥पकरा'तोशवरालय'हि
 भिल्लग्राम'जुगजोय॥शवरतुवन'चांडाल'हीकविगुला
 वमत'होय॥२३॥

इतिपुरतरंगः

अथशैलतरंगलिरव्यते॥४॥

पर्वत१३नाम॥दोहा॥शैलमहीध्र'अहार्य'गिरि'शि
 खरी'क्ष्माभट'ग्राव॥अचल'शिलोच्चय'गोत्रा'धार'पर्वत'अ
 द्रि'कहाव॥१॥जोपर्वत'एश्वी'कौ'घेरें'हैताके२।ल
 कागिरिके२।अस्ताचलके२।उदयाचलके२
 पर्वतभेद'भिन्न'भिन्न॥पत्थरके२।नाम।दोहा

पर्वतलोकालोक सोचकवाल हजानि ॥ विककुतद्विति
यनिकुट अथचरमक्षामृतानि ॥ २॥ अस्तं जुगल उदय
तुद्वितियपूर्वपर्वत हिजानि ॥ पारियात्रिक रुविंध्यगिरि
मल्पवान हिमवान ॥ ३॥ निषध गंधमादन अपरजानि हे
मकूटादि ॥ अश्मश्राव प्रस्तर उपलेशिला दृषदं षटवादि
॥ ४॥ गिरिकी चोटी के ३ पर्वत सैं जल गिरने का
स्थान के ३ गिरि मध्य के २ नाम ॥ दोहा ॥ कूट तुशि
खरुष्टंग त्रय भृगु तौ अतट प्रपात ॥ कटक तु अद्रि नित
व सौ मध्य भाग गिरितात ॥ ५॥ पर्वत की समान पृथ्वी
के ३ भू रना का स्थान के २ भू रना के ३ नाम ॥
दोहा ॥ पर्वत समभू भाग तौ सानु प्रस्थ हूं हि आह ॥ उत्स
प्रस्तरा निर्भर तु भू र त्रय वारि प्रवाह ॥ ६॥ वनाई गुफा
के २ विना वनाई गुफा के ४ भारी पत्थर को थना
म ॥ दोहा ॥ दरी कंदरा मनुज कृत देव वात विल सोतु ॥
गुहां और गह्वर अथो गंड शैल डक होतु ॥ ७॥ खानिके
२ पर्वत पास के छोटे पर्वत के २ पहाड़ी का नीच
ली भूमि को ४ ऊपर ली भूमि को १ नाम ॥ दोहा
खनि आकर जुग पाद तौ प्रत्यन्त पर्वत आहि ॥ गिरि तर मू
तारण तु वाह
छार ॥ १८॥ का अधित्यका उर्ध्वाहि ॥ ८॥ पहाड़ सैं उत्प
को १ सीढ़ी को १ कुंज के २ नाम ॥ दोहा ॥ धातु मन
को १ सीढ़ी को १ कुंज के २ नाम ॥ दोहा ॥ धातु मन
को १ सीढ़ी को १ कुंज के २ नाम ॥ दोहा ॥ धातु मन

रिआच्छादित ही होय ॥ ८ ॥

इति शैलतरंगः

अथ वनौषधितरंगलिख्यते ॥

वन के ६। बड़े वन के १। नाम ॥ दोहा ॥ कानन गहन
अराय वन अटवी विपिन कमानि ॥ दाय अरायानी अपर
महाराय हजानि ॥ १ ॥ गृह के समीप वाग के २। वा
ग के २। राज मंत्री और वेश्या का वाग को १। नाम
दोहा ॥ निष्कुट गृह आराम जुगउ पवन तो आराम ॥ वाग
जुगनि कामनि को दृष्ट वाटिका नाम ॥ २ ॥ राज क्रीडा
वाग के २। राजा राणी क्रीडा के वाग को १। नाम ॥
दोहा ॥ आक्रीड तु उद्यान जुग साधारण वन राज ॥ सोय
प्रमद वन होय जहं क्रीडत राणी राज ॥ ३ ॥ पौतिके १।
लकीर के २। वन समूह को १। नाम ॥ दोहा ॥ श्रेणी
आवलि पंक्ति पुनि वीथी आलि व खानि ॥ लेखा राजी जुग
ल अथ वन्या वन गन मानि ॥ ४ ॥ अंकुर के २। वृक्ष के १३
। नाम ॥ दोहा ॥ अभिनवोद्भिद अंकुर हि वृक्ष ॥ रीत ह हो
य ॥ शारबी विटपी शाल तरु पादप कुट द्रुम ॥ अग
म पलाशी अनोक हुं द्रु जुत त्रयोदश वल के २ व
तनी लता अतति रुबेल्लि बखानि ॥ ५ ॥ नाम ॥ दोहा के ३।
वृक्षादिकी उचाई के ३। नाम ॥ दोहा ॥ उलप तु बीरुत
गुल्मिनी फैली लता बताय ॥ उच्च तु उत्सेध पुनि उच्चाय

अरु उच्छाय ॥ ७ ॥ दृष्ट की पीड के ३। शाखा के ३। प्र
 धान शाखा के ३। नाम ॥ दोहा ॥ स्कंध मकांड रूपी
 त्रय लतां तु शाखां द्वार ॥ स्कंध शाखां डाहलां शालां तीन
 उदार ॥ ८ ॥ जर के २। मूल सौ शिर कौ गडल ता को
 १। शिरोग्र के ३। मूल मान के ३। नाम ॥ दोहा ॥ शिफ
 जटी अवरोह तौ शाखा शिफा वरवानि ॥ शिखर जय शि
 र मूल तौ बुध अंघ्रि त्रय जानि ॥ ९ ॥ गूहा के २। बकल
 के ३। काष्ठ मान के २। दली तो के ३। नाम ॥ दोहा ॥
 सार तु मज्जा ही त्वक तु बल्क रु बल्कल तीन ॥ काष्ठ तु दा
 र हिं ड्यन तु ए च सं ड्यम प्रवीन ॥ १० ॥ यज्ञादिके वली
 ता के २। दृष्ट विल के ३। तुलसी आदिकी वाल के
 २। पान के दी कौ पल के २। शाखादि विस्तार के २।
 फल के २। डांड की १। नाम ॥ दोहा ॥ एधं तु समित हु
 कोटरं तु निष्कुहं खोरवर भाषा ॥ बल्लरि मंजरी पत्र तौ दल
 कंद परा पलाश ॥ ११ ॥ दृष्ट हु पल्लव किसलय हि विटप
 तु तौ विस्तार ॥ फल तौ शस्य हिं दंत तौ प्रसव बंधन हि चार
 ॥ १२ ॥ काच फल को १। सूके फल को १। नई कली
 के २। कली के २। नाम ॥ दोहा ॥ काच फल तसला दु
 ही सूके फल तौ वान ॥ शाख जालक जुग अथो कालिका
 ली नान ॥ १३ ॥ गुच्छ के २। अध फली कली के २। फू
 ल के २। नाम ॥ दोहा ॥ लवक गुच्छ क हि कुड्मल तु मुकु

लं हि जुग जुग जानि ॥ पुष्प तु सु मनस कुसुम पुनि फूल प्रसून
 वखानि ॥ १४ ॥ फूल के रस के २ । फूल की धूलि के २ । पीप
 ल के ५ । वकायिनि के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ पुष्प स तु मकर
 द है सु मत स रज तु पराग ॥ कुंज राश न तु पिप्पल रु बोधिद्रुम
 वड भाग ॥ १५ ॥ चल दल अरु अश्वत्थ अथ पारि मंद मन्दा
 ॥ पारि जात के रु नि व तरु जगत वकायिनि चार ॥ १६ ॥ वि
 ल्व के ५ । पा करि के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ शोडिल्य तु शेल्व
 श्री फल रु विल्व मालूर ॥ जटी पट्ट टी प्रह ॥ ये पा करि नाम
 मसूर ॥ १७ ॥ बड के ३ । आम के ३ । अति सुगंधित आम
 को १ । नाम ॥ दोहा ॥ न्यग्रोध तु वह पाद वट वड हलै कि
 क चार ॥ आम तु चूत रसाल त्रय अति सौरभ सह कार ॥ १८
 कदंब के ३ । अर्जुन वृक्ष के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ नीप
 तु प्रिय के हलि मिय हि इन्द्र दुत पहि चानि ॥ नदी सजी अर्जु
 न ककुभ वीर तरु हि पचम् ॥ १९ ॥ रैरा । वा । विरागी
 के ३ । आवर के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ फलाध्यक्ष तौ क्षीरि
 राजादन त्रय आहि ॥ तिष्य फला तौ वयस्था आयल की
 अमृता हि ॥ २० ॥ वहेर के ६ । हरीत की के ११
 नाम ॥ दोहा ॥ भूत वास कलिद्रुम सुतुष रु कर्ब फल अ
 क्ष ॥ विभीतक इ अमया हिवा पथ्या अमृता दक्ष ॥ २१ ॥
 हेमवती पुनि श्रेयसी अक्षवह त्या सोय ॥ हरं पूतना चेत
 की चहुरि अवस्था होय ॥ २२ ॥ नीव के ७ । सीमा हे ३ ।

कालीसीसमकोश चम्पाके ४। नाम ॥ दोहा ॥ निवेस
 र्वतो भद्रपिचुमंद हिंगनिर्यास ॥ मालक नीव अरिष्ट अ
 य अशुभ शिंशापी भास ॥ २३ ॥ पिच्छिली ह कापिली तुसे
 एक भस्मगर्भाहि ॥ हेमपुष्प चंपेध पुनि चंपक चंपा अहि
 ॥ २४ ॥ चम्पाकी कली कोश वौलसिरी के २। आसा
 पाला के २। अनार के ३। तमाल के ३। छुंड़यों के २। न
 मा ॥ दोहा ॥ गंधफली चंपा कली वकुल तुके सर जानि ॥
 वंजुल सुतौ अशोक ॥ अषदा डिम करक बधानि ॥ २५ ॥ शु
 कवल्लभ ॥ हतीन अण्काल स्कंध तमाल ॥ तापिच्छ ॥ ह
 श्री हस्तिनी भूरुंडी ॥ हिरसाल ॥ २६ ॥ जूही के ५। पीले फू
 ल की जूही को १। चमेली के ३। नाम ॥ दोहा ॥ जुही
 मागधी दूधिका अंवष्टा गरिका हि ॥ हेमपुष्पिका जाति तौ
 मालती रसुमनी हि ॥ २७ ॥ कुन्द के २। दुपहरया के ३।
 कनेर के ३। नाम ॥ दोहा ॥ कुन्द तुमाध्य ॥ हिरक क तुवंध
 जीवक सुधीर ॥ वंधूक ॥ हृदय मारक तुशत प्रात करवीर ॥
 २८ ॥ करीर के ३। धतूर के ७। नाम ॥ दोहा ॥ ग्रंथिल क
 करं करीर ॥ अथादित वंधूर्त धतूर ॥ कनका हृदय मातुलम
 दन अरु उन्मत्त मसूर ॥ २९ ॥ धतूर के फल को १।
 के ३। आक के ७। श्वेत आक के २। नाम ॥ दोहा ॥ ति
 हि फल मातुल पुत्रक ॥ हिवन्हि संज्ञक तुचार ॥ पाठी चित्र
 नर ५। गै अर्का हृदय मंदार ॥ ३० ॥ अर्क पुष्प

विकीरागरुगरा रूप॥ श्वेत अर्कतौ अलर्कं रु द्वितीय प्रता
 पसं जय ॥ ३१ ॥ गिलवै के १ नाम ॥ दोहा ॥ छिन्नरुहां
 वत्सादनी मधुपर्णी अमृतां रु ॥ सु सोम वल्ली विशाल्या
 जीवंतिका रु चारु ॥ ३२ ॥ पीपर के २ नाम ॥ दोहा ॥ क
 स्मा उपकुल्या करा वैदेही चपला रु ॥ शौंडी कोला जष
 रानवम मागधी चारु ॥ ३३ ॥ गज पीपर के ५ चव्य
 के २ नाम ॥ दोहा ॥ कपि वल्ली करि पिप्पली वशिर
 श्रेयसी जोय ॥ सु कोल वल्ली पंचमी चव्य तु चविका दो
 य ॥ ३४ ॥ दारव के ५ वडी इलायची के ५ कोटी इ
 लायची के ३ नाम दोहा ॥ दाहा स्वादी मधुर सा गो
 स्तनी मृद्वी का हि ॥ एला वहला निष्कुटी रु चंद्रवाला आ
 हि ॥ ३५ ॥ पृथ्वी का तुत्या सुतौ उपकुंचिकां वरवानि ॥ को
 रंगी रु इलायची दीरघलघु पहिचानि ॥ ३६ ॥ गुलाव के
 ३ नाम ॥ दोहा ॥ प्रपौंडरीक तुपौडर्य अरुधल पधं प्र
 काश ॥ ओषधि फलवांकांत मै ओषध रोग विनाश ॥ ३७
 शाक को १ चौलाई के ३ नाम ॥ दोहा ॥ शाक तुदल
 पुष्पादि सो भोजन साधन जानि ॥ तंडुलीय चौलाई अ
 अल्पमा रिष हु मानि ॥ ३८ ॥ प्याज के २ लशुन के ६ के
 इला के ३ का कडी के ३ नाम ॥ दोहा ॥ सुकंदक सु
 पलांडु हीलतार्क दुद्रुम दोय ॥ महाकन्द गंजन लशुन
 जानि सोन रु सोय ॥ ३९ ॥ बहुरि अरिष्ट महौषध हि रुपां

इ'तु कर्को'रु॥ कोहला'हिअधकाकड़ी'ककटी'सुई'वोरु'॥
 ४०॥ जमी'कन्द'के ३। दू'दके ५। नाम॥ दोहा॥ सरा
 तो'अर्जो'अरु'कन्द'हू'द्वी'सोय॥ रुहा'अनन्ता'भार्गव'
 शत'पी'दिका'सुहोय॥ ४१॥ मो'था'के ४। नागर'मो'था'
 के ३। नाम॥ दोहा॥ मे'घ'नाम'कुरु'विन्द'अरु'मुस्तो'मु
 ल'वा'जानि॥ गुन्ना'नागर'मो'थ'त्रय'भद्र'मुस्तक'हु'मानि॥
 वी'स'के १० नाम॥ दोहा॥ वे'रा'वंश'लक'सार'पुनि'शत'
 य'वी'कर्म'र॥ यव'फल'थर'कर'तेज'न'रु'त्यरा'ध्वज'रु'त्व'चिसा
 ४२॥ की'चक'को १। जख'के २। उख'भेद'के ३। ना
 म॥ दोहा॥ कज'त'पवन'वस'वाँ'सते'की'चक'नाम'विवा
 दि॥ इ'सूर'साल'हि'भेद'ति'हि'कां'तार'क'पुं'ड्रा'दि॥ ४४॥
 गों'डर'के ३। ता'की'जड'को १। डाम'के ४। बाल'ल'रा'
 के २। नाम॥ दोहा॥ गों'डर'वी'र'वाँ'वी'र'तर'ता'की'जड'तु'ज
 पी'र'द'भे'तु'कुश'रु'प'विन'कुथ'५। ध'वाल'ल'रा'धी'र॥
 ४५॥ घा'स'के २। ल'रा'मात्र'के २। ल'रा'समूह'को १
 नारियल'के २। सु'पारी'के १। ता'के'फल'को १। ताली'
 आ'दि'के ४। नाना॥ दोहा॥ घा'स'यव'स'अर्जुन'सु'ल'रा'ल'
 त'या'ल'रा'गरा'ता'क॥ ना'लिके'र'तौ'लांग'ली'क्रमु'क'तु'प
 र'गु'व'क॥ ४६॥ घों'दा'ख'पुर'हि'त'सु'फल'उ'द्वेग'हि'मा'सूर'
 ली'ख'जरी'इ'कि'क'के'न'की'रु'ख'जूर'॥ ४७॥

इति वनौषधि तरंगः

अथसिंहादितरंगलिख्यते॥१॥

सिंहके ५। वधेराके ४। नाम॥ दोहा॥ हरिम्येन्द्रपंच
 स्यपुनिकेसरी'हर्यक्ष॥ व्याघ्रंतुहोपी'वाघअरु'शार्दूल'
 हप्रत्यक्ष॥ १॥ तेंदुवाके २। शूकरके १२। वानरके ७।
 नाम॥ दोहा॥ मृगादनस्ततरक्ष'अथशूकर'छष्टिवराह
 ॥ पोत्री'दंष्ट्री'कोल'किरीट'रुस्तब्धरोमा'रह॥ २॥ घोरा'कि
 रिभूदार'पुनिकोड'हवानर'कौश॥ प्रवग'वनोक'वलीमुख
 रु'शारवामृग'कपिदीस॥ ३॥ रीक'के ५। गैंडाके ३। भैंस
 के ५। प्रयालके १०। विलावके ५। नाम॥ दोहा॥ भल्ल
 कंतुभालक'पुनि'नटक्ष'भल्ल'अरु'अच्छ'॥ गंडक'खड्गी'
 खड्ग'अथकासर'सैरिभस्वच्छ॥ ४॥ बाहद्विषत'लुलायसु
 नि'महिष'हिजंबुक'सोतु॥ भूरिमाथ'गोभायु'मृगधूर्तक
 फेरव'होतु॥ ५॥ वंचक'कोट्टु'ष्टगाल'पुनि'शिवा'फेर'दशढ
 र॥ आतु'विडाल'रुआखु'भुक'वृषदंशक'मार्जार॥ ६॥ चंद
 नगोह'के ४। सेही'के २। ता'के रोम'के ३। नाम॥ दोहा॥
 गोधेय'तुगोधिक'आत्मज'गोधेर'रुगोधार'शल्य'तुष्टाविध'
 शलल'शल'शलली'त्रयतिहिं'वार॥ ७॥ वातप्रमी'के २।
 भिडहा'के ३। हरिरा'के ४। नाम॥ दोहा॥ वातप्रमी'तु
 वातमृग'वृक'ईहा'मृग'कोक'मृग'कुरंग'वातायु'पुनि'अजि
 नयो'निविन'रोक॥ ८॥ ऐरोय'श'ऐरा'श'नाम॥ दोहा॥
 हरिरा'के चर्मादितो'ऐरोय'हि'पाहि'चानि॥ हयिगा'ड'के

चर्मदिसे। सेसा एकही जानि ॥ ८ ॥ हरिरामेदों के दीना
 म ॥ दोहा ॥ प्रियक' तुकदली' कंदली' चीन' चसर' बखानि
 आरुसमूह' बट हरिरामे अजिन योनि उर आनि ॥ ९ ॥ ह
 रिरामेदों के १२ नाम ॥ दोहा ॥ शंवर' रौहिष' रंकुर' रू
 क' रूमसार' गोकर्ण' ॥ न्यंक' चमर' रोहित' पृषत' नटप्रय'
 एला' मृगवर्ण' ॥ ११ ॥ भृगुभेद के ७ नाम ॥ दोहा ॥
 शरभ' राम' रुमर' रुगवय' प्राशक' प्राश' रुगंधर्व' ॥ इत्यादि
 रुसिंहादिपुनि गोआदिक' पशु' सर्व ॥ १२ ॥ मूँसों के दी
 मूँसी के २। किरकाँट के २। नाम ॥ दोहा ॥ मूषिक' उं
 दुरु' आखु' चक' मुंछक' खलक' हिमास ॥ गिरिका' तुवाल
 मूषिका' सरट' सुतौ हकलास' ॥ १३ ॥ छापकी के २। म
 करी के १ नाम ॥ दोहा ॥ मुसली' तोरु' हगो' धिका' मर्क
 दक' तुलूता' रु ॥ ऊ' राना' भम' करी' जगत' तंतु' वाय' हू' चा
 रु ॥ १४ ॥ सोन' किरवा' के २। कनखजूरे के २। कसा
 री के २। विच्छू के ३। नाम ॥ दोहा ॥ नील' गुनु' हामि' शत
 पदी' करी' जलौ' का होय ॥ प्रक' कीट' वृश्चिक' अलितु' दु
 रा' वृश्चिक' त्रय होय ॥ १५ ॥ कवूतर के ३। बाज के ३। उ
 ल्लू के ३। नाम ॥ दोहा ॥ परावत' तुकपोत' त्रय कलरव' प
 त्री' सोतु ॥ श्येन' शशा' दन' पेचक' तुधूक' उलूक' हि होतु ॥
 जन के २। भर्दल के २। कंक हड के २। चास के २।
 दोहा ॥ खंजरीट' खंजन' अथो' भारद्वाज' या' धाट' ।

लोहएतौ कंक' जुगचाषे कि कोंदिवे' घाट ॥ १७ ॥ भुजकपल
 वां भुजैटाके ३ काठ कोराके २ पपीहाके ३ नाम ॥ दो
 हा ॥ धूम्याटलु कालिंग पुनि भंग' हुदावा' घाट ॥ शतपत्रक
 सारंगतौ स्तोकक' चातक' घाट ॥ १८ ॥ कूकड़ाके ४ चिडा
 को १ नाम ॥ दोहा ॥ नाम्न चूडे चरण ॥ युध' रुकु कुट' पुनि
 रुकवाकु ॥ चटक' तु कलि विंकी' हितियाता कौतव' कौताक ॥
 तिनके वच्चा १ वच्ची को कंकारेटके २ करकके २ ना
 म ॥ दोहा ॥ चाटकेर' वच्चेतिनिहि चटका' वच्चीतास ॥ कर्कर
 टुतौ करेड' हि ककर' तु ककरा' हिमास ॥ २० ॥ कोकिलके ४
 काकके १० डोडकाकके २ कालेकाकके २ नाम ॥
 दोहा ॥ वन प्रिय' तु परभृत' रुपिक' कोकिल' ध्वांक्ष' तु क
 क ॥ करट' अरिष्ट' सकृत्प्रजावायस' वलिभुक्' ताक ॥ २१ ॥
 आत्मघोष' वलिपुष्ट' दश' परभृत' अथको कोल ॥ ॥ दोहा
 काक' दालू' हतौ कालकराट' कहू' बोल ॥ २२ ॥ चीलके २ गी
 धके २ सुवाके २ क्रौंचके २ बुगलाके २ नाम ॥ दो
 हा ॥ आतापी' तौ चिल्ल' अथ गट्घा' हितिय' दाक्षाय्य ॥ कीर' शु
 क' हि कुडू' क्रौंच' जुगवक' तौ कहु' कहाय ॥ २३ ॥ सारसके
 चकवाचकपीके ३ नाम ॥ दोहा ॥ पुष्करा' हतौ सारस' हि
 चक्रवाक' तौ कोक ॥ रयांगा' ह' कादंव' तौ जुगकलहंस' अरो
 क ॥ २४ ॥ कुररीके २ हंसके ४ हंसभेदके ३ नाम ॥
 दोहा ॥ कुरर' तु उल्ला' श' हि अयोध्वेतगरुत' चक्रांग ॥ हंस

मान सौकस्यो राजहंस सर्वग ॥ २५ ॥ श्वेतहि लालतु चंचप
 गमल्लिकाक्षतु गनाय ॥ मलिन चंचपग प्रथाम तौ धार्तरा
 ष्टं मुखपाय ॥ २६ ॥ आडीके ३ वगुला की दूसरी जातिके
 २ हंसकी स्त्रीकी नाम ॥ दोहा ॥ राटितुराडि शरारि त्रय
 विसंकेठिका तु दोय ॥ वलाका हि तिय हंसकी वरटी नाम
 हि होय ॥ २७ ॥ सारसकी स्त्रीकी १ वागल के २ चामचि
 रे के २ नाम ॥ दोहा ॥ सारसकी तिय लक्ष्मणा तैल पायि
 का आहि ॥ परोक्षी हजतु का सुतौ द्वितीय अजिन पत्राहि
 ॥ २८ ॥ मौरवी के ३ सहत की मौरवी के २ मधुमक्षि
 का विशेष के २ नाम ॥ दोहा ॥ तीन वर्वरा मक्षिका नी
 ली सरचा सीतु ॥ मधुमक्षिका हि पुत्तिका पतंगी की जुग हो
 तु ॥ २९ ॥ डोंस के २ लघु डोंस के २ भौंगुर के ४ नाम ॥
 दोहा ॥ दंश सुतौ वन मक्षिका लघु दंश तु दंशी हि ॥ चारिभि
 ल्लिकांची रुकांचीरी भंगारी हि ॥ ३० ॥ बरडे के २ फनिगा
 के २ जुयुनू के २ भंवर के १२ नाम ॥ दोहा ॥ वरटा गं
 धोली जुगल शलभा द्वितीय पतंग ॥ खद्योत तु ज्योतिरिंगरा
 मधुकर मधुलिह भंग ॥ ३१ ॥ भ्रमर मधुव्रत मधुप अलि अ
 ली पुष्पलिह और ॥ षटपद बहुरि द्विरेफं सब द्वादश लोकि
 क भौर ॥ ३२ ॥ भोर के ८ ताकी वाराणी की १ नाम ॥ दो
 हा ॥ केकी शिखी भुजंग भुक नील कण्ठर मयूर ॥ वही व
 र्णा शिखादली तिहि वचके की प्रार ॥ ३३ ॥ चंदोवा के २

ताकी चोटी के २। ताकी पाँख के ३। नाम ॥ दोहा ॥ चन्द्रक
 मेचक' दोय अथ। चूडा' शिखा' वरानि ॥ बर्ह' तु। पिच्छ' शिखा' ड'
 त्रय मोर' पंख जग जानि ॥ ३४ ॥ पक्षी के २७ नाम ॥ दोहा ॥ पक्षी
 विहंग' विहंगम' रुक्मि' विहाय स' मानि ॥ शकुनि' शकुति'
 एकुंत' स्वग' पतन' पत्ररथ' जानि ॥ ३५ ॥ बाजी' पत्री' द्विज' पत
 ग' विष्किर' विकिर' वि सोय ॥ नभ' संगम' नीडो' ब्रह्म' रु' नगौ' कपि
 त्सन' होय ॥ ३६ ॥ पतत्री' रु' अंडज' वहारि' गरुत्मान' रु' विहंग'
 ॥ अरु' पतत्रि' सवनाम' गनि विंशति' सप्र' प्रसंग ॥ ३७ ॥ भिन्न
 भिन्न पक्षीन के नाम ॥ दोहा ॥ काखंड' प्रव' महु' पुनि' को
 यष्टिक' हारीत' ॥ तित्तिरि' कुक्कुभ' टिट्ठिभक' जीव' जीव' पुनीत
 ॥ ३८ ॥ लाव' रु' वर्त्तक' वर्त्तिका' चकोर' दिपहिचानि ॥ भिन्न २
 पक्षी सकल नभ एक डक जानि ॥ ३९ ॥ पाँख के ६। पाख की
 जड के २। चूँच के २। नाम ॥ दोहा ॥ गरुत्त' तनू' रुह' पत्र' वृद्ध'
 पक्ष पतत्र' पिछानि ॥ पक्ष मूल' तो पक्षति' हिचंचु' त्रोटि' जुग जानि
 ॥ ४० ॥ पक्षीन की गति भेद के ३। नाम दोहा ॥ स्वग' गति
 क्रिया' प्रडीन' अरु' उड्डीन' रुसंडीन' ॥ तिरछी' जेंची' अरु' मल'
 क्रम' ते लखौ प्रवीन ॥ ४१ ॥ अंडा के ३। घूँसला के २। शिशु
 मात्र के ७। नाम ॥ दोहा ॥ पेशा' कोश' रु' अंड' त्रय नीड' कुला
 य' हि होत ॥ पृथुक' तु' शावक' डिभ' शिशु' अर्मक' पाक' रु' पोत'
 ॥ ४२ ॥ स्त्री पराव के जोडे के २। दो के ३। समूह के २२। स
 मूह भेदों के १। नाम ॥ दोहा ॥ दंड' तु' मिथुन' हितिय' पुरुष ॥

युग्मं युगलं युगं तीन ॥ निवहं व्यहं संहोहं वजनिकं ओघं च
 पंचवीन ॥ ४३ ॥ विसरं समूहं रुत्तोमं गरां संचयं समुदयं व्र
 तं ॥ समुवायं रुसमुदायं पुनिवारं हृन्द् संचातं ॥ ४४ ॥ संहति
 और कदम्बकरु निकुरं व'हिदाईस ॥ हृन्द् मेदा अत कहंत
 नौं वर्ग' समन करि दीस ॥ ४५ ॥ संच सार्थ' जुगजन्तु गन सज
 तीय कुल जानि ॥ तिर्यकू गन मै यूर' इक पशु गन सभज' व
 खानि ॥ ४६ ॥ अन्य समूह' सम्राज' है सधर्मि कोतु निकाय'
 पुंज कूट उत्कर' गरो अन्नादि दोल गाय ॥ ४७ ॥ कापोत' हं म
 यूर' पुनितैतिर' शौक' हि आदि ॥ कापोतादि तिन तिन हिके ग
 न मै नाम विवादि ॥ ४८ ॥ पाले हये पक्षी और मृगों के २।
 नाम ॥ दोहा ॥ क्रीडाहित जे पक्षिमृग पंजरदि माधि होय
 ॥ सो कहियतु है गृह्य करु के क' ह जुगजिय जोय ॥ ४८ ॥

इति सिंहादितरंग

अथ न्ततरंग लिख्यते ॥ मानुष के ६। पुरुष के ४।

नाम ॥ दोहा ॥

मानुष मर्त्य' मनुष्य' नर' मानव' मनुज' कमानि ॥ पुरुष पुरुष
 न्त' पंचजनं पंच पुमान् वरवानि ॥ १ ॥ स्त्री के १०। नाम। दोहा
 ॥ स्त्री घोषित सीमंतिनी अवली घोषा सोय ॥ नारी' अरु माहिल
 वधू' वामा वनिती जोय ॥ २ ॥ विशेष स्त्री न के कोपना के २।
 उत्तमा के ४। पदरानी को १। राजां की अन्य स्त्री को १।
 नाम ॥ दोहा ॥ भीरु' अंगना' कामिनी वामलोचना लेखि ॥

प्रमदा'कांता'मानिनी'ललना'स्मरणी'देखि॥३॥पुनितित'विनी'
 सुन्दरी'रामा'इकइकजानि॥कोपना'तुज्जु'भाभिनी'भक्तकाशि
 नी'मानि॥४॥सुवरो'हो'उत्तमा'वरवर्णिनी'विचारि॥महिषी'
 कृतार्थि'पेक'नृप'अन्य'भोगिनी'धारि॥५॥विवाहिता'स्त्री
 के॥नाम॥दोहा॥पत्नी'पारि'गृहीति'अरु'सह'धर्मिणी'रु
 दार॥द्वितीया'रु'जाया'वहुरि'आर्यो'सात'उदार॥६॥पति'पुत्र
 वाली'के॥सती'के॥प्रथम'व्याही'स्त्री'के॥२॥स्वयम्ब
 र'वाली'के॥३॥कुलवती'के॥२॥पाँच'वर्ष'की'कन्या'के॥२॥
 नाम॥दोहा॥कुटुंबिनी'तौ'पुरंधी'सती'तु'सा'ध्वी'देखि॥सु
 चरित्रा'रु'पति'व्रता'अध्यु'दा'तौ'पेधि॥७॥अधिविनी'हि'पति
 वरा'स्वयं'वरा'वर्या'हि॥कुल'स्त्री'तु'कुल'पालिका'कुमारी'तु'क
 न्या'हि॥८॥दश'वर्ष'की'कन्या'के॥२॥प्रथम'रज'स्वला'के॥२॥
 जुवान'स्त्री'के॥२॥पतो'हू'के॥३॥नाम॥दोहा॥नग्नि'का
 तु'गौरी'जुगल'दृष्ट'जा'मध्यमा'हि॥युवति'तु'तरा'सुत'द'वधू
 धूजनी'रु'स्त्रुषा'हि॥९॥जुवान'पी'रु'मै'होय'उसके॥२॥
 धना'दि'की'इच्छा'वाली'के॥२॥मै'धु'ने'च्छा'वाली'के॥२॥
 नाम॥दोहा॥जुचिरं'दी'सु'सु'वारिनी'इच्छा'वती'तु'जोय॥
 का'सुका'हि'अर्थ'काम'की'रु'दृष्ट'स्यंती'होय॥१०॥कामा'तुर
 हा'के'पति'के'पास'जाने'वाली'को॥१॥व्यभि'चारिणी'के
 ८॥वेनु'पुत्र'वाली'को॥१॥पति'पुत्र'रहित'को॥१॥रंडा'के
 २॥नाम॥दोहा॥जाय'वहै'अभि'सारिका'पुं'श्वली'तु'कुल

दोहा ॥ सोय स्वैरिणी इतरी असती सुपांशुलारु ॥ ११ ॥ आठ धर्षिणी
 कंधकी अशिषु अशिष्वी आहि ॥ अवीरा तुपति सुतरहित विधवा वि
 श्वस्ती हि ॥ १२ ॥ साधन के ३ बूढी के २ सुहागिन के २ कु
 कसमुक्तदार स्त्री के २ नाम ॥ दोहा ॥ सखी वयस्था आलि
 जय पलिकी तु बुद्धा हि ॥ पति पत्नी तु समर्त का प्राज्ञी प्रज्ञा आ
 हि ॥ १३ ॥ अतिबुद्धि मती के २ प्रूढ़ी को १ प्रूढ़ा को १ नाम
 ॥ दोहा ॥ धीमती तु प्राज्ञा तिया प्रूढ़ी प्रूढ़ी सोय ॥ विजाती
 हु निज जाति तौ प्रूढ़ी निज पर जोय ॥ १४ ॥ अहीरिनी के २ क्ष
 त्रियानी के २ वनियानी के २ नाम ॥ दोहा ॥ आभीरी पतिजा
 तिकरि सु महा प्रूढ़ी आहि ॥ द्वि क्षत्रियारी क्षत्रिया अर्याणी
 अर्या हि ॥ १५ ॥ पहाने वाली के २ मंत्र का अर्थ करने वाली
 के १ नाम ॥ दोहा ॥ दोय उपाध्यायी उपाध्यायी आप पढाव ॥
 इक आचार्यो नारि जो आपहि मंत्र सिखाव ॥ १६ ॥ पति योग में
 पांच नाम ॥ दोहा ॥ आचार्यानी क्षत्रियी अर्या पतिकी जोय
 रु उपाध्यायानी उपाध्यायी पंचम होय ॥ १७ ॥ पोटा को १
 वीर भार्या के २ वीर माता के २ नाम ॥ दोहा ॥ पोटा नरतिय
 रूप अय जु वीर भार्या होय ॥ सु वीर पत्नी वीर सूर वीर माता
 होय ॥ १८ ॥ प्रसूतिका के ४ नंगी स्त्री के २ नाम ॥ दोहा ॥
 प्रसूतिका तौ भहता जाता पत्या मानि ॥ प्राजाता हु अवन
 दितिय को टवी जानि ॥ १९ ॥ दूती के २ कात्यायनी को १
 नाम ॥ दोहा ॥ दूती तौ संचारिका कात्यायनी जोय ॥ अर्द्ध वृद्ध म

गिवावसनसंजुतविधवाहोय॥२८॥सैरंधी१।असिक्री१नाम
 ॥दोहा॥सैरंधी"परसदनथितस्ववशाशिल्यकृतजोय॥प्रेष्यातः
 पुरचारिणीज्वानअसिक्री"होय॥२९॥पातुरके४।वारमुख्याके
 १नाम॥दोहा॥रूपाजीवारुगरीकांवारस्त्रीवेश्या"हि॥सोई
 सत्कृतजननकरिसुहेवारमुख्या"हि॥२१॥कुटनीके२।शु-
 भाशुभजाननेवालीके३।नाम॥दोहा॥दोयकुटनी"शंभ-
 ली"परतियपुरुषमिलानि॥ईसरीकाविप्रश्निकादेवज्ञा"त्रय
 जानि॥२२॥रजस्वलाके७।नाम।दोहा॥रजस्वलातौऋ-
 तुमती'पुष्यवती'अविजोय॥उदक्यारुमालिनी'तथा।अत्रैयी"ह
 होय॥२३॥स्त्रीरजके३।गर्भकेवससैंअन्नादिकीविशेष
 अभिलाषाबालीके२।रजरहितस्त्रीके२।नाम।दोहा
 ॥रजतु,पुष्यआर्तब"त्रयहिदोहदवती'तु,देखि॥प्रहलु"हि
 विगतार्तवांतौ,निष्कला'परेषि॥२४॥गर्भिराणीके४।वेश्या
 समूहको१।गर्भिराणीसमूहको१।युवतीसमूहको१।
 नाम॥दोहा॥अंतर्वत्नी'गर्भिराणी'सुआपन्नसत्वा"र॥गुर्वि-
 राणी'हुगरीकाक्य'गरागार्भिराणी'यौवत'चारु॥२५॥दोवारवि-
 वाहीके२।ताकेपतिको१।विशेषपतिको१।नाम।दो-
 हा॥पुनर्भू"रुदिधिषू'जुगल,दोवरपरणीनारि॥तिहिंपतिदि-
 धिषु'हिद्विजसुतो,अग्रेदिधिषु'विचारि॥२६॥विनाव्याही
 कापुत्रके२।सुभगाकापुत्रके२।नाम॥दोहा॥
 काजातसुत,पुनि,कार्नान'दखानि॥जु,सौ

सुय' शासुत' पहिचानि ॥ २९ ॥ पसई स्त्री के पुत्र को १ भुवा का
 पुत्र के २ नाम ॥ दोहा ॥ इक पारसै रोय अथ पितु भगिनी
 सुत जेय ॥ सोय पै तज्ज स्त्रीय अरु दूजो पै तज्ज सेय ॥ २९ ॥ मां
 दसी के पुत्र के २ सौतेली मा के पुत्र के २ कुलदा के पुत्र
 के २ भिरवारिनी के पुत्र के २ नाम ॥ दोहा ॥ तथा मा तज्ज
 स्त्रीय अरु जानहु मा तज्ज सेय ॥ वैमात्रेय हि मा तज्ज हि वंधुल
 बांधकिनेय ॥ २८ ॥ कौलटेर कौलटेय रु असती सुत पच जेय
 कौलटेय तौ मिष्टु की सति सुत कौलदिनेय ॥ ३० ॥ पुत्र के ६
 पुत्री के ५ नाम ॥ दोहा ॥ तनय पुत्र सुत आत्मज रु वेदां सुत
 वरवानि ॥ वेटी पुत्री आत्मजा दुहितां तनयां मानि ॥ ३१ ॥ पु-
 त्री और कन्या के २ और सपुत्र के २ पिता के ३ माता
 के ४ बहिन के २ ननद को १ पोती के ३ नाम दोहा ॥
 तो कं अपत्य उरस्य तौ और स ह निज जात ॥ तत पिता जन कहि
 प्रसूतौ जनयित्री मात ॥ ३२ ॥ जननी अथ भगिनी स्वसा ननां
 दातु पति भ्राता ॥ पौत्री सुतौ सुतात्मजा न प्री तृतीय सुजाता ॥
 ३३ ॥ दिवराणी जिठानी को १ भोजाई के २ नाम दोहा
 भात वर्ग की भार्या यात आप समाहि ॥ जु है भात भार्या सुत
 प्रजावती ही आहि ॥ ३४ ॥ मामी के २ सासू को १ सुसा
 को १ काका को १ नाम ॥ दोहा ॥ जु मातु लानी मातु ली
 प्यश्रु पति तिय मात ॥ पितु पति तिय को प्यश्रु है पितृ व्यपि
 तु को भ्रात ॥ ३५ ॥ मामा को १ शाला को १ देवर के २

नाम ॥ दोहा ॥ मातुल भ्राता मातको श्यामलु तिय को आत ॥ देवा
 तो देवर द्वितिय पति को छोटी आत ॥ ३६ ॥ भानेज के २ जवा
 ई के २ पितामहादिके । नाम ॥ दोहा ॥ भागिनेय त्वस्त्रीय
 अथ पुत्री पति जामत दोय पितामह पितृ पिता प्रतितामह तिहि
 तात ॥ ३७ ॥ सात पुस्त भीतर के २ सगा भाई के ४ नाम ।
 दोहा ॥ त्यों माता मह आदि हैं दोय सपिंड सनाभि ॥ समानोदय
 सोदय सो सहज सगर्भ हलाभि ॥ ३८ ॥ गोतीन के ६ नाम । दो
 हा ॥ बांधव ज्ञाति सगोन पुनि स्वजन वंधु स्व ह जोय ॥ तिन को
 गनतौ वंधुता भाव जानि ज्ञातेय ॥ ३९ ॥ पति के ४ । परपति के
 २ कुंड को १ नाम ॥ दोहा ॥ धव प्रिय पति भर्ता बतुर उपप
 ति सौतौ जार ॥ जीवत पति जा सजत नय कुंड नाम संसार ॥ ४० ॥
 गोलक को १ भतीजे के २ द्विचन वालों के । नाम । दो
 हा ॥ मरें होत गोलक जुयतु आत्त ज अह भात्रीय ॥ भ्रात भागि
 नि कौ एक करि जानि आतरें जीय ॥ ४१ ॥ पितरें माता पितु
 समुक्ति माता पितरें दोय ॥ पृथ्वीरें सास सुसुर सुत सुता तु पु
 त्री होय ॥ ४२ ॥ स्त्री पुरुष के ४ जेर के २ नाम ॥ दोहा ॥
 चारि दंपती जंपती भार्या पती बखानि ॥ जाया पती जरायु तौ ग
 र्भाशय जुग जानि ॥ ४३ ॥ शुक्र शोशित एक ब्रह्म के जो कु
 ष्वनता है उसके २ जन्म मास के २ गर्भ के २ नपुंस
 क के ४ नाम ॥ दोहा ॥ जल कलल वैजनन तौ पूरि नार
 जुग मुंड ॥ भूरा तु गर्भ हि शंड तौ स्त्री व नपुंसक प्रंड ॥ ४४ ॥

लडकपन के ३। जवानी के २। बुढ़ापा के २। बुढ़ापा स
 सूह को १। नाम ॥ दोहा ॥ शैशवं वाल्य शिशुत्व त्रय यौवन
 जुगता राय ॥ बृद्धत्व तु स्या विरगन तु तिन को भाई के १। गाय
 ॥ ४५ ॥ अति बुढ़ापा को १। बुढ़ाई के २। दूध पीने वाले व
 है के ४। नाम ॥ दोहा ॥ पलित तु कचकी सेलता जरा विससी
 दोय ॥ स्तन पंडिभ उत्तान शय स्तन धर्या च व होय ॥ ४६ ॥ बाल
 क के २। जवान के ३। बुढ़ा के ६। नाम ॥ दोहा ॥ बाल तु मा
 रावक हित ररा युवा वयस्य त्रिजानि ॥ स्य विर बृद्ध जीरा रु
 जरन प्रवया जीन छमानि ॥ ४७ ॥ अति बुढ़ा के ३। बड़े भा
 ई के ३। नाम ॥ दोहा ॥ दशमी वर्षी यान त्रय ज्यायान हु अति
 जीन ॥ पूर्व जे अग्रिय अग्रिज हि ज्ये दो भ्रात प्रवीन ॥ ४८ ॥ छोटे
 भाई के ५। दूबला के ३। बलवान के २। नाम ॥ दोहा ॥
 अनुज जघत्यज अवरज रूपोच कनिष्ठ वीर्य ॥ दुर्बल कृत
 अमांस त्रय वंसल मांसल वीर्य ॥ ४९ ॥ दूबला के ४। नक
 चपट के ४। नाम ॥ दोहा ॥ बृहत्कुक्षितुषिचिंडल रतुदी
 तुदिक धाटा ॥ नत नासिक तु अवभटे रु अवदीट रु अक्नाटा ॥
 ५० ॥ अच्छे वार वाले के ३। सिमटी चाम वाले के २।
 कम अधिक अंग वाले के २। वावना के ३। नाम ॥ दोहा
 केशी केशव केशिक हिवलनि वलिभ जुग सर्व ॥ विकलांग
 तु योगंड जुग हस्त तु वामन सर्व ॥ ५१ ॥ तीखी नाक का के
 १। नकटा के २। लम्बी वाचिपटी नाक का के २। दरदूर

जाँघका के २ नाम ॥ दोहा ॥ खुराा खुराासं विग्र तौ गतना
 रि ॥ जुगजोय ॥ खुराा खुराासं प्रजुतौ प्रगत जानुक हि होय
 ॥ २ ॥ ऊँची जाँघका के २ मिली जाँघका के २ वहिरा
 के २ कूवडा के २ दूँटा के २ नाम ॥ दोहा ॥ उर्द्ध जानुक
 उर्द्ध जुगसंहत जानुक संजु ॥ एडवधिर कुज तुगडल कुरुर
 तुकुरा जुगसंजु ॥ ५३ ॥ छोटे अंगका के २ पाँगला के २
 मूँड मूँडाये के २ कंजा के २ लंगडा के २ नाम ॥ दोहा
 पृश्नि अल्पतनु श्रोता तौ पंगु हि मुंडित मुंडा ॥ बलिर तुके कर
 खोड तौ खंज हि जुग जुग मुंड ॥ ५४ ॥ लहसना के ३ तिल
 वाला के २ निरोगी के २ नाम ॥ दोहा ॥ जडल तुकालक
 पिप्पुस हि तिलकालक तु द्वितीय ॥ तिलक हि होय अनामय
 तु जुग आरोग्य गनीय ॥ ५५ ॥ इलाज करने के २ इलाज
 के ५ रोग के ७ क्षयी के ३ नाक रोग के २ छींक के ३
 नाम ॥ दोहा ॥ चिकित्सा तुरुक्मतिक्रिया औषध भेषज रु
 धि ॥ अगद जायु भेषज्य पचरोग रुजा रुक व्याधि ॥ ५५ ॥ ग
 द आमय उपताप ही क्षय तौ यक्ष्मा शोष ॥ प्रतिश्याय पीनस
 च्यसुत क्षुत क्षव हि अदोष ॥ ५६ ॥ खासी के २ सूजन के ३
 विवाई के २ सेहूँवाँ के २ नाम ॥ दोहा ॥ कास तुक्षन धु
 हि श्रोत तौ शोथ रुप्रयथु वरवानि ॥ पाद स्फोट विपादिका
 सिध्य किलास द्विमानि ॥ ५७ ॥ खाजुरोग के ४ खुजाल
 के ३ फोडा के २ नाम ॥ दोहा ॥ पामा पाम विचर्चिका क

च्छा'कंडू'सोतु॥ रक्ज'कंडूया'विकट'तौ'विस्फोट'हि'होतु॥ ५५
 घाव'के'४। नसूर'को'१ कोट'के'२। म्बेत'कोट'के'२ ववा
 सीर'के'२। कवजी'के'२। संग्रह'रा'के'२। उलटी'के'३। ना
 म॥ दोहा॥ ब्रण'तु'घाव'ई'र्म'रु'अरु'अधनाडी'ब्रण'होय॥
 को'तु'मंडल'क'कुष्ठ'तौ'श्वित्र'हि'अर्श'स'सोय॥ ५६॥ दुर्नाम'क'
 आनाह'नौ'विवंध'ग्रह'रा'सोतु॥ रुक्'प्रवाहिका'वमयु'तौ'वमि
 ग्र'वर्दिका'होतु॥ र्दण'व्याधि'भेद'के'४। मूत्र'कृक'के'२। ह
 की'म'के'४। रोग'रहित'के'४। रोग'सै'दुखी'के'२॥ नाम॥
 दोहा॥ व्याधि'भेद'विदधि'रुज्वर'मेह'भगंदर'च्यार॥ मूत्र'कृ
 क'तौ'अशमरी'पिष्क'तु'अगंद'कारे॥ ६१॥ रु'रोग'हारी'चिकित्स
 क'वार्त्ता'तु'कल्य'वखानि॥ निरामय'रु'उल्लाघ'अथ'लगानि'
 तु'ल्लाघ'जानि॥ ६२॥ रोगी'के'४। खसरा'वाला'के'२। ना
 म॥ दोहा॥ अप'दु'आम'यावी'विकृत'व्याधित'आतुर'सोय॥
 अम्य'मित'रु'अभ्यात'अथ'पायन'कच्छुर'होय॥ ६३॥ दाद'वा
 ला'के'२। ववा'सीर'वाला'के'२। वाय'वाला'के'२। वहु'तद
 ल'वाला'के'२। ची'परा'वा'चौ'धरा'के'४। वा'वले'के'२। क
 फ'वाले'के'२। नाम॥ दोहा॥ जु'ददुर'रोगी'ददुरा'हि'अर्श'स'तु
 अर्श'वान'॥ द्वि'वात'रोगी'वात'की'सा'तिसार'तौ'आन॥ ६४॥
 आ'तिसार'की'हि'चुल्ल'तौ'चिल्ल'पिल्ल'क्षि'न्नाक्ष'॥ उन्मत्त'तु'उ
 न्माद'वत'श्लेष्मल'श्लेष्मरा'दक्ष॥ ६५॥ कू'बडा'के'२। तुंदल'
 २। सेइ'वा'वाले'के'२। अंधा'के'२। मूर्च्छित'के'२। नाम॥

दोहा॥ न्युन्नमुन्नरुज'तुंडिम'तुतुंडिल'सिधमल'सोतु॥ किलासी
 हुअंध'तुअदग'मूर्त'तुमूर्धित'होतु॥ ६६॥ कामके ६। पित्त
 के २। कफके २। खालके २। नाम॥ दोहा॥ शुक्र'तुतेजस'
 रेतस'रुद्रन्दिय'वीर्य'रुबीज'॥ पित्त'मायु'प्लेष्मा'तुकफ'असृग्ध
 रा'त्वच'धीज॥ ६७॥ मांसके ६। सूखेमांसके ३। नाम॥ दोहा
 मांस'पलल'पिणित'रुतरस'आमिष'क्रव्य'कुमानि॥ शुष्कमांस'
 उत्तप'प्रपुनि'वल्लूर'ह्रवय'जानि॥ ६८॥ रुधिरके ८। हृदयके
 ३। नाम॥ दोहा॥ रुधिर'असृक'रक्त'रुक्ष'तज'शोणित'लोहित'
 सोय॥ लोह'असृ'हृदय'तौहृदय'कमल'हृद'होय॥ ६९॥ क
 रेजाके २। चरबीके ३। गलेकी'पिछली'नसको १। नाडीके
 २। नाम॥ दोहा॥ अग्रमांस'बुक्का'जुगहि'बपा'वसा'त्रय'मेद॥
 मन्या'नस'गल'पीछली'सिरा'तुध'मनि'द्विभेद॥ ७०॥ तिलके २
 गूदाके २। कान'आदिके'मलके २। आंतके २। पिलही
 के २। नाम॥ दोहा॥ तिलक'लोम'मस्तिष्क'तौगोर्द'किट्ट'म
 ल'दोय॥ अंत्र'पुरीत'गुल्म'तौप्रीहा'जुगजुग'जोय॥ ७१॥ नस
 के १। कलेजा'विशेषके २। लारके ३। कीचरके १। नाम॥ दोहा
 स्नायु'वस्त्रसा'यकत'तौकाल'खंड'जुगभाषि॥ लाला'स्य'शि
 का'स्यंदिनी'दूषिका'तुमल'आंषे॥ ७२॥ विष्टाके ८। कपार
 के ३। नाम॥ दोहा॥ गूध'तुविष्टा'प्राकृत'विट'वर्चस्क'रुउ
 चार॥ शमल'अवस्कर'कर्पूर'तुजानि'कपाल'कपार'॥ ७३॥
 दाडके ३। पीजराको १। रीडको १। खोपरीको १। नाम॥

दोहा॥ अस्थि कुल्य की कसै अथोतनु की कस कंकाल ॥ की कस
 पीठि कशेरका शीश करोटि रसाल ॥ ७४ ॥ पशुरी को १ अंग
 के ३ देह के ११ पैर के आगे के २ पाँव के ४। नाम। दोहा
 पाँस हाडा तु पर्शु का अवयव अंग प्रतीक ॥ अपघन हव पुंगव
 तनु काय कलेवर नीक ॥ ७५ ॥ वर्षा मूर्ति विग्रह तनू अरु
 सहनन प्ररीर ॥ प्रपद तु पादाग्र हि चरुा अंधि पाद पद धी
 र ॥ ७६ ॥ घुटने के २ रोड़ी को १ जाघ के २ जानु के
 ३ निर्रोहवा जानु के ऊपर भाग के २ टिहनी को १
 गुदा के ३ नाम ॥ दोहा ॥ घुटिक गुल्फ पदगोंटि अथ
 पार्शि ति नहि तर जानि ॥ जंघा प्रसृता जानु तो ऊरु पर्व प
 हि चानि ॥ ७७ ॥ अष्टी वान हि जर सतु सविद्य हि वंक्षरा सोत
 ता की संधि ॥ अपान तो गुद रुपायु त्रय होतु ॥ ७८ ॥ मूत्र स्थान
 को १ कमर के ६ नितंब को १ नाम। दोहा ॥ वस्ति नाभि
 तर कटि तु कट श्रोणि फलक श्रोणी रु ॥ ककुक्षती हुनि
 तंव तौ तिय कटि पीछु प्ररीर ॥ ७९ ॥ स्त्री की कटि के अग्र
 भाग को १ नितंब का खडा को १ कूला के २ भग
 लिंग को १ नाम ॥ दोहा ॥ आगल जघन कुकुंदर तु गा
 ड जु वंस अधस्थ ॥ कटि प्रोथ तौ स्फिच अथो लिंग योनि तु
 उपस्थ ॥ ८० ॥ योनि के २ लिंग के ५ अंड के ३ नाम। दो
 हा ॥ भग तु योनि अथ मेहन रुशे फस शिश्र वखानि ॥ मेदू
 लिंग मुक्क बुव्वरा अंड कोश त्रय मानि ॥ ८१ ॥ पीठ वंश

के नीचे की तीन हड्डी को १। पेट के ५। कुच के २। ताकी
 बीटनी के २। नाम ॥ दोहा ॥ एष्ट वंश अधात्रिक "इकहिकु
 सितु जठर पिचंड ॥ उदर तुंद" अथ कुच स्तन कुचाग्र चूच-
 क "मंड" ॥ ८२ ॥ बाथं वा गोद के २। काती के ३। पीठ के २
 कंधा के ३। नाम ॥ दोहा ॥ कोड भुजांतर "वक्षसं तु उरसं
 रुवत्सि हि देषि ॥ एष्ट तु पीठ" हि भुज शिर तु स्कंध र असं परोषि
 ॥ ८३ ॥ हंसुली को १। कौरव के २। वगल को १। शरीर
 मध्य के ३। नाम ॥ दोहा ॥ ताकी संधितु जत्रु ही वाह मू-
 लं जुग कस ॥ पार्श्व ता सुतर मध्य मं तु मध्य अवल ग्न दक्ष
 ॥ ८४ ॥ बाह के ३। कुहनी के २। ता के ऊपर को १। कुह-
 नी नीचे को १। नाम ॥ दोहा ॥ दोष तु बाह प्रवेष्ट त्रय क-
 फो री कूर्पर जानि ॥ तिहि ऊपर तु प्रगंड तिहि तरै प्रकोष्ठ व-
 खानि ॥ ८५ ॥ गद्दा को १। मणि बंध धसैं छि गुनी लौं मां-
 सल वहि प्रदेश को १। नाम ॥ दोहा ॥ संविजु पाणि प्र-
 कोष्ठ कीर परि वंध वखानि ॥ ता तै लेय कनिष्ठ लौं वहि क-
 र कर म पिच्छ ॥ ८६ ॥ हाथ के ३। प्रदेशिनी के २। अंगु-
 ली मात्र के २। नाम ॥ दोहा ॥ पंच शाख शय पाणि त्रय अ-
 थ प्रदेशिनी सो तु ॥ तर्जनी है अथ अंगुली सो कर शाखा हो तु
 ॥ ८७ ॥ पांचौं अंगुलीन के १। नाम ॥ दोहा ॥ अथ अंगुष्ठ
 प्रदेशिनी वहरि मध्य मां जानि ॥ पुनि अनामिका कनिष्ठा क्र-
 म तै पांच पिच्छानि ॥ ८८ ॥ नुह के ४। प्रादेश १। नाम ॥ दो-

कर रुहं नखरं पुनर्मवंह नखं संजुत गनि चारि ॥ प्रादेशं तु अं
 गुष्ठं अरुतर्जनि अन्तरधारि ॥ ८८ ॥ तालको १ गोकर्ण
 को १ वितस्ति को १ नाम ॥ दोहा ॥ तथा तालं गोकर्ण
 जुगमथ्य अनामानाप ॥ क्षिगुनी नाप वितस्ति सोद्वादश
 अंगुल प्राप ॥ ८९ ॥ पंजाके ३ मिले जुग पंजान को १
 नाम ॥ दोहा ॥ पारि राह विस्तृत अंगुली प्रतलं प्रहस्तं च पेदं
 ॥ सिंह तलं तु जं हं प्रतल जुग दक्षिण वाम विभेद ॥ ९० ॥ प
 स्ते को १ अंजुली को १ चौबीस अंगुल नाप हाथ के
 १ नाम ॥ दोहा ॥ प्रसृतं तु कुदरोपानि अथ अंजलि दोय
 मिलान ॥ विस्तृत कर रु प्रकोष्ठ सब हस्त हि कहत सुजा
 न ॥ ९१ ॥ मूठी को १ रत्तिको १ अरत्तिको १ नाम ॥
 दोहा ॥ मुष्टि तु मूठी ही अथोस प्रकोष्ठ मूठी सु ॥ रत्नि हि
 राक अरत्ति तौ क्षिगुनी खुले सुदी सु ॥ ९२ ॥ व्याम को १
 पौरुष को १ नाम ॥ दोहा ॥ विस्तृत कर भुज इह न को
 तिर को अन्तर व्याम ॥ जंचो विस्तृत पारि भुजन रमित पौ
 रुष नाम ॥ ९३ ॥ गला के २ नाडिके ३ तीनों रेखा की ना
 डिको १ नाम ॥ दोहा ॥ कंठ तु यल धीवा सुतौ शिरो धि
 कंधर मानि ॥ कंठु धीवा एक सो त्रय रेखा जुत जानि ॥
 ९४ ॥ घैटू के ३ मुह के ७ नाक के ५ होठ के ४ नाम
 दोहा ॥ पाय अयट्ट काटिका वदन वक्र मुख आस्य ॥ ल
 प्त तंड अनन अयो घोणा घ्राण प्रकास्य ॥ ९५ ॥ गोध वल

अरु नासिका नासा पंचनिहारि ओष्ठ अधर रदन च्छंदरुद
 शन बासस हु चारि ॥ ८७ ॥ चिवुक को १ गाल के २ कन
 पटी को १ दांत के ४ तालवा के २ नाम ॥ दोहा ॥ ति
 हितर चिवुक कपोल तौ गंड हनु तु परतास ॥ रदन तु दशन
 रुदंतर द तालु तु काकुद भास ॥ ८८ ॥ जीभ के ३ ओठ का
 किनारा को १ लिलार के ३ नाम ॥ दोहा ॥ रसना जिह्वा
 रसजा अथो ओष्ठ के अंत ॥ स्टकिरी ॥ हिडक गोधि तो अलिक
 ललाट भनंत ॥ ८९ ॥ भौंह को १ भौंह वीच को १ आंख का
 तिल के २ नाम ॥ दोहा ॥ भ्रू तु दगन के ऊपर हि कूर्च तु भ्रू
 नमंभार ॥ अथ कनीनिका तारका जुग दग तिल निर्धार ॥ ९० ॥
 आंख के ८ नाम ॥ दोहा ॥ नयन तु लोचन चक्षुष रुईक्ष
 रा अक्षि चखानि ॥ दृग अरु अंभ के नेत्र पुनि दृष्टि नवम पहि
 चानि ॥ ९० ॥ आंसू के ५ आंख के किनारों को १ किनारों
 से देखने को १ नाम ॥ दोहा ॥ असु अश्रु नेत्रां पुनि रोदन
 अस्त्र हि दक्ष ॥ अपाग स्तु नेत्रांत हीति हिं कर दर्श कटाक्ष ॥
 ९० ॥ कान के ६ शिर के ५ नाम ॥ दोहा ॥ कर्ण शब्द ग्रह
 श्रोत्र श्रुति श्रवण रुश्रव वषट जानि ॥ उत्तमंग तो शीर्ष शिर
 मूर्द्धी मस्तक मानि ॥ ९० ॥ वार के ६ बालों के समूह के २
 टडे बालों के २ नाम ॥ दोहा ॥ चिकुर तु कुंतल बाल कच
 किश शिरोरुह जोय ॥ केशिक केषप हि अलक तो चूरा कुंतल
 हु होय ॥ ९० ॥ लिलार परभु के बालों को १ कुमार च्छ

के २। पाटी के २। मोती की माला आदि सैं वंधे केश समूह
 को १। नाम ॥ दोहा ॥ भ्रमर क' एक शिखंड के तु का क पक्ष जु
 गमिल्ल ॥ केश वेश कवरी कच तु अति साजे धम्मिल्ल ॥ १०५ ॥
 चोटी के ३। जटा के २। सर्पाकार रचित केश वेश के २। नाम
 ॥ दोहा ॥ अथो केश पाशी शिखा चूड़ा तीन वरवानि ॥ जटा
 सटी जुग व्रतिन की वेरी प्रवेरी जानि ॥ १०६ ॥ साफ़ वाल के
 २। कच पर्याय सैं परे पाश आदि तीन केश समूह वाची
 ता के ३। नाम ॥ दोहा ॥ शीर्ष गये स्तु शिरस्य जुग निर्मल वार
 प्रसंग ॥ पाश पक्ष अरु हस्त ये कला पार्थ कच संग ॥ १०७ ॥
 रोम के ३। मूँछ डाढी को १। अलंकार की शोभा के ५। नाम
 ॥ दोहा ॥ रोम तनू रहलो म' त्रय सुख कच प्रसभु हि कथ्य ॥
 वेश प्रसाधन प्रतिकर्म आकल्प रुने पथ्य ॥ १०८ ॥ अलंकार
 कर्ता के २। अलंकार युत के ५। नाम ॥ दोहा ॥ अलंकारि
 णुं तु जुग अलंकर्ता मंडित सौ तु ॥ परिष्कृत रुभूषित अलंकृत
 रु प्रसाधित हो तु ॥ १०९ ॥ अलंकारादि सैं अति शोभित के
 २। अंगार के २। गहने के ५। मुकुट के २। चोटी की मणि
 के २। हार के बीच की बड़ी मणि को १। नाम ॥ दोहा ॥
 आजि सुं तुरोचि सुं पुनि आट' ह भूषां तु ॥ अलंक्रियां अभरां
 तो परिष्कार विख्या तु ॥ ११० ॥ विभूषण रुमंडन अलंकार हि
 मुकुट किरीट ॥ शिरो रत्न चूडामणि ॥ हित रत्न तु इक गुन कीट
 ॥ १११ ॥ चोटी की सोने की पाटी के २। बीदी वाटी का के २

नाम ॥ दोहा ॥ बालपाश्याकनक कीपटी पारितथ्याहि ॥ भूषन
 अलिक ललाटिका द्वितिय पत्रपाश्याहि ॥ ११२ ॥ ताटक के २
 कुंडल के २ कंठी वा ॥ कंठा के २ नाम ॥ दोहा ॥ तालपत्र
 तौ करि को कर्ग वेष्टन तु आन ॥ कुंडल जुगै वेयतौ सुकंठ
 भूषा नान ॥ ११३ ॥ नामि पर्यन्त लंवी कंठी के २ सोने की
 को १ मोती नसै गुथी को १ नाम ॥ दोहा ॥ लम्बन द्वि
 यललंतिका प्रालंबिका तु हेम ॥ उरस्तुत्रिका मुक्त की गुथी मा
 लसनेम ॥ ११४ ॥ हार के २ हार भेदों के लडके के ४ नाम
 ॥ दोहा ॥ हार जुगल मुक्तावली देवच्छंद तु जोय ॥ सौलर को
 अथ यष्टि तौलतारु सरलड होय ॥ ११५ ॥ हार भेद लड भेद करि
 गुत्त यष्टि वत्तीस ॥ चतुर्विंश गुच्छा द्वै है गोस्तन चौसर दीस ॥
 अर्द्ध हार द्वादशलरहि मारावक तुलर वीस ॥ अथ एक हि एका
 वली एक यष्टिका दीस ॥ ११७ ॥ सत्तार्डस मोतीन की को १
 प्रकोष्ठाभरणा के ४ नाम ॥ दोहा ॥ सप्तवीस मुक्तान की मु
 नक्षत्र माला हि ॥ कटक तु आवापक वलय पारिहार्य वव आहि
 ॥ ११८ ॥ प्रगंड भूषणा के २ अंगूठी के २ अंकित अंगूठी
 को १ नाम ॥ दोहा ॥ केयूर तु अंगद जुगल अंगुलीयक तु जा
 नि ॥ ऊर्मि को हिसो साक्षरा अंगुलि मुद्रा मानि ॥ ११९ ॥ कडा के
 २ स्त्रियों की कमरि के भूषणा के ५ पुरुषों की कमरि भू
 षणा को १ नाम ॥ दोहा ॥ कंकरा कर भूषणा जुगल सारसन
 तुरसनारु ५ पांच मेखला सप्तकी कांचि दुष्ट खल चारु ॥ १२० ॥

एकलरकीको१। आठकीको१। सोलहकीको१। पच्चीसकी
 को१। नाम। दोहा॥ एकयष्टिकांची कहत आठमेवलाजानि।
 रशना षोडशयष्टिकी पचिसकलापवरवानि॥१२१॥ विक्रिया।
 वा। पायजेवके६। घुघरूके२। वस्त्रनके कारणाके४।
 अलसीआदि सैवने वस्त्रको१। कपास सैवनेको१। रेस
 म सैवनेके२। पशुरोम सैवनेके२। नाम॥ दोहा॥ तुलाके
 टिपादांगदरु नूपुर अरु मंजीर॥ पादकटक हंसक अथोद्गुदध
 टिकाधीर॥१२२॥ किंकिरीणी हुत्वक फल कृमि रुरोम हुकारण
 वास॥ वाल्क तु इकक्षौमादिको॥ फाल सुतौ कार्पास॥ वादर
 यकौशेय तौ कृमिकोशोत्थ विभाति॥ एकवतौ मृगरोम जहि
 चारि वसन कीजाति॥१२३॥ मडिहार। वा। कोराके४। धो
 ये वस्त्रके जोडाको१। नाम॥ दोहा॥ नवांवरस्तु अनहते
 रुतंत्रके रुनिष्प्रवारि॥ उद्गमनीय तु एक है धौत वस्त्र जुग
 जारि॥१२४॥ धोये रेसमीको१। दुसाला आदिके२। रे
 समी कपडेके२। नाम॥ दोहा॥ जुहै धुप्यौ कोशेय सोड
 का पत्रोरी वरवानि॥ महाधन तु बहुमूल्य ही सोम दुकूल हि
 मानि॥१२५॥ कपडा के किनारेके२। दशी वाकराके२।
 दैर्घ्य। वा। वस्त्रकी लम्बाईके२। वस्त्रकी चौडाई। वा।
 पेनाके२। नाम॥ दोहा॥ आहत सुतौ निवीत ही दशा तु वस्ति
 द्विराह॥ आयामे तु आरोह जुग विशालता परिगाह॥१२६॥
 पुराने कपडेके२। चीथडाके२। वस्त्रमात्रके६। नाम॥

दोहा ॥ जीर्ण वस्त्रं तु पटच्चरिहिनक्तकं कर्पटं भास ॥ आच्छा
 दनं अंशुकं वसनं चेलं सुचलेलकं वास ॥ १२७ ॥ मोटे वस्त्र
 के २ ओहार १ बाबेठन के २ कंवल के २ नाम ॥ दोहा ॥
 स्थूलशाटकं तु वराशि हि प्रच्छदपटं तु निचोल ॥ रल्लकं सो
 तौ कंवलं हि सब जुग जुग बुधवोल ॥ १२८ ॥ धोती आदिके ४
 उत्तरीय १ बा ॥ अंगोच्छा १ बा ॥ दुपट्टा आदिके ४ नाम ॥
 दोहा ॥ उपसंव्यान अधोऽंशुकं रु अंतरीय परिधानं ॥ उत्तरासं
 ग वृहतिको प्रवारं रु संव्यानं ॥ १२९ ॥ अंगिया १ बा ॥ चोली के २
 रजार्द्र १ बा ॥ ओढना को १ उटंगलहंगा को १ लंवालहंगा
 को १ नाम ॥ दोहा ॥ चोलं तु कूर्पासकं जुगल शीतहरणानी
 शारं ॥ चंडातकं इकतिय वसन अप्रपदीनं ह चार ॥ १३० ॥
 चंदवा के २ तंवूडे श को १ कनात के ३ नाम ॥ दोहा ॥
 वितानं स्तु उल्लेचं अथ दूष्यं वसन गृह जानि ॥ प्रति सीरां तो
 जवनिको रुतिरस्कराणि मानि ॥ १३१ ॥ रोली आदि सैं अंग सं
 स्कार के २ पौंछने के ३ उवटना के २ न्हाने के ३ चं
 दनादि लेपन के ३ गड्गंध कौं फिर करने के २ ना
 मा दोहा ॥ अंग संस्कारं तु परिकर्मं मृजामार्जना मार्षि ॥
 उद्धर्तनं उत्सादनं हि स्नानं तु आप्लवं दृष्टि ॥ १३२ ॥ आप्लाव
 ह चार्चिकं तो स्या सक्रंचर्चं तीन ॥ प्रबोधनं तु अनुबोधनं
 हि गंध धरन पुनि वीन ॥ १३३ ॥ गाल आदि मै कस्तूरी
 आदि सैं चिन्ह बनाने के २ तिलक के ४ नामा दोहा ॥

जुपत्रलेखं सो द्वितीयपत्रांगुली निर्धारि ॥ चित्रकंतिलक
 विरोपकरुतमालपत्रं ह्यचारि ॥ १३४ ॥ केशरके १३ ॥ लाख
 केर्दी नाम ॥ दोहा ॥ केशरकुंकुमअग्निशिखं वरं वाल्मी
 कं रुधीर ॥ पिशुनं रक्तं संकोचं पुनि पीतनं अरु काशमीरं ॥
 १३५ ॥ लोहितचन्दनं जुगरुडकनामत्रयो दश भाष ॥ राक्ष
 लासायावं जतुं दुसामयं रुषट् लाष ॥ १३६ ॥ लवंगके २
 पीतचन्दनके ३ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ देवकुसुमं श्रीसंज्ञं ही
 अथ कालीयकं जानि ॥ रुकालानुसार्यं सुत्यतिय जायकं
 नाम वरवानि ॥ १३७ ॥ अगुरुकेर्दी काला अगुरुके २
 मल्लिगंधि अगुरुको १ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ राजार्हं तु जोग
 कं अगुरुं कृमिजं वंशिकं रुलोहं ॥ कालागुरुं अगुरुं हि सुर
 भिजुतं मंगल्यं सो ह १३८ ॥ रालके ५ धूपके २ नाम ॥ दो ॥ रालस
 जैरसं सर्वरसं यज्ञधूपं बहु रूपं ॥ द्वात्रिंशधूपकं तौ द्वितीयं लखि
 रुकधूपं अनूपं १३९ ॥ लोहवानके ४ ॥ देवदारुधूप ॥ वाता
 रपानका तेलके ५ ॥ कस्तूरीके ३ ॥ कवावचीनीके ३
 नाम ॥ दोहा ॥ सिल्हं तु पिंडकं तुरुष्कं रुयावनं चारि प्रक
 स ॥ श्रीवेष्टं तु रुकधूपं पुनि सरलद्रव्यं श्रीवास ॥ १४० ॥ पा
 यसं द्रव्यगमदं सुतौ कस्तूरी मृगनाभि ॥ कोशफलं तु कक्को
 लकं रुकोलकं तीनहिलाभि ॥ १४१ ॥ कपूरके ७ ॥ नाम ॥
 दोहा ॥ चन्द्रसंज्ञं हिमं बालुकां घनसारं रुकं कपूरं ॥ चन्द्रक
 औरसिताभ्रं पुनि सप्तमं विदितं कपूरं ॥ १४२ ॥ मलयगि

रिचन्दनके ५। चन्दनभेदके ३। नाम॥ दोहा॥ मलयज
 चन्दनभद्रश्रीगंधसारश्रीखंड॥ हरिचन्दनगोश्रीर्वच्य
 तेलपरीकैहमंड॥ १४३॥ रक्तचन्दनके ५। जायफलके
 २। नाम॥ दोहा॥ रक्तचन्दनतुंजनरुतिलपरीपत्रांग
 ॥ कुचंदनहिजातिफलतौजातिकोप्रजुगसंग॥ १४४॥ मृग
 मदआदिकेसमभागकेवनायेपिंडकेलेपविशेषको
 १। घिसीहईलेपनवस्तुके २। नाम॥ दोहा॥ मृगमद
 ककोलरुअगुरुकर्पूरहिसमलेय॥ यज्ञकर्दमहिबर्ग
 कतुऔरविलेपनज्ञेय॥ १४५॥ पीसेसुगंधद्रव्यकेवाचे
 वाअरगजाके २। सुगंधकरनेवालेद्रव्य। वा। चूर्णके
 २। गंधद्रव्यसेवासितवस्तुके २। नाम॥ दोहा॥ वर्ति
 गात्रअनुलेपनीचारिकिजुगजुगजोय॥ वासयोगतौ
 चूर्णहीभावितवासितदोय॥ १४६॥ गंधमालाआ
 दिकेधारनको १। माथेकीमालाके ३। शिरकेवीच
 कीमालाके १। नाम॥ दोहा॥ धारनमालादिकनको
 अधिवासनइकआहि॥ माथेमालामालपसजगर्भकेकेश
 नमाहि॥ १४७॥ सिरसेचोटीतककीको १। सिरसेलला
 टतककीको १। गलेतकलंबीको १। जनेऊकेसमान
 छातीपरलटकीमालाको १। नाम॥ दोहा॥ प्रभृष्टकतु
 शिरवाहिमेललामकतुगतमाल॥ ऋजुलंबितुप्रलंबहै
 विकसकतुरसाल॥ १४८॥ चोटीकीपहरीमालाके २५॥

माला आदिके बनाने के २ नाम ॥ दोहा ॥ जोतिरर्चा उर
पर रहे अघोषि स्वागत आहि ॥ प्रेरकर अरु आपी डही परिसं
दस्चनो हि ॥ १४८ ॥ सब वस्तु सैं परि पूर्ण के २ उशीसा
वा ॥ तकि पाके २ विछावने के ३ नाम ॥ दोहा ॥ अभोग
तु परि पूर्णता उपवर्ह तु उपधानै शयनीय तु शय्यां शयनै न
य विछावना जान ॥ १५० ॥ खटिया वा पलंग के ४ गेंद के
२ दीया के २ नाम ॥ दोहा ॥ पर्यंक तु पल्यंक च वरखट्टामं
चै हि जोय ॥ गेंदुक तौ कंदुक हि अथ दीप प्रदीप हि दोय ॥
२५१ ॥ पीठा के २ डब्बा वा चौफला के २ कांषी के
२ पीकदान के नाम ॥ दोहा ॥ पीठ तु आसन संपुटक सुते
समुद्रक राह ॥ कंकतिका तु प्रसाधनी पतदग्रह तु प्रतिग्रा
ह ॥ १५२ ॥ बुक्का के २ दर्पण के ३ पंखा के २ नाम ॥
दोहा ॥ पिष्टात तु पट वा सक हि मुकुर तु दर्पण सोय ॥ आद
री हुत्रय व्यजन तौ ताल वृंतक हि होय ॥ १५३ ॥

इति नृतरंगः

अथ ब्रह्म तरंग लिख्यते ॥ ४ ॥

वंश के ८ वर्रा को १ नाम ॥ दोहा ॥ अभिजन संतति
गोत्र कुल अन्ववाय सन्तान ॥ वंश जनन अन्वय वर्रा तौ वि
प्रादि हि नान ॥ १ ॥ ब्राह्मणादिको १ राजवंश के २ नाम ॥
दोहा ॥ विप्र क्षत्र विट शूद्र ये चातुर्वर्ण्य वरवानि ॥ जुराज वीज
नो द्वितीय ॥ राजवंश पहि चानि ॥ २ ॥ कुलीन के २ सज्जन

के ६। ब्रह्मचारी को १। नाम ॥ दोहा ॥ कुलसंभवतौ वीज्य
 ही सज्जन साधु कुलीन ॥ सम्यग् महाकुल आर्य अथ सुब्रह्म
 चारी लीन ॥ ३॥ गृही आदिके ३। आश्रम को १। ब्राह्मण
 के १। नाम दोहा ॥ गृही वानप्रस्थ रुचवयः भिक्षु ह्यश्र
 ममानि ॥ बाडव भूसुर विप्र द्विज रु अग्रजन्मा जानि ॥ ४॥ षट्
 कर्म को १। षट् कर्म के भिन्न भिन्न नाम दोहा ॥ षट् कर्मों
 इक कर्म तौ याग अध्ययन दान ॥ याजन अध्यापन अपस प्र
 तिग्रह षटनान ॥ ५॥ धीमान् के २१। नाम ॥ दोहा ॥ स
 नको विद दोषज्ञ बुध ॥ इत कवि विद्वान् ॥ सुधी विपश्चित् धी
 रज्ञ सु प्रज्ञ रु संख्यावान् ॥ ६॥ कृष्टि दूर दर्शी कृती सूरि दीर्घ
 दर्शी सु ॥ लब्धवर्ण रु विचक्षणा सुमनीषी ॥ इड्क्की सु ॥ ७॥ प
 ढाने वाले के २। वेदपाठी के २। पितादिको १। आचार्य
 को १। नाम ॥ दोहा ॥ उपाध्याय अध्यापक हि श्रोत्रिय क्कांद
 सै जानि ॥ निषेकादिकृत गुरु हि अथ इक आचार्य वखानि ॥
 ८॥ यज्ञाध्य के ३। दीक्षित को १। नाम ॥ दोहा ॥ यजमा
 न तु यज्ञाव्रती अध्वर मै शिख दानि ॥ सोमवान मख मै यही दी
 क्षित नाम वखानि ॥ ९॥ वारम्बार यज्ञ करन वाले के २
 यज्वा को १। नाम ॥ दोहा ॥ इज्याशील तु दूसरो या यजूक
 ही जोय ॥ यज्वा सो तौ विधिसहित मख कारक नर होय ॥ १०॥ दृह
 स्पति यज्ञकर्ता को १। सोमरस पीने वाला यजमान के २
 सर्वस्व दासिगां सै दिश्वजित् यज्ञकर्ता को १। नाम ॥ दो

स्वर्पति तुर्याव्यतिमखकाराहि जु सोमपीती होय ॥ सोमपंज
 गजित मखवत जु सु सर्व वेदा होय ॥ ११ ॥ अनुचानको १। स
 मावतको १। नाम दोहा ॥ अनुचान इक संग जिहि भवचन
 सन पहिली न ॥ समावर्त गृहगमन हित जिहि गुरु आज्ञा दी
 न ॥ १२ ॥ अभिषवत्तानकर्त्ताको १। विद्यार्थी के ३। नये
 विद्यार्थी के २। सपाठीको १। नाम ॥ दोहा ॥ सुत्त इक ही शि
 श्रुतौ अंते वासी छात्र ॥ प्राथम कल्पिक शैल अथ स ब्रह्मचारी
 मात्र ॥ १३ ॥ एक गुरु के पास के पढने वालान को १। अ
 ग्नि के वटोरने वाला को १। परंपरा उपदेश के ३। नाम
 ॥ दोहा ॥ एक गुरु तु सतीर्थ अथ एक अग्नि चित आहि ॥
 परंपरा उपदेश तो रोति ह इति ही ॥ १४ ॥ प्रथम ज्ञानको
 १। जानकर आरंभ करने को १। यज्ञ वा। मखन के ६
 नाम ॥ दोहा ॥ पहिलो ज्ञान सु उपजौ ज्ञात्वारंभ समाध ॥ उप
 क्रम ह अर्ध्वरु सर्व सत्त वतु कतु याग ॥ १५ ॥ महा यज्ञको
 १। नाम ॥ दोहा ॥ पाठ होय पूजा अति धि तर्पसा वलि पच
 वादि ॥ महा यज्ञ ये नाम ह पांच ब्रह्म यज्ञादि ॥ १६ ॥ समा
 केटी नाम ॥ दोहा ॥ आमा समज्यो समिति सद आस्थानी
 आस्थान ॥ गोष्ठी संपद परिषद ह नवही नाम निदान ॥ १७ ॥
 यज्ञ ह विशेषको १। यज्ञ दर्शकको १। सभामे वै
 वालान के ३। नाम ॥ दोहा ॥ प्रावंश तु सदस्य गृह विधि
 न ॥ न ॥ १८ ॥ समांतर सामाजिक रुसभ्य समा सदपश्य ॥

॥१८॥ तीनों वेद के ज्ञाता के क्रम से ये के क। नाम॥
 दोहा॥ उद्गाता अथर्व्यु अरु होती तीन वरवानि॥ साम यजुष
 ऋक् वेद वित ऋत्विज क्रम ते जानि॥ १८॥ ऋत्विक् के र
 नाम॥ दोहा॥ धन देरो पै वरा हि त्र ऋत्विज यज के जानि॥
 आग्नीध्रादिक षोडश हि मिन्न मिन्न पद्वितानि॥ २०॥ यज्ञ वे
 दी को १ यज्ञ का चौतरा के २ यज्ञ का सर्व भावि शेष के
 २ यज्ञ रक्षार्थ दृष्टी को १ नाम॥ दोहा॥ वेदी संस्कृत भू
 मि अथ स्थंडिल चत्वर होय॥ यूप कटक तु च पाल अथ कुंवा
 आहवा होय॥ २१॥ यज्ञ संभ के आगे के २ अग्नि निक
 लने की दोल कड़ी के २ यज्ञ अग्नि तीन के ३ नाम॥
 दोहा॥ तर्म सुतो यूपाय अथ अरशि तु मंथन दारु॥ गार्हपत्य
 दक्षिणाग्नि रुआहवनी ये ह चारु॥ २२॥ तीनों अग्नि को १
 यज्ञ अग्नि विशेष को १ यज्ञ अग्नि के स्थल के ३ नाम
 दोहा॥ त्रेता तीनों अग्नि अथ संस्कृत अग्नि प्रसीत॥ उपचार्य
 तु परिचार्य अरु समूह तीन हीत॥ २३॥ अग्नि विशेष को
 १ अग्नि की प्रिया के ३ नाम॥ दोहा॥ गार्हपत्य से दक्षि
 रा अग्नि धाप आनाथ॥ स्वाहा तो हत मुकु प्रिया आनर्थी ह
 हराय॥ २४॥ अग्नि जलाने की ऋचा दामंत्र के २ रुद्र
 को यज्ञ की रवी के २ नाम॥ दोहा॥ हि सामि धेनी रु
 धायी ऋक् वह अग्नि जरानि॥ गायत्र्यादिक रुद्र अथ हव्य
 पाक चरु मानि॥ २५॥ दधि और दुग्ध दि जा को १ यज्ञ

का वीजना को १। दही मिल्वा घी को १। नाम ॥ दोहा ॥
 अनिष्टो डरु उल्लस्य पयः पक्वमाहि दधि सज्य ॥ धवित्रैः सगत्वं
 च वीजनो दधि घृतस्य जलस्य दान्यै ॥ २६ ॥ स्त्री के २। देव पि
 तर अन्न के ये के का यज्ञ पान्न के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ पायसे तौ
 परमानं जुग देव अन्न तौ हव्य ॥ पितर अन्न तौ कव्य अथ पा
 व सुवीं दिहि भव्य ॥ २७ ॥ सुव भेद के १। यज्ञ पशु को १।
 नाम ॥ दोहा ॥ ध्रुव जुह्व उपभृत सुव रु सुच ह्र इक इक जा
 नि ॥ उपावृत तु पशु भं विजो मारु न हित थित मानि ॥ २८ ॥ य
 ज्ञ पशु मारु के ३। मारे पशु के ३। नाम ॥ दोहा ॥ परंपरा
 कं तु प्रोक्षरा रु प्रमद वधार्थ कजोय ॥ उपसंपन्न प्रमीत
 अरु प्रोक्षित मास्यौ सोय ॥ २९ ॥ विशेष हवि वा ॥ सा क
 ल्य के २। होमी वस्तु को १। यज्ञांत स्नान को १। यज्ञयो
 ग्य वस्तु को १। नाम ॥ दोहा ॥ हवि सान्नाय हि वषट्कृत
 सो तौ होमी चीज ॥ अवभृथ तौ दीक्षांत इक यज्ञियं मख की
 चीज ॥ ३० ॥ यज्ञ कर्म को १। कृपादिकर्म को १। यज्ञ शेष
 को १। आहु शेष को १। नाम ॥ दोहा ॥ इष्ट तु मख मै कर्म इ
 क पूर्त रुवादि अशेष ॥ यज्ञ शेष तौ अमृत इक विध स तु भो
 जन शेष ॥ ३१ ॥ दान के १३। मरे के लिये दान को १। नाम
 दोहा ॥ त्यागं विहा पति वितरारु अंह ति स्पर्शन दान ॥ उत्स
 र्जन रु विसर्जने सु विप्रारान रु सुजान ॥ ३२ ॥ प्रतिपादन अप
 मर्जन रु प्रादेशन दशतीन ॥ जुत निर्वपरा हि मृत हित तु ओर्द्ध

दैहिकहि वीन ॥ ३३ ॥ पित्तदान के २। श्राद्धको १। मासिक
 वा। अमावस्या के श्राद्धको १। श्राद्धकाल विशेष
 को १। नाम ॥ दोहा ॥ पित्तदान स्तुति वापै ही शास्त्रकर्मजु
 त श्राद्ध ॥ अन्वाहार्य तु मासिक हि कुतपै तु कालजु श्राद्ध ॥
 ३४ ॥ श्राद्ध मै ब्राह्मण भक्ति के २। धर्मादिके खोजने
 के २। विनय के २। नाम। दोहा ॥ परीष्टितौ पर्येषणां अन्वे
 षणां रु सोय ॥ गवेषणां ही सनि सुतौ अध्येषणां हि होय ॥
 ३५ ॥ मागने के ४। पूजार्थ जल को १। पां व धोने के अर्थ
 जल को १। नाम। दोहा ॥ चारि हि याज्ञा अर्थ ना याचना
 रु अभिशास्ति ॥ अर्घ्य सुतौ अर्घार्थ जल पाद्य पदार्थ हि अ
 स्ति ॥ ३६ ॥ अतिथि के निमित्त कर्म को १। अतिथि के
 अर्थ साधु होने को १। महमान। वा। पाहना के ४। ना
 म ॥ दोहा ॥ आतिथ्य तु हित अतिथि के आतिथेय तहें साधु
 ॥ आवेष्टिक आगतु अरु अतिथि गृहागत साधु ॥ ३७ ॥ अ
 भ्यागत के २। ताजीम के २। पूजा के ६। उपासना के ५
 नाम। दोहा ॥ प्राध्वृष्टिक प्राध्वराक अथ गौरवं अभ्युत्थान
 ॥ अर्चा अपचिप्ति सपर्या अरु अर्हणां सुजान ॥ ३८ ॥ नमस्कार
 पूजा हि वरिवस्यां शुश्रूषा रु ॥ परिचर्या रु उपासना पंच उ
 पासना चारु ॥ ३९ ॥ जाने के ५। ध्यानी। वा। मौनी को १
 नाम ॥ दोहा ॥ अद्य तु अद्यां पर्यटनं व्रज्या डोलव होय ॥
 चर्या इक ध्यानादिके सीखन कौं थिति सोय ॥ ४० ॥ आच

मन के २। चुपरहने को १। अनुक्रम के १। नाम ॥ दोहा
 उपरणी तो आचमन मौन अभाषण गाव ॥ जु आनुपूर्वी अ
 दत्त सुफरी पाटी पर्याय ॥ ४१ ॥ अतिक्रम वा ॥ पर्यय के २। उ
 पवास ॥ दि पुरुष के २। चान्द्रायणादि उपवास के २।
 प्रकृति पुरुष के भेद जानने वा अन्य विचार के भी २
 नामा दोहा ॥ उपात्ययतु अतिपात जुग निवसेतु व्रत हंग
 नेक ॥ औपवसे उपवास जुग एधगात्मता विवेक ॥ ४२ ॥ सत्
 चार और वेदाभ्यास फल के २। वेद पाठ के आदि भेद
 तिपाठ की अंजलि को १। नामा दोहा ॥ वृत्ताध्ययनादि
 तुष्टि तिथि ब्रह्मवर्चस हि जानि ॥ पाठ विषे अंजलि सुतौ ब्रह्मा
 जलि हित खानि ॥ ४३ ॥ अंजलि सै वा ॥ पढने के समय
 दुसरो नै कले जल की बूँद को १। ध्यान और योग का
 आसन को १। नामा दोहा ॥ गूठ करत जल विंदु सो ब्रह्म वि
 द् इक होय ॥ अधो ध्यान योगासन तु ब्रह्मासन जिय जोय ॥
 ४४ ॥ विधि के ३। मुख्य विधि को १। गौरा विधि को १
 संस्कार पूर्वक वेद पढने को नामा दोहा ॥ कल्प तु दि
 धि कर्म मुख्य तो भय न कल्प ही जानि ॥ अनु कल्प तु तो तै अ
 धम अपाकरी इक मानि ॥ ४५ ॥ प्रसाध के २। सन्यासी के
 १। नामा दोहा ॥ अभिवादन पादग्रहण परिज्राट तो जोय
 ॥ कम हो पाणशरी गेहुं गस्करा होय ॥ ४६ ॥ तपस्वी के ३।
 मुनि के २। तपस्या के लेश सहने वाले को १। नाम

पारिकांक्षी न पस्वी तापस अयसुनि देषि ॥ वाचं यम ह दात
 तौ तपस्तेषा सह लेषि ॥ ४७ ॥ ब्रह्म चारी के २ ऋषि के २
 वेद व्रत को पूरा कर गुरु की आज्ञा के पालने वाले के २
 जितेन्द्रिय के २ नाम ॥ दोहा ॥ जु ब्रह्म चारी सुवर्णी ॥ ऋषि तु
 सत्य बन्धारी ॥ ४८ ॥ व्रत व्रत सै भूमि पर सोने वाले के
 २ पवित्र के २ पारखंडी के २ पलाश दंड को १ वांस
 दंड को १ ऋषि पात्र के २ ऋषि आसन को १ नाम ॥
 दोहा ॥ स्थंडिल शायी स्थंडिल हिमयत तु पूत पवित्र ॥ सर्व
 लिंगी पारखंड हि दंड पलाश तु मित्र ॥ ४९ ॥ आषाढ हि अय
 वेसु को दंड सुरांभ हि पास ॥ कुंडी सुतोक मंडलु हि वृषी तु आस
 न तास ॥ ५० ॥ मृग चर्म को १ भिक्षा के समूह को १ दे
 दाभ्यास के २ यज्ञौषधी के कूटने के ३ नाम ॥ दोहा
 अजिन चर्म हति भैक्ष तौ भिक्षा गन ही जानि ॥ स्वाध्याय तु ज
 प सवन तौ सुत्वा अभिषव मानि ॥ ५१ ॥ अधमर्षरा को १ अ
 मावस और पूर्णिमा के यज्ञ को १ नाम ॥ दोहा ॥ सर्व पाप
 हर जाप कौ अधमर्षरा पहि चानि ॥ पौर्णिमा सै मख पूर्णिमा
 दर्श अमा को जानि ॥ ५२ ॥ नित्य कर्म को १ कर्म विशेष को
 १ नाम ॥ दोहा ॥ तनु साधन हित नित्य को कर्म सुतौ यम हो
 य ॥ नियम तु साधन बाह्य जो नित्य कर्म है सोय ॥ ५३ ॥ दाये
 कांधे की जनेऊ के २ दहिने कांधे की जनेऊ को १
 कंठ में माला का रजनेऊ को १ नाम ॥ दोहा ॥ वाम क

सतकर्मैः प्राप्तव्रतवैद्य सुयोतनव्रतः ॥

ध्यतनाम जुगायज्ञसूत्रं उपवीत ॥ प्राचीनावीतं तु दहिनं लंकि
 कंठविनीतं ॥ ५४ ॥ देवतीर्थ १ प्रजापतितीर्थ १ नाम ॥ दो
 हा ॥ तीर्थं जु अंगुरी क्थोरथित देवं कहा वै सोय ॥ कार्यं तु क्थिग
 नि अनामिका मूल माहि ही होय ॥ ५५ ॥ पितृतीर्थ के ३ ब्रह्म
 तीर्थ के २ नाम ॥ दोहा ॥ पैत्र्य पैत्रं अरु पित्र्यं त्रय अगुठा तज्ज
 नि माहि ॥ अथ अंगुष्ठा मूल मै ब्राह्म ब्राह्म्यं जुग आहि ॥ ५६ ॥ ब्र
 ह्म मै मिलने के ३ देव मै मिलने के ३ नाम ॥ दोहा ॥
 ब्रह्म भूयं ब्रह्म त्वं अरु त्वं त्रय ब्रह्म सायुज्यं ॥ देव भूयं देव त्वं
 पुनि जानि देव सायुज्यं ॥ ५७ ॥ आचार विशेष को १ संन्या
 स विशेष को १ नष्टाग्नि के २ दंभ सैं ध्यानादिकरने
 को १ नाम ॥ दोहा ॥ कृच्छं तु सांतपनादि ही प्रायं तु अनशन
 नेम ॥ वीरहां तु नष्टाग्नि हीं कुहनां सुविधि अप्रेम ॥ ५८ ॥ संस्का
 रहीन के २ वेदाभ्यासरहित के २ बहु रूपिया वा ८
 ग के २ नाम ॥ दोहा ॥ जु संस्कारहीन तु द्वितीय ब्रह्म्यं निग
 कृत सोतु ॥ अस्वाध्यायं हि लिंगं वृत्ति धर्म ध्वजीं द्वि हेतु ॥ ५९ ॥
 ब्रह्म चर्य हीन के २ सूर्यास्त और सूर्योदय मै सोने वाले
 को १ नाम ॥ दोहा ॥ अवकीर्णीं तु क्षतव्रतं हि अभिनिर्मुक्तं
 तु मानु ॥ अस्त होत जिहिं सोवतैं उदित अम्युदित मानु ॥ ६० ॥
 प्रथम कोटो भाई व्याहो गयो ता को १ कैं वारा वडा
 भाई को १ नाम ॥ दोहा ॥ ज्येष्ठ कवारे होय अरु अनुज वि
 वाहित सोय ॥ परिवेत्तां परिवित्ति तो जे ठो भ्रात सु होय ॥ ६१ ॥

विवाहके ५। मैथुनके ६। त्रिवर्गको १। चतुर्वर्गको १। नाम ॥ दोहा ॥ पारिपीडन तु उपयम रु उदाहरु उपयाम ॥ परि
 राय मैथुन तौ विषय ग्राम्य धर्म रत नाम ॥ ६२ ॥ निधुवन छठे अथ
 वाय अथ धर्म अर्थ अरु काम ॥ सो त्रिवर्ग अथ मोक्ष जुत चतुर्वर्ग
 इक नाम ॥ ६३ ॥ धर्मादि सबल होय ताको । वराती । वा । वर
 के समवयन को १। नाम ॥ दोहा ॥ सबल होय धर्मादि तौ च
 तुर्भद्र इक नाम ॥ इलह के प्रिय मित्र सो जन्य कहावत जान ॥
 ६४ ॥ इति ब्रह्मतरंगः समाप्तः

अथ क्षत्रियतरंगः लिख्यते ॥ मूर्द्धाभिषिक्त

वारजपूतके ४। राजाके ॥ नामा दोहा ॥ बाहुज तौ राजन्य
 पुनि क्षत्रिय च वथ विराट् ॥ नृप तौ ह्यमृत् पार्थिव रुभूष
 महीक्षित राट् ॥ १ ॥ महाराज को १। महाराजाधिराजके २
 नाम ॥ दोहा ॥ निकट भूष जिहि वश रहे वहै अथोश्वर हो
 य ॥ सार्वभौम सब भूमि पति रुचक्रवर्ती दोहा ॥ २ ॥ छोटा राज
 को १। राजसूय यज्ञको कर्ता द्वादश मंडल को ६। और
 सब राजन को शिक्षक हो उसको १। नाम ॥ दोहा ॥ मंडले
 श्वर तु आन नृप सम्राट् तु मखकार ॥ राजसूय नृप शिक्षक
 रु बहु मंडल भर्त्ता ॥ ३ ॥ नृप समूह को १। क्षत्रियन का स
 मूह को १। मंत्रीके ३। मंत्री सैं छोटे अन्य मुसाहिबों को १
 नाम ॥ दोहा ॥ नृप गरा राजक क्षत्रिय गरा राजन्य कहिनि
 दान ॥ अमात्य मंत्री धी सचिव कर्म सचिव सब आन ॥ ४ ॥

मुख्यमंत्री के २। पुरोहित के २। न्यायाधीश के ३॥ नाम
 दोहा ॥ महा मान तु प्रधान जुग पुरोहित स्तु पुरोध ॥ प्राङ्गि
 के तो नादवित् अक्षदर्शक ह सोध ॥ ५ ॥ न्नीवदार के ५। ख
 वारे के २। नाम ॥ दोहा ॥ द्वास्थ नु द्वाः स्थित दर्शक रु द्वा
 पाल प्रतिहार ॥ अनीक स्थ तो दूसरौ रक्षि वर्ग निर्धार ॥ ६ ॥
 अधिकारी के २। एक ग्राम के ठेके के दार के २। बहुत ग्रा
 मों के ठेके दार को १। सोने का अधिकारी के २। नाम
 दोहा ॥ अधिकृत तो अधक्ष ही स्यायु के ग्रामाध्यक्ष ॥ गोप
 अधिकृत बहुत को भौरिक कनकाध्यक्ष ॥ ७ ॥ खजान्ची के
 २। खनासाधिकारी के २। खनास का सेवक के ४।
 नादर के २। सेवक के ३। नाम ॥ दोहा ॥ नैष्किक रूपाध्य
 क्ष अथ अंतरवेशिक सत्य ॥ अंतःपुर अधिकृत अथो सो वि
 दल्ल स्थपत्य ॥ ८ ॥ चारिहि सौ विदकं च की शंढ बर्ष वर दो
 य ॥ अनुजीवी तो लेन कर अर्थी तीसर होय ॥ ९ ॥ परोसी रा
 जा को १। उस सैं अन्य को १। दोनों सैं भिन्न को १। नाम
 दोहा ॥ सीवामिलत न्य प्रशत्रु है मित्र तुतिन तै पार ॥ उदासी
 न तिनि तै परे परस्पर हि व्यवहार ॥ १० ॥ अपने राज्य सैं पी
 के का के २। वैरी के १८। नाम ॥ दोहा ॥ पाषाण ग्राह तुष्ट
 धित रिपु तो वैरी जानि ॥ उह द ह्वे परा द्विषत अरि अहित अ
 मित्र पिछानि ॥ ११ ॥ शत्रु वंश तु स मल हिट प्रत्यर्थी अमिछानि
 ॥ पर अरुद स्य विपक्ष पुत्रि परिपक्षी रु अराति ॥ १२ ॥ सनवय

के ३। मित्र के ३। मित्रता के ३। नाम। दोहा ॥ सवय तुस्ति
 गंधवयस्य त्रयसखा तु सुहृद रु मित्र। सखा तु सा प्रदीन अरु मैत्री ता
 न पवित्र ॥ १३ ॥ अनुकूल्य के २। हलकारा के ५। नाम
 दोहा ॥ अनुवर्तनं अनुरोधं अथ प्रणिधिं स्पशं चरचार ॥ य
 धार्हववर्गा अपसर्प पुनि गूढ पुरुष निर्धार ॥ १४ ॥ विष्वासी
 के २। ज्योतिषी के ८। शास्त्री के ३। मोदी के २। नाम। दो
 हा ॥ आप्रसुतौ प्रत्यायित अथ संवत्सर दैवज्ञ ॥ ज्ञानी गराक
 रु ज्योतिषकं कार्तान्तिकं रु द्रतज्ञ ॥ १५ ॥ मौहूर्तिकं मौहूर्त अ
 ठ अथो ज्ञात सिद्धान्त ॥ तांत्रिकं हसत्री सुतौ गृह पति जु तजुग
 शांत ॥ १६ ॥ लेखक के ३। अक्षर के ५। नाम। दोहा ॥ लि
 पिकार तु अक्षर चरां रु अक्षर चंचु वखानि ॥ अक्षर संस्थान
 तु लिखित लिपि लिखिलिपी पिछानि ॥ १७ ॥ दूत के २। दूतपत्र
 के २। पथिक के ५। नाम। दोहा ॥ दूत सुतौ संदेश हर दूत्य
 दूतपत्रं गन्ध ॥ अध्वनी न तौ अध्वगं रु पांथ पथिक अध्वन्य ॥
 १८ ॥ राज्य के अंग के ८। नाम। दोहा ॥ स्वामी सुहृद अमात्य
 वलं राष्ट्र दुर्ग अरु कोष ॥ ये राज्यंग रु प्रकृति दू नाम क हात अ
 दोष ॥ १९ ॥ षड्गुणा ॥ नाम ॥ दोहा ॥ पौरश्रेणी आठ मोहै रा
 ज्यांग सुजान ॥ संधि रु विग्रह आसन रु द्वैध रु आश्रय यान ॥
 २० ॥ प्राक्तियों के ३। नीति प्राश्नोक्ता त्रिवर्ग के १। नाम।
 दोहा ॥ प्रभावज रु उत्साहज रु मंत्रज प्राक्ति विमानि ॥ सय
 स्थान अरु षड्वै कौ नीति त्रिवर्ग वखानि ॥ २१ ॥ प्रभाद के २।

उपायके ४। नाम। दोहा॥ कोशदंड भवतेजसो दोय प्रतापे
 प्रभावे॥ सामे दाने अरु भेदे चव दंड उपाय बताव ॥ २२॥ दंड
 के २। मिलापके २। भेदके २। मंत्री आदिके कार्यकादे
 खवाको १। नाम॥ दोहा॥ दंड तु साहस दम त्रय हिसाम
 तु सात्व उदार॥ भेद सुतौ उपजाय अथ उपधा काम निहार
 २३॥ दोजनों की सलाहको १। एकान्तके ७। नाम। दोहा
 ॥ अषडक्षीरा तु जुगकृतहि विजन विविक्त कहात॥ निश्श
 लाके रुखस पुनि कृत्त उपाशु हिसात ॥ २४॥ एकान्त की बात
 वा। कर्मको १। विश्वास के २। अन्यायको १। नाम। दो
 रह मै भव सुरहस्य इक विस्व भ तु विश्वास॥ यथा उचित तै भं
 ज जो भेध एक ही भास ॥ २५॥ न्यायके ५। न्याय सै जो वस्तु
 ली जावै उसके ५। नाम॥ दोहा॥ देश रूपे अभेध पचकल्य
 समंजस न्याय॥ भजमान तु अभिनीत पुनि म्य औपि यक न्या
 य ॥ २६॥ युक्ताऽयुक्त परीक्षणाके २। हुक्मके ७। नाम
 ॥ दोहा॥ संप्रधारणा समर्थन अववाद तु निर्देश॥ आड
 आसन शिष्टि पुनि सात हि शास्ति निर्देश ॥ २७॥ मर्यादा
 के ४। अपराध। वा। आगसके ३। बांधनेके २। नाम
 दोहा॥ मर्यादा संस्था रु स्थिति च बाधे धारणा नान ॥
 आगमं तु अपराध त्रय बंधन तौ उद्दान ॥ २८॥ दूने दंडको १
 राज भागके ३। जगाति। वा। कौडीको १। नाम॥ दोहा
 ॥ दूना दंड द्विपाद्य कर भाग धेय बलि तीन॥ घट्टादिक भे

देय जो शुल्क एक ही चीन ॥ २८ ॥ नजरिको दी कल्यादान में
 और भाई बन्धु आदिके देने की वस्तु के २ नाम ॥ दोहा ॥
 प्रादेशानंतु उपायन रुउपग्राह्य उपहार ॥ प्राभृत उपदोहरा
 तौ द्वितीय सुदाय प्रकार ॥ ३० ॥ वर्तमान काल को १ आने
 वाला काल को १ तुरंत फल को १ आने वाला फल को १
 नाम ॥ दोहा ॥ तत्काल स्तुत दात्व अथ आयति उत्तर काली
 सां दृष्टिकं तौ सदा फल उदक्क उत्तर काली ३१ ॥ अदृष्ट भय
 शृष्ट भय १ अपने सहायक से भय को १ नाम ॥ दोहा
 बन्धि जलादि अदृष्ट भय स्वपरचक्र जेतु दृष्ट ॥ निज पक्ष
 ज भय न्यपन कौं हो तो अहि भय दृष्ट ॥ ३२ ॥ कानून चला
 ने को १ चंवर के २ राजगद्दी के २ स्वर्ण निर्मित को १
 नाम ॥ दोहा ॥ प्रक्रिया तु अधिकार अथ प्रकीर्णक चामर
 नेम ॥ भद्रासन तु नृपासन हि सिंहासन कृत हेम ॥ ३३ ॥ कु
 तुरी को २ राजा की कुतुरी के २ पूर्ण कलषा के ३ नाम ॥
 दोहा ॥ आतपत्र तौ छत्र जुग न्यपलक्ष्म तु न्यपद्वत्र ॥ भद्र कुं
 भ तौ पूर्ण घट पूर्ण कुंभ द्व अत्र ॥ ३४ ॥ सोनो की भा
 री के २ नाम ॥ दोहा ॥ भंगार कंकन कालुकी कनक प
 वयह जानि ॥ कवि गुलाव भांरी जगत नाहर नाम वरवानि
 ३५ ॥ डेर के २ गस्त के २ सेनांग के ४ नाम ॥ दोहा ॥
 शिविर निवेश हि सज्जन तु पररक्षरा जुग संग ॥ हस्ती हय
 रथ पैदल हये चारितु सेनांग ॥ ३६ ॥ हाथी के १५ पृथ्वी

के २। मंदांध हाथी के २। नाम। दोहा॥ दंतावल गजदि
 रदं द्विपं वारां दंती जानि॥ स्तंवेरमं हस्ती करी इभं ह्मते
 जं मानि॥ ३७॥ पद्मी नाग अनेक पंरु कुंजर॥ यूथ पं सोव
 यूथ नाथ॥ हीमदकल तु कितिया भदोत्कट होतु॥ ३८॥ हाथी
 के बच्चे के १॥ मदश्रवी हाथी के ३॥ विना मद के हाथी
 के २। हाथी के कुंड के २। नाम। दोहा॥ कलभं तु करिणा
 वक॥ हि अथ गार्जितं मत्तं प्रभिन्नं॥ उद्धातं तु निर्मदं हि अप
 हास्तिकं गजतां गन्त॥ ३९॥ हाथिनी के ३। हाथी के गाले
 के २। मद के २। खंड सैनिक लया जल के २। हाथी के पि
 र के मांस पिंड को १। नाम। दोहा॥ चणां तु करिणा धेनु
 कां गंडं तु कटं मददानं॥ करणां करं तो वमथु॥ अथ कुंभं पि
 ङ्ग शिरघान॥ ४०॥ कुंभ मध्य को १। लिलाट को १। नेत्रो
 लक के २। देववा को १। नाम॥ दोहा॥ कुंभन के विच
 र्मिन्दु डका॥ अबग्रहं स्तुलिलार॥ अक्षि कूटं कं तु र्दृषिकां
 विष्वासां स्तु निहार॥ ४१॥ कान की जड को १। लिलाट के
 अधोभाग को १। दोनों के मध्य को १। कंधा को १। नाम
 दोहा॥ कर्ण मूलं तो चूली का वाहित्यं तु कुंभाध॥ प्रतिभा
 नं तु वाहित्यतरा॥ आसनं स्कंधं अवाध॥ ४२॥ बूद समू
 ह को १। वगल को १। आगा के भाग को १। नाम। दोहा॥
 विष्ट जालका तु पञ्चकं हि पाश्र्वभागं तो जोय॥ पक्ष भाग ही
 अथ तो दंत भागं गज जोय॥ ४३॥ जंघादि आगे को १। जंघा

दिपीकेको १ हांकने की लकरी के नाम ॥ दोहा ॥
 जजंघादिक देश को पूर्व भाग तौ गात्र ॥ अवर तु पिछले भा
 गतिहिं तो न तु वेणु की मात्र ॥ ४४ ॥ जंजीर के ३ खूंठ को १
 आंकुस के २ कमरि बांधने की रस्सी के ३ नाम ॥ दो
 हा ॥ निगडं तु अंदकं शृंखलं हिवंधयं भा आलनं ॥ अं
 शप्रदारी अधवस्त्रो चूपा कक्ष्या नान ॥ ४५ ॥ तथ्यार करने के
 २ गद्दी ॥ वा ॥ भूल के ५ लडाई के अयोग्य हाथी के
 रघोडा को १ नाम ॥ दोहा ॥ दोय कल्पना सज्जना परि
 लोभ कुथ चीन ॥ वर्रा प्रवेर्रा आस्तरा वीतं तु गज हय ही
 २ ॥ ४६ ॥ हाथी बांधने के स्थान के ३ घोडा मान के
 १३ कुलीन घोडा के १ नाम ॥ दोहा ॥ वारी तौ गज ब
 धनी गज शाला हू होय ॥ घोटक विस्ति तुं संग हय अर्वा वज्री से
 य ॥ ४७ ॥ सप्रिवाह सैधव तुरग अश्व तुरंग म वाजि ॥ अरु
 गंधर्व कुलीन तौ आजाने यै हि साजि ॥ ४८ ॥ सीखे घो
 डा को १ घोडान के भेद के ४ नाम ॥ दोहा ॥ शिक्षि
 त चाल विनीत अधवाना युज बाल्हीक ॥ पारशीक कां
 वोज ये देश जात दयनीक ॥ ४९ ॥ अश्व मेध यज्ञ यो
 ग्य को १ अधिक वेग वाले को १ लडुवा के २ उ
 जला को १ रथ में चलने वाले को १ नाम ॥ दोहा ॥
 अश्व मेध लायक तु ययुज वन जवाधिक जोय ॥ स्थोरी
 एक्यै हि कर्क सिता रथ्य तुरथ हय होय ॥ ५० ॥ बंकरा को

१ घोड़ी के २ घोड़ी न के समूह को १ घोड़े की एक दिन
 की मंजिल को १ नाम ॥ दोहा ॥ बल किशोर हि जु बडवा
 वामी अम्मी तीन ॥ तिहि गरा वाडव हय मग तु डक दिन को अ
 म्मीन ॥ ५१ ॥ घोड़ा के मध्य भाग को १ हीसने के ३ घो
 डा के गले की संधि को १ घोड़ान के समूह के २ नाम ॥
 दोहा ॥ कश्य तु हय को मध्य वट हेषा द्वेषा चीन ॥ गलो देश तु
 निगल हय गरा तु आम्ब आम्बीन ॥ ५२ ॥ घोड़ों की गतिके
 १ घोड़ा की नाक को १ नाम ॥ दोहा ॥ आत्कंदित घोरि
 त क पुनि रेचित बलित जानि ॥ पुत हू गति ये पांच अथ चोरा
 प्रोथ वरवानि ॥ ५३ ॥ लगाम के २ सुम्भ के २ पूछ के ३
 बाल युक्त पूछ के २ नाम ॥ दोहा ॥ खलीन कविको खुर तु
 शफ पुच्छ लूम लंगूल बाल हस्त तो बाल धि सुके प्र सहित ला
 गूल ॥ ५४ ॥ लोटने के २ लड़ाई के रथ के ३ रथ विप्रोष
 को नाम ॥ दोहा ॥ ज्यादत्त तो लुठित ही रथ तु शतांग सुजा
 न ॥ स्पंदन ये नय जुद्ध रथ पुष्परथ लुरथ आन ॥ ५५ ॥ जना
 ने रथ के ३ गाडा ॥ वा ॥ रुकडा के २ गाड़ी के २ पाल
 की के २ नाम ॥ दोहा ॥ करी रथ प्रवहरा हय न शकट तु
 अन सहि आहि गंत्री कंवालि वा ह्य क हिया प्य याने शिवि को हि
 ॥ ५६ ॥ डोली ॥ वा ॥ हिंडोला के २ वाघ चर्म परदा जुतर
 य को २ रुक सपेद और पीले कंवल के परदा से जुतर
 को १ नाम ॥ दोहा ॥ डोली प्रेख द्वैप भैवैया धि हित चवान ॥

आहत कंवल पांडु सैं पांडु कंवली नाम ॥ ५७ ॥ कंवल युत को
 १ वस्त्र युत को १ रथ समूह के २ धुरी के २ नाम दो
 हा ॥ कंवल आहत कांवल हिवास्त्र तु वसन हिलीन ॥ रथो
 रथ कत्था गराहि धूस्तु यन मुख चीन ॥ ५८ ॥ तांगा ॥ वा
 रथ के अवयव मात्र के २ पहिया के २ पुट्टी के २ नाह
 के नाम ॥ दोहा ॥ अपस्कर स्तुरथांग ही चक्र रथांग पिहा
 नि ॥ नेमि तु प्रधि तिहि अन्त ही ॥ नाभि पिंडिका जानि ॥ ५९ ॥
 कुलावा के २ लोह के परदा के २ जूडा के काठ के २
 नाम ॥ दोहा ॥ जु अष्टाग्र कालक सुअशी वरुथ स्तुरथ गु
 ष्ठी ॥ दूवर सुतौ युगंधर हि दो देखि असुप्ति ॥ ६० ॥ रथ के नीचे
 के काष्ठ को १ जूडा को १ वाहन के ५ नाम ॥ दोहा ॥
 अनुकर्ष तु तरकाष्ठ ही प्रसंग युग अन्य ॥ यान तु वाहन सुग
 पुनि धोरण पत्र हि मन्य ॥ ६१ ॥ काहारा दिवाहनों को १
 भहावत के ४ नाम ॥ दोहा ॥ काहारा दिवैनी तर्क हि ह
 स्तारोह तु जोय ॥ निषादी रुआ धोरण सुचवथ हस्ति पक
 होय ॥ ६२ ॥ रथवान के ८ स्यंदन रोह वा रथ मै चढि
 के लडने वाले को १ नाम ॥ दोहा ॥ क्षत्ता यंत प्राजितो
 क्षरास्थ संवेष्ट ॥ सूत नियंता सारथि हिरथि तुरथ धित दष्ट
 ॥ ६३ ॥ सवार के २ लडने वाले के ३ गस्त वाले के २
 फौज मै मिले के २ नाम ॥ दोहा ॥ सादी अम्बारोह अथ
 भदतो योद्धा योध ॥ सेना रक्षक सेनिक हि सेन्य तु सेनिक शो

॥ ६४ ॥ हजार सिपाही के मालिक के २। इंड नाय
 क के २। फौज के मालिक के २। नाम ॥ दोहा ॥ सहस्री
 तु साहस्री जुग परिचर तौ परिधिस्थ ॥ सेनानी तौ बाहिनी पति
 ही जुग जुग स्व स्या ॥ ६५ ॥ बरखतर के २। कमरि पट्टी के २।
 टोप के ३। नाम ॥ दोहा ॥ बार वारा कंचुक अघोसार सन
 तु अधिकांगी ॥ शीर्ष राय तु शीर्षक अपर तृतीय ॥ प्रिर स्व प्रस
 ग ॥ ६६ ॥ दावच के ७। कंचुक आदि पहिने हुये के ४।
 मंत्रादि सैं कवच धारण किये के ४। कवच समूह को
 नाम ॥ दोहा ॥ वर्म उच्छ्रदक कटक जागर दंशन उक्त ॥ क
 वचंतनुत्रै पिनद्ध तौ असुक्त रु प्रति सुक्त ॥ ६७ ॥ अपिनद्ध ह
 सन्नद्ध तौ वर्मित दंशित रुज्ज ॥ बूढकंकट हिता सुगरा तौ
 का वचिकहि भज्ज ॥ ६८ ॥ पैदल के ७। प्यादान के समूह
 को १। नाम ॥ दोहा ॥ पत्ति तु पदग पदार्तिक रुपदिक रुप
 दं पदाजि ॥ अरु पदाति पादांत तौ पत्ति संघाति ॥ हिं साजि ॥
 ६९ ॥ प्रस्त्रा जीवी के ३। अच्छे तीरन्दाज के ३। नाम ॥
 दोहा ॥ कांड एष्ट तौ आयुधिक अयुधी पंचयशस्त ॥ सु प्रयोग
 विशिखंतु अपरुक्त पुरव रुक्त हस्त ॥ ७० ॥ निशाने सैं ती
 रचू कि जाय उसको १। निधंगी वा ॥ धनुर्धर के ४। ना
 म ॥ दोहा ॥ इक अपराद्ध पृषत्क सोचू को तीर निशान ॥
 धनुष्मान धानुत्क पुनि अस्त्री धन्वी नान ॥ ७१ ॥ केवल वा
 गा धारी के २। बरली वाले के २। लाठी वाले के १। नाम ॥

दोहा॥ कांडवान कांडीर अथ शक्ति हेतिक सुजोय ॥ शाक्ती कह
 याष्टीक तौयष्टि हेतिक हि होय ॥ ७२ ॥ फरसा वाले को १ त
 लवार वाले के २ हांग वाले को १ भाला वाले को १
 हलैत के २ नाम दोहा ॥ पारस्वधिक तु परशुधरा नैरिं
 शिक असिपारि ॥ मासिक कौंतिक एक इक चर्मी तु फलक
 पारि ॥ ७३ ॥ निशान वाला के २ सहायक के ४ अगु
 वा के ८ नाम ॥ दोहा ॥ पताकी तु वैजयंतिक अनुचर सो
 तु सुहाय ॥ अनुसवर अभिसर अथोष्ट पुरोग गताय ॥ ७४
 ॥ अग्रेसर अग्रतः सरसोय पुरस्तर जीय ॥ रूपुरोगामी अग्र
 सर अठ्ठा पुरोगम होय ॥ ७५ ॥ धीरे धीरे चलने वाले के
 २ जल्दी चलने वाले के २ हलकार के २ नाम ॥ दो
 हा ॥ जुमंदगामी मंथर सु अतिजव तौ जंचाल ॥ जांचिक तौ
 जंचा करिक जुग जुग नाम रसाल ॥ ७६ ॥ जल्दी मात्र के ६
 जीतने शक्य को १ जीतने योग्य को १ नाम ॥ दोहा ॥
 वेगी मतवी जवन जव त्वरित तरसीं जेय ॥ जीति शक्य तो ज
 ष्य ही जीति जोग्य तो जेय ॥ ७७ ॥ जीतने वाले के २ शत्रु
 के सन्मुख लडने कौं जाने वाले के ३ नाम ॥ दोहा ॥
 जैव जुजेता ही अथोतीन अभ्यमित्री रा ॥ और अभ्यमि
 य पुनि अभ्यमित्र परवीरा ॥ ७८ ॥ पहलवान के २ कडी
 काती वाले के २ स्थ वाले के ४ यथेष्ट गमन शील के
 २ अति गमन शील को १ जयन शील के ३ वहाडर

के ३। नाम ॥ दोहा ॥ ऊर्जस्वी ऊर्जस्वली हि उरसिल तु उरस्वान्
 रथि करधिन रु रथिर अनुकामी न तु आन ॥ ७८ ॥ कामंगामी जुग
 अथो अत्यन्ती न हि शांत ॥ जेता जित्वरा जिष्णु त्रय शूर वीर वि
 क्रांत ॥ ८० ॥ ररा कुशल को १। फौज के ११। ब्यूह के २। ना
 म ॥ दोहा ॥ सांयुगी न ररा साधु अष्टाष्टतना चमू अनीक ॥
 सेनां ध्वजिनी दाहिनी वल अनी किनी नीक ॥ ८१ ॥ सैन्य सच
 के वरूथिनी ब्यूह तु वल विन्यास ॥ ब्यूह मे दतौ जुद्ध मै दंडा
 दिक् वह मास ॥ ८२ ॥ ब्यूह के पीछे के २। फौज के पीछे के
 ३। नाम ॥ दोहा ॥ ब्यूह पार्ष्णी तौ हसो प्रत्यासार विचारि ॥ से
 न्य पृष्ठ तौ प्रतिग्रह त्रितय परिग्रह धारि ॥ ८३ ॥ फौज की सं
 ज्ञा विशेष के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ इक इम इकरथ अश्व त्रय पै
 दल पंचसु पत्ति ॥ पत्ति तीन सेना सुख हि सो त्रय गुल्म हि ध
 ति ॥ ८४ ॥ गुल्म तीन गरा गरा त्रय तु नाम दाहिनी जानि ॥
 सो त्रिगुणीत एतना यह त्रिगुणीत चमू बखानि ॥ ८५ ॥ तीन
 चमू तु अनी किनी त्रय अनी किनी सोय ॥ दशानी किनी सो त्र
 य तु अक्षौ हि रानी हि होय ॥ ८६ ॥ अथ अक्षौ हि रानी संख्या कृप
 य ॥ गज इक्की सहजार आठ सै सत्तार जानहु ॥ रथ इक्की सह
 जार आठ सै सत्तार मानहु ॥ सै धव पै सठि सहसक सै दश रथ
 हयत जिगानि ॥ पत्ति इक लखनौ सहसतीन सै पंचाश हि अने
 तु गलार अठारह सहस अर होत सात सै जोर लहि ॥ यौं कदि
 गलार अक्षौ हि रानी संख्या भिन्न रु मिलित कह ॥ ८७ ॥ सम्यति

के ४। विपति के ३। हाथियार के ४। धनुष के १। नामा दोहा
 श्रीतौलक्ष्मी संपदंरु सम्पत्तिं हू गनि चारि॥ आपद विपद वि
 पत्तिं अथ आयुध प्रहरण धारि॥ ८७॥ अस्त्र शस्त्र हू धनुष तो
 धन्व शरासन चाप॥ कोदंडं रुद्र ध्वासे पुनिकर्म क सप्तम ध्या
 य॥ ८८॥ राजा कर्ण धनुष को १। अर्जुन के धनुष के २।
 धनुष के किनारे के २। नाम॥ दोहा॥ काल एष धनुर्कर्ण
 को अर्जुन को गांडीव॥ गांडीव हू अटिनी सुतौ कोटि अंत ध
 नुसीव॥ ८९॥ दास्ताना विशेष के २। धन्वा के मध्य को
 १। धनुष के चिल्ला के १। नाम॥ दोहा॥ गोधांतल ज्याघात
 को वारण॥ लस्तक सोतु॥ धनुर्मध्य॥ मौवी तु ज्यांशिं जिनी रु
 गुण होतु॥ ९०॥ धनुद्धर के आसन भेद के ५। नाम॥ दो
 हा॥ समपद अरु वैशाख पुनि मंडल प्रत्यालीढ॥ धनुधारि
 के पगन के धान सहित आलीढ॥ ९१॥ निशाना के ३। वारा
 सीरवने के २। तीर के १३। लोहिया तीर के २। नाम॥ दोहा
 लक्ष्य शर व्यरु लक्ष्य त्रय शर अभ्यासंतु ओप॥ उपासन हू
 वारांतु विशिखं मार्गं रापत्री रोप॥ ९२॥ खग कलं व इषु ए
 षत्करु शरं रु शिली मुखं वाच॥ अशुग और अजिह्म
 हि प्रक्षेडन नाराच॥ ९३॥ फौक के २। चलाये तीर के
 जहरी वारा के ३। तरकस के ९। तरवार के ९। कवज
 को १। नाम दोहा॥ पक्ष बाज जुग चलित शर तौ निरस्त
 डक धीर॥ लिप्त क दिग्ध विषाक्त हौ उपासंग नूरा री॥ ९४॥

तूरां ड्युधिनिपंगं परतूरां हुं असिनुहपाशा ॥ मण्डलांग्र
 मेयकतनट्टिरुखडुसुजारा ८५ ॥ चन्द्रहासकरपालअरुकरवा
 लं हुनवजानि ॥ खड्गादिककी मूँटितो ॥ तरु एकही मानि ॥
 ८६ ॥ परतलाको १ ॥ ढालके ३ ॥ हथकडाको १ ॥ मु
 दगरके ३ ॥ नामा ॥ दोहा ॥ तिहिं बंधन तो मेखली फल
 कन्दर्प फल तीन ॥ तिहिं मुठि संग्राह हि घन तु मुद्गर ड
 परा प्रदीन ॥ ८७ ॥ खोडा के २ ॥ गोफरा के २ ॥ लोहथी
 के २ ॥ फरसा ॥ वा ॥ कुल्हारी के ३ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ इली
 तो करवालिका सिंदियाल स्तग चीन ॥ परिघ तु परिघात
 न परशु स्वधिति परश्वध तीन ॥ ८८ ॥ कुरी के ४ ॥ फल के
 २ ॥ गुर्ज के २ ॥ सांगको १ ॥ भालाको १ ॥ खड्गादिकी नौ
 क के ४ ॥ फौजकी लथारी ॥ वा ॥ जमाव के ३ ॥ नाम ॥ दो
 हा ॥ असि पुत्री असि धेनु का शस्त्री दुरिका भास ॥ शल्प तु
 शकु हि तो मरतु सर्व लोहि अथ प्रास ॥ ८९ ॥ कुंत हु कोरा
 तु पालि अरु अग्रि कोटि मति ओष ॥ जु सर्वा भिसार तु सर्व स
 नहन रुसवै ॥ ९० ॥ शस्त्र पूजन के ॥ शत्रु पर चढाई
 के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ जु लोहा भिसार सुविधा पूजन शस्त्र
 हि जोय ॥ अरि पै सेना गमन सतु अभिषेरा न डर होय ॥
 ९१ ॥ यात्रा के ४ ॥ फौज के फैलाव के २ ॥ चली फौज के
 २ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ प्रस्थान तु यात्रा गमन क्रज्या अभिनि
 यागा ॥ असार तु प्रसरा जु गहि चलित प्रचक्र हि जारा ९२

निडर होकर शत्रुन के समुद्र जाने को १। स्तुति कर
 के प्राप्तः काल राजा के जगाने वालों के २। चरियारों
 के ३। नाम ॥ दोहा ॥ अभय गमन रसा शत्रु पै नाम आति
 क्रम सोय ॥ वैतालिक तो बोध कर चाक्रिक घाटिक होय
 ॥ १०३ ॥ रावा वा ॥ भाट के २। जागा बडवा के २। लडा
 ई सैं जो नही भागै ता को १। नाम ॥ दोहा ॥ वंदी तो स्तु
 ति पाठ कहि मगध तु मागध होय ॥ संशप्तक तो शपथ क
 रि जुध अनि अवर्त्ती होय ॥ १०४ ॥ धूलिके ४। चून के २।
 अकलाने के २। बैजयंती ॥ वा ॥ भंडा के ३। नाम ॥ दो
 हा ॥ रेणु तु धूलि रुपं शु रज चूरा तु सोद हि आहि ॥ समुत्पि
 ज पिंजल ध्वज तु केतन रुपता काहि ॥ १०५ ॥ भयानक
 रण भूमि को १। हम पहिलै लडैगे उस लडाई को १
 नाम ॥ दोहा ॥ वीरा शंसन युद्ध की भूमि जु अति मयदा
 नि ॥ हम पहिलै हम पहिल यौ अहं पूर्विका जानि ॥ १०६ ॥
 हम ही पुरुष है ऐसै कहै उस को १। हम ही लडैगे अ
 सै कहै उस लडाई को १। नाम ॥ दोहा ॥ इक है आहो
 पुरुषिका संभावन जो दर्प ॥ अहंकार जो परस्पर अहम
 हमिका सुथरप ॥ १०७ ॥ पराक्रम के १०। अति पराक्रम
 के २। नाम ॥ दोहा ॥ शक्ति दवरी सह तरस वल शौर्य परा
 क्रम स्थाप ॥ शुष्य प्राण विक्रम सुतो अति शक्ति तीहिनान
 ॥ १०८ ॥ रण के परिश्रम निवारणार्थ न सरवाने पीने को १

लडाई के ३१ बाहु युद्ध के २ नाम ॥ दोहा ॥ वीरपा
मदपान राभूत भविष्यति माहि ॥ युद्धं जयं कथं प्रधन
रां आयोधन कलि आहि ॥ १०८ ॥ प्रविहार रां आस्कंदन
रुविग्रह कलह अनीक ॥ सांपरायिक रुसम रघुध आजि
रुसमिति समीक ॥ ११० ॥ समाधात संस्कोट पुनि संप्रहा
र संग्राम ॥ अभ्यागम अभ्यामर्द सैद्युग आह्व नाम ॥ १११ ॥
सरव्य समित समुदाय अरु सैव्य त अभिसंघात ॥ बाहु युद्ध
तौ नियुद्ध हि दोय नाम विख्यात ॥ ११२ ॥ राव्याकुल ताके
२ वीरों के गर्जने के २ हाथीन की कतार के २ वी
रों के निंदा पूर्वक पुकारने को १ नाम ॥ दोहा ॥ लसल
तुरा संकुल हि अथ सिंह नाद श्वेडी हि ॥ चलतु घटनी कं
दन तु जोधन कोरव आहि ॥ ११३ ॥ हाथीन के गर्जने को
१ धनुष के शब्द को १ जुभाजन गारा के शब्द को
हठ को ३ नाम ॥ दोहा ॥ करि गर्जित तौ छांहेत हि धनुष
शब्द विस्फार ॥ पट हतु आडंबर हठ तु प्रसभ अरु वलात्कार ॥
११४ ॥ धोरवा देने के २ उत्पात के ३ मूर्च्छा के ३ शस्त्र
दिसंपन्न देपा कौ परचक्र सै पीडने के २ नाम ॥ दोहा
सवलित कुल हि उत्पात तौ त्रय उपसर्ग अजन्य ॥ मूर्च्छा क
श्मल मोह अवमर्द तु पीडन गन्य ॥ ११५ ॥ धोरवे सै दवाने के
२ जीत वा फते के २ वैर मिटाने के ३ भागने के ८
नाम ॥ दोहा ॥ जु है अभ्यवस्कंदन सु अभ्यासादन जानि ॥

जयं विजयं हि वैरं शुद्धिं तु प्रतीकारं पहिचानि ॥ ११६ ॥ तृतीयै
 रनिर्यातनं हि विद्वद्वद्वदसदावं ॥ प्रहावरु अपयान अपक्रम
 रुद्रावं लंदावं ॥ ११७ ॥ हारिके २। हारे हृये के २। छिपे ह
 ये के २। नाम ॥ दोहा ॥ पराजयतुरसा भंगता पराभूततौ ज
 नि ॥ पराजितं हि जुगानष्टतौ तिरोहितं हि पहिचानि ॥ ११८ ॥
 मारवे के ३०। मौत के ८। मुर्दा के ७। चिता के ३। विना
 मूडवाले को १। नाम ॥ दोहा ॥ क्षरानं विशारगानि वर्हण
 कथनं प्रमापरा जानि ॥ निर्वीसनं रुपासनं रूपिजनं निषूदन
 मानि ॥ ११९ ॥ निर्ग्रंथनं रुपासनं रुचातं निकारगं सोय
 निक्षर्हणं निहननं पुनिवधं रुपासनं होय ॥ १२० ॥ परि
 वर्जनं रुनिहिंसनं सुभारगं विशरं विचारि ॥ उज्जासनं संज्ञ
 पनं पुनि विशासनं प्रथमनेधारि ॥ १२१ ॥ निर्वापरा प्रतिघा
 तनं रु उद्धासनं उन्माथ ॥ आलंभं हृम्यत्युतुप्रलयं नृपं
 चतं साध्य ॥ १२२ ॥ मरणा अंतं अत्ययं निधनं कालधर्मं दि
 ष्णान्तं ॥ प्रितं प्राप्नोषं च त्वमृतं परासु संस्थितं शान्त ॥ १२३ ॥
 सात परेतं प्रदीतं अथ चित्या चितं रुचितं हि ॥ विनशिरत
 लुजुक्रिया सहित सो कवंधं इक आहि ॥ १२४ ॥ प्रमशा
 न के २। निर्जीव शरीर के २। बंधु बा। वा। कौदी के ३। जे
 लरवाने को १। नाम ॥ दोहा ॥ पितृवनं सुतौ प्रमशानं जु
 गकुरापरं तु शर्वं हि सुजान ॥ वंदि उपग्रहं प्रग्रहं हि कारां वि
 नयान ॥ १२५ ॥ प्रागा के २। प्राणी के २। उग्र

जियाने को १। नाम ॥ दोहा ॥ असुतु प्राण असुधारा
तु जीवहु जीवित काल ॥ सुतौ आयु जीवतु सतु जीवनौ पध
हि चाल ॥ १२६ ॥

इति सप्तविंशतः

अथ वैश्य तरंग लिरव्यते ॥ ४ ॥

वनिया के ४। जीविका के ५। नाम ॥ दोहा ॥ भूमि स्पर्क
ऊरु विट रुज अर्थ हि धृति ॥ आजीवतु वार्ता अपरव
र्त्तम जीवन दृति ॥ १ ॥ वृद्धि भेद के ३। पराधीनी के ३
खेती के २। वजार उठने पर के अन्न वीनने के। रुसि
ला के ३। नाम ॥ दोहा ॥ पाशुपाल्य वारिज्य कृषि भिन्न
वृत्ति त्रय जोय ॥ पशु वृत्ति सेवी अन्त कृषि उच्छु तु शिल मृ
त होय ॥ २ ॥ मृत को १। अमृत को १। वनिय ड के २। क
रुज के २। व्याज के ४। उत्सवादि मै जो भूषणादि मां
ग के ले जाय उस को १। नाम ॥ दोहा ॥ मृत जु वस्तु मां
मिले अभ्रत अमार्गे जानि वारिज कमाव सत्यान्तर हि पर्युदचन
तु मानि ॥ ३ ॥ मृता हू अर्थ प्रयोग तौ वृद्धि जीविका जोय ॥
चव उद्धार कुसीद अथ याचित क सुडक होय ॥ ४ ॥ वादे से
वा। बदले सै मिले उस को १। बौहरा को १। कर्जदार
को १। नाम ॥ दोहा ॥ मिले वस्तु जो नियम सै आप मिल्य कहि
आहि ॥ उत्तमरा वध्या दापवा हि अधमरा तु कुरावहि ॥ ५ ॥
राज डिया के ४। किसान के ४। नाम ॥ दोहा ॥

कुशीदिके तु बार्दुषिकं च व. बार्दुषिं वृद्धाजीव ॥ कृषी वलतु
 कर्षकं कृषिकं चतुर्थं क्षेत्राजीव ॥ ६॥ ब्रीहि होने वाले
 को १ धान होने वाले को १ जव होने वाले को १ के
 टे जो होने वाले को १ नाम दोहा ॥ ब्रीहि उपज ब्रेहे
 यं डक प्रालि उपज प्रालेय ॥ यव्यं यवकं रुषाष्टकं सु
 उपजय वादिक ज्ञेय ॥ ७॥ तिल २ उडद २ अल
 सी २ भांग २ होने वाले । नाम ॥ दोहा ॥
 तिल्यं और तैलीनं जुगमाष्यं दोयमाषीनं ॥ उम्यं सुतो
 ओमीनं जुगभंग्यं जुगलभांगीनं ॥ ८॥ अणु के २ कोट
 १ मूंग १ गोहू १ चरा १ क्यवर
 १ होने वाले का नाम ॥ दोहा ॥ आणवीने तौ अणव्यहि
 कौ बीरा मौहीनं ॥ गोधूमीनं रुचाणा कीं अरु हे कालायीनं ॥
 काकुनि १ कुरथी २ होने वाले का नाम ॥ दोहा ॥ पि
 षंगयानं सु और हू कौलत्थीनं बखानि ॥ भिन्न भिन्न करि देत ये
 इत्यादिक पहिचान ॥ ९॥ वोकर जुते खेत १ वा ॥ हांकनी
 करने के २ जुते खेत के ३ तीन बाह जुते खेत के ४ ना
 म ॥ दोहा ॥ उपकृष्ट वीजाकृतं हि सीत्य तु कृष्टं रुहल्य विग
 णाकृतं रुह्य तीयकृतं चारि त्रि सीत्य विहल्य ॥ १०॥ दोवाह जु
 ते खेत के ५ नाम ॥ दोहा ॥ द्विगुणाकृतं तु द्विहल्य गुनि द्वि
 तियाकृतं सृषिहल्य ॥ पुनि द्वि सीत्यं शंवा कृतं हृषां च नाम उर
 आनि ॥ ११॥ दोरा भर जिस्मै वोया जाय और आढक आ

दिजित्तै बोयाजाय उसके भिन्न भिन्न ५। नाम ॥ दोहा
 द्रोणिक प्रास्थिक आढकिक की डविक रवारीक ॥ ये द्रोणादि
 क वीज मित बोये खेत हिनीक ॥ १३ ॥ खेत के ३। खेत गरा के
 ४। नाम ॥ दोहा ॥ वम्र क्षेत्र के दार त्रय खेत गरा तु के दार्य ॥
 केदारक केदारिक रुक्षेत्र चार ही आर्य ॥ १४ ॥ ठेला वा। डग
 ल के २। मोगरी वा। मैज के २। पैसी वा। चावुक के ३।
 कुदारी वा। कशी के २। नाम ॥ दोहा ॥ लोष्ट लेष्ट ही को
 टिश तु लोष्ट भेदन हि मित्र ॥ प्राजन तो दन तो च त्रय अवदा
 रा तु खनित्र ॥ १५ ॥ हसिया वा। दोंतली के २। चडायल
 वा। जीत के ३। फाल के ५। नाम ॥ दोहा ॥ दान ल विव्र हि
 यो न तो यो ज्ञ तृतीय आवंध ॥ फल तु निरीष रुकूटक रुफाल
 रुक्षपिक प्रबंध ॥ १६ ॥ हल के ३। संवल वा। सैला के २। ह
 रिश को १। नाम ॥ दोहा ॥ लांगल हल गोदार सांसी हि
 जम्बां गंतु ॥ युग कीलक ईषा सुतौ लांगल दंड हि होतु ॥ १७ ॥
 रशिहारी के २। मेढी के २। साठी के १। वा। धान्य मान के
 ३। जे के २। नाम ॥ दोहा ॥ शीतां लांगल पद्धति हि खले दा
 लती मेधि ॥ आपुत्री हि पारल यव तु शित शूक हि मति राधि
 ॥ १८ ॥ हस्याजी के २। यटर के ४। कीटू के २। नाम ॥ दो
 हा ॥ नोक मं हरित यव कलाय तु हरे सांखंडिक जानि ॥ सतीन
 कंड को द्रव सुतौ ॥ कोर दूष पहिचानि ॥ १९ ॥ मसूर के २। मो
 ठा वा। वन मूंग के ३। सरस्यों की धोली सरस्यों को १

गोहूँके २। कुरथीके २। नाम ॥ दोहा ॥ मंगल्यकं तुमसूही
 म पुष्टकं तु त्रय जोय ॥ मपष्टकरु वनमुद्र अथ सर्षपं तंतुम
 होय ॥ २० ॥ कदंबकं हसिद्वार्थं तौ सरस्यौ सेतहि भाष ॥ गोधू
 मंतु सुमनै हि जुगलयावकं तौ कुल्माष ॥ २१ ॥ चरा ॥ के २।
 वांभतिलके ३। राईके ४। ककुनीके १। वा। दांगुनिके २।
 अलसीके ३। भांगको १। नाम दोहा ॥ चराकं तु हरिमंथ
 कं अथोनिष्कं तिल तिलपेज ॥ तिलपिंज ह अथ राजिका सु
 धामिजनन सतेज ॥ २२ ॥ श्वरु कृष्मिकां असुरी कंगुप्रियं
 गुं हि देय ॥ सुमां उमां अत्सीं हि इकं तु मातुलानीं होय ॥ २३ ॥
 सांवाको १। टूंडावा। अन्नकीडाडीको १। वालिके २।
 सामान्यधान्यके २। नाम ॥ दोहा ॥ ब्रीहिभेद अणुं श
 स्य को श्रव सुतो किं शाह ॥ शस्यमंजरी करिणी अथ ब्रीहि
 स्तं वकीरं चारु ॥ २४ ॥ गुच्छा। वा। मोरको १। नालके ३।
 प्यार। वा। पूराको १। भुसके २। नाम ॥ दोहा ॥ स्तंदकं गु
 च्छत्तरादिको कांडं तु नाडी नाल ॥ निष्फल गृही पलालं अ
 थ वुसंरु कडंगरं चाल ॥ २५ ॥ भूसी। वा। वूरको १। टूंडके।
 वा। सीकुरको १। क्षीमीके २। डेरके २। नाम ॥ दोहा ॥
 दुषतु धान्यत्वचं शूकं तौ अग्रजुचिकरातीष ॥ शमी तु सिंवा
 ऋद्धतौ धान्य आवसितं दीष ॥ २६ ॥ वरसाई हई साफ
 राशिके २। क्षीमीवालेके। वालिवालेके। जडहनआ
 दिधान्यके। नाम ॥ दोहा ॥ पूतंतु वहलीकृतं अथोशमी

धान्यमाषादि॥ प्रकृद्धान्यतौ यवादिहि शालि सुतौ कलमा
 दि॥ २९॥ तिन्नी वा मुनि अन्न के २। स्येह वा के २। मू
 सल के २। ओखली के २। नाम॥ दोहा॥ नीवार तु त्पराध
 न्य अघ गवेधु गवेधुका हि॥ मुसल अयोग्य उदूखल तु उत्तूख
 ल हि जुग आहि॥ २९॥ सूप। वा। कज के २। चलनी के २।
 पैली। वा। बेरा के २। चौलडा के। वा। खाबडा के २। नाम
 दोहा॥ प्रसूत प्रसूत न तित सुतौ। चालनी मानि स्यूत
 प्रसेव हि पिद सुतौ। कंडोल हि पहिचानि॥ २९॥ चटाई के
 रसोई के ३। रसोई पति को १। नाम॥ दोहा॥ कट तु कि
 लिंग के रसवती सोतौ। पाक स्थान॥ महान सह पौरोगव तुता
 को मालिक नान॥ ३०॥ रसोई दार के ७। नाम॥ दोहा॥ सूप
 कार आसालिक रुसूद औ दनिक जानि॥ आंधसिक रुवल्लद
 गुहा सुपा कहि कर्त्ता मानि॥ ३१॥ पूवा आदि बनाने वाले
 के ३। चूल्हा के ५। नाम॥ दोहा॥ भक्ष्यकार आपूपिक रुका
 दनिक हि उद्धान॥ अधिप्रयगी अश्रमंत पंच चुल्लि अंतिका ना
 म॥ ३२॥ अंगीठी के ४। अंगार को १। लुकाठ के २। नाम
 दोहा॥ हसिनी अंगार धानिका अंगार शकरी तात॥ हंसी
 रु अंगार इक उत्सुक सुतौ अलात॥ ३३॥ खपरी के २। भट्टी
 वा। मार के। वा। कराही के २। मॉट के २। करवा। वा। ग
 रुवा के ३। नाम। दोहा॥ अंवरीष तौ भ्राष्ट्र अघ कंडु स्वेदनी
 आदि॥ मशिक अलिजर कर्करी तु आलुगलानिका हि॥ ३४॥ बट

लोही के ४। घडा के ४। तवा के २। सरावा। वा। ठकना
 के २। नाम॥ दोहा॥ पिठर कुंड स्थाली उखी घट कुट कलश
 रिपाव॥ पिष्ट पचने तु ऋजीप अथ कर्द्धमानक साराव ३५॥
 कटोरा के २। कुप्पा के २। कुप्पी के २। वर्तन मात्र के ४।
 कर्कुली के ३। डौवा के २। साग के ३। नाम॥ दोहा॥ पान
 भाजन तु कंस अथ कुतू सीध डो अत्र॥ कुतूप सीध डी भाजन
 तु मांडरु पान अमत्र॥ ३६॥ आवपन हकं बि तु दर्वि रक्जा
 कौ ह नय ताक॥ तर्हू तु दारु हस्तक हि शीयु तु हरित केशा
 की॥ ३७॥ शाक के दंड के २। मसाला के २। चुक के ३।
 नाम॥ दोहा॥ दंड कलंव कडं वै तिहिं उपस्कर तु अति शु
 क॥ वेसवार वृक्षान्त तो तिंति डी क नय चुक॥ ३८॥ मरिच
 के ६। जीरा के ४। नाम॥ दोहा॥ धर्म पत्तन तु कोलकर
 ऊषरा हृष्म मरीच॥ विल्लन जरणा तु अजाजी जीरक करा
 अपीच॥ ३९॥ काला जीरा के ६। अदरक के २। नाम॥
 दोहा॥ पृथु काल उपकुचिका एष्ट्वी सुखवी सोय॥ कार
 वी ह आर्द्रक सुतौ शृंग वेर जुग जोय॥ ४०॥ धानियों के ४
 सौंठि के ४। नाम॥ दोहा॥ वितुन्नक तु कुस्तु वुरु रुक्ता
 चवा धान्याक॥ नागरं विष्वं म हौ पध रुविग्ध मे पज हिताक
 ॥ ४१॥ काजी के १। नाम॥ दोहा॥ कुंजल कुल्माषाभि
 धुत धान्य ग्ल रु सौ वीर॥ आरनालक रु कांजिक सु अं वनि
 सोय ह धीर॥ ४२॥ हींग के १। हींग वृक्ष की पाती के ४। नाम

दोहा॥ वाल्हीकतु.रामटंजतुकसहस्रवेधिरुहिंगु॥ पृथ्वी
 कवरीवाधिकाकारवी॥ हृदलहिंगु॥ ४३॥ हरदीके १। समुद्र
 फेनके ३। नाम॥ दोहा॥ निशाह्रातु.वरवारीनीकांचनी
 सुपीतांरु॥ हरिद्वीहिअसौवतौ.वशिरंसमुद्रजेचारु॥ ४४॥
 सैधवके ४। सौभरिके २। खारीके ३। नाम॥ दोहा॥
 सैधवसिंधुजशितशिवरुमाशिमंथचत्वारि॥ रोमकवसु
 कीहिपाक्यंतौविडरु.कृतकीत्रयधारि॥ ४५॥ सौंचरके ३।
 कालानौनको १। राव।वा।खंडके २। पक्कीचीनी।वा।
 मिश्रीके २। नाम॥ दोहा॥ असतुसौवर्चलरुचकीति.
 लकीतुअसितपिछानि॥ मत्स्यंडीफारितैजुगलसितांशके
 रोमानि॥ ४६॥ दहीदूधमिलापदार्थके २। सिरवरानि
 ।वा।चटनीके २। कढीके २। शूलपरभुनेमांसके ३।
 वहुवामैपकेके २। रासिआबके २। घृतसैवनीवस्तु
 पूरीआदिके २। नाम॥ दोहा॥ क्षीरबिहतिंतौ.कूर्चिका
 रसालामार्जितहि॥ निष्ठानतुतेमनैजुगलशूलाकृततौअ
 हि॥ ४७॥ शूल्यभट्टिहिपैठरंतुकरवीहिउपसंपन्न॥ तौप्र
 रातिहीभयस्तंतुसंस्कारहिअच्छन्न॥ ४८॥ पानिहाव्य
 जनके २। बीनाअन्नके २। चिकनाके ३। कौंकाके २।
 नाम॥ दोहा॥ पिच्छिलविजिलहिशोचिततुसम्पष्टहि
 जुगजोय॥ मत्स्यातुचिकरास्निग्धहीभावितवासितदोष
 प्रमरा।वा।हाबुसक ३। चांदरको १। लावाको १

च्यवहा के २। धानी। वा। बाहरी को १। वरा। वा। पूवा
 को ३। दही साना सन्तू के २। भात के ६। नाम॥ दोहा॥
 आपदा तु अभ्युष त्रय मौलि हि अक्षत लाज॥ चिपिटका
 पृथुक हि जो मुने धाना प्रप तु साज॥ ५०॥ अपूप पिष्टक कं
 तु दधिसक्त हि जुग उक्त॥ भिस्सा ओदन अन्न वट दी दिवि अ
 धसंभक्त॥ ५१॥ जला अन्न। वा। भात के २। माँड को १।
 भात माँड के ३। नाम॥ दोहा॥ दोय भिस्सा टां दधि का
 मंड अग्रस अन्न॥ आचाम तु निस्साव अरु भासर ह त्रय गन्
 ॥ ५२॥ तपसी के ५। गोसै उत्पन्न होय ता को १। गोवर
 के। नाम॥ दोहा॥ तरला आणा उषा को पाँच। यवा गू सो
 य॥ विलेपी हु गव्य तु डकहि गोविट गोमय दोय॥ ५३॥ उ
 पला को। वा। क्षारा को १ दूध के ३। घी आदि को १।
 पतला दही को नाम॥ दोहा॥ सूको यही करीष अथ दुग्ध
 तु पय सरु हारि॥ घृत दध्यादि पयस्य अथ द्रव्य डील दधि घ
 ॥ ५४॥ घृत के ४। लूणा के २। तुरत कालूया के २।
 नाम॥ दोहा॥ आज्य तु सर्पिष घृत हविष नवोद्धत तु नव
 तै॥ सो गो दो होद्व घृत तु है यंगवीन मीत॥ ५५॥ *
 * * * * माठा मात्र के ४। माठा भेद के ३। नाम॥ दोहा
 कालशय दंडा हते रु अरिष्ट गोरस चारि॥ तत्र उदायित मधि
 तै ये चोथ जद्व विनवारि॥ ५६॥ दही के जल को १। पीप
 ष को १। भूख के ३। आस के २। नाम॥ दोहा॥

मंडरुमस्तु इक पीपूषं तु नवहीरा ॥ सुदे अशनाया बुधसाय
 संतुकवत्तं हि धीर ॥ ५७ ॥ साथ पीने के २ साथ खाने के २
 प्यास के ४ भोजन के ७ अघाने के ७ जूँवा के १ नाम
 दोहा ॥ तुल्यपानं तु सपीति ॥ ही सह भोजनं तो सखि ॥ तत्र
 पिपासा उदय्या तट ॥ अथ भोजनं जखि ॥ ५८ ॥ जेमन आहार
 रुनिघसलेप रुन्याद वखानि ॥ सो हित्य तु तपीरा तपि फेल
 ओं ठहि जानि ॥ ५९ ॥ चाह के ५ अहीर के ५ नाम ॥ दोहा
 पर्याप्रेष्ट यथेप्सित रु कामनिकाम प्रकाम ॥ बल्लव गोप अ
 हीर गो संख्य रु गोधुक् नाम ॥ ६० ॥ चौपाये को १ गाय के
 मालिक के ३ गो सम्यन्धि समूह के २ नाम ॥ दोहा
 पादबंधनं तु गवादि हि गवीं चरं तु गोमानं ॥ गोमीं तीन गव
 व्रजं तु गोदुल गोधनं नान ॥ ६१ ॥ जहाँ पहिले गायों ने
 खाया उसको बैल के ८ बैल समूह को १ गायों के म
 डके २ नाम ॥ दोहा ॥ पूरव चरती गो जहाँ सो आशितंग दीन
 ॥ वलीवर्द्धं वृषभं रु वृषभं उक्षा भद्र प्रवीन ॥ ६२ ॥ अनड्ड
 न सौरभेय रु वृष अरु गौ नव होय ॥ वृष गगा ओक्षक गो गगा
 तु गव्यां गोत्रा दोय ॥ ६३ ॥ वरुडों समूह को १ धेनुओं के
 समूह को १ वडा बैल के २ वडा बैल के २ कलोर को १
 नाम ॥ दोहा ॥ वात्सक धेनुक निज गगा हि महा वृषस्तु म
 हाक्ष ॥ नरदवंत वृद्धोक्ष सो उत्पन्न तु जातोक्ष ॥ ६४ ॥ नया
 के २ वरुवामात्र के २ नाद के २ बाधिया क

रने लायक को १। नाम ॥ दोहा ॥ सद्य जात तौ तरांक हि व
 लें घाहत करे सभ्य ॥ दम्य वत्सवर पंडता योग्य सुतौ आर्षभ्य
 ॥ ६३ ॥ सोड के ३। कांध को १। गल के वरी के २। नधुवा वै
 ल के २। नाम ॥ दोहा ॥ पंडतु गोपति इद चर हि स्कंध दे
 श। वह होत ॥ सास्ना गल कं वल अथोन सित जुगन स्योत ॥
 ६४ ॥ चसीटा के २। जोलने योग्य वैल के २। नाम ॥ दोहा ॥
 एह वाह युग प्रार्थ्य गं हि अथ प्रा सं ग्य वखानि ॥ प्राकट धुग्य हि वै
 ल नय भिन्न वाह के जानि ॥ ६५ ॥ हल में चलने वाले के २। जो
 तू वैल के ५। नाम ॥ दोहा ॥ खनति रुपा को वहत ते हालिक
 सैरि को जेय ॥ धुर्य धुरी रां रु धूर्व ह सु धुरंधर रु धीरे व ॥ ६६ ॥ ए
 क धुर के वहने वाले के ३। सब भार में चले उसके २। ना
 म ॥ दोहा ॥ एक धुरी रां तु एक धुर एक धुरा वह जानि ॥ सर्व
 धुरा वह तौ द्वितीय सर्व धुरी रां वखानि ॥ ६७ ॥ गाय के ८। नाम
 दोहा ॥ माहे यीं गौं शंभिरां उसा मातां आहि ॥ रु सौर मेयीं
 अर्जुनी रोहिरां रु अघ्रां हि ॥ ७० ॥ उत्तमा गाय को १। गाय
 विशेष के ५। नाम ॥ दोहा ॥ उत्तमा तु है नैचिकी भावली ध
 वली जोवा ॥ कृष्ण कापिल पाटली पांचरंग करि होय ॥ ७१ ॥
 एक वर्ष। दो वर्ष। चारि वर्ष। तीन वर्ष की गाय के ये के
 क। नाम ॥ दोहा ॥ एक हायनी वर्ष की द्विहायनी दो साल ॥
 चतुहायनी चारि की त्रिहायनी त्रय साल ॥ ७२ ॥ वाम ग
 य के २। अकस्मात्पतित गर्भ के २। गर्भिरां के २।

वृषके उपगमन सैयति त गर्भा को १। नाम ॥ दोहा ॥
 वशांतु दंघ्या अथ स्रव दगर्भा अवतो काहि ॥ वृष संग मातु संधि
 नी वैहत गर्भ गिराहि ॥ ७३ ॥ उचित समय बैल के पारुज
 ने वाली के २। प्रथम गामिनि के २। सीधी गाय के २। न
 म ॥ दोहा ॥ काल्या उपसर्ग जुगल दाल गर्भिणी सोतु ॥ प्रसोही
 सुकरा सुतौ द्वितीय अचंडी होतु ॥ ७४ ॥ बहुत वेत विधानी के
 २। व के निगाय के २। तुर्त की ब्याई के २। नाम ॥ दोहा
 बहु सति स्तु परेष्टु का वष्क यणी तौ जानि ॥ निरस्त नवस्तति
 का होतौ धेनु पिछानि ॥ ७५ ॥ दुहने मै सुशीला के २। भो
 देयन वाली के २। दश सेर दूध की के २। गहने धरी को
 वर्ष व्यावनी को १। नाम ॥ दोहा ॥ सुख संदोहो सुप्रता पीव
 रस्तनी तु जोय ॥ पीनो ध्नी गुरुयनी अथ दोरा क्षीर होय ॥ ७६ ॥
 सुप्रोरा दुग्धा अथ धरी गहने धेनुषा हि ॥ वर्ष व्यावनी गायते
 नमो सर्मीनी आहि ॥ ७७ ॥ धन के २। खंदा के २। रस्ती के
 २। बहुत गांठि सुत पशु बांधने की रस्ती के १। नाम ॥ दो
 हा ॥ ऊधस आफीन हि शिव क कील क अथ संदान ॥ द्विती
 य दाम पशु रज्जु तो द्वितीय दामनी नाम ॥ ७८ ॥ रडू के ४। र
 डू बांधने के रंभ के २। नथानी ॥ वा ॥ महेडा के २। ऊँट
 के ४। ऊँट के पचा को १। छोटे बच्चे काठ में बाँधे उस
 को १। नाम ॥ दोहा ॥ मंथ दंड क लयंथ पनि वैशख रम
 पान ॥ कुटर दंड विजय जुग अथ मंथनी सुजान ॥ ७९ ॥ गर्भ

रीं हउ प्रंतु जय रु. क्रमेलकं रुसु महांग ॥ शिशु तु कर्म पगबंध
 जुत सो. प्रखलकं प्रसंग ॥ ८० ॥ वकरी के २। वकरा के ५।
 भेडवा। गाडर के ७। ऊंटा। भेडा। वकरा। इनके समूह
 के ३। नाम ॥ दोहा ॥ अजातु छागीं ॥ हगलकं तु अजशुभ
 वस्तु रु. छागीं ॥ मेढू दृष्टि। एडक उररा। अरु. ऊरगीयु सभाग ८
 मेव उरभं हि औष्टकं तु औरभकं अरु जानि ॥ आजकं हूयेतीन
 तो तिनके गन मै मानि ॥ ८२ ॥ गदहा के ५। क्रय विक्रयौ
 सौं वर्तमान साहूकार। वा। व्यवहरिया के ८। व्योपारी
 वा। बेचने वाले के २। नाम ॥ दोहा ॥ गर्दभ चक्रीवान ख
 रस सभ पचवालेय ॥ सार्थ बाह वै देहकं रु नैगम वारिज ज्ञेय
 ॥ ८३ ॥ पाया जीवरु. वारिकं पुनि क्रय विक्रयिकं विचारि ॥
 आपरिकं हू विक्रयिकं तौ। विक्रेतौ जुगधारि ॥ ८४ ॥ लेने वा
 ले के २। वनियापन के २। मोल के ३। मूलधन के ३
 व्याज। वा। नफा के २। अदलावदली। वा। लेन देन के
 ४। नाम ॥ दोहा ॥ कायकं क्रयिकं हि वारिज ॥ तौ वारिज
 बिचारि ॥ मूल्य तु वस्तु अवक्रयै हि नीवी परिपरा धारि ॥ ८५
 मूलधन हि अथ अधिक फल लाभ कहावत नान ॥ परीवर्त
 नै मेय पुनि निमय चारि परिदान ॥ ८६ ॥ निक्षेप। वा। धरो
 हर के २। फेर देने की १। बेचने की १। फैलाई की १। बेचने
 योग्य के २। नाम ॥ दोहा ॥ उपनिधि न्यास हि फेरनो तौ
 प्रतिदान हि ज्ञेय ॥ क्रय तु बेचन हित धरी केतव्य तु है केय ॥ ८७

विक्रेयक्रियाकर्मके ३। साईंके ३। विक्रेयक्रियाके २।
 नाम ॥ दोहा ॥ विक्रेयतु परिगतव्यत्रय परमैह सत्यंकार ॥ सत्य
 कृति सत्यापनं हि विप्रा विक्रेयं हि चार ॥ ८८ ॥ तोल ॥ वान
 पके ४। तोल भेदके ३। नाम ॥ दोहा ॥ मान पाव्य चौतव
 द्रव्यं मेदतु तुला वरवानि ॥ अंगुलिं प्रस्थहि तीन करिभिन्न
 भिन्न पहिचानि ॥ ८९ ॥ तुलामान ॥ दोहा ॥ आधमाषक
 तु गुंज पच ॥ सोलह मासा सोतु ॥ अक्ष कर्ष तोला विदित च
 तोल ॥ पल होतु ॥ ९० ॥ अक्ष कनक को ॥ सुवर्ण रुविस्त सुमुह
 जिहान ॥ कुरुविस्त तु पल कनक को ॥ सो पल तुला सुजान ॥
 ९१ ॥ बीस तुला को ॥ भार है आचिंत तौ दश भार ॥ आचिंत शा
 कट भार है कार्षा प्रसा तु उदार ॥ ९२ ॥ कार्षिक रुपये विदित
 जग सोता मा को ॥ होया ॥ तौ प्रसा पै सो ॥ जगत मै तुलामान इति
 जोय ॥ ९३ ॥ आढकादि ४ के ॥ मूठी भर को १। पाव भर
 को १। सेर भर को १। नाम ॥ दोहा ॥ आढक इक इक दो
 रा ॥ पुनि खारी वाह वरवानि ॥ अथो नि कुंच के कुडवे पुनि प्रस्थ
 आदि पहिचानि ॥ ९४ ॥ चौपाई को १। बौद के ३। धन के
 १३। चाँदी सोना दोनों के २। नाम ॥ दोहा ॥ पाद तु चौ
 यो भाग ॥ है अंश तु बंदक भाग ॥ रिकथं चरक्य धन वित्त वसु
 भरु स्वापेय सयाग ॥ ९५ ॥ द्रव्य हिराय रु रै द्रविण विभव
 धन अरु अर्थ ॥ हेम रूप कृत अकृत मै कोश ॥ हिराय समर्थ
 ॥ ९६ ॥ ताम्रादि द्रव्य को १। तामा रूपा के मेल को १।

मरकत मारोके ३। नाम ॥ दोहा ॥ तिनतैं अन्यत कुप्यंड
 करूपं तु जुग मिलि होय ॥ अश्म गर्य गारुत्मतरु ॥ हरिन्म
 शि ॥ हि जिय जोय ॥ ८७ ॥ पद्म राग ॥ वा मारोके ३। मे
 लीके २। मृगाके २। नाम ॥ दोहा ॥ शोराख लोहितक
 त्रय पद्म राग मुक्तातु ॥ मौक्तिक जुग विह्वल सुतौ ॥ द्वितीय प्रवा
 ल कहतु ॥ ८८ ॥ पद्म रागादि और मोती आदि रत्न मा
 नके २। सोनाके १८। सोनाके गहनाको १। नाम दो
 हा ॥ अश्म जाति मरुत मशि मुक्तादि ह्वल कोय ॥ शात कुंभ
 हाटक कनक जातरूप तपनीय ॥ ८९ ॥ कदुर रुक्म महा रजत
 मर्म हिरण्य रुक्म रणी ॥ कार्तस्व रजो वून द रुका च न हेम सुव
 रणी ॥ ९० ॥ चामी कर गंगे य पुनि अष्टा पद उनईस ॥ अलंकार
 जो कनक को प्रदंगी कनक हि दोस ॥ ९१ ॥ चोदी के ७। पीतर
 के २। नाम ॥ दोहा ॥ स्वेतरूप दुर्वर्ग पुनि तार स्जत खजूर
 कल धौत हु अथरीति सो आरकूट मसहर ॥ ९२ ॥ तामा
 के ही लोहाके ७। लोह मेल वा ॥ कीटके ॥ सब धा
 तुको १। फल को १। नाम ॥ दोहा ॥ ताम्रक शुल्ब रुस्ले
 च्छ मुख द्विष्ट उदुवर सोय ॥ पट वारेष्ट लोह तु अयस प्रासक
 तीक्ष्ण सुहोय ॥ ९३ ॥ अश्म सार काल्मय सरु पिंड हु अय मंडू
 र ॥ हि हारा हु सब धातु तो लोह कुशी तुमसूर ॥ ९४ ॥ काच
 के २। पाराके ४। भैंस के सींगको १। अवरख को नाम
 दोहा ॥ क्षार काच चपल तु सरु पारद सूत प्रवीन ॥ भैंसि सींग गव

लहिअमलअभ्रकगिरिजहतीन॥१०५॥सुरमाके४।तु
 तियाके५।रसोत।वा।रसांजनको४।नाम॥दोहा
 कापोतांजनयामुनरुस्रोतोंजनसौवीर॥शिखिग्रीवतुत्या
 जनरुओरवितुन्नकंधीर॥१०६॥पांचमयूरकंकर्परीताक्ष्य
 शैलतौमानि॥तुत्यरसगर्भदार्विकाकाथोद्वपहिचानि॥
 १०७॥गंधकके३।कालासुरमाके३।अंजनविशेष
 के४।हरितालके।नाम॥दोहा॥गंधाश्यासौगंधिक
 रुगंधकचक्षुष्यातुसुकुलालीरुकुलत्पिकाकुसुमांजनतुक
 हातु१०८॥पीतिपुष्पचौष्पकचवथपुष्पकेतुअथताल॥ह
 रितालकपुनिपीतनरुपिंजरपंचमआल॥१०९॥शिला
 जितके५।गंधरसके५।नाम॥दोहा॥शिलाजतुतुअ
 श्मजसुपंचगिरिजार्थगैरेय॥बोलगंधरसप्राणापचपि
 डंगोपरसंज्ञेय॥११०॥समुद्रफेनके३।सिंदूरके२।सी
 साके४।रांगके४।हृदके२।कुसुमके३।नाम॥दोहा
 अधिकफतुहिंडीरत्रयफेनहुअथसिंदूर॥नागसंभवहिना
 गतौसीसकवप्रमसर॥१११॥योगेष्टहपिच्छतुनपुंरंगवंगपि
 चुंवूल॥कमलोत्तरतौवन्दिशिवमहासजतविकवूल॥११२॥
 केवलके२।खगोसके।रोमवस्त्रके२।सहतके३।मो
 मके२।नाम॥दोहा॥मेषकंकलतुदूसरोऊर्गायुहिशश
 लोभ॥शशोर्गाभाक्षिकसौद्रमधुमधुच्छिष्टतौमोम॥११३॥
 के४।नैपालीमैनशिरके३।नाम॥दोहा॥

नाग जिहिका मनोह्रां रु मनोगुप्ता आहि ॥ मनः शिली कुनटी
 सुतो नेपाली गोला हि ॥ ११४ ॥ जवरवार के ३। सज्जी के ३।
 नाम ॥ दोहा ॥ यवाग्रज तु यवक्षार त्रय पाक्य हि अथ कापित
 ॥ और सर्जिका क्षार त्रय सुख वर्चक जुत होत ॥ ११५ ॥ सौंचर
 के २। वंशलोचन के २। श्वेत मरिच शोभंजन के २।
 नाम ॥ दोहा ॥ रुचक तु सौवर्चल जुगल वंशरोचना सोतु ॥
 त्वक्षीर ही शिगुज तु श्वेत मरिच जग होतु ॥ ११६ ॥ ऊरव
 की जड को १। पीपला मूल के ३। जटामासी के २। प
 तंग के २। मिले सौंठि मिरच पीपरि के २। मिले हर
 वहेरा आवरा के २। नाम ॥ दोहा ॥ मोरट तो जड़ ऊरव की
 अथोपिप्पली मूल ॥ ग्रंथिक चटका शिर त्रय हि गोलोमी तु
 कवूल ॥ ११७ ॥ भूत के शी पत्रांग तो रक्त चन्दन हि आहि ॥ त्रिक
 दुतु मूषरा बोध त्रय फल त्रिक तु त्रिफला हि ॥ ११८ ॥

इति वैश्य तरंगः

अथ शूद्र तरङ्ग लिख्यते ॥

शूद्र के ३। करणादि सै चंडाल तक के नाम ॥ दोहा
 शूद्र जघन्य जघन्य पुनि अवरवरा चत्वारि ॥ संकीर्ण तु
 चंडाल लौं करणादि क निर्धारि ॥ १ ॥ शूद्र स्त्री और वैश्य
 सै उत्पन्न को १। वैश्य स्त्री और ब्राह्मण सै उत्पन्न
 को १। शूद्र स्त्री क्षत्री सै उत्पन्न को १। नाम ॥ दोहा ॥
 शूद्रा विशज तु सुत करणा वैश्या द्विज अं वष्टु ॥ शूद्र मै क्षत्री

वैश्यराक्षसवियसउत्पन्नको१

ज. तो उग्र नाम जगतिष्ठ ॥ २ ॥ क्षत्रियास्त्रीवैश्यसैं उत्पन्न
 को १ क्षत्रियास्त्रीशूद्रसैं उत्पन्न को १ नाम ॥ दोहा
 मागधै विश क्षत्रियात्मज अर्याक्षत्रियतात ॥ माहिष्यै हि क्ष
 नां सुतौ अर्याशूद्रजतात ॥ ३ ॥ ब्राह्मणीस्त्रीमै क्षत्रियसैं
 त्पन्न को १ ब्राह्मणीमै वैश्यसैं उत्पन्न को १ नाम ॥ दो
 हा ॥ ब्राह्मणीमै क्षत्रियजतौ सुत नाम विव्यक्त ॥ ब्राह्मणीस्त्रीमै
 नैश्यजतु है वैदेहक तात ॥ ४ ॥ शूद्रा वैश्यकी लडकींमै वै
 श्या और क्षत्रियके लडकेसैं उत्पन्न को १ ब्राह्मणी
 मै शूद्रसैं उत्पन्न को १ नाम ॥ दोहा ॥ रथकार तु माहि
 यतैं करणीमैं उपजात ॥ चंडाल तु विप्राणिमैं वृषलतनय वि
 ख्यात ॥ ५ ॥ चितेर आदि के २ सब का सजातीय समू
 ह को १ उन कुलोंके प्रधान के २ माली के २ नाम
 दोहा ॥ शिल्पी कारहि श्रेणी तौ तिहिं सजाति गरा चारि ॥
 कुलक कुल श्रेणी हि अथ मालिक माला कार ॥ ६ ॥ कुम्हार के
 २ राज के २ कोली के २ दस्ती के २ रंगसाज के २
 शिकलीगर के २ चमार के २ नाम ॥ दोहा ॥ कुम्भकार
 तु कुलाल अथ लेपक तो पलंगंड ॥ न तु वाय तु कुविंद जुग तु न्न
 वाय तो मंड ॥ ७ ॥ सोचिक रंगजीव तो चित्रकर हि निर्धार ॥ प्रा
 त्तमार्ज असि धावक हि पाद हत चर्मकार ॥ ८ ॥ लुहार के २
 सुनार के २ नाम ॥ दोहा ॥ व्योकार तु लोहकारक रुक्म
 कंत चार ॥ स्वर्णकार नाडिंधमै रूपे च कलाद सुनार ॥ ९ ॥

चुरिहा के २। ठठेरा के २। खाती के ४। नाम ॥ दोहा ॥
 शौखिक का वविक हि जुगल ता प्रकुटुक तु दोय ॥ शौखिक त
 हा का छत ट त्वष्टा बद्ध कि होय ॥ १० ॥ गांव के खाती को १।
 प्रधान खाती को १। नाई के ४। नाम ॥ दोहा ॥ ग्राम त
 ह तो ग्राम वस कोट त ह स्वधीन ॥ दिवा की ति मुंडी छुरी ना
 पित चार प्रवीन ॥ ११ ॥ धोवी के २। कलार के २। गडारिया
 के २। नाम ॥ दोहा ॥ रजक तु निर्रोजक अधो मंडहारक सुदो
 य ॥ शौंडिक ह जावाल तो अजा जीव जुग जोय ॥ १२ ॥ पंडा वा
 पुजारी के २। इन्द्र जाल के २। इन्द्र जाली के २। नाम
 दोहा ॥ देवजीवी देवल हि सां वरी तु माया हि ॥ जुग जुग मा
 यो कार तो प्रात्यहारक हि आहि ॥ १३ ॥ नट के ६। कथक के
 २। नाम ॥ दोहा ॥ शैलाली भर्ता नट रुद्र प्राप्ती रुद्रै लूष
 ॥ जाया जीव हि चार सात कुशील व हि सजलूष ॥ १४ ॥ मृदंग
 वजाने वाले के २। ताली वजाने वाले के २। बांसुरी व
 जाने वाले के २। वीणा वजाने वाले के २। नाम ॥ दोहा ॥
 मार्दंगिक मौराजिक जुग पारिध तु पारिवाद ॥ वेणुध्मा वै
 राविक जुग वैरिणिक वीणा वाद ॥ १५ ॥ चिड़ी मार के २। जा
 लिक के २। कसाई के ३। नाम ॥ दोहा ॥ जीवांतक शाकु
 निक जुग जालिक वगुरिक हि ॥ वैतसिक तो कोटिक रुमाति
 क तीन निद्रा हि ॥ १६ ॥ मजूर के ४। संदेमिहा के २। वो
 फिया के २। नाम ॥ दोहा ॥ मृतक तु मृति भुक् कर्मक

तनिकहिचवराह।वैवधिकतुवार्त्तावह।हिभारिकतुभारवाह
 ॥१७॥नीचेके १०।नाम॥दोहा॥प्राकृतपामरनीचपुनि
 अपसदजालमनिहीन॥सुल्लकविषरणदृथगजनइतरहृद
 ममप्रवीन॥१८॥दास।वाटहलवाके १।नाम॥दोहा
 मृत्यु प्रोष्य परिचारक रुहासेर रुदासेय ॥भुजिष्यगोप्य
 कनियोज्य रुचेटककिंकरं ज्ञेय॥१९॥दूसरे सें पालेहु
 ये के ४।तुस्तके ६।चतुर।वा।तेजके ५।चांडालके १०
 मलेच्छमेदके ३।नाम॥दोहा॥पराचितस्तुपौरैधितरु
 परिस्कंदपरिजात॥मंदतुंदपरिमृजअलसअनुष्मशीत
 कजात॥२०॥आलश्यहुपेशलेतुपहुदक्षउष्मसूत्यान॥
 दिवाकीर्तिचांडालप्लवश्वषंजनंगमआन॥२१॥अंतेवा
 सीपुष्कसरुसोनिषादमातंग॥दशचंडालकिराततौशवर
 उल्लिंदप्रसंग॥२२॥व्याधके ४।कूकरके ७।वावला
 कुत्ताके १।सिकारीकुत्ताको १।कुतियाके २।नाम
 ॥दोहा॥व्याधमृगवधाजीवपुनिमृगयुरुलुब्धकंचा
 रि॥सारमेयमृगदंशकरुशुनकभषकप्रवाधारि॥२३॥कौ
 लेयककुक्कुरअथोअलर्कजोगितजानि॥विश्वकहुमृग
 पाकुलशसरमाशुनीद्विमानि॥२४॥गोवसूकरको १।
 ज्वानपशुको १।सिकारके ४।नाम।दोहा॥विद्वर
 सिकारगोवकौवकरतौपशुज्वान॥आक्षोदनआखेटचवमृगव
 दानान॥२५॥दहिनेअंगमेधाववाला मृगको १।चो

रके १०। चोरी के ३। नाम॥ दोहा॥ सुदक्षिरोर्मादहिन अंग
 लुब्धयोगमगमार॥ रेकागारिके तस्करस्तेन दस्युनिर्धार॥ २६
 चौरभलिम्बु॥ मोषकेरुपाटञ्चर प्रतिरोधि॥ परास्कंदि दशस्ते
 यतो॥ स्तेन्यचौरिकां शोधि॥ २७॥ चोरी के मालको १। व्याधो
 कांसट्टी को १। फंदा के २। नाम॥ दोहा॥ लोप्रतु चोरी को
 धनहि अथ मृगपाक्षिन साथ॥ बंधवस्तु वीतस अथ कूटयंत्र उ
 न्माथ॥ २८॥ मृगबंधन जाल के २। रस्सी के ५। रहट के २
 नाम॥ दोहा॥ वागुरांतु मृगबंधनी शुल्बवराटक रज्जु॥ व
 टीगुराहि उदघाटनंतु चटीयंत्र जग सज्जु॥ २९॥ वुनने के
 दंड के २। सूत के २। वुनने के २। लीपना आदिको १।
 गुडिया गुडवा के २। नाम॥ दोहा॥ वायदंड वेमां जुगल स
 त्रंतंतु अथ वारि॥ मूर्ति ह पुस्त हि पुत्रिकांतु पांचालिका जाणि
 ॥ ३०॥ सेंदूरवावा। पेटी के ४। वहगी। वा। कावरि के २।
 शिकहर। वा। क्रीका के २। नाम॥ दोहा॥ पेटी तो चेटं
 पिटकं भंजूषा चत्वारि॥ भारय छितु विहंगिका शिखेतु का
 च निहार॥ ३१॥ पनही। वा। जूता के २। मोजा को १। बाध
 के ३। नाम॥ दोहा॥ तीन उपानद पादका पाद अथ पदमान
 ॥ सुअनुपदीना वस्त्रानध्री वध्री नान॥ ३२॥ जेर वंदको १।
 कौ गिरी के ३। नाम॥ दोहा॥ कशी हयादिक ताडनी चंडा
 लिकांतु अहि॥ सुचंडालवल्लकी त्रयरु कंडोल वीणा हि॥
 ३३॥ दुनार के कांटा के ३। कशी टी के २। नाम॥

ल्यपुनिपरा निर्वेश हि चारु ॥ ४२ ॥ दाहू के १३ मद्यपीने मै
 रुचिवहाने वाले को १ मद्यपानस्थान को १ नाम ॥
 दोहा ॥ हलिपियाहाला सुरागंधोत्तमो इरा ॥ परिखुत रुवर
 रात्सजा मद्य कश्य मदि रा ॥ ४३ ॥ परिखुता कादंबरी और
 प्रसन्नाना ॥ तहं भसरा अवदंश मद्यस्थान तु शुद्धा पान ॥ ४४ ॥
 मद्यपीने के समय के २ मद्यवाकी मद्य के ३ इक्षुपा
 कादिजन्य मदि रा के ३ नाम ॥ दोहा ॥ नधुक्रम तु मधुवा
 र अथ मध्यासवं माध्वीक ॥ माधवक हि मैरे खं तो आसवशीधु
 हिनीक ॥ ४५ ॥ मदि रा कल्क के १ वा ॥ काहा के २ मदि रा
 वनाने के २ सुरावीज के १ वा ॥ मतवाले हो कै पुकार
 ने के २ मदि रा फूल के २ नाम ॥ दोहा ॥ येदक जगल हि
 अभिषंवतु संधान हि किरवस्तु मग्न हृदिकारेत्तर तु सुरामंडजग
 वस्तु ॥ ४६ ॥ मद्यपीने की सभा के २ मद्यपीने के पात्र के २
 मदि रा पीने के २ नाम ॥ दोहा ॥ पान गोष्ठिका तौ द्वितिय आ
 पान हि चषकं तु ॥ पान पात्र हसकं तौ अनुतर्षरा जुग अस्तु ॥
 ४७ ॥ जुआरी के १ जामिन के २ नाम ॥ दोहा ॥ धूर्त वृत्ति
 तव रुद्युत कृतरु अक्षदेवी सोय ॥ अक्षधूर्त प्रतिभू सुतौ लग्न
 क जामिन होय ॥ ४८ ॥ जुवां कराने वाले के २ जुवां के ४
 वाजी लगाने के २ नाम ॥ दोहा ॥ सभिक द्यूत कारक जु
 ल द्यूत तु कै तव मानि ॥ अक्षवती परा ह अथो परा अरु ग्लह जु
 ग जानि ॥ ४९ ॥ पाशा के ३ गोमटि के चलने को १ चोपा के १

जीवोंके लडाने की वाजीको १॥ नाम ॥ दोहा ॥ अक्षतुदेव
नपाशकैहि शारिचालपरिरायी ॥ अष्टापदैतौ शारिफलम
माहूर्यतुपराभाय ॥ ५० ॥

इति प्रह्वतरंगः समाप्तः
इति गुलावसिंहस्य कृतौ नामानुशासने ॥ द्वितीयो भागो भू
म्यादिः सांगसवसमर्थितः १

द्विदेदनन्दाजमितेऽत्र वर्षे
नभस्पशुक्ले दशमीतिथौ च
सुद्वंकितः केशवशर्मरायं
गुलावसिंहेन कृतो हि कोशः १

हस्ताक्षरसमेकरात्राक्षरागौडस्य ॥ शुभम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	वसंधरा	वसुंधरा	१२	१२	मागधी	माराधी
२	४	मत्तनउ	मत्तना	१२	२४	माध्यहि	माघ्याहि
२	६	ऊर्वरा	उर्वरा	१३	१५	ओषधिफल	ओषधिफल
२	८	स्थलीस्थल	स्थलीतुस्थल			वाकान्तमे	पाकान्तमे
२	१६	तत्यंत	मत्यंत	१३	१८	प्याजके२	प्याजेके २
४	१६	मिनि	भिनि				हरितप्याजके
५	५	उठज	उटज	१३	२०	दुहुम	दुहुम
५	१७	प्रसाद	प्रासाद	१४	३	कन्दह	कन्दह
७	१९	धोषहि	घोषहि	१४	८	भस्कर	मस्कर
८	२	हमाभट	हमाभट	१४	१५	प्राध्य	प्राध्य
८	६	सौमध्य	सोमध्य	१४	१८	घोंय	घोंटा
८	१६	भूमि	भूमि	१४	२०	नाली	ताली
८	१८	उर्ध्वाहि	जर्ध्वाहि	१५	६	स्तब्धरोमा	स्तब्धरोमा
८	४	बडेवनके	बडेवनके	१५	१२	गोभायु	गोमायु
८	८	मंत्रिनको	मंत्रिको	१५	१४	आतु	ओतु
८	१५	दृष्टके१३१	दृष्टके१३१	१६	१	रेसो	रेसा
			लिके५१	१६	२	चमूरु	चमूरु
८	१८	अनोकह	अनोकह	१६	३	षट्	षट्
८	२१	उच्छाय	उच्छय	१६	६	एसा	रंसा
१०	६	शिफा	शिफा	१६	१०	रुक	रुष
१०	१८	काचाफल	कान्चेफल	१६	११	भूषिका	भूषिका
११	५	पारिमद्र	पारिमद्र	१६	१६	होय	दोय
११	१८	भूतवास	भूतावास	१६	१८	परावत	पारावत
११	२०	अरुकाय	अरुकायस्था	१७	५	चिडाको११	चिडाके२चिर्द को १

प्राप्ति	प्राप्ति	अशुद्ध	शुद्ध	प्राप्ति	प्राप्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	६	कलिविंक	कलविंक	२४	८	मिस्तुकी	मिस्तुकी
१३	६	मास	मास	२४	११	पुत्री और	पुत्र और
१३	१८	चकवाचक	चकवाचककीके	२५	१	श्यामतु	श्यालतु
		हीके ३।०	श्वतकके २।	२५	४	जामत	जामात
१३	१८	पुकाराह	पुकाराह	२५	७	सोसहज	सहज
१३	२१	उक्रांश	उक्रोश	२५	२१	मुंड	मंड
१८	१	मानसौकस	मानसौकरअ	२६	६	स्तनष	स्तनप
		थो	थो	२६	१८	बलिनि	बलिन
१८	१८	भौर	भौर	२७	४	उर्ध्वजानु	उर्ध्वजानु
१८	५	एकुंत	शकुंत	२७	१७	वयस्तु	वयस्तु
१८	२१	भेदीका	भेदीके	२८	१	तुंडिमतु	तुंडिमतु
२०	८	कपोतादि	कपोतादि	२८	७	उत्तपप	उत्तप
२१	१४	पुरुषके ४।	पुरुषके ५	२८	१८	मलआधि	मलआधि
२०	१८	माहिला	माहिला	२८	२०	कर्पूरतु	कर्पूरतु
२१	१४	तराणीतुतव	तराणीतुतवधू	३०	२	कशेरका	कशेरुका
		वधू		३०	६	अंधि	अंधि
२१	१५	धूजनी	वधूजनी	३०	२०	मेढू	मेढू
२१	१८	कामकी	कामकी	३०	२१	पीठवशा	पीठवशा
२१	१८	होके	होके	३१	६	अस	अस
२२	५	वुद्धा	वुद्धा	३१	१३	मारीबंधधैस	मारीबंधधैस
२२	१८	माजाता	मजाता	३२	१	पुनमेव	पुनर्भव
२२	२१	कात्यायनी	कात्यायनीतु	३४	१८	आद	विभ्राटहु
		जोय	जोय	३४	१८	अभारता	आभारता
२२	८	आत्रेयी	आत्रेयी	३५	५	नामि	नामि
२२	१५	गर्भिराणी	गर्भिराणी	३६	१०	रंकव	रंकव

पृष्ठपंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठपंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३७ २	सुचलेलक	सुचेलक	४५ १८	उपासना	उपासन
३७ ८	प्रवार	प्राधार	४५ २१	ध्यानादि	ध्यानादि
३७ ११	अप्रपदीन	आप्रपदीन	४७ ५	यतुयति	यतीतुयति
३८ १३	यज्ञधूप	यज्ञधूप	४७ १६	अधमर्षरा	अधमर्षरा
३८ ८	यज्ञकर्दम	यज्ञकर्दम	४८ २	देव	देव
३८ २०	गतमाल	गतमाल	४८ २०	क्षत्रियगण	क्षत्रियगण
३९ २०	प्रलंब	प्रालंब	५० ६	ठेकेकेदारके	ठेकेकेदारके
४१ ७	अपस	अपर	५० २०	सपत्न	सपत्न
४१ १०	प्रज्ञ	प्रज्ञ	५० २१	सतवध	समवध
४१ १५	यज्ञाध्यक्षे	यज्ञाध्यक्षे	५१ ३	अनुकूल्य	आनुकूल्य
४१ २१	दक्षिणार्धे	दक्षिणार्धे	५१ ५	यथाहिवर्गो	यथाहिवर्गो
४२ ७	अंतेवासी	अंतेवासी	५२ १३	पुनिभ्य	पुनिलभ्य
४२ ११	रेतिह्य	रेतिह्यरु	५२ २१	दंड	दंड
४२ १४	वंतु	तंतु	५३ १८	नाहर	जाहर
४२ १७	भभा	सभा	५४ ७	अप	अध
४२ १८	संपद	संसद	५४ १७	प्रतिभान	प्रतिभान
४८ १८	यज्ञग्रह	यज्ञग्रह	५४ २०	पाश्व	पाश्व
४३ ८	भूमि	भूमि	५५ ५	आलन	आलान
४३ १७	हुतयुकपि	हुतयुकपिया	५५ ८	परिस्तोभ	परिस्तोभ
४३ १७	आग्नार्या	आग्नार्या	५५ १७	हय	हय
४४ २	अमिक्षा	आमिक्षा	५६ १७	शकटकु	शकटनु
४४ १७	विधस	विधस	५६ २१	प्रेषा	प्रेषा
४४ १८	विहापति	विहापित	५६ २१	द्वेपनो	द्वेपनो
४५ १	प्राड	प्राड	५७ १	पौर्णसे	पौर्णसे
			५७ १	नाम	नाम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५०	३	काबलहि	कांबलहि	६४	१६	प्रास्यदि	प्रास्यादि
५०	४	यनमुख	यानमुख	६६	१२	जीवतु	जीवातु
५१	६	कालक	कीलक	६६	१५	अभृत	अभृत
५१	१०	दोदेखि	दोदोदेखि	६६	२०	करादापन	करादापन
५१	१२	मसंगयुग	प्रासंगतुयुग	६६	२०	कराग्रहि	कराग्राहि
५१	१४	काहारादि	कहारादि	६७	७	होनेवाले	होनेवाले
५१	१८	दक्षरास्थ	दक्षिरास्थसब्ये	६७	१५	पहिचान	पहिचान
		सवेष्ट	ष्ट	६७	१६	रनि	रुनि
५८	१०	अमुक्त	आमुक्त	६८	५	क्षेत्र	क्षेत्र
५८	१६	अयुधीय	आयुधीय	६८	७	लेष्ट	लेष्ट
५८	८	सुहाय	सहाय	६८	८	असुरी	आसुरी
५८	१५	प्रतवी	प्रजवी	६८	१०	दूँडावा	दूँडावा।
६०	१०	रथहुइकी	रथहुइकीस	७०	१५	पंच	पंच
		स		७०	१६	नाम	नान
६०	१६	पत्ति	पति	७०	१६	मारके	भारके
६०	२०	अर	अरु	७०	२१	आलुगला	आलुगला
६०	२१	मिलितकह	मिलितकहि			निका	का
६१	२	मनिचारि	गनिचारि	७१	१८	चवा	चव
६१	११	धनुद्धरके	धनुर्द्धरके	७१	१८	विश्वमेवज	विश्वमेवज
६१	१७	अशुग	आशुग	७१	२०	धान्यगल	धान्याम्ल
६२	८	इली	ईली	७१	२०	अंबति	अंबति
६२	६	भिदिपाल	भिदिपाल	७१	२१	सोयूह	सोमहु
६३	७	होय	दोय	७१	२१	हीगके	हीगके
६३	८	अनिवर्त्ती	अनिवर्त्ती	७२	२	समुद्र	समुद्र
६३	२१	नसारवाने	नसारवाने	७२	२१	हावुसक३	हावुसके ३

पृष्ठपंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठपंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७३ १	वाहरीको १।	बहरीको १।	८१ ५	शो भंजनकं	शो भंजनके
७३ २	पूवाको ३।	पूवाके ३।	८१ २१	शुद्ध मै	शुद्धा मै
७३ ३	चिपटका	चिपटक	८३ ५	स्वधीन	स्वाधीन
७३ ४	अंधस	अंधस	८४ ५	प्रोष्य	पैष्य
७३ ८	भासर	मासर	८४ १०	जात	तात
७३ ८	तपसीके	लपसीके	८४ १८	कुलश	कुशल
७३ १०	छतंतु	छततु	८४ २०	भगव्य	मगव्य
७३ १४	कालशय	कालशेय	८५ ३	भलिभु ३	मलिभुप
७४ ४	तर्ष	तर्ष	८५ ३	प्रतिराधि	प्रतिरोधि
७४ १०	बछडोंसमूह	बछडों के समूह	८५ ११	वायदंड	वायदंड
	को	को	८५ १५	भंजूषा	मंजूषा
७५ ३	वत्सवर	वत्सतर	८६ ८	अरीके २।	अरीके २।
७६ २	वशां	वशा	८६ १५	प्रतिविब	प्रतिविंव
७६ १०	रईके ४।	रईके ४।	८७ १२	मग्नहृदि	नग्नहृदि
७६ २१	मंयान	मंथान	८८ ३	समाहृत्य	समाहृत्य
ला ७६ २१	मथनी	मंथनी			
७७ १	करम	करभ			
७८ १	कुष्य	कुष्य			
७८ २	अश्वगर्म	अश्वमगर्म			
७८ १०	मर्म	भर्म			
७८ १८	मेडूर	मंडूर			
८० १	अभल	अमल			
८० २	रसांजनको ४।	रसांजनके ४।			
८० ८	चक्षुष्यातुसु	चक्षुष्यातु।।सु			
८० २०	लोभ	लोभ			
८० २०	मधूच्छिष्ट	मधूच्छिष्ट			

नामसिंधुकोशको

तृतीयभाग

अर्थात्

गुलाब कोश को संक्षेप अमरकोश के तृतीय
काण्ड को सार

श्रीयुतचहवारा वंशवतंस हूडु कुल कलशवुन्दी
न्द्र महाराजाधिराज महाराव राजाजी श्रीश्री
श्रीश्रीश्री १०८ रामहिं हजी के कविरावजी श्री
गुलाबसिंहजी कृत । ५ ।

०(०)०

आगरा

नगरे वेलनगंजे श्रीपंडित केशव प्रसाद शर्मा
द्विदेदि प्रबंधेन विद्यारत्नाकरयंत्रे सुद्रितः ॥ ५ ॥

सन् १८८५ ई०

इस पुस्तक की सन् १८६७ के सेक. १२५ के अनुसार र
जस्टरी हुई इस कवि की तथा पंडित केशव प्रसाद द्विदेदी की
आज्ञा बिना कोई न कापे

श्रीगणेशायनमः। श्रीसरस्वत्यैनमः

अथनामसिंधुकोश

कोत्ततीयभागलिरव्यते

दोहा

ब्रह्मादिकवन्दितचरनहरनअखिलअघजाल
दिनकरसुखसंपतिकरननमोनमोजनपाल१
उत्पतिपालनप्रलयकररुजहरत्रिभुवननाथ
एचियहग्रंथरुपायतनअवसुहिकरदुसनाथ२

अथग्रंथनियमलिरव्यते॥दोहा

ह्याविशेष्यनिघ्नरुतथासंकीर्णरुनानार्थ॥१॥

अव्ययचारितरंगहैंकृतगुलावखल्यार्थ॥३॥

इच्छालुब्धरुइह्युपनिस्वच्छपाकपाहिचानि
वांटचीढपर्मरुनवमटेरुतुकांतहिजानि॥४॥

शब्दअमरक्रमसैंधरेअनेकार्थकान्तादि॥५॥

ककुतजिअर्थतुवहलिवेदेखिमेदिनीआदि॥

भाग्यवानके३।उदारके२।सीधाके२।उद्योगीके
२।ज्ञाताके१०।नाम॥दोहा॥धन्यपुण्यवानम

महाशयं स्तु.महेच्छ ॥ सुहृदयं तौ. हृदयालुं जुग. महोत्साहं
 तौ. इच्छ ॥ ५॥ महोद्यमं ह. वैज्ञानिकं तु कृतसुखं कुशलं अ
 मित्रं ॥ शिक्षितं निष्ठातं रु. हृतीं निपुणं प्रवीणं रु. विज्ञं ॥ ६
 मान्यके २। संप्रयायीके २। दाक्षिणायोग्यके ३। अति
 दानीके ५। नाम ॥ सोरठा ॥ पूज्यं प्रतीक्ष्यं हिमानि। सं
 प्रयाय पन्नमानसं तु. ॥ संप्रायिकहं जुग जानि। दाक्षिणीयं तौ
 तीन है ॥ ७॥ दाक्षिणाहं दाक्षिण्यं। दान श्रेण्डं तौ. वहु प्रदरु.
 ॥ स्थूल लक्षं ये गिराय अति दानीं रु. वदान्यं पच ॥ ८॥ बडी
 उमरवालाके २। शास्त्रीके २। पारखीके २। नाम ॥
 सोरठा ॥ जैवालकं जुग. जाणि। आयुष्मानं हि शास्त्रवितं ॥
 तौ. जुग. अंतर्वाणि ॥ परीक्षकं तु. कारिणिकं जुग. ॥ ९॥ वर
 दानदेनेवालाके २। हर्षितके ४। नाम ॥ सोरठा ॥ व
 रदं समर्द्धकं दोय। विकुर्वारां प्रमनां बहुरि ॥ हृष्ट मानसं सु
 होय। हर्षमारां जुत चारिगालि ॥ १०॥ उदासके ३। प्रीति
 युतके २। सरलचित्तके ३। दाताभोक्ताको १। नाम ॥
 दोहा ॥ अंतर्यनां तु. दुर्मनां विमनां उत्कं तु. आहि ॥ उन्मनां
 ह. दाक्षिणां सरल उदारं सुकलं इकाहि ॥ ११॥ लीनके ३। अ
 भीष्टमैलगाके २। प्रसिद्धके ६। गुणसैं प्रसिद्धके ३।
 नाम ॥ दोहा ॥ आसक्तं तु. तत्परं प्रसितं अथ. इष्टार्थं युक्तं ॥
 उत्सुकं ह. विज्ञानं तौ. वित्तं रु. विप्रुतं उक्तं ॥ १२॥ प्रथितं प्रतातं
 ॥ गृह आहत लक्षणां सोतु. ॥ कृत लक्षणां है तीसरो गुण

प्रतीतं हि होतु ॥ १३ ॥ धनी के ३ स्वामी के ८ ॥ नाम ॥ दोहा ॥
 इभ्यं तु आह्वय धनीं पतितु परिदृढं प्रभु नेतारु ॥ अधिभू नायकं
 इषित्वैश्वर्ये अधिपं हि चारु ॥ १४ ॥ भरे पूरे के २ कुटुंबपाल
 क के ३ वडा सुन्दर को १ नाम ॥ दोहा ॥ समृद्धं स्तु अधिक
 दि ॥ जुग कुटुंब व्यापृत सोतु ॥ अभ्यागारिक उपाधि ॥ हि सिंह सं
 हननं होतु ॥ १५ ॥ दुख मै भी खुशी सैं कार्य कर्त्ता को १ गू
 गा के २ पितृ तुल्य के २ अलंकृत कन्या दाता को १
 नाम ॥ दोहा ॥ इक निर्वाय ॥ हि अवाकं तु मूकं मनोजव सो
 तु ॥ पितृ सन्निभं हू कू कुटुंब तु कन्या दाता होतु ॥ १६ ॥ लक्ष्मी वा
 न के ४ दयालु के ४ नाम ॥ दोहा ॥ लक्ष्मण लक्ष्मी वान पु
 नि श्री ल चारि श्री मान ॥ कारुणिकं स्तु कृपालु पुनि दयालु
 सूरत नान ॥ १७ ॥ स्वतंत्र के ५ परतंत्र के ४ नाम ॥ दोहा ॥
 निर्वग्रहं स्वैरी अपादृत स्वच्छंद स्वतंत्र ॥ पराधीन परवाने च
 व नाथ वान परतंत्र ॥ १८ ॥ आधीन मात्र के ५ स्नेही के २
 बहारने वाला के २ नाम ॥ दोहा ॥ गृह्य कर्त्ता आयत्त पुनि
 अस्वच्छंद अधीन ॥ निघ्नं हू वत्सलं स्निग्धं जुग खल पू बहु क
 चीन ॥ १९ ॥ सुस्त के २ अविचारी के २ आलसी के २
 कार्य करने में समर्थ के २ कार्य मै लगे हुये के २ स
 दा काम मै लगे हुये के २ पूरा कार्य करने वाला के २
 नाम ॥ दोहा ॥ दीर्घ सूत्र तो चिर क्रिय ॥ हि समीक्ष्य कारी वीरा
 ॥ जलमं हू कुठं तु मंद क्रिय ॥ अथो अलंकरी ॥ २० ॥

कर्मोद्यत तु क्रियावान् मरुहूर ॥ कर्मशीलतौ कर्मजुग कर्म
 तंतु कर्म प्रसू ॥ २१ ॥ मंजूर के २। विना सज्जरी कामकर्ता
 को १। मांस खाने वाला के २। मृतक स्नायी के ३। नाम
 । दोहा ॥ भराय भुक् तौ। कर्म कर कर्म कार इक तात ॥ द्विअ
 पिषाणी प्रौक्कल हि अपस्नात मृत स्नात ॥ २२ ॥ भूखा के ४। प
 रान्त जीवी के २। भक्षक। वा। खवैय के २। नाम। दोहा
 औदरिक तु आचून् जुग उंची इच्छा होन ॥ आत्मभरि कुक्षिभ
 रि सुस्वोदर पूरक चीन ॥ २४ ॥ सर्वभक्षी। वा। परमहेसादि
 के २। लोभी के २। अभिलाषाशील के ३। किसी के मत
 में पौचौ लोभी के। नाम ॥ दोहा ॥ जु सर्वान्न भोजी सुतौ सर्व
 चीन अलुब्ध ॥ गर्हने गृध्रु हित्सक तु अभिलाषुक त्रय लु
 ब्ध ॥ २५ ॥ अतिलोभी के २। सिरडी के २। अन्यायी के २
 मत्त। वा। मतवाला के ३। नाम दोहा ॥ लोलुप लोलुभ
 उन्नदंतु उन्न दिक्षु जुग सीव ॥ समुद्धत तु अविनीत अथ शो
 डंतु उत्कटेक्षीव ॥ २६ ॥ कामी के १०। नाम ॥ दोहा ॥ का
 मुक कामित कामन रु। अनुक रु। अभिक अमीक ॥ कामायिता
 क म रु। कामन कामी तुत दशनीक ॥ २७ ॥ आज्ञाकारी के ४
 । वशमै प्राप्त के २। नन्नावा। सीखे हये के ३। नाम ॥ दोहा
 विनयग्राही आप्रव रु। वचने स्थित रु। विधेय ॥ वश्य प्रणेय
 हि प्रयिता निश्चता विनीत विज्ञेय ॥ २८ ॥ ढीठ के ३। बुद्धिमा
 मलज्ज के २। अर्जुनी के २। व्याकुल के २। डरपो

ककेर्दीनाम॥ दोहा॥ अस्मकं धृष्टं वियातं त्रयप्रतिमान्वि
 तंतु प्रगल्भं॥ अद्यष्टौ प्रालीनं जुग, विस्मयान्वितं तुरात्म॥
 २८॥ जुग, विलक्ष्य कातरं सुतौ, अधीरं वस्तु तु जोय॥ वस्तुभीरुं
 भीरुकं अपरं भीलुकं भीतं हि होय॥ ३०॥ कहनेवालाके २।
 लेनेवालाके २। श्रद्धावानकी १। गिरनेवालाके २।
 नाम॥ दोहा॥ आशंसु तु आशंसितां गृहीतां तु गृहयालु
 ॥ श्रद्धालु तु श्रद्धासहितपातुकं तौ पातियालु॥ ३१॥ लोक
 लज्जाशीलको १। वंदनाकरनेवालाके २। बढनेवाला
 के २। हत्यारके ३। नाम॥ दोहा॥ अपत्रपिष्णु तु एकअ
 थअभिवादकं वंदारु॥ वर्द्धिष्णु तु वर्द्धनं जुगल, चातुकं हिं
 सप्रमारु॥ ३२॥ उछलनेवालाके २। गहनाकी इच्छा
 वालाके २। होनेकी इच्छा वालाके ३। वर्त्तनेवालाके २।
 नाम॥ दोहा॥ उत्पतिता उत्पतिस्सु हि मंडनं अलंकारेसु
 ॥ भविता भूष्णु भविष्णु त्रयवर्त्तनं तौ वर्तिष्णु॥ ३३॥ निक
 रनेवालाके २। मेघ। वा। चिक्रणाके २। जनेयाके ३।
 फूलनेवालाके २। जानेवालाके ४। नाम॥ दोहा॥
 निराकरिष्णु तु क्षिप्नु जुगसांद्रस्निग्धतु होतु॥ मेदुरं ज्ञाता
 तौ विदुरं विन्दुं विकासी होतु॥ ३४॥ विकासशीलविकस्वरहि
 विसृत्वरस्तुवरवानी॥ चोरि प्रसारी विसारी विस्मरं जुगपहिना
 नि॥ ३५॥ सहनशीलकेर्दी। क्रोधीके ३। बडाक्रोधीको १।
 नाम॥ दोहा॥ सहिष्णु तौ क्षमिता क्षमी संता सहनं

कोपी'कोधी'अमर्षरा'चंड'तुअतिकुपडसु॥३६॥जागनेवाला
 के२।निद्रितके२।सोनेवालाके३।नाम॥दोहा॥जाग
 रितो'जागरूक'हि'प्रचलायित'तौ'जानि॥घूर्णित'हनिद्रालु'तौ
 शयालु'स्वप्नक'मानि॥३७॥सोयाके२।विमुखके२।अ
 धोमुखीके२।देवपूजकको१।नाम॥दोहा॥निद्रा
 तु'शयित'हि'पराचीन'परादुःख'दोय॥अधोमुखस्तु'अवाड'
 जुग'हि'देवघड'डक'होय॥३८॥चारों'ओर'कों'जानेवाला
 को१।साथजानेवालाको१।तिर्छा'जानेवालाको१
 वक्ताके३।वडावक्ताके२।नाम॥दोहा॥विषघड'स
 च्छड'चक'कारि'र्यड'हू'डक'दीश॥वक्ता'वद'रु'वदा'वद'हि'वा
 क्यति'तौ'वागीश॥३९॥नैयायिकके२।वहभाषीके२
 अवान्व्यक'हनेवालाके३।नाम॥दोहा॥वाग्मी'वाचो
 युक्ति'पटु'वावडूके'जुग'थाट॥अतिवक्ता'जल्पाके'तौ'वाचाले
 'वाचाट'॥४०॥अप्रियवक्ताके३।प्रियवक्ताके२।
 कुवादीके२।साफनबोलनेवालेके२।नाम॥दोहा
 दुःमुख'सुख'अवह'मुख'शकु'प्रिय'वद'ताक॥द्विगद्'वादी'क
 'दद'हिलो'हल'अस्फुट'वाक'४१॥दोषवादीके२।कूरवादीके२
 प्राक्कर्त्ताके२।आशिषसै'स्तुति'कर्त्ताके२।महामूढके२।
 गूंगा'और'वाहिराको१।चुपरहनेवालाके२।नाम॥दो
 'कचरे'क'वादी'हि'अस्वर'तु'जुग'असौम्य'स्वर'जानि॥रवरा'तु'श
 'दी'अथानान्दी'वादी'मानि॥४२॥नान्दीकर'अक्ष'तु'जड'

हि. एडमूक डक होय ॥ तूषाणी शील तु दूसरो तूषाणी कहि जि
 य जोय ॥ ४३ ॥ नंगा के ३। निकाले हुये के २। अधिकारी
 के २। दूटे अभिमान वाले के २। धनादिके दाता के २
 निरादर किया हुवा के ४। नाम ॥ दोहा ॥ नग्न अवास दि
 गंवर हि निष्कासित अवकृष्ट ॥ अपध्वस्त धिक्कृत जुगल आ
 न्त गर्व तो दृष्ट ॥ ४४ ॥ अभिभूत हि दापित सुतौ साधित प्रत्यादि
 ष्ट ॥ सुतौ निरस्त निराकृत प्रत्याख्यात हि दृष्ट ॥ ४५ ॥ विव-
 र्णीकृत के २। ठगाये के २। दूटे मन वाले के ४। नाम ॥
 दोहा ॥ निरुक्त विप्रकृत वंचित तु विप्रलब्ध जुगधारि ॥ प्रति
 हत हत प्रति बद्ध पुनि मनोहत हु चत्वारि ॥ ४६ ॥ निंदित के
 २। रज्जु आदि सैं निबद्ध वा। कैदी के ३। विपत्ति मै प्रा
 प्त के २। नाम ॥ दोहा ॥ अधिक्षिप्त प्रतिक्षिप्त जुग कीलित
 संयत सोय ॥ बद्ध आपत्ताप्रतौ आपन्न जुग जोय ॥ ४७ ॥
 डरे हुये के २। अपवादी के ३। चंचल के २। नाम ॥ दोहा
 कांदिशीक जुग भयद्रुत आक्षारित अभिशास्ते ॥ क्षारित हु
 अस्थिर सुतौ संकसुक हि जुग शस्त ॥ ४८ ॥ कष्टित के २। शो
 कादि सैं व्याकुल के २। शोकादि सैं गात्र भंग के २। म
 रणासन्न बुद्धि के २। नाम ॥ दोहा ॥ उपरक्त तु व्यसनान्त
 जुग विहस्त व्याकुल बीहि विल्लव विह्वल विवशतौ सुअरि
 ष्ट दृष्टी हि ॥ ४९ ॥ वेत मारने योग्य के २। मारने योग्य के
 वैर योग्य के २। शिरकाटने योग्य के २। नाम ॥

कश्यपकशाहं हि जुगल इक तु सु आततायी होय ॥ द्वेष अस्मिगत
 वध्यतौ शीर्षवेच जुग जोय ॥ ५० ॥ माहुर देने योग्य को १
 मूसल सैं मारने योग्य को १ पुरायात्मा के २ विना
 विचारें मारने कौं उद्यत के २ केवल दोष दर्शी के २
 कपटी के ३ चुरगुल के २ दुष्ट के ३ नाम ॥ दोहा ॥
 विष्य सुसत्य ह एक इक अकल कर्मा सोतु ॥ शिष्य विद्वान
 चपल तु चिकुर जु पुरोभागी होतु ॥ ५१ ॥ सुदोषै कहुं निह
 ततौ अन्ध जु शठ हि त्रय जानि ॥ सूचकं करो जप खल तु दुर्ज
 न पिशुन विमानि ॥ ५२ ॥ हिंसक के ४ कूली के २ मूर्ख
 वा ॥ अज्ञ के ४ नाम ॥ दोहा ॥ चातुकं क्रूर नृप सं च व पा
 प वंचक तु धूर्त ॥ यथा जातं वैधेय वालि श्रीरुमूढं च व पूर्त ॥
 कपरा के ५ दरिद्र के ५ नाम ॥ दोहा ॥ सुद्र अनमि तं पच
 कपरा किं पच कदर्य जानि ॥ निख तु दुर्गत दुर्विधं रु दीन द
 रिद्रं वखानि ॥ ५४ ॥ याचक के ४ अभिमानी के २ शुभ
 युक्त के २ नाम ॥ दोहा ॥ अर्थी मार्ग रा याचन के वनीयक
 हि जु अहंयु ॥ अहंकार वान हि जु गल शुभान्विते स्तु शु
 भंयु ॥ ५५ ॥ देवता की १ मनुष्य पशु आदिकी १ कीटा
 दिकी १ पक्षी सर्पादिकी उत्पति ॥ दोहा ॥ देव दिव्य उ
 पपादक हि जरायुज तु नृग वादि ॥ स्वेदजं कामे दशादि है
 अंडजं सर्प खगादि ॥ ५६ ॥

इति प्राणिप्रकरणम्

अथद्वितीयप्रकरणालिख्यते

वृक्ष। लता। घास आदिकी उत्पत्ति को १। उद्भिद के ३।
 सुन्दर के १२। परम सुन्दर को १। नाम ॥ दोहा ॥ उद्भिद तरु
 गुल्मादि हैं उद्भिज तौ उद्भिज्ज ॥ उद्भिद रुचिरं तु शोभनं रु सुन्दर
 मंजुलं धिज्ज ॥ ५७ ॥ रुच्य चारुं मंजु रु सुसमं साधु मनोरमं कां
 तं ॥ अरु मनोज्ञं द्वादश इक तु असेचनकं अति कांत ॥ ५८ ॥
 प्यारा के ६। अधम के १२। मैली वस्तु के ४। नाम। दोहा
 हृद्य अभीप्सितं प्रियं द्युतं अभीष्टं वल्लभं दृष्ट ॥ याप्यं तु प्र
 ति कृष्टं रु अवमं अर्वा रेफं नि कृष्टं ॥ ५९ ॥ गर्ह्यं खेटं कुत्सितं अ
 राकं और कुप्यं अवद्यं ॥ मलीमसं तु कच्चरं मलिनं मलदूषि
 तं च वसद्य ॥ ६० ॥ पवित्र। वा। साफ के ३। स्वभावनिर्म
 ल को १। मल रहित के ५। नाम ॥ दोहा ॥ पूतं तु मेध्यं प
 वित्रं त्रयं वीध्रं एक ही बोध्य ॥ मृष्टं निरीक्षितं शोधितं रु अनव
 स्करं निः शोध्यं ॥ ६१ ॥ निर्वल के २। खाली के ४। मुख्य के
 १६। नाम ॥ दोहा ॥ फलुं असारं हि शून्यं तौ रिक्तकं वशिकं
 रु तुच्छं ॥ प्रमुखं प्रधानं अनुत्तमं रु प्रवेकं उत्तमं स्वच्छं ॥ ६२ ॥
 अग्रं प्राग्रहरं प्रवर्हं रु अग्रियं रु अनवरार्घ्यं ॥ अग्र्यं अग्रीयं
 पुनि प्राग्र्यं वरेण्यं परार्घ्यं ॥ ६३ ॥ श्रेष्ठ के ५। श्रेष्ठार्थ वा
 चक के ७। अथ प्रधान के ३। नाम ॥ दोहा ॥ पुष्कलं स
 त्तमं श्रेष्ठं पुनि आति शोभनं श्रेयानं ॥ परपदायितं श्रेष्ठार्थक
 तु पुङ्गवं कुंजरं जान ॥ ६४ ॥ ऋषभ सिंह अरु

शार्दूल रु नागादि ॥ अग्रधाने अप्राग्य पुनि उपसर्जन त्रयवा-
 दि ॥ ६५ ॥ विस्तीर्णा वा फैले हुये के ८ मोटा के ४ ना-
 म ॥ दोहा ॥ बड़ विशंकट पृथु पृथुल विपुल रु वृहत विशाल
 महत हृपीन तु पीवर रु स्थूल रूपी व रसाल ॥ ६६ ॥ थोडा के
 ३ सूक्ष्म वा मिही के ११ नाम ॥ दोहा ॥ अल्प तु सुल-
 कं स्तोक त्रय सूक्ष्म तु सक्षरा वेश ॥ कृश तनु लवकरा दभ-
 आरा मात्रा त्रुटि अरु लेश ॥ ६७ ॥ बहुत थोडा के ५ भूरी
 वा अधिक के ११ गिनने योग्य के २ गिने हुये के २
 नाम ॥ दोहा ॥ अत्यल्प तु अल्पिष्ट है अरु अल्पीय करणी-
 य ॥ अरायी अथ बहु प्रचुर पुरु प्राजा प्रभूत गनीय ॥ ६८ ॥
 बहुल भूय भूयेष्ट स्फिर परह अदभ्य हितात ॥ गरा नीय स्तु-
 गरीय जुग गरात सुतो संख्यात ॥ ६९ ॥ सदा वा निःशेष
 वा अनूनक के १४ नाम ॥ दोहा ॥ सर्व विश्व अखिल रु
 निखिल सकल सनस्त अशेष ॥ पूर्ण अखंड समग्र समेक तम
 अनून निशेष ॥ ७० ॥ सघन वा निविड के ३ विरला
 वा अलग अलग के ३ नजदीक वा पास के ५
 संलग्न वा मिले के ३ अति निकट के २ नाम ॥ दोहा
 पन तु निरंतर सांद्र तनु पेलव विरल हितीन ॥ निकट समीप
 सनीड अरु सनिहंष्ट गुनलीन ॥ ७१ ॥ समर्याद आसन्न उप-
 कंठ सावेद अम्यास ॥ अभ्यरीरु अभ्यग्रे पुनि अंतिक अभित-
 ॥ ७२ ॥ और सवेश संदेश अथ अव्यवहित संशक्त ॥

अपतंतर'अंतिकतमे तु नेदिष्ट'हि जुग फक्त ॥७३॥ दूरके २।
 अति दूरके ३। लंबा के २। नाम ॥ दोहा ॥ विप्रकृष्टक तु इ
 र'ही दविष्ट सोतु सुदूर ॥ तृतीय दवीयस'दीर्घ'तौ आयतं जु
 गही पूर ॥७४॥ गोल के ३। भुकाहुवा ऊँचा के २। ऊँच
 के ६। कोटा के ५। औँचे मुख के ३। नाम ॥ दोहा ॥ वर्तुल
 निस्तल दृत्त'त्रय उन्नतानत तु दोय ॥ बंधुर'उच्च'तु उन्नतरूपां
 शुं उदग्रं विजोय ॥७५॥ उद्धित तुंग'हि वामन तु खर्व'ह्रस्वन्य
 क नीच ॥ आनतं सुतौ अवाग्र अरु अवनतं तीन अपीच ॥७६
 वक्र। वा। टेढा के १०। सीधा के ३। नाम ॥ दोहा ॥ वृजिन
 अराल'अभिमत वेल्लित कुंचितं जिह ॥ कुटिल भुग्न आ
 विद्धनतं ऋजु'तौ प्रगुण अजिह ॥७७॥ आकुल के ३ नि
 त्य। वा। सनातन के ४। अति स्थिर के ३। नाम ॥ दोहा ॥
 व्यस्त अप्रगुण आकुल'हि ध्रुव तु सदातन आन ॥ शाश्वत नि
 त्य'हि स्थास्तुतौ स्थिरतर'त्रय स्थेयान'७८॥ स्थिर को १। अ
 चर के २। चलने वाले के ६। नाम ॥ दोहा ॥ इक कूटस्थ
 हि स्थावर तु जंगमेतर'हि दोय ॥ जंगम चर'त्रसं चराचर'द्वंग
 चरिष्णु'होय ॥७९॥ कौंपने वाले के ३। चंचल के ७।
 नाम ॥ दोहा ॥ चलनं तु कंपनं कंप'त्रय चल तु चलाचल
 लोलं ॥ पारिप्लवं चंचलं तरल सात परिप्लवं वोल ॥८०॥ अधि
 क के ३। बडा मिलापी के २। काठिन के ६। बहत बडेह
 ये के ३। पुराने के ६। नाम ॥ दोहा ॥ अतिरिक्त ताम्र'लोह

के जुगल संहत नौ दृढ संधि ॥ ककखट कठिन कठोर दृढ निहुर
 क्रूर प्रबंधि ॥ ८१ ॥ जठर मूर्ति मत्त मूर्ति नय राधित प्रौढ प्रवद्ध
 ॥ प्रतन दुरतन चिरंतन प्रतन पुराण हि वद्ध ॥ ८२ ॥ नव्य।
 वा। नया के १। कोयल के ४। नाम ॥ दोहा ॥ प्रत्यग्
 तु अभिनवं रुनवं नूतन नूतन नवीन ॥ सुकुमार तु कोमल
 मृदुल मृदु जुत चारि प्रवीन ॥ ८३ ॥ पाछे के ४। प्रत्यक्ष
 के २। अप्रत्यक्ष के २। नाम ॥ दोहा ॥ अन्वक्ष तु अनुप
 द अनुग अन्वक्ष अथ प्रत्यक्ष ॥ ऐंद्रिय क हजु अतीन्द्रिय
 सु दूजो अप्रत्यक्ष ॥ ८४ ॥ एकाग्रचित के ६। नाम ॥ दो
 हा ॥ एकतान एकायन रु एकसर्ग एकाग्र ॥ एकायनगत
 नाम षट् अनन्य वर्ति समग्र ॥ ८५ ॥ आदिके ६। अंत
 के ५। नाम ॥ दोहा ॥ आद्य पूर्व आदिम प्रथम षट् पौरस्त्य
 रु आदि ॥ पाश्चात्य तु पश्चिम चरम अंत्य जघन्य विवादि ॥
 ८६ ॥ व्यर्थ के २। साक्ष के ४। साधारण के २। नाम
 दोहा ॥ मोघ निरर्थक स्फुट सुतौ उत्तरा अरु प्रव्यक्त ॥
 स्पष्ट ह साधारण सुतौ जुग समान्य हि उक्त ॥ ८७ ॥ अ
 सहाय के ३। भिन्न के ६। बहुत प्रकार का के २। ज
 ल्दी के २। मर्म भेदी के २। अवाधित के २। नाम ॥ दो
 हा ॥ एकाकी तौ एक क रु एक ह भिन्न तु अन्य ॥ इतर
 अन्यतर एकत्व हि अथ उच्चावच गन्य ॥ ८८ ॥ नैक भेद
 तौ अविलंबित जुग साध ॥ मर्म स्पष्ट तु अरु तुद हि नि

रंगलस्तुअवाध॥८८॥उलटाके४।वायाअंगको१।दहि
 नाअंगको१।नाम॥दोहा॥अपसव्यस्तु।प्रसव्यप्रतिकू
 लअपष्ठुवखानि॥वामःसव्यअपसव्यतौदक्षिणअंगहिजा
 नि॥८९॥सकडेमार्गादिके२।दुःप्रवेशके२।नानाज
 तिकीगचापचीके३।मुंडितके२।नाम॥दोहा॥संकट
 संवाधहि।कालिलगहनहि।संकुलसोतु॥आकीर्णरुसंकी
 र्ण।परिवापितमुंडितहोतु॥९०॥गठियायाके३।फैले
 के३।भूलेके२।मिले।वा।पायेके२।नाम।दोहा॥
 ग्रंथितसंदितदृढततविस्तृतविस्तृतत्रितीन॥अंतर्गतवि
 स्मृतजुगलप्राणीहितप्राप्तिप्रवीन॥९१॥छोडेकंपितके८
 भेजेहुयेके७।धरेहुयेके२।चुरायेके२।फैलनेके२।
 नाम॥दोहा॥वेल्लितप्रंखितधृतधृतकंपितचलितकसि
 द्ध॥नुत्तनुत्तनिष्ठतअरु।अस्तोक्षिप्रआवेद्ध॥९२॥ईरितसा
 तहि।निवृततौपरीक्षिप्रजुगजोय॥मूषितमुषितहिप्रसृत
 तौद्वितीयप्रवृद्धहिहोय॥९३॥फेंकेके२।गुरोहुयेके२
 वढेके२।छिपेके२।धूलिलगेके२।नाम॥दोहा॥
 न्यस्तनिष्ठहिआहतनुगणितहिउपचितसोतु॥निदि
 ग्धगूढतुगुप्तजुगगुडितरूषितहोतु॥९४॥रसीलेके२
 उठायेहुयेशस्त्रादिके२।छीकामैधरेके२।सूँचेके२
 चंदनादिलगायेके२।नाम॥दोहा॥दुतअवदीर्णहि
 उद्यततु।उद्गर्णहिजुगदिप्त॥काचितशिक्षितप्रागतौ

ज्ञातं दिग्धं तौ लिप्तं ॥ ८६ ॥ कूपादि सैनिकाले के २। नदी
 आदि सैंधिरे के ५। दूटे के २। नाम ॥ दोहा ॥ उद्धत तौ
 समुद्रक्तं जुग वेष्टित तौ संवीत ॥ रुद्धं रु आचूत वलयित हि रु
 ३। नं जुग मीत ॥ ८७ ॥ तीखे के ४ पके के २। लज्जित के ३।
 वृत्त। वा। वरणा किये के २। नाम ॥ दोहा ॥ प्रान्त तु स्था
 तते जित निशित विनाशोन्मुख तु पक्व ॥ ह्रीं रां ह्रीं लज्जित
 हि। वृत्त तौ। वा वृत्त हितक्व ॥ ८८ ॥ मिलाये के २। मिलने यो
 ग्य के ३। वहते के ४। नाम ॥ दोहा ॥ संयोजित तु उपाहि
 त हि। समासाद्य तौ प्राप्य ॥ गम्यं हरी रां तु। स्यन्ते स्तुते स्तुत
 जुत चारि हिषाप्य ॥ ८९ ॥ जोड़े हुये के २। निंदित के २।
 नाना प्रकार के ४। धिक्कारे के २। पिसे के २। सहज कि
 ये के २। नाम ॥ दोहा ॥ संशुद्धं तु संकालितं जुग ख्यात गर्ह
 रां तु अप ॥ अवगीत हि। बहुविध सुतौ। विविधं रु। नाना रू
 प ॥ ९० ॥ पृथग्विधं ह। अवेरा तौ। धिक्कृतं जुग ही वांठ ॥ अ
 वस्ते अवचूर्णित हि। अनायास कृतं फाट ॥ ९१ ॥ वाज
 ते के २। बंधे के २। अच्छे पके के २। नाम ॥ दोहा ॥
 स्वनित ध्वनितं जुग वद्ध तौ। संदानित सित मृत ॥ संदित मु
 दित हि। कायित तौ। निष्यक् हि जुग कृत ॥ ९२ ॥ पके घी
 आदिको १। मुनि अग्नि आदिके मुक्त होने को १।
 पवन रहित को १। पके के २। हंगे के २। मूते के २।
 ॥ दोहा ॥ श्रुतं सक हि। निर्वाणं इक निर्वातं हु इक

चीढ ॥ पक्क तु परिणतै गून तौ हनै हि मूत्रित मीढ ॥ १०३ ॥
 क्षमा युक्त के २। मोटे के २। उलटी किये के २। इं-
 द्रिय जित के २। माँग के २। मिट जाने के २। नाम।
 दोहा ॥ शांत सोढ पुष्ट तु पुषित उद्भूत जुग उद्भूत ॥ द-
 मित दांतै प्रार्थित सुतौ अर्दितै शमित तु शांत ॥ १०४ ॥
 जाने हुये के २। ठके के २। पूजे के २। पूरे के २। ले-
 शित के २। नाम ॥ दोहा ॥ जप जपितै छादित सुतौ कुनै
 हि पूजित सोतु ॥ अंचित पूर्ण तु पूरितै हि लिखित लिखै
 जुग होतु ॥ १०५ ॥ समाप्त के २। जरे के ४। सूक्ष्म कि-
 ये के ३। छेदे के ३। नाम ॥ दोहा ॥ अवसित सितै ही पुष्ट
 तौ पुष्ट उषित चव दग्ध ॥ तष्ट तु त्वष्ट तनूकतै हि वेधि-
 त छिद्रित विद्ध ॥ १०६ ॥ विचारे के ३। निस्तेज के ३। पि-
 घले घी आदिके ३। सिद्ध के ३। फारे के ३। विने व-
 स्त्र आदिके ३। पूजे के ६। सेवित के ४। नाम ॥ दो-
 विन्न विचारित वित्त त्रय निःप्रभं विगत अरोक ॥ विदुत
 द्रुत रुविलीन त्रय अथ निर्वृत्त त्रिथोक ॥ १०७ ॥ सिद्ध ओ-
 र निष्पन्न हू दारित भेदित भिन्न ॥ उत्त स्यूत उत्त अर्हित तु अ-
 र्चित अपाचित गेन्न ॥ १०८ ॥ अपचायित रुन मस्यित रुन-
 मसित उपचरित स्तु ॥ वारे वासित वरि वासित थाने उपावसि-
 त चव अस्तु ॥ १०९ ॥ दून वा। तपे के ४। हर्षित के ६। ना-
 म ॥ दोहा ॥ सतापित धूपायित रुधूपित अरु संत

हृष्टं मत्तं प्रहृष्टं षट् प्रमुदितं प्रीतं रु त्पु ॥ ११० ॥ कटे के
 चान्चूये के ७ । नाम ॥ दोहा ॥ छिन्नकातं लूनं रु दृक्कां दि
 तं कृतं रु दातं ॥ स्वस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं रु गलितं स्कन्नं पन्नं च्युतं ता
 त ॥ १११ ॥ भूत । वा । पाये के ५ । ढुंढे के ५ । नाम ॥ दोहा ॥
 लब्धं प्राप्तं आसादितं रु भावितं विन्नं हि दृष्टं ॥ अन्वेषितं मा
 गितं स्तुगितं गवेषितं रु अन्विष्टं ॥ ११२ ॥ गीले के ७ । गुप्त
 । वा । रक्षित के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ आर्द्रं सार्द्रं त्तिन्नं रु ति
 मितं स्तिमितं समुन्नं रु उन्नं ॥ त्रातं चारां रक्षितं अवितं पञ्च गो
 पायेतं जुक्तं ॥ ११३ ॥ अवमत । वा । अपमान किये के ४ ।
 त्यागे के ६ । नाम ॥ दोहा ॥ अवज्ञातं अवगणितं अवमा
 नितं अरु परिभूतं ॥ त्यक्तं तु उत्सृष्टं रु विधुतं हीनं समुज्झितं
 धूतं ॥ ११४ ॥ उक्त । वा । कहे के ६ । प्रतिपन्न । वा । जाने
 गये के ६ । नाम ॥ दोहा ॥ माषितं अभिहितं जल्पितं रु ल
 पितं उदितं आख्यातं ॥ बुद्धं बुधितं अवगतं मानितं अवसितं
 विदितं हितात ॥ ११५ ॥ अंगीकृत के ११ । स्तुति किये के
 खाये गये के १४ । नाम । दोहा ॥ ऊरीकृतं उरीकृतं रु आ
 श्रुतं संश्रुतं जानि ॥ प्रतिज्ञातं अंगीकृतं रु सोयं समाहितं मा
 नि ॥ ११६ ॥ और उग्रश्रुतं संविदितं उपगतं अरु संगीर्तं ॥ इलि
 तं शस्तं पराणयितं रु प्रणुतं प्रणीतं अपिगीर्तं ॥ ११७ ॥ पनितं प
 नायितं अभिषुतं वारीति ईडितं तात ॥ भक्षितं चर्वितं खादितं
 गीनितं अरु प्सात ॥ ११८ ॥ प्रत्यवसितं अभ्यवहृतं रु

अशितं भुक्तं अरु सोय ॥ अन्नं जग्धं अरु ग्लस्तं पुनि ग्रस्तं चतुर्द
 श होय ॥ ११८ ॥ अतिशयार्थ मै १२ कै १२ आदेश होते
 हैं ॥ कृप्य ॥ क्षिप्र होय क्षेपिष्ठं सुद्र क्षोदिष्ठं वरवानौ ॥ होय
 अभीक्षितं प्रेषं वरिष्ठं हि पृथु ठामामौ ॥ पीवरं स्तु स्य विष्ठं
 बहुल वंदिष्ठं सदागानि ॥ बाढ सुतो साधिष्ठं व्यायतं तुद्रा वि
 ष्टं हिभानि ॥ बहुत तु स्फेष्ठं गुरुं गरिष्ठं हि वामनं तु हसिष्ठं जा
 निये ॥ अथ वृंदारकं वृंदिष्ठं ये अतिशयार्थ मै मानिये ॥ १२०

इति विप्रोष्यानिघ्नतरंगः समाप्तः

अथ संकां ॥ तरंगलिख्यते ॥ *

साकल्यवचनको १ आसंगवचनको १ स्वतंत्रता
 के २ विनाकारास्थितिको १ नाम ॥ दोहा ॥ पराय
 रा साकल्यवच परायरा तु आसंग ॥ दोय. यदृच्छा स्वैरिति
 एकविलक्षरा अंग ॥ १ ॥ शान्तिके ३ इन्द्रीनिग्रहके ३
 सुकर्मके २ काम्यदानके २ नाम ॥ दोहा ॥ शान्ति श
 मथं शर्मदाति तो दमथं दमं हि अबदान ॥ कर्मवृत्तं ह
 प्रवाररा काम्यदान जुगजान ॥ २ ॥ वशीकरराके २ उच्चा
 टनके २ कांपनेके २ अधायेके ३ नाम ॥ दोहा ॥
 वशक्रिया संवदन जुग काम्यरा तु मूलकर्म ॥ विघ्ननं तु वि
 धुवनं अवनं तर्परा प्रीणनं पर्म ॥ ३ ॥ रक्षा करने के ३ सीने
 के ३ फूटनेके ३ नाम ॥ दोहा ॥ परिचारा पर्याप्ति त्रय
 हस्त वाररा हि आहि ॥ सेवनं सीवनं स्यूते त्रय विट्

भिदां हि ॥ ४ ॥ गालीके २ अनुभवज्ञानके २ सर्वत्र
 व्याप्तिके २ भिक्षाके ४ कारनेके २ कुशलानन्द
 के ३ नाम ॥ दोहा ॥ अभीषंग आक्रोशनी हि वेदना तु सं
 वेद ॥ अभिव्याप्तिं समूर्खनी हि भिक्षा याच्चां भेद ॥ ५ ॥ चारि
 अर्थना अर्द्धना वर्द्धनं वेदनं दोष ॥ समाजनं तु आनन्दनं
 आपन्नं न विजोय ॥ ६ ॥ उत्तमोपदेशके २ हानिके २
 लेनेके २ इच्छाके २ रक्षाके २ प्रवृत्तके २ नाम
 दोहा ॥ संप्रदायं आम्नायं जुगलक्षितं ह्ययं हि ग्रहं ग्रह
 ॥ वरं तु कांतिं रक्षणां सुतौ नारां रणां तु करणं आह ॥ ७ ॥ क
 दनके २ पकानेके २ बुलानेके २ वरदानके २
 जरानेके २ नीतिके २ जीर्णके २ नाम ॥ दोहा ॥
 व्यर्थवेधं हि पाकं तु पचं हवं हूतिं हि वरं वृत्तिं ॥ ओषं तु से
 षहि नायं नयं ज्यानिं तु जीर्णं प्रवृत्तिं ॥ ८ ॥ भ्रमके २
 वढतीके २ प्रसिद्धताके २ कूनेके २ भरनेके २
 वढनेके २ नाम ॥ दोहा ॥ भ्रमं भ्रमिं स्फातिं तु वृद्धिं जु
 गलप्रयाख्यातिं जुगजोय ॥ एतत्तिष्ठं हि स्तवतु स्तवं स
 त्त्विं राधां दोष ॥ ९ ॥ फरकनेके २ सच्चाज्ञानके २ ज
 न्मके २ घाँ आदिके टपकनेके २ ग्लानिके २ ना
 म ॥ दोहा ॥ स्फुरणां स्फुरणां हि प्रमितिं तौ प्रमां हि प्रसव
 प्रसर्ति ॥ श्रुतं तु प्राधारं हि लभं तु लभयं हि जुगलुग
 ॥ १० ॥ वडाईके २ मिलापके २ प्रयोजनके २

हुकम।वा।आज्ञाकरनेके२।लीलनेके२।नाम॥दोहा
 उत्कर्ष'तु अतिशय'हि अथश्लेषसंधि'विषय'स्तु॥आश्रय'क्षेप
 रां'नौ क्षिप'गीर्ण'तु गिरि'ही अस्तु॥११॥उठानेके२।उद्यम
 के२।आश्रयके२।जीतके२।खुशीके२।कहनेके
 २।नाम॥दोहा॥उन्नय'उ.न्नाय'हि गुणा'उद्यम'श्रय'रां
 तु श्राय'॥जयन'जय'हि माद'तु मद'हि निगद'निगाद'गनाय'
 १२॥मीजनेके२।उद्देगके२।अंगीकारके२।नाम
 ननेको२।नाम॥दोहा॥विमर्दन'तु परिमल'हि उद्भ
 म'उद्देग'हि शुद्ध॥अभ्युत्पत्ति'अनुग्रह'हि निग्रह'तासु विरुद्ध॥१३॥
 लडाई'मै पुकारनेके२।मूंठी बांधनेके२।लटनेके
 ३।बांधनेके२।नाम॥दोहा॥अभियह'तु अभियोग'जु
 ग'मुष्टि'बंध'संग्रह'॥डि'बंडमर'विप्लव'प्रसिति'बंधन'चार'त्रिअ
 ह॥१४॥संतापके३।अपकारके२।अभिप्रायके३।
 नुरूप'चेष्टित'के३।प्रकृति'के बदलनेके२।नाम॥
 स्पष्ट'तु उपतप्ता'स्पर्श'विप्रकार'तु निकार'॥इंग'आकार'इंगि
 त'हि जुग'परिणाम'विकार'॥१५॥विरुद्ध'करनेके२।छीन
 लेनेके२।बटोरनेके२।लेनेके२।खेल'मै पांव'सैं
 चल'वाके२।चोरी'कर'दाके२।युक्ति'सैं शास्त्रादि'नि
 काल'वाके२।नाम॥दोहा॥विक्रिय'विकृति'हि अपचय'तु
 होय'द्वितीय'अपहार'॥समाहार'तु समुच्चय'हि अथ'जुग'प्र
 त्याहार'॥१६॥उपादान'हि परिक्रम'तु द्वि'विहार'हि अभिहार'॥

अभिग्रहणं निर्हारतौ अभ्यवकर्षणं चार ॥ १७ ॥ न कलकरदा
 के २। स्वर्चको १। वहवके २। वाहजावाको १। सयमने
 दीजागवाके २। हिंसाके २। विघ्नके २। नामा दोहा ॥
 अनुहारतु। अनुकार'व्यय'इकहि। प्रवृत्तिप्रवाह' ॥ प्रवह'एक।
 संपम वियम संयामे रु। यम आह ॥ १८ ॥ याम वियाम हि जागरे
 जागर्यो जुग ऊह ॥ अभिचारतु हिंसा करम अंतराय प्रत्यूह ॥ १९ ॥
 ॥ पासके आश्रयके २। उपभोगके २। परिवारके २।
 वडा वियोगके २। नाम ॥ दोहा ॥ अंतिकाश्रय तु उपघ्राहि
 उपभोगतु निर्वेश ॥ परि सर्प'स्तु परिक्रिया विधुरतु प्रविश्लेष
 ॥ २० ॥ अभिप्रायके के ३। संक्षेपके २। विगाडके २।
 नाम ॥ दोहा ॥ अभिप्राय तौ छंदत्रय आशय समसन सोतु ॥
 संक्षेपणो हि विरोधन तु द्वि पर्यवस्था होतु ॥ २१ ॥ सब ओर
 फैलवाके २। आसनके ३। विस्तारके ३। नाम ॥ दोहा
 परि सूर्यो परिसार जुग आस्यां तौ स्थिति जानि ॥ आसना हि
 विस्तार तौ विग्रह व्यास त्रिमानि ॥ २२ ॥ शब्द विस्तारको
 १। अंग मज्जिवाके २। लोपके २। परिचयके २। नाम ॥
 दोहा ॥ विस्तर'इक। संवाहनतु मर्दन जुगल विनाश ॥ अ
 दर्शन'हि संस्तव सुतौ परित्रय दोय प्रकाश ॥ २३ ॥ घावके फै
 लनेके २। धनादि संग्रहके २। परोसके २। अन्नका
 रवाके ३। नाम ॥ दोहा ॥ प्रसर विसर्पण प्रयाम तु नीवाक
 नि दर्शाव ॥ सन्निकर्षण तु सन्निधि'हि लव तुलवन अभिलाव

॥२४॥ अन्नादिसाफकरवाके ३। प्रसंगके २। गरीब
 नावाके २। प्रथमगर्भके २। नाम॥ दोहा॥ पवतु पवन
 निष्पावै त्रय अवसर तौ प्रस्तावै॥ चसर सूत्र वेष्टनै प्रजन तौ
 उपसर जुग भाव॥ २५॥ प्रेमके २। बुद्धि शक्ति के २।
 कोटके रस्ताके २। उद्योगके २। नाम॥ दोहा॥ प्रश्र
 य प्रणयै हि निष्क्रमतु धी शक्ति हि संक्राम॥ दुर्ग संचर हि
 प्रक्रमतु उपक्रम हि जुग नाम॥ २६॥ युद्धके वढावके २।
 प्रथमारंभ। वा। आरंभ मात्रके ३। वेगके २। नाम। दो
 हा॥ प्रयोगार्थ प्रत्युत्क्रम हि आरंभ तु उद्घात॥ अभ्यादान
 ह संभ्रम तु त्वरा हि जुग जुग तात॥ २७॥ कार्यके रुकवाके
 २। गिरवाके २। साक्षातकारके २। तिलककरवा
 के २। नाम॥ दोहा॥ प्रतिष्ठं प्रतिबंधं जुग निपातन तु
 अवनाय॥ अनुभव उपलंभ हि समालंभ विलेपन गाय॥ २८॥
 स्नेह तोडनेके २। अतिदानके। अति प्रसिद्ध के २।
 पदार्थोंके देखनेके २। पढवाके ३। गीला करवाके ३।
 लेशके ३। नाम॥ दोहा॥ विप्रलंभ विप्रयोग हि अति स
 र्जन तु विलंभ॥ प्रविख्याति विप्रावै जुग प्रति जागर तु अं
 भ॥ २९॥ अवेष्टा हि णाठ तु निपठ निपाठ ते म तु स्ते मे॥
 स संकुल ह आदीन वतु आश्रव लेश हि नेम॥ ३०॥ मेल
 के ३। दूँदवाके ५। लिपटवाके ४। देखवाके ६। नाम
 दोहा॥ मेलक संगम संग त्रय विचयन मार्ग रा देष॥ संली

सारा नृगणां मृगं हि परिरंभंतु संप्लेबे ॥ ३१ ॥ परिष्वंगे उपगूहनं
 हि निर्वर्णनं निध्यानं ॥ अलोकनं रु. निरोक्षणां रु. ईक्षणां दर्शनं
 नान ॥ ३२ ॥ निराकरणां वा. निरादरकरवाके ४। यह
 रके सोने वाले के २। चिनावाके ४। उलटा पुलटा
 के ४। अतिक्रमके ४। सेवकों कौं तुलाकर भेजवाको
 शयज्जमै ब्राह्मणा की स्तुति स्थान को १ जिसका छपे
 का छुरण कर घड़ते हैं उसको १। नाम ॥ दोहा ॥ प्रत्या
 देशो निराकृते रु. निरसनं प्रत्याख्यानं ॥ उपशायं 'स्तु. विशायं'
 जुग अर्तनं चुरां सुजान ॥ ३३ ॥ चारि. चरतीयां हरायीं व्यत्यय
 तो वित्यासं ॥ विपर्ययं अरु. विपर्ययं अतिक्रमं स्तु प्रकासं ॥ ३४
 उपात्ययं रु. अति पातं पुनि. पर्ययं चारि वरदानि ॥ प्रतिप्राप्त
 नं सस्तावै अरु उदयनं इक इक जानि ॥ ३५ ॥ रवे ता. वा. स
 तो के २। वरमाको १। वरवर जमे वृहसन को १। अन्न
 आदिके निकालने के २। चौं क को १। डकार को १। व
 मन को १। निगलवाको १। निवृत्तिके ४। धूकने के ४
 देश के २। अंत के २। ज्वर को २। पशुओं के ललकारने
 के २। नाम ॥ दोहा ॥ स्तवघनं तु. स्तवघ्नं जुग आविधं इक
 निषं आह ॥ उत्कारं स्तु. निकारं जुग विक्षातं रु. उदग्राह ॥
 ३६ ॥ अरु उदगारं निगारं अवरातिं तु. विरातिं उपरामे ॥ आ
 निषं निषेवतौ. निषेवनं तिहिं नाम ॥ ३७ ॥ निष्ठीवनं निष्पू
 रणं निषेवनं जूति अवसानं ॥ सातिं हि ज्वरे जूतिं हि उदजं पशु

मेरसां जुग नान ॥ ३८ ॥ शापको १। उपगव का समूहको
 १। पूवा का समूहको १। पूरी का समूहको १। मनुष्य
 ।वा। लडकों का समूहको १। मित्रों का समूहको १।
 नाम ॥ दोहा ॥ अकराणों इक औपगवकें ह आ पूपिकें इक
 मानि ॥ शाष्कुलिकें हु माराव्यें इक इक सहायतां जानि ॥
 ३८ ॥ हलों का समूहको १। ब्राह्मणों का समूहको १।
 पशुडियों का समूहको १। पीठके समूहको १। ख
 लों के समूहके २। नाम ॥ दोहा ॥ हल्यो इक ब्राह्मण
 तो वाडव्यें हि जुग जोय ॥ पार्श्वें एछ्यें इक इक जुग तु खले
 नी खल्यो होय ॥ ४० ॥ मनुष्यों का समूहको १। गावों के
 समूहको १। जनों के समूहको १। धूर्वां के समूहको
 १। फांसी के समूहको १। बड़ी काश का समूहको १।
 नाम ॥ दोहा ॥ मानुष्यकें इक ग्रामतां जनतां धूम्यो जानि
 ॥ पार्श्वों गल्यो आदि ह भिन्न भिन्न पहिचानि ॥ ४१ ॥ चर्मके
 समूहको १। हजारके समूहको १। अथर्वरा के स
 मूहको १। करसी के समूहको १। नाम ॥ दोहा ॥ च
 र्मरां अरु साहस्र पुनि आथर्वरां कारीष ॥ आदि शब्दतिहि
 वृन्द मै भिन्न भिन्न ही दीष ॥ ४२ ॥

इति संकीर्णतरंगः

अथ अनेकार्थतरंगलिरव्यते ॥

नाकके २। लोकके २। श्लोकके २। प्रायकके २।

॥ दोहा ॥ नार्क^१ विदिव आकाश^१ मैलोक^१ भुवन^१ जन^१ जानि ॥

स्लोक^१ पद्य^१ यश^१ शायक^१ तु शर^१ रुख^१ वड^१ मैमानि ॥ १ ॥ जंबुक

के २। पृथुक^१ के २। आलोक^१ के २। आनक^१ के २। नाम

॥ दोहा ॥ जंबुक^१ कोष्ट^१ रुख^१ वरुण^१ ही पृथुक^१ चिपिट^१ शिशु^१ हे

रि ॥ आलोक^१ तु द्योत^१ रुदर^१ आनक^१ पटह^१ रुभेरि^१ ॥ २ ॥

अंक^१ के २। कलंक^१ के २। तक्षक^१ के २। अर्क^१ के २। ना

म ॥ दोहा ॥ अंक^१ तु चिन्ह^१ रुगोद^१ ही कलंक^१ अंक^१ कुवा

द ॥ तक्षक^१ घाती^१ नागभिद^१ अर्क^१ स्फटिक^१ रवि^१ वाद ॥ ३ ॥

के ३। कंक^१ के २। पुलाक^१ के ३। पेचक^१ के २

३। नाम ॥ दोहा ॥ कंक^१ तु मारुत^१ विधि^१ रवि

रंभु^१ निहारि ॥ पुलाक^१ स्तु संक्षेप^१ अरु तुच्छ^१ धान्य^१ नि

॥ ४ ॥ भक्ताशिक्षक^१ हृपेचक^१ तु गजदुममूल^१ उपांत ॥ धूक^१ हु

करक^१ तु दारिम^१ रुओलोकरवा^१ शांत ॥ ५ ॥ विनायक^१ के

३। किष्क^१ के २। वृश्चिक^१ के २। नाम ॥ दोहा ॥ विनोय

क^१ तु बुद्ध^१ रुगरुड^१ गरापति^१ किष्क^१ तु जानि ॥ हाथ^१ विलोद^१

हि वृश्चिक^१ तु विच्छ^१ राशि^१ वरवानि ॥ ६ ॥ कौशिक^१ के ७।

नाम ॥ दोहा ॥ कौशिक^१ तौ गुग्गुलु^१ नकुल^१ उल्लू^१ व्यालय

हि ॥ सुरपति^१ अरु कोशज्ञ^१ पुनि विष्वामित्र^१ ह आहि ॥ ७ ॥

अंतक^१ के ३। क्षुल्लक^१ के २। जैवात्यक^१ के ३। नाम ॥ दो

हा ॥ आतक^१ तु रुजतापंड^१ क्षुल्लक^१ अल्प^१ रुनीच^१ ॥ जैवात्य

क^१ तु राय^१ शाश्व^१ कुश^१ ह तीन अपीच ॥ ८ ॥ पुंडरीक^१ के ५।

नाम ॥ दोहा ॥ पुंडरीक^{३५} सित कमल अरु अग्निकोरा ग
 ज जानि ॥ व्याघ्र कोषा कारांतर रुसेत कवच पंचमानि ॥ टी ॥
 दीपक के ४। शालावृक्ष के ३। नाम ॥ दोहा ॥ दीपक^{३६}
 एक अलंकृत रु मोर शिखा अजवानि ॥ अजमोद ह शाला
 वृक्ष तु कोष्ठ प्रधान कपि जानि ॥ १० ॥ अलीक के २। अनूक^{३७}
 के २। शालक के २ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ अप्रिय भूठ अलीक^{३८}
 है वंश स्वभाव अनूक ॥ शालक तु वल्कल खंड ही जुग जुग अ
 नूक ॥ ११ ॥ निष्क के ४। कल्क के ३। नाम ॥ दोहा
 कनक उर भूषण रु सुवर्ण इक सौ आठ ॥ दीनार ह
 क^{३९} तु शंभल रान स दंभ हि पाठ ॥ १२ ॥ पिनाक के २।
 धेनुक के २। कालिका के २। नाम ॥ दोहा ॥ पिनाक^{४०}
 शंकर धनुष शूल धेनु को सोतु ॥ करिणी धेनु हि कालि^{४१}
 को काली घनगन होतु ॥ १३ ॥ कारिका के ४। करिणी का
 के ३। नाम ॥ दोहा ॥ कारिकी तु कृति यातना नटति य^{४२}
 शिल्पि हिरंज ॥ करिणी तु श्रुति भूषण रु करिकराग्र मध्य
 कंज ॥ १४ ॥ वृंदारक के ३। एक के ५। नाम ॥ दोहा ॥
 वृंदारक तो देव अरु सुन्दर श्रेष्ठ वरदानि ॥ एक तु इक सु
 ख रु इतर के बल श्रेष्ठ पिछानि ॥ १५ ॥

इतिकांता:

मयूरव के ३। शिलीमुख के २। पारव के ३। नाम ॥ दो
 हा ॥ मयूरव ज्वाला कवि कि रा शिलीमुख तु अलि

शंखैतुडकनिधिकं वु अरु ललाटास्थि त्रयजारा ॥ १६ ॥
 खके ६। शिखाके ३। नाम ॥ दोहा ॥ खैतु इंद्रियपु
 स्तेन अरु प्रहृत्य विन्दु आकाश ॥ शिखा सुतौ ज्वाला किर
 रा चोटी ॥ तीन विभाश ॥ १७ ॥ इति रवांताः ॥

नग और अगके २। आशुगके २। खगके ३। पतंग
 के २। नाम ॥ दोहा ॥ नग और तौ गिरि वृक्ष ही आशुग
 वायु रु चारा ॥ खग शर अर्क विहंग त्रय पतंग रवि खग
 जारा ॥ १८ ॥ पूगके २। मृगके ३। वेगके २। नागके
 २। नाम ॥ दोहा ॥ पूग सुपारी वृंद ही मृग उडु हे मृग
 दि ॥ देय प्रवाह रु शीघ्र तौ नाग तु गज अहि वादि ॥ १९ ॥

परागके ४। सर्गके ५। नाम ॥ दोहा ॥ परांग सु उवट
 न ग्रहरा धूलि पुष्करज भाव ॥ सर्ग त्याग अध्याय अरु नि
 श्वस्य स्थिति स्वभाव ॥ २० ॥ योगके ५। भोगके ४। नाम ॥ दो
 हा ॥ योग उपाय रु सन्नहन संगति युक्ति रु ध्यान ॥ भोग
 तु अहिकोडी लफरां सुख तियादि भ्यते नान ॥ २१ ॥ सार
 गके ३। गोक ५। नाम ॥ दोहा ॥ सारंग तु चातक हरि रा
 क वर रंग विधारि ॥ गोक देव भू पशु वाक दिश वज्र किरा
 द्य वारि ॥ २२ ॥ वरांगके २। प्रदंगके २। भगके ७। नाम
 ॥ दोहा ॥ वरांग सु शिर योनि ही प्रदंग तु प्रभुता सानु ॥ भ
 ग श्री काम महात्म अरु वीर्य वल जसमानु ॥ २३ ॥

इति गांताः

परिधके २। ओघके २। अर्घके २। अघके ३। नाम
 ॥ दोहा ॥ परिधं तु मारव अस्त्रभिर्द ओघैर्द्वंद्वजव आपै ॥ अर्घमे
 ले पूजा विधि हि अर्घं दुरव व्यसनं रुपापै ॥ २४ ॥ इति धांताः ॥
 काचके ३। प्रपंचके ३। नाम ॥ दोहा ॥ काचं तु क्लीको मृ
 द्भिर्द रुनेत्ररोगं त्रयवीन ॥ प्रपंचं स्तु विपरीत अरु ठगवो वि
 स्तरं तीन ॥ २५ ॥ शुचिके ६। रुचिके ४। नाम ॥ दोहा ॥
 शुचि पावक सित मासभिर्द ग्रीष्म शुद्ध प्रदंगार ॥ रुचि शोभा
 अभिलाष कर अभिष्वंग निर्धार ॥ २६ ॥ इति चान्ताः ॥
 अच्छके २। गुच्छके २। कच्छके ३। नाम ॥ दोहा ॥
 अच्छं प्रसन्न रूढ ही। गुच्छं स्तवक अरु हार ॥ कच्छं पहि
 रवो जलतट रु वस्त्र छोर निर्धार ॥ २७ ॥ इति क्वांताः ॥
 अहिभुजके २। द्विजके ३। अजके ६। नाम ॥ दोहा ॥ अ
 हिभुजके कीं गरुड ही। द्विज रद विप्र विहंग ॥ अजं तु विष्णु
 हां छाग विधि रघुसुत और अनंग ॥ २८ ॥ व्रजके ३। धर्म
 राजके ३। कुंजके २। नाम ॥ दोहा ॥ व्रजं तु अध्व अरु गोष्ठ
 चय धर्म राज यम दुद्ध ॥ युधिष्ठिर ह कुंज तुरदन गज को कुं
 ज ह शुद्ध ॥ २९ ॥ वज्रलके ४। प्रजाके २। अजके २। नाम
 दोहा ॥ वज्रं तु गोपुर क्षेत्रं पुनि शस्य रुसंगार चारि ॥ प्रजा
 जन रु संतान जुग अज प्रारव प्राप्ति धारि ॥ ३० ॥ इति ज्ञांताः
 ॥ क्षेत्रज्ञके २। संज्ञाके ४। नाम ॥ दोहा ॥ क्षेत्रज्ञं तु आत्मा
 चतुर संज्ञा गति राविनारि ॥ गायत्री हस्तादि करि अर्थ सूचन ॥

चादि ॥ ३२ ॥ इति जंताः ॥ कटके २। कटके २। शिपि
 दिष्टके ३। नाम ॥ दोहा ॥ कटके काकं इभगालं ही। कटके तु
 कमरि गल गालं ॥ शिपि विष्टे तु शिव दुश्चर्म रुज सैं शिर वि
 न वालं ॥ ३२ ॥ कटके ३। अरिष्टके ४। नाम ॥ दोहा ॥ कटके
 अकाज अभिमान पुनि तीक्ष्ण रासैं हू जानि ॥ अरिष्टे मदि राशु
 भ अशुभ मरणा चिन्ह पहि चानि ॥ ३३ ॥ कटके ८। नाम।
 दोहा ॥ कटके तु आयानि श्रुतं रुजं रुजं कैतव राशि ॥ अन्यत
 अयोचनं गिरि शिखर अरु सीरिंग प्रकाशि ॥ ३४ ॥ कुटि
 के ४। दृष्टिके ३। स्याष्टिके २। नाम ॥ दोहा ॥ कुटि संशय
 अत्यंत समय लघु इलायची च्यार ॥ दृष्टि ज्ञान दर्शन नयन
 स्याष्टि तु वहु निर्धार ॥ ३५ ॥ इति दांताः ॥ कोष्ठके ३। ज्येष्ठ
 के ४। नाम ॥ दोहा ॥ कोष्ठे तु कोटी उदर मध्ये अंतर्गृह हि
 अग्रंदा ॥ ज्येष्ठे तु अग्रज मास भिद अति उत्तम अति बृह ॥ ३६ ॥
 इति दांताः ॥ इडा ॥ और इलाके ४। कांडके ६। नाम
 दोहा ॥ इडा इला तो गो धरनि वाराणी बुध की नारि ॥ कांडे दं
 ड नि दित वर्ग वारा रु अवसर वारि ॥ ३७ ॥ इति दांताः ॥
 नाडके २। प्रगाढके २। दृढके २। नाम ॥ दोहा ॥ नाड
 सुतो अत्यर्थ चरु प्रतिज्ञा हु जुग अर्थ ॥ प्रगाढ सुदुख अति
 गवहि दृढ तो रत्न समर्थ ॥ ३८ ॥ इति दांताः ॥ पराके ५।
 गुराके ५। नाम ॥ दोहा ॥ परा द्यूत दिरु सोल धन मति उ
 त्पद्ये दिवादि ॥ गुरा चित्तो द्यूत अति रु सत्व शुक्ल संध्या

दि॥ ३८॥ अरुणाके ३। वरीके ४। नाम॥ दोहा॥ क्षण निर्व्याप
स्थिति रु॥ मह रु॥ काल भिद वादि॥ वरुण तु अक्षरं सतुति अरु॥ च
व द्विजादि शुल्कादि॥ ४०॥ अरुणाके ३। ग्रामराजीके ३। नाम
दोहा॥ अरुणा तु राविको सारथि रु॥ रवि रु॥ लाल रंग तीन॥ ग्रामराजी
तु नापित रु॥ वरं ग्रामाधिपं त्रयवीन॥ ४१॥ तीक्ष्णाके ४। प्रमा
णाके ५। नाम॥ दोहा॥ तीक्ष्ण तु विष रसां लोहं स्वरं प्रमाणां स्तु
मर्याद॥ हेतुं रु॥ ज्ञाता पांचही॥ शास्त्र द्वयत्ता वाद॥ ४२॥ करणा
के ३। संसरणाके ३। नाम॥ दोहा॥ करणा तु साधक तम रु॥
तनुं क्षेत्रं दन्द्रियं हि धारि॥ संसरणां तु प्राणां जनमं सडकं च मू
गतिभारि॥ ४३॥ विषाराके २। प्रवराके ३। नाम॥ दोहा॥
विषारां स्तु पशुसीमं अरु॥ गजको दंतं द्विमानि॥ प्रवरां क्रमनि
म्न भूमि अरु॥ नम्रं चतुष्पथं जानि॥ ४४॥ इति रांताः ॥

जीमूतके ४। हस्तके ४। नाम॥ दोहा॥ जीमूत तु धृति कर
रु॥ धन देवता ड गिरि जोय॥ हस्त हाथ अरु॥ स्रुडि उडु सप्रको
ष्ट कर होय॥ ४५॥ सूतके ७। नाम॥ दोहा॥ सूत तु तक्षा सार
थि रु॥ विषाक्षत्री पूत॥ वंदि भेद पारद अपर प्रेरित और प्रसृत॥
४६॥ क्षत्ताके ३। वृत्तान्तके ५। नाम॥ दोहा॥ क्षत्ता सारथि
दास्य अरु॥ शरद क्षत्रिया जात॥ वृत्तान्त तु प्रकरणा रु॥ भिद वार्ता
रु॥ हितात॥ ४७॥ आनर्त्तके ३। कृतान्तके ४॥ नाम॥ दो
हा॥ आनर्त्त तु चरन्त्यको समर रु॥ देश विशेष॥ कृतान्त यमनि
द्वान्त पनि दिव रुपाय अशेष॥ ४८॥ धातुके ७। नाम॥ दोहा॥

धौतु अश्मविकार अरु इन्द्रियं रसरक्तादिं ॥ महाभूततिनके
 सुरांरु शब्दयोनिस्तेषादिं ॥ ४८ ॥ भूतिके ३ भोगवतीके २
 नाम ॥ दोहा ॥ भूति भस्मसम्पत्ति पुनि दंती कोष्टगार ॥ भोग
 वती तौ अहिन की नगरी सरिता चार ॥ ५० ॥ जगतीके ४ पंक्ति
 के ३ नाम ॥ दोहा ॥ जगती जन अरु भवन भूछन्द सुदाद
 अंक ॥ पंक्ति तु आली दशगनति छन्द चरणा दश अंक ॥ ५१
 श्रुतिके ४ वनिताके २ नाम ॥ दोहा ॥ श्रुति तु श्रोत्र आम्ना
 य पुनि वात श्रोत्र को कार्य ॥ वनिता जाता राग तिर्य अरु तिर्य
 को नाम ॥ ५२ ॥ गुप्तिके ४ छतिके ५ नाम ॥ दोहा ॥ गुप्ति
 दीर्घ विलभूयिको कार रक्ष लेखि ॥ छति योगांतर धैर्य मख तु
 धिधारण ॥ देखि ॥ ५३ ॥ वार्त्तिके २ वार्त्तिके २ छतके २
 नाम ॥ दोहा ॥ वार्त्ति सोतौ वार्त्ति पुनि जानि जन श्रुति दोय ॥
 वार्त्ति अरोग रुफलु जुग छत्ति तु आज्य जल होय ॥ ५४ ॥ अमृ
 तके ८ नाम ॥ दोहा ॥ अमृत सलिल पियूष छत वज्र शेष
 सुर जानि ॥ धन्वतरि रु अयाचित रु मोक्ष हु आठ वखानि ॥ ५५
 भूतके ८ नाम ॥ दोहा ॥ भूत तु जंतु रुहमादि वृत उचित
 माप सम जोय ॥ सत्य पिशाचादिक अपरु देवयोनि इक होय
 ॥ ५६ ॥ अभिनीतके ५ संस्कृतके ३ नाम ॥ दोहा ॥ अभि
 नीत तु अति संस्कृतरु युक्त रु मधी तान ॥ संस्कृत भूषित रु
 विमरु लसरा जुत हि प्रवीन ॥ ५७ ॥ प्रतीतके ३ अभिजा
 तके ३ नाम ॥ दोहा ॥ प्रतीत तु विख्यात अरु सादर हृष्टनि

हारि॥अभिजात^{२५}तु.पंडित अपर.न्याय्य कुलीन विचारि॥५८॥
 इति तांताः॥अर्थके ४।तीर्थके ४॥नाम॥दोहा॥अर्थ
 प्रयोजन वस्तु^{अरु}रै'निवृत्ति अभिधेय॥तीर्थ'तु गुरु त्रय वि पूज्य
 जल निपान आगम ज्ञेय॥५९॥समर्थके ३।दशमीस्थके
 ३।नाम॥दोहा॥समर्थ'संवदार्थ'अरु.शक्तिमान हित जानि
 ॥दशमीस्थ'तु.अति बृद्ध अरु.सीरा राग पहिचानि॥६०॥वीथी
 के २।आस्थाके २।प्रस्थके २।नाम॥दोहा॥वीथी'पदवी'
 पंक्ति'अथ आस्था'सभा उपय॥प्रस्थ'मान को भेद अरु.गिरि
 को अग्र'गनाय॥६१॥इति थांताः॥कुन्दके २।अब्दके २।
 अपवादके २।दायादके २।नाम॥दोहा॥कुन्द'अधीन रु.
 आशय'हि अब्द वर्ष धन वाद॥अपवाद'तु.नि दाहक म सुत बां
 धव दायाद॥६२॥पादके ३।शादके २।आक्रंदके ५।ना
 म॥दोहा॥पाद'किरा पग च वथ.वट'शाद'कीच त्तरा को
 ॥आक्रंद'तु.रक्षक रुदित आर्त्त शब्द ररा मोट॥६३॥ककुद
 के ३।संविदके ५।नाम॥दोहा॥ककुद'प्रधान वृषांग पुनि
 राज चिन्ह सुख धाम॥संविद'ज्ञान सुभाषण रु.क्रिया कार ररा
 नाम॥६४॥पदके ६।मंदके ५।नाम॥दोहा॥पद'उद्यम
 रक्षणा चरण वस्तु चिन्ह अरु.स्थान॥मंद'मूढ असमर्थ शनि
 अल्प अभाग्य निदान॥६५॥इति दांताः अधिके ४।समा
 धिके ३।नाम॥दोहा॥आधि'अधिष्ठान रु.व्यसन बंधन
 न की पीर॥समाधि'स्तु नीवाक अरु.नियम समर्थ न घीर॥६६॥

अनुबंधके ४। नाम ॥ दोहा ॥ अनुबंध तु गुरसीष अरु दोष
 त्यादनिशंक ॥ शिशु शासनलय गुरुनकी हल इत संज्ञक अं
 क ॥ ६७ ॥ सिंधु के १। वधू के ३। साधु के २। नाम ॥ दोहा ॥
 सिंधु देन नंद अवि सति गज मद सावै विशेष ॥ वधू तुषा मा
 यो तिया साधु सज्जन तावे ॥ ६८ ॥ मधु के ८। अंध के २।
 नाम ॥ दोहा ॥ मधु मदिरा जल पुष्प रस सहित दैत्य भिद सीते
 ॥ चित्र वसंत अशोक दुर्ग अंध अदरा तम धीर ॥ ६९ ॥ इति धा
 ता ॥ चित्र मानु के २। भूतात्मा के २। प्रथम जन के २। नाम
 ॥ दोहा ॥ चित्र भर्तु रावे अग्नि अथ भोतु रश्मि रावे बीच ॥
 भूतात्मा धाता रतनु पथ रजन तु जड नीच ॥ ७० ॥ ब्राह्म के
 २। पत्री के ७। शिखरी के २। नाम ॥ दोहा ॥ ब्राह्म तो पाषा
 णांगिरे पत्री तो तह श्येन ॥ राख रुखिक गिरे कांड खगो शि
 खरी तह गिरि लेन ॥ ७१ ॥ शिखी के ६। विरोचन के ४। ना
 म ॥ दोहा ॥ शिखी रश्मि शुद्धि नोर वैल केतु गृह जानि विरो
 चन तु रावे अग्नि शशि दैत्य विशेष वरानि ॥ ७२ ॥ आत्मा
 के ७। अभिमान के ४। नाम ॥ दोहा ॥ आत्मा बुद्धि स्वभाव
 अति चित्त यत्न तनु ईश ॥ हित अभिमान धनादि मद ज्ञान
 रुहित दोष ॥ ७३ ॥ धन के ८। इन्द्र के २। नाम ॥ दोहा ॥
 धन तु लोह मुद्गर सुसत वाद्य सांद्र संधाल ॥ विस्तर काठिन्य
 रु जल दंड न तु मानु प्रभु तात ॥ ७४ ॥ राजा के ६। तनु के ५।
 ३३। नाम ॥ दोहा ॥ राजा शशि नट पहात्रि प्रभु यस

प्राक् षट् भेदः ॥ तनुं कृशं त्वकं तनुं विरलं कमं प्रह्वं तत्त्वं तपं
 वेदं ॥ ७५ ॥ गंधन के ४। आतंचन के ३। नाम ॥ दोहा ॥
 गंधनं सूचनं हिंसनं रू। प्रकाशनं रू। उत्साहं ॥ आतंचनं
 पयतकं युज्वेगं रू। तर्पणं आह ॥ ७६ ॥ व्यंजन के ४।
 कौलीन के २। नाम ॥ दोहा ॥ व्यंजनं लांकनं श्मश्रुपु
 निते मनि अवयवधारि ॥ लोकवाद कौलीनं अरु अहिप
 शुखग कीरारि ॥ ७७ ॥ उद्यान के ३। उत्थान के ६। नाम
 दोहा ॥ उद्योनं तु निःसरणं वन भेद प्रयोजनं नान ॥ पौरु
 ष उद्यमं तत्र ररा उठव ग्रंथ उत्थोनं ॥ ७८ ॥ साधन के ५
 नाम ॥ दोहा ॥ साधनं मारणं द्रव्य गति मृत संस्कार सुधा
 प ॥ अनुब्रज्या उपकरणां पुनि निवर्तनं रुधन दारप ॥ ७९ ॥
 निर्यातन के ३। व्यसन के ४। नाम ॥ दोहा ॥ निर्यातनं
 न्यासार्पणं रू। वैर शुद्धि पुनि दानं ॥ व्यसनं दोष कामज कु
 पज विषदं रू। भ्रंशं निदान ॥ ८० ॥ पद्मन के ४। पर्वन
 के ४। नाम ॥ दोहा ॥ पद्मं केशरो वाफणी अरणी रू। तत्त्वा
 द्यंशं ॥ पर्वं ग्रंथे तिथि भेद क्षणी अरु प्रस्ताव प्रशंस ॥
 ८१ ॥ प्रधान के ६। निधन के २। नाम ॥ दोहा ॥ गंधनं
 स्तु उत्तमं रू। मति परमात्मा रू। कत्व ॥ प्रकृति महापान
 हि। निधनं तो कुल अरु पचत् ॥ ८२ ॥ कंदन के २। धाम
 न के २। धामन के ४। नाम ॥ दोहा ॥ कंदनं हेलो रे पंचां
 र्धं तु देह प्रमाणा ॥ धामं तु गेहं रू। देह त्विदं च वयं प्रभावं

तुजान॥८३॥ आच्छादनके ३। आराधनके ३। नाम
 आच्छादन^{३३}संनिधानरु। अपवारणपुनि। चीर^{३३}॥ * ॥ आराध
 नतौ। साधनरु। तोषण। लाम^{३३}हि धीर॥८४॥ अधिष्ठान
 के ४। समानके ३। पिशुनके २। नाम॥ दोहा॥ अधि
 ष्ठान^{३३}पुरचक्रपुनि। अध्यासनरु। ग्रभाव^{३३}॥ समानपंडित
 समरु। दुर्क^{३३}पशुन^{३३}दुर्गलखलनाव॥८५॥ इति नांताः॥
 कलापके ५। परीवापके ३। नाम॥ दोहा॥ कलापस्तु
 भूषणवर्ह^{३३}कांचीगरातूरा^{३३}॥ परीवापे पर्युप्तिजलथिति
 रु। परीच्छद^{३३}धीर॥८६॥ गोपके ४। विटपके ५। नाम
 दोहा॥ गोपै^{३३}तु। गोधुर्कगोष्ठपतिवहतग्रामिपतिभूष^{३३}॥
 विटपै^{३३}स्तवपल्लवपिडग^{३३}प्राखीविस्तृत^{३३}रूप॥८७॥ इति
 पांताः॥ रेफके २। प्राफके २। गुंफके २॥ नाम। दोहा
 रेफै^{३३}रवरा^{३३}रु। कुस्ति^{३३}हि शफै^{३३}खुरत^{३३}कोमल॥ * ॥ गुंफै^{३३}
 तु। गुंफन^{३३}वाहुको अलंकार^{३३}हिकबूल॥८८॥ इति फांताः
 ॥ विंवके ४। कंबुकके ४। नाम॥ दोहा॥ विंव विंवफल
 मंडल^{३३}सुप्रतिविंव^{३३}रुक्कलासै^{३३}॥ कंबु^{३३}शंख^{३३}शंवूक^{३३}
 गवल^{३३}यहूमास॥८९॥ क्लीवके २। खर्गके ३। गर्वके २
 नाम॥ दोहा॥ क्लीवै^{३३}अविक्रम^{३३}षण्डही^{३३}खर्वतु^{३३}संख्याजान॥
 नीचहृत्त्वय^{३३}गर्वतौ^{३३}अवलेप^{३३}रुअभिमान॥९०॥ इति वां
 ताः॥ कुंभके ७। नाम॥ दोहा॥ कुंभ^{३३}तु^{३३}चटगजसीसवट
 गगुल^{३३}वेश्याकंत॥ कुंभकरा^{३३}सुतरा^{३३}शिभिद^{३३}त्रिवृति^{३३}हि

तर्जत ॥ ८० ॥ प्रामुके ४। गर्भके ५। नाम ॥ दोहा ॥ प्रभु अर्ह
 विधि हरि हृदि हि गर्भे तु अर्भक संधि ॥ भूरा कुक्षि अरुपनसको
 कंटक पंच प्रबंधि ॥ ८१ ॥ विस्रंभके ४। नाभिके ३। नाम
 दोहा ॥ विस्रंभे तु विश्वास बंध प्रणय केलि को रारि ॥ नाभि
 तु क्षत्रिय मुख नटपंचक मध्य त्रय धारि ॥ ८२ ॥ सुरभिके ८
 नाम ॥ दोहा ॥ सुरभि तु सुरगो शल्लकी चंपक स्वर्गो वसंत
 ॥ जाती फल गंधोत्पल रुकांत सुमंधि भनंत ॥ ८३ ॥ सभाके
 ४। वल्लभके ३। नाम ॥ दोहा ॥ सभा सुतौ समाजिक रुगे
 छी मंदिर द्यूत ॥ वल्लभ अध्यक्ष रुदयत शुभतुरंग त्रय कू
 त ॥ ८४ ॥ इति भांता ॥ कामके ५। पराक्रमके ३। नाम
 दोहा ॥ काम तु रेतस मन्मथ रु। इच्छा काम्य निकाम ॥
 पराक्रम तु उद्योग बल शौर्य तीन ही नाम ॥ ८५ ॥ धर्मके
 ११। नाम ॥ दोहा ॥ धर्म तु पुण्य स्वभाव यम न्याय कृति रु।
 आचार ॥ धनुष अहिंसा उपनिषद उपमा सोमप धार ॥ ८६ ॥
 निगमके ६। रामके ७। नाम ॥ दोहा ॥ निगमे तु बाण
 जवेद पुर कट रु। वणिक पथ नाम ॥ राम रम्य सित असित व
 लं पशु राघव द्विज राम ॥ ८७ ॥ प्रणामके ८। नाम ॥ दोहा
 प्रणाम कृत्स्न बारिद हरित अक्षय वट पिक जानि ॥ वृद्ध दारक
 रु मरिच पुनि लवण सिंधु को मानि ॥ ८८ ॥ ललामके ८।
 ललामनके ८। नाम ॥ दोहा ॥ ललाम और ललामन तु
 पुच्छ उड्ड प्रधान्य ॥ हय हय भूषन के तु पुनि लक्ष्म प्रभा

हिमान्य ॥ ८८ ॥ सूक्ष्म के ७। वाम के ७। वामा को १। वामी
 के ७। नाम ॥ दोहा ॥ सूक्ष्मं तु कैतवं अल्पं अरां अरुं अध
 त्मं हि नाम ॥ वामं पयोधरं द्विविरां ॥ हरं सर्वं प्रतीपं रुं कामं
 ॥ १०० ॥ अतिरम्यं हं वामां तु ॥ तिर्यं वामीं बडवां जानि ॥ और
 इदमालीं रसमीं करमीं नाम पिहानि ॥ १०१ ॥ इति मांताः
 प्रत्यय के ८॥ नाम ॥ दोहा ॥ प्रत्ययं विस्वासं रुं प्रापयं हे
 तुं अधीनं रुं ज्ञानं ॥ रंघं शब्द आचारं पुनि प्रथितत्वं हनव
 नान ॥ १०२ ॥ समय के ८। नाम ॥ दोहा ॥ समये शपथ
 आचारं पुनि निर्देशं रुं सिद्धान्तं ॥ संवेदं प्राणो कालं अरु
 संकेतं हं अठशांत ॥ १०३ ॥ अन्य के ३। अत्यय के ५। ना
 म ॥ दोहा ॥ अनैयं व्यसनं होत्रो अशुभं विपत्तं हं अत्ययं से
 तु ॥ अत्युत्पातं अतिक्रमं रुं ह्यच्छं दोषं दंडं होतु ॥ १०४ ॥
 द्रव्य के ८॥ नाम ॥ दोहा ॥ द्रव्यं तु भव्यं रुं द्विविरां पुनि पि
 त्तलं भिषजं विचारि ॥ द्रक्ष्य विशेषं विलेपं जतुं पथिव्यादि
 गुरां धारि ॥ १०५ ॥ धिस्त्य के ७। भाग्य के २। नाम ॥ दोहा
 ॥ धिस्त्यं तु अग्निं स्थानं गृहं इन्द्र दक्षं हू हेरि ॥ भाग्यं शु
 भात्मकं विधिं अपरं कर्म शुभाशुभं दोरे ॥ १०६ ॥ क्रिया के
 ८॥ नाम ॥ दोहा ॥ क्रियां विकित्सां निष्कारि रुं चेष्टां कर्म उ
 पायं ॥ आरंभं रुं संप्रधारणं शिक्षां पूजनं गाय ॥ १०७ ॥ ह्य
 या के ७। कल्य के ७॥ नाम ॥ दोहा ॥ ह्ययां कान्तिं रविप्रिया
 ॥ कल्यं तु सज्जं निरामयं रुं दक्षप्रया

वैहिआह॥१०८॥पुण्यके ६।वदान्यके २।सौम्यके ४।ना
 म॥दोहा॥पुण्यैरम्यधर्मरुसुकृतवदान्येवाग्मीदानि॥सो
 म्यै अनुग्रसरम्यवुधसोमदैवतहजानि॥१०९॥द्वतियांताः
 वारके ६।संस्तरके २।नाम॥दोहा॥वारंकुजतरुहररु।
 गरांआदित्यादि सभाग॥अवसरमदिरभाजनहि संस्तरेश
 य्यायागै॥११०॥गुरुके ५।पयोधरके ५।नाम॥दोहा॥
 गुरुतु महतदुर्जरअलघुजीवपितादिहृदेरु॥पयोधरतु
 कुचकोशकृतनरियरमेघकशेरु॥१११॥वृत्रके ५।करके
 ५।नाम॥दोहा॥वृत्रतुघनअरिदानवरुध्वांतशैलभिद
 जानि॥करतु हस्तओलावलि रु किररांशुडपहिचानि
 ॥११२॥परिकरके ७॥तारके २।नाम॥दोहा॥पारैकर
 काटिवंधनयतनपर्यंकरुपरिवार॥गनविवेकआरंभअस्थ
 जतञ्चस्वरेतार॥११३॥ताराके ४।संगरके ५।नाम॥दो
 हा॥तारैउडुगनगोलकरुवालितियागुरुनारि॥संगरैयु
 धआपदेशमीफलविषस्वीकृतधारि॥११४॥मंत्रके ३।
 आडंबरके ३।नाम॥दोहा॥मंत्रैवेदभिददेवकोसाधन
 सलाहनान॥आडंबरतौ तूर्यरवसमारंभगजगान॥११५॥
 अभिहारके ३।परीवारके ३।नाम॥दोहा॥अभिहारतु
 अभियोगपुनि चैर्यसन्नहनजानि॥परीवारैजंगमरुअ
 सिकोशपरिच्छदमानि॥११६॥विष्टरके ३।कांतारके ४।
 नाम॥दोहा॥विष्टरैविटपीदर्भकीमूठिरुआमन

कांत^{१८} तु विलम्बिद आते वने दुर्गम राह ॥ ११७ ॥ वरके ६।
 नाम ॥ दोहा ॥ वर^{१८} जाया लो प्रेष्ट पुनि सुखै चाह जु होय ॥ मना
 गिष्ट पुनि पिष्ट अरु कुंकुम पट जिय जोय ॥ ११८ ॥ हरिके १४
 नाम ॥ दोहा ॥ हरि^{१९} तु विष्टुं रवि शशि अनिल यम शुक्र अहि
 कपी नाजि ॥ सिंह अंशु भेक रुक पिल इन्द्र चतुर्दश साजि ॥
 ११९ ॥ चात्री के ४। सुद्रा के ४। नाम ॥ दोहा ॥ धात्री^{२०} जननी
 आमला उपमाता भू जोय ॥ सुद्रौ^{२१} तौ व्यंगानटी वेश्या सरधा हो
 य ॥ १२० ॥ सुद्र के ४। मात्र के २। नाम ॥ दोहा ॥ सुद्र^{२२} तु
 अधम रुक्मपुत्र पुनि कूर अल्प चंद जोय ॥ मात्र^{२३} सुतौ अवधा
 ला रुक्मपुत्राती होय ॥ १२१ ॥ मात्र के ६। नाम ॥ दोहा ॥
 मा^{२४} तौ वर्णानयन अल्प वित्त परिमारा ॥ और विभूषणा
 करी परिच्छेद हृषट जारा ॥ १२२ ॥ चित्रा के ८। नाम ॥ दोहा
 ॥ चित्रा^{२५} सेतौ दंतिका आरु परी अरु नाय ॥ सुभद्रा रुगोडुं
 अहि नवत नदी भिद गाय ॥ १२३ ॥ चित्र के ८ ॥ नाम ॥ दोहा
 ॥ चित्र^{२६} तिलक आलेख्य पुनि कर्पूर अद्भुत जोय ॥ वस्त्र मेद
 गोस्तन अठम अलंकार इक होय ॥ १२४ ॥ कलत्र के ४। पात्र
 के ३। नाम ॥ दोहा ॥ है कलत्र^{२७} तौ श्री राणी पुनि जाया दुर्ग स्थान
 ॥ पात्र^{२८} तु माजन योग्य पुनि तीर हूयां तरे पान ॥ १२५ ॥ क्षेत्र के
 ४। गोत्र के ६। नाम ॥ दोहा ॥ क्षेत्र^{२९} तु पत्नी तनु अपर सिद्ध धान
 केव ॥ ॥ गोत्र^{३०} शैल कुल कानन रत्नान क्षेत्र मगं चार ॥
 ॥ चित्र के ५। अम्बर के ४। नाम ॥ दोहा ॥ अजि^{३१} र वाते

अंगारविषय दंदर अरत नुभास ॥ अवर व्योम सुगंधक रुवास
 से अरु कार्पासै ॥ १२७ ॥ चक्र के ८। नाम ॥ दोहा ॥ चक्र
 थांग रुको कंज सैन्य रुचाक वरवानि ॥ एष्ट और दंभांतर
 रुवारि भ्रमण हुमानि ॥ १२८ ॥ अक्षर के ४। भूरे के ५। ना
 म ॥ दोहा ॥ अक्षर कर्ण रुमोक्ष पुनि अच्युत ब्रह्म विचारि ॥
 भूरे तु प्राज्य रुस्वर्ण हर वासुदेव विधि धारि ॥ १२९ ॥ चन्द्र
 केश गह्वर के ४। नाम ॥ दोहा ॥ चन्द्र चारु कर्पूर प्राशि स्व
 र्ण कांपिल ह्वार ॥ गह्वर दंभ नि कुंज पुनि गहन रुगुह उदार
 ॥ १३० ॥ अग्र के ८। नाम ॥ दोहा ॥ अग्र तु आलवन अधिक
 गा पल को परिमात ॥ पुरस्तात मथम रुउपरि मांत रुनवम प्र
 धानै ॥ १३१ ॥ पुर के ४। मंदिर के ३। नाम ॥ दोहा ॥ पुर गु
 गुलुतनु नगर पुनि गृह ज पार गृह जोया मंदिर घर मकर
 लय रुनगर तीन ही होय ॥ १३२ ॥ दर के ४। वज्र के ७। नाम
 दोहा ॥ दर कम शंख रुगर्त भय कजै तु पवित्र पुंहीर ॥ धात्री
 बालक योग भिद सात चरत्रां धीर ॥ १३३ ॥ तंत्र के ८। नाम
 दोहा ॥ तंत्र परिच्छेद शास्त्र भिद सूत्र वाय सिद्धान्त ॥ हेतु प्रभा
 न रुवरोषध कुटुंब कृत्य हु शांत ॥ १३४ ॥ पुष्कर के १३।
 शुक्र के ४। नाम ॥ दोहा ॥ पुष्कर व्योम रुप द्य जल द्वीप
 सङ्ग फल राग ॥ वाद्य भांड को मुख विहग तीर्थ शुंड को आग
 ॥ १३५ ॥ ओषधि मेद रुकांड पुनि उर्गांतर दश तीन ॥ शु
 क्र तु भार्गव वीर्य पुनि ज्येष्ठ वहि च व वीन ॥ १३६ ॥ अन्तर

के ११॥ नाम ॥ दोहा ॥ अन्तर^{४७} तौ परिधान भिद^{४८} वहि विन बिल
 अवकाश ॥ तादर्थ्य^{४९} रु अवसर अवधि अंतरात्म मधि^{५०} भाश ॥ १३७
 नागर के ४॥ गौर के ६॥ नाम ॥ दोहा ॥ नागर^{४८} नगरो द्व
 चतुर^{४९} सुस्तक^{५०} श्रुंठि^{५१} सचेत ॥ गौर^{५२} अरुणा^{५३} सित पीत शशि शुद्ध
 सर्षप सेत ॥ १३८ ॥ जठर के ४॥ अधर के ३॥ व्यग्र के २॥ ना
 म ॥ दोहा ॥ जठर^{५४} सुतौ कुक्षिर^{५५} कठिन वद्ध^{५६} ह अधर^{५७} तु हीन ॥
 ओष्ठ^{५८} अन्तर्ध्व^{५९} हि व्यग्र^{६०} तौ आकुल काम विलीन ॥ १३९ ॥ उत्त
 र के ५॥ पर के ४॥ मधुर के ५॥ क्रूर के ३॥ उदार के ४॥ नाम
 ॥ दोहा ॥ उत्तर^{६१} उपरि^{६२} विराट^{६३} सुत दिश^{६४} उदीच्य^{६५} प्राते वाक् ॥ पर^{६६}
 अरि^{६७} अन्य^{६८} रुद्ध^{६९} रवर^{७०} मधुर^{७१} स्वादु^{७२} प्रिय ताक ॥ १४० ॥ रस विष रसव
 त^{७३} क्रूर^{७४} तौ कठिन^{७५} रु निदय^{७६} घोर ॥ उदार^{७७} स्तु दाता^{७८} महत^{७९} दक्षिण
 द्वय जोर ॥ १४१ ॥ इति रांताः ॥ काल के ५॥ कलिके ५॥ ना
 म ॥ दोहा ॥ काल^{८०} तु मृत्यु^{८१} रु यम समय महा काल पुनि जया
 म ॥ कलि^{८२} जुग^{८३} भिद^{८४} रण^{८५} सूरमा^{८६} कालिका^{८७} कल^{८८} हिनाम ॥ १४२ ॥
 कमल के ६॥ कंवल के ५॥ नाम ॥ दोहा ॥ कमल^{८९} जलज^{९०} जल
 तान्म^{९१} म्भग^{९२} भेषज^{९३} योम^{९४} उदार ॥ कंवल^{९५} साक्षो^{९६} कृमि^{९७} सलिल^{९८} नागर
 ज^{९९} प्रावार ॥ १४३ ॥ बलिके ५॥ बल के ४॥ नाम ॥ दोहा ॥ बलि^{१००}
 प्राण^{१०१} गज^{१०२} दैत्य^{१०३} भिद^{१०४} कर^{१०५} त्रिवली^{१०६} उपहार ॥ बल^{१०७} सामर्थ्य^{१०८} रु दैत्य
 भिद^{१०९} सैन्य^{११०} हलायुध^{१११} चार ॥ १४४ ॥ व्याल के ५॥ मल के १५॥ ना
 म ॥ दोहा ॥ व्याल^{११२} दुष्ट^{११३} गज^{११४} सिंह^{११५} अहि^{११६} पद^{११७} खल^{११८} पहिचानि ॥
 मल^{११९} तु किट^{१२०} अध^{१२१} कृपरा^{१२२} विद^{१२३} वसा^{१२४} शुक्र^{१२५} नख^{१२६} जानि ॥ १४५ ॥ मज्जा

अरु. त्वच कर्ण कौ मूत्र दूषिका ज्ञेय ॥ स्वेद रु. प्लेफा अशु पुनि
 अस्टक पंचदश होय ॥ १४६ ॥ शूल के ५। काल के ५। नाम ॥
 दोहा ॥ शूल तु योग रु. मृत्यु पुनि। आयुध के तन रोग ॥ कील
 स्तंभे कफोरो भल लेश रु. शंकु प्रयोग ॥ १४७ ॥ कला के ५
 नाम ॥ दोहा ॥ कला वृद्धि धन मूल की काल भेद शिल्पादि ॥ भाग
 सोलवी चंद के अंश मात्र हू वादि ॥ १४८ ॥ मूल के ५। जाल के ६।
 नाम ॥ दोहा ॥ मूल तु आद्य शिफा नखत निकट नाभि धन रस।
 जाल दंभ आनाय गरा सारक हुने रु. गवाही ॥ १४९ ॥ फल के ५।
 पटल के ७। नाम ॥ दोहा ॥ फल तु फलक जाती फल रु. लुपि
 लाभ क कोल ॥ पटल पिटक छदि गन तिलक दृग रुज परिच्छेद
 तोल ॥ १५० ॥ तल के ८। नाम ॥ दोहा ॥ तल स्वरूप अध दस
 भिद वारण जो ज्या घात ॥ कार्य बीज कानन बहुरि त्सरु चपेट हि
 तात ॥ १५१ ॥ इति लांताः ॥ भव के ५। भाव के १२। प्रसव के
 ३। नाम ॥ दोहा ॥ भव सत्ता संसृति जनम क्षेम माप्ति हू जानि
 ॥ भव जन्म सत्ता क्रिया लीला आत्मा मानि ॥ १५२ ॥ अभिघाय र
 न्यादि अरु चेष्टा जंतु सहाय ॥ भूति पदार्थ हू प्रसवे तो. उपज प
 फल फल गाय ॥ १५३ ॥ ध्रुव के ११। नाम ॥ दोहा ॥ ध्रुव धृज
 निश्चित नरक शाश्वत निश्चल मानि ॥ कोल शंकु शिव योगि व
 ट वसु मुनि इक दश जानि ॥ १५४ ॥ इति वांताः ॥ वंश के ४।
 की नाश के ४। नाम ॥ दोहा ॥ वंश वर्ग कुल मस्कर रु पांति हा
 ई हू चारि ॥ की नाश तु यम क्षुद्र अरु पांशु घाति कृषिकारि ॥ १५५ ॥

कुशके ५। दृशके ४। नाम॥ दोहा॥ कुश सीता सुत दर्भ जल
 योक्त्र दीप पहिचानि॥ दृशं तो बौक्षक दर्शने रु॥ मति दृगं चारि व
 खानि॥ १५६॥ कर्कशके ५। प्रकाशके ४। नाम॥ दोहा॥ क
 र्कश दृश्यं रु॥ कविन कपरा साहसिक कूर॥ प्रकाशं सोतु प्रहा
 सं स्फुट आतप अतिम सह॥ १५७॥ इति शांताः॥ अनिमिष
 के २। पक्षके ८। नाम॥ दोहा॥ अनिमिष सुर अरु मत्स्य ही
 पक्ष तु सर्वा सहाय॥ बल मा सार्द्ध विरोध ग्रह पार्श्व साध्य अठ
 गाय॥ १५८॥ उष्मीषके २। वृषके ५। नाम॥ दोहा॥ उष्मीष
 सु। किरीट अरु। शिरो वेष्ट जुग वेष्ट॥ वृष मूषिक सुकृत रु वृष म
 शुक्ल राशि विशेष॥ १५९॥ कोषके ८। आकर्षके ३। नाम॥
 दोहा॥ कोषं तु ताल व्यांत जुता कुड्म लेख झपिधान॥ संग्रह जो
 शब्दादि को पेशी पात्र प्रमान॥ १६०॥
 चंद्र आठ वखानि॥ आर्कषं तु शरि फलक रु॥ अक्ष
 १६१॥ अक्षके ५। पौरुषके २। नाम॥ दोहा॥ अक्ष कलिद्रुम
 पाशक रु॥ कर्ष चक्र व्यवहार॥ पौरुषं तो पुं भाव अरु ता की
 उदार॥ १६२॥ आमिषके ४। किल्बिषके ३। वर्षके २। नाम॥
 दोहा॥ आमिष उल्कोचं रु॥ पलल भोग वस्तु संभोग
 अच अपगध रुज बर्ष शाल जल योग॥ १६३॥ त्विषके ३।
 क्षके २। अध्वक्षके २। नाम॥ दोहा॥ त्विषं तु कांति रुचि वाक
 अथ निक्षेप शुधर दक्ष॥ कात्स्न्य जुगहि अध्वक्षं तो अधिकृत
 अम मन्वस्य॥ १६४॥ इति शांताः॥ हंसके ८। नाम॥

हंस ह्यंतर विष्णु रवि जीव मराल वायानि ॥ मंत्रभिदे अमत्सर लो
 भरहित न्यप जानि ॥ १६५ ॥ रसके ११ नाम ॥ दोहा ॥ रस गुण
 विष द्रव राग जल वीर्य रुष्टंगारादि ॥ देह धातु पुनि गंध रसे पा
 रद स्वाद विवाद ॥ १६६ ॥ वसुके १२ नाम ॥ दोहा ॥ वसु सुभे
 द रुक्म धन रश्मि अनल वक्र राज ॥ मधुर पोत्र कट्यौषध रण्या
 लेन खत भिदे साज ॥ १६७ ॥ वेधसके ३ आशिसके २ ला
 लसाके २ नाम ॥ दोहा ॥ वेध विधि वध विष्णु अथ आशी
 है अहि दंत ॥ हिंसा प्रांस अथ लालसा चाह प्रार्थना संत ॥ १६८
 हिंसाके ५ प्रसूके ४ नाम ॥ दोहा ॥ हिंसा वधन ताडना
 वध नासन चौर्यादि ॥ प्रसू वीरुध रुजन नि पुनि अश्व कद
 ली वादि ॥ १६९ ॥ रोदसी के २ अर्चिसके २ ज्योतिसके ५
 नाम ॥ दोहा ॥ रोदसी तुभू दिवंगनौ अर्चितु ज्वाला भासै ॥
 ज्योति तु उदगन द्योत रवि दृष्टि अर्भही भास ॥ १७० ॥ तमस
 के ४ कंदसके ४ नाम ॥ दोहा ॥ तमस तु राहु गुण ध्वंते पुनि
 शोक ह चारि सुजान ॥ कंद चाह पद्म रुनिगम तैराचार प्रमान
 ॥ १७१ ॥ तपसके ४ सहसके ४ नाम ॥ दोहा ॥ तप लोक
 तर शिशिर पुनि माध कर्म कच्छादि ॥ सह तु मार्ग हेमंत
 वल ज्योतिष नाम विवादि ॥ १७२ ॥ नभसके ७ ओ कस
 के २ पयसके २ ओजसके ४ नाम ॥ दोहा ॥ नभ आ
 वरा आकाश पुनि मेघ पत ह्रहं घारा ॥ वर्षा सूत्र मराल
 को ओक तु मंदिर जारा ॥ १७३ ॥ आश्रय मात्र ह पय सुतौ ॥

पानी है अरु क्षीर ॥ ओजंतु दीप्ति प्रकाशवल अवष्टभ हृद्यी
 ॥ १०४ ॥ स्त्रोतसके २ तेजसके ४ विद्वसके ३ बीभत्स
 के ६ नाम ॥ दोहा ॥ स्त्रोतं तु इन्द्रियवेगजलं तेजं दीप्ति
 भावं ॥ बीभत्सं पराक्रमं विद्वत्सं तु पंडितं प्राज्ञं गनाव ॥ १०५ ॥
 ॥ आत्मविदं ह्य बीभत्सं तो विद्वतं पार्थ अरु कूर ॥ पापात्मा
 रु घृणात्मा और रसांतरं सूर ॥ १०६ ॥ इति हांताः ॥ ग्र
 हके ८ नाम ॥ दोहा ॥ ग्रहं उपराजं रागोद्यमं रु ग्रहणं क
 पो सूर्यादि ॥ सौहेके यनिर्वधनं रु पूतनादि अठवादि ॥
 १०७ ॥ वहके २ निर्यूहके ४ नाम ॥ दोहा ॥ वहं तु
 पत्रं कलापं ही अथ निर्यूहं तु द्वारं ॥ आपीडं रु विरोहं
 पुनि नागदंतकी हि च्चार ॥ १०८ ॥ प्रग्रह और प्रग्रह
 दो ६ नाम ॥ दोहा ॥ प्रग्रहं प्रग्रहं तु किरणं वादि तुला
 को धृतं ॥ बंधनं डोरिहयादि की हरिपादपं हु अभूत ॥ १०९ ॥
 ॥ परिग्रहके ६ गृहके २ नाम ॥ दोहा ॥ परिग्रहं तु
 यं परिजनं रु मूलं शाप आदानं ॥ राहुग्रस्त रावे गृहं सुतो
 नारि और घर जान ॥ ११० ॥ इति हांताः ॥ अथ अनेकार्थ
 अव्यय लिख्यते ॥ आहुके ४ आके २ आः के २ नाम
 दोहा ॥ आहुं चातु योगजं रु अभिवापिकर्म रु सीमार्थ ॥
 आनि पाततो वाक्यं स्मरति आः तु कोप पीडार्थ ॥ १११ ॥ कुके
 ३ अधिक के २ स्वस्तिके ३ नाम ॥ दोहा ॥ कुं तु कर्मपाप
 रु कुत्सं मौघं कुनिंदाड पाव ॥ स्वस्तिं तु आशिषं क्षेमं अरु

पुण्यादिकं त्रय भाव ॥ १८२ ॥ अतिके ३। स्वित्के २। तुके
 २। सहतके २। नाम ॥ दोहा ॥ अतिष्णाघालंघने अधिकं
 तर्कः प्रश्नस्वित्तलारुतु। अवधारणाभेदमै सहतसह रुडक
 वर ॥ १८३ ॥ आरात्के २। पश्चात्के २। उत्के २। साक्षत्के
 २। नाम ॥ दोहा ॥ आरातं तु दूररुनिकटं पाक्षिमे चरमपश्चात्
 ॥ उत्त अत्यर्थे विकल्पमै समरु प्रगटि साक्षात् ॥ १८४ ॥ प्रश्व
 त्के २। वत्के ५। नाम ॥ दोहा ॥ प्रश्वतपुनः सदार्यमै वत्
 तु खेद सन्तोष ॥ अनुकंपा आमंत्रण रु विस्मय पांच अक्षेप ॥
 १८५ ॥ हंतके ४। प्रतिके ४। नाम ॥ दोहा ॥ हंत तु हर्षविषा
 दं च वाक्यारंभदया हि ॥ प्रति ५। प्रयोगं रु प्रतिनिधि रु ल
 क्षणादि बोधो हि ॥ १८६ ॥ इतिके ५। पुरस्तात्के ४। नाम
 ॥ दोहा ॥ इति तौ प्रकरणा आदि अरु हेतु समाप्ति प्रकर्ष ॥
 पुरस्तात् पाची प्रथमे अग्र पुरार्थ सहर्ष ॥ १८७ ॥ यावत्के ४।
 अथो। अथके ५। नाम ॥ दोहा ॥ यावत् तावत् निश्चय रु अ
 विधि मान साकल्य ॥ अथो अथेतु आरंभ सर्व प्रश्न सतत मागल्य
 ॥ १८८ ॥ दृष्टाके २। नानाके २। नुके २। अनुके २। नाम ॥
 दोहा ॥ दृष्टानिरर्थक अविधि ही नाना भय बहु तात ॥ नु तौ
 विकल्प रु प्रश्न ही अनुस्रुता पश्चात् ॥ १८९ ॥ ननुके ५। अ
 पिके ५। नाम ॥ दोहा ॥ ननु आमंत्रण अनुनय रु प्रश्न अनु
 ज्ञा ठीक ॥ अपितु समुच्चय प्रश्न सर्व निंदा संभव नीक ॥ १९० ॥
 बान्हे २। सामिके २। अमाके २। कमके २। नाम ॥ दोहा ॥

दंतौ उपमा विकल्प हि सामि जुगुप्सन आध ॥ अमो तु सह रु
 समीप ही कर्म तु वारि शिर साध ॥ १८१ ॥ एवं के २ नून के २
 जोष के २ नाम ॥ दोहा ॥ एवं सुतौ इवार्थ अरु इत्यमर्थ म
 ति मौन ॥ नून निश्चय तर्क मै जोष सुख अरु मौन ॥ १८२ ॥
 किमू के २ नाम के ५ नाम ॥ दोहा ॥ किम तु जुगुप्सन
 प्रश्न ही नाम तु उपगम क्रोध ॥ होनहार प्रकाश अरु कु
 त्सन पंचस बोध ॥ १८३ ॥ अलं के ४ समया के २ हं के
 २ नाम ॥ दोहा ॥ अलं तु भूषण वारण रु परि पूरण ता श
 क्ति ॥ समया मध्य रु निकट ही तर्क प्रश्न हं वक्ति ॥ १८४ ॥
 पुनर के २ निर् के २ पुरा के ४ नाम ॥ दोहा ॥ पुनर तु
 भिद अप्रथम ही निर् निश्चय रु निषेध ॥ पुरा पुरा प्रबंध
 अरु भावी निकट समेध ॥ १८५ ॥ उररी ऊरी ऊरी
 के २ किल के २ नाम ॥ दोहा ॥ उररी ऊरी ऊरी त्रय स्वी
 कृत विस्तार ॥ स्वर तु स्वर्ग परलोक जुग किल वार्ता निर्धार
 ॥ १८६ ॥ खल के ४ अभितस के ५ नाम ॥ दोहा ॥ खल
 जिज्ञासा अनुनय रु निषेध भूषण वाक्य ॥ अभितस द्विग उ
 भ अभिसुख शीघ्र पूरा ता ताक्य ॥ १८७ ॥ प्रादुर के २ मि
 थस के २ तिरस के २ नाम ॥ दोहा ॥ प्रादुर नाम प्राकाश
 जुग मिथसरहस अन्योन्य ॥ तिरस्तु अंतर्दान पुनि तिर्य
 गर्थ ही गन्य ॥ १८८ ॥ हा के ४ अहह के २ हि के २ ना
 म ॥ दोहा ॥ हा तु शोक दुःस्वार्थ पुनि कुत्स विषाद विचार

अहहतु अद्भुत खेद ही हितु हेतु रु निर्धार ॥ १८८ ॥

इति अनेकार्थतरंगः

अथ अव्ययतरंग लिख्यते ॥ ४ ॥

दीर्घकालमै ७ । नाम ॥ दोहा ॥ चिरात्राय चिरस्य पुनः
चिरं चिरां चिराय ॥ चिरं चिरातं हि सातये अतिकालार्थ
गनाय ॥ १ ॥ वारम्बारवाचकमै ५ । प्रीघ्रतावाचक
मै ७ । नाम ॥ दोहा ॥ शश्वत असकृत् अभीष्टां पुनः
पुनः मुहुं गाय ॥ अंजसां रुद्राकं स्वाकं भूदिति सपदि मे
सुं अन्हाय ॥ २ ॥ अतिप्रार्थमै ६ । वर्जनार्थमै ६
नाम ॥ दोहा ॥ बलवत् सुष्ठु किमुत अति अतीव षट् अत्यर्थ ॥
नाना विनां पृथक् हिरुक् ऋते अंतरेणार्थ ॥ ३ ॥ कारणावाचक
४ । असम्पूर्णार्थमै २ । किसीकालमै २ । साथके वाचक
४ । नाम ॥ दोहा ॥ यतसेततसे यततत सबव चित्चन अपूर्ण
ताहि ॥ जातुकदाचित् सार्द्धतौ सहसाकं सत्रा हि ॥ ४ ॥ अनुकू
लतामै १ । व्यर्थमै २ । विकल्पार्थमै ५ । नाम ॥ दोहा ॥ प्राच
दक अनुकूलता ॥ वृथा सुधी तु विनार्थ ॥ किं किमुत आहो किमु
त उताहो विकल्पार्थ ॥ ५ ॥ पादपूर्णार्थमै ६ । पूजनार्थमै २
दिनार्थमै १ । रात्र्यर्थमै २ । नाम ॥ दोहा ॥ तु हि चंस्मह वै पाद
के पूर्णार्थक षट् भाति ॥ पूजनं अति सु हि दिन दिवा दोषा नक्तं रा
त्रि ॥ ६ ॥ टेढा अर्थमै २ । सम्बोधनार्थमै ५ । समीपार्थमै ३
नाम ॥ दोहा ॥ तिरकै तिरसरु साचि अथ सम्बोधन मो पाटे

हे हे अंग हि हि रुक तो । समयां निकषां थाट ॥ ७ ॥ अकस्मात्
 अर्थ मै १ आगे इस अर्थ मै ३ देवतार्थ विषयदान मै ५ ।
 नाम ॥ दोहा ॥ सहसा इक ॥ पुरतसे पुरसे अग्रतसे हि अग्रार्थ ॥
 स्वाहा श्रौषट् वौषट् रु वषट् स्वधा देवार्थ ॥ ८ ॥ अल्पार्थ मै ३
 जन्मान्तर मै २ । तुल्यार्थ मै ६ । नाम ॥ दोहा ॥ मनाक ईष
 त किंचित हि प्रेत्य अमुत्र हि दोय ॥ व रु वा एवं इव यथा तथा
 साम्य मै होय ॥ ९ ॥ विस्मायार्थ मै २ । चुपचाप मै २ । तत्का
 लार्थ मै २ । नाम ॥ दोहा ॥ अहो ही तु विस्मयार्थ क । तूस्मी तो
 मोनार्थ ॥ तूस्मी कां जुग सपदि तो । सद्यः तत्कालार्थ ॥ १० ॥ म
 ध्यार्थ मै १ । युक्तार्थ मै २ । हठार्थ मै १ । नाम ॥ दोहा ॥ ती
 न । अन्तर अन्तरा अन्तरेण माधे माहि ॥ उचित तु स्थाने साप्रत
 इक प्रसह्य हठ आहि ॥ ११ ॥ निरन्तर अर्थ मै २ । प्रातेषेधा
 र्थ मै ४ । निवारणार्थ मै ३ । नाम ॥ दोहा ॥ अभीक्षणं शश्व
 त अनारत अ अरु नोन नहि चारि भास्य अलं मां तीनये वा
 रणार्थ उरधारि ॥ १२ ॥ पक्षांतर मै २ । तत्त्वार्थ मै २ । प्रगतार्थ
 मै २ । अंगीकार मै २ । नाम ॥ दोहा ॥ चेव रु यादि पक्षांतर
 हि अंजसा रु अद्वा हि ॥ प्रादुसे अविर् प्रगट वो परम ओम हि
 आहि ॥ १३ ॥ चारों ओर इस अर्थ मै ४ । विना इच्छा स्वी
 कार मै १ । निन्दा पूर्वक स्वीकार मै १ । नाम ॥ दोहा ॥ समंत
 तसे सर्वतसे च व । परितसे विषय जानि ॥ कामं तु अकामानुमति
 अन्तत एक पि जानि ॥ १४ ॥ विरोधोक्ति मै १ । इष्ट प्रश्न मै १ ।

१। भूत अर्थ मै २। भूत काल मै १। नाम ॥ दोहा ॥ विरोधो
 क्ति मै ननु हि अथ कश्चित् काम प्रवाक ॥ भूत मां हि मिथ्या
 नृणां अतीतार्थ कतु प्राक ॥ १५ ॥ निश्चयार्थ मै ५। निश्चय मै
 २। वर्ष मै १। नाम ॥ दोहा ॥ एवं एवं तु पुनर वा अवधारणा
 र्थक पंच ॥ निश्चय नूनं अवश्यं संवत् वर्ष प्रपंच ॥ १६ ॥ अंगी
 कार मै २। पीठ मै १। आप मै १। अल्प मै १। उच्चाई मै १
 नाम ॥ दोहा ॥ आं एवं अंगीकृत हि अवर मा हि अर्वाक ॥
 स्वयं आप नीचैः अल्प उच्चैः महत हि ताक ॥ १७ ॥ बहुता
 ई मै १। धीरे धीरे मै १। नित्य मै १। बाहर मै १। भूत काल
 मै १। छिपने मै १। नाम ॥ दोहा ॥ प्रायस बहु धीरे शनैः
 सना एक नित्यार्थ ॥ बहिर्वाह्य भूतार्थ स्मां अस्तं अदर्श
 नार्थ ॥ १८ ॥ विद्यमान मै १। क्रोध से कहने मै १। प्रश्न मै
 अनुनय मै १। रात्रि के अन्त मै १। तर्क मै १। प्रणाम मै १
 नाम ॥ दोहा ॥ अस्ति हे हि ऊं रोष वच ऊं प्रश्न हि अर्थ
 प्रीति ॥ उषा निशात हि तर्क दुःख नमः प्रणामा हि गीति ॥ १९ ॥ फिर
 इस अर्थ मै १। निंदा मै १। प्रशंसा मै १। सायंकाल मै १।
 प्रातः काल मै २। नाम ॥ दोहा ॥ अंग फेरि दष्ट तु वर सु
 ष्ट प्रशंसा जानि ॥ सायं सांभ हि प्रात मै प्रातर प्रगे वरवानि ॥
 २० ॥ समीप मै १। गत वर्ष मै १। गत वर्ष से पूर्व का वर्ष मै
 १। वर्तमान वर्ष मै १। नाम ॥ दोहा ॥ निकषा निकट हि पर
 त तो पूर्व वर्ष मै हेरि ॥ है परारि ताते परै ऐष मै स्तुय हटेरि ॥ २१ ॥

आज इस अर्थमै १ पूर्वद्युः आदि ७ शब्द रद्यु सप्रत्यया
तता ही शब्द दिनार्थमै हैं। परदिनमै १ गया दिनमै
नाम ॥ दोहा ॥ अब आज ॥ पूर्वद्युसं ॥ अथरेद्युः पहिचानि
अन्येद्युः उत्तरेद्युः अन्यतरेद्युः जानि ॥ २२ ॥ उभयद्युः उभयेद्युसं
हितिहि दिनार्थमै जोय ॥ परदिनमाहि ॥ परेद्यविहिद्यसं गत
दिनमै होय ॥ २३ ॥ आवा वाला दिनमै १ परसों का दिनमै
१ ता कालमै २ कोई कालमै २ नाम ॥ दोहा ॥ श्वसं आग
सदिन तिहिं परे दिन सुपरश्वसं आहि ॥ तहां तदानीं ता समै
युगपत्तु एकहीहि ॥ २४ ॥ सर्व कालमै २ वर्तमान का
लमै ५ नाम ॥ दोहा ॥ सदा सर्वदा सव समय अधुना सं प्रति
लेखि ॥ औस सं प्रतं एतहिं इदानीं ह ॥ अब देखि ॥ २५ ॥ पूर्व
दिशदेश कालमै १ उत्तरदिशदेश कालमै १ पश्चिम
दिशदेश कालमै १ नाम ॥ दोहा ॥ पूर्वादिक दिश अरु का
लमाहि जिय जोय ॥ माकं उदकं प्रत्यकं सुत्रय आदिक अव्यय
होय ॥ २६ ॥ इत्यव्यतरंगः ॥ श्लोक ॥ इति युलावसिंहस्य कृतौ ना
मानुशासने ॥ सामान्य भागस्तृतीयः सांगरावसमर्पितः ॥ शुभम
तो ॥ युग्मवेदनवचन्द्रसमिते ॥ हायने शरदिमासि चाश्विने ॥
नामसिन्धुरिति नामतो ह्ययं केशवेन खलु मुद्रितोऽधुना ॥

सम्बत १८४२

इस क्षणीं होम करण ब्राह्मण
गोडस्थ

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	ई संशयिकहु	सांशयिकहु	२०	१० अभिप्रायकेके	अभिप्रायके
२	२० प्रतात	प्रतीत	२०	१० प्ररिचय	परिचय
३	३ इशिता	ईशिता	२१	१ गरीवनावाके	नरीवनावाके
३	१३ निर्वयह	निर्वयह	२२	१२ सस्ताव	सस्ताव
५	२ राल्म	सुल्म	२४	१२ गजद्रुम	गजद्रुम
५	४ हत्यारके३।	हत्यारके३।	२४	१२ धूकहु	धूकहु
६	२१ अल	अल	२४	१२ अन्तकके३।	आतंकके३।
८	१२ अग्रअग्रीय	वर्षअग्रअग्रीय	२४	२२ दीर्घाघु	दीर्घाघु
८	१० अग्रप्रधान	अग्रप्रधान	२५	३ दीपकेके४।	दीपकेके४।
९	१० दशादिह	दशादिह	२५	१० वेम	वेम
१०	१० प्राजा	प्राज्य	२६	१२ पुष्करज	पुष्करज
१०	१२ सन्निकृष्ट	सन्निकृष्ट	२७	१० वजलके४।	वजलके४।
११	१० अर्मिमत	ऊर्मिमत	२७	१० वजलतु	वजलतु
१२	२ राधित	रधित	२८	१४ धन	धन
१२	१० एकायनयत	एकायनगत	२८	२१ पाय	पाय
१२	१२ समान्यहि	सामान्यहि	३०	१४ पीयूष	पीयूष
१३	४ दृब्ध	दृब्ध	३०	१२ तान	तीन
१३	१२ घुत	धुत	३१	११ धन	घन
१३	१३ निष्ठुत	निष्ठुत	३१	१२ अधिके४	आधिके४
१३	१० गुडित	गुडित	३२	४ सिंधुदेन	हिंधुदेन
१५	३ मांगके३।	मांगेके३।	३२	१२ धनतु	धनतु
१५	२१ सतापित	सतापित	३३	१२ पचल	पचल
१७	१५ दाति	दाति	३४	३ लामहि	लामहि
१७	१५ अवदान	अवदान	३४	४ पिशुन	पिशुन
१७	१० विधूनन	विधूनन	३४	१० यर्मपनि	यर्मपनि
१८	८ ग्रहग्रह	ग्रहग्रह	३४	११ विद्यपसन	विद्यपसन
१८	११ अमिग्रह	अमिग्रह	३५	१५ कंधुक	कंधुक
२०	२ सप्तमके६	सप्तमके६			

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४	१०	स्वर्गिके	४३	१५	स्वर्गचार
१५	१०	जीव	४३	१०	माध
१६	१०	हस्त	४३	१	धीर
१७	१०	सुरगो	४४	३	तेजदीप्ति
१८	१०	सुगंधि	४५	४	साक्षातके
१९	१०	समाजिक	४५	१३	यावत्के ४।
२०	११	प्रधान्य	४५	१५	अवधि
२१	१	नामके ७	४५	१५	मांगल्प
२२	२	अध्यात्म	४६	४	मतिमौल
२३	१०	अन्यके ३	४६	४	सुख
२४	१२	अथस्त	४६	६	मकाश्य
२५	१०	सुरथा	४६	१३	ऊरीके २ किलके २
२६	१०	प्रसंगात्			किलके ३
२७	१२	विष्णुपराक	४६	१४	निर्धारि
२८	१०	प्रोरी	४६	१५	खलके ४।
२९	१०	माजन	४६	१८	प्रकाश
३०	२०	केदार	४८	२	विव्यदानमै
३१	१	अरवतु	४८	११	तीनअंतर
३२	७	चन्द्र	४८	१४	मास्म
३३	१६	खड्ग	४८	१७	अविर
३४	२१	अध	४८	१६	स्वीकारमे
३५	१	कालके ५	४६	१५	निशांतहि
३६	१६	उपजाफल	४६	१५	तर्कहु
३७	१३	शरिफलक	४६	१०	सुष्ट
३८	१	मंत्रमिद	५०	१३	दिशअरु
३९	५	तद्विषय	५०	१५	इत्यन्यतरंगः

न.म.सिंधुकोशको

चतुर्थभाग

अर्थात्

गुलाब कोशको संक्षेप त्रिकाण्डशेषनामकोश
कोसार

श्रीयुतचक्रवर्तिवंशावतंसहृदुकुलकलश
सुन्दरीन्द्रमहाराजाधिराजमहारावराजाजी श्री
श्रीश्रीश्रीश्री १०८ रामसिंहजीके कविरावजी

श्रीगुलाबसिंहजीकृत

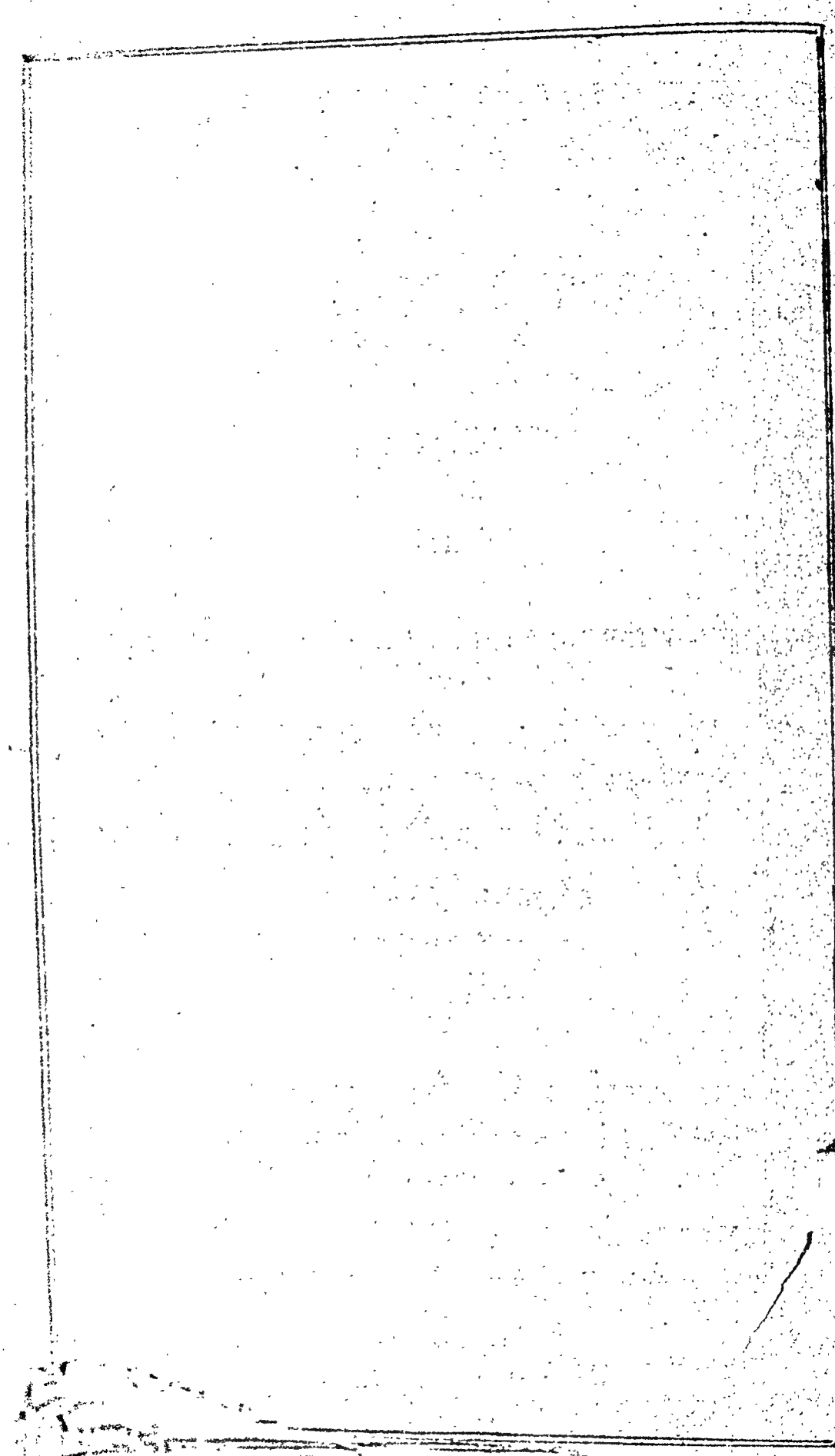
—०००—

आगरा

नगरेबेलनगंजे श्रीपंडित केशवप्रसादशर्मा द्विवे
दिप्रवन्धेन विद्यारत्नाकरयंत्रे मुद्रितः। सम्वत् १९४३

—०(ॐ)—

इस पुस्तक की सन् १८६७ के एक २५ के अनुसार राजस्
री हुई कविजी की तथा पंडित केशवप्रसाद द्विवेदीकी
आज्ञाविना कोई न कापे



श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥

अथ नामसिंधुकोशको

चतुर्थभागलिख्यते

दोहा

बीणा पुस्तक अभयवरजुतकरत्रिभुवनमाय
तमहरनी शारदकरै परमेश्वरी सहाय ॥ १ ॥

सदा सुमतिवृद्धि कविन की कीनी सहज समहार
दृढ परि करवाँधहु जननिज डगुलाव की वार २

अथ ग्रन्थनियम ॥ दोहा

त्रिकाण्डशेषहिसार अरु हेम सार संख्या हि ॥

येत रङ्ग तीन हि इहाँ भाग चवथ मै आहि ३

अथ तु कान्तनियम ॥ दोहा

आइ निवेदि सुमीतुं रु सुस्वस्थ समूल रु राख्य ॥

सार्थ रु चन्धि अवक्र पुनि योग एक दश भाष्य ४

अथ त्रिकाण्डशेष सार तरङ्ग लिख्यते ॥ तत्र पित्त

के ५ पित्त भेद के २ । नाम ॥ दोहा ॥

पित्तं तु स्वधाभुक् पूर्वजं रु न्यस्त शस्त्र पुनि वाटे

पंच चन्द्र गोलस्थ तिहि भेद कव्य वाला दि५
दैत्य माता के ३। कृष्ण पिता के २। कृष्ण माता को
१। कृष्णस्थ को १। नाम ॥ दोहा ॥

दैत्य मात दिति दनु हि अथ भूकश्यप हरितात ॥
दुंदुहि मात तु क्षिति अदिति शतानंद रथ रथात ई
सारथि को १। ध्वज को १। हयन के भिन्न भिन्न ४। नाम

दो० तारथि दारुक हरि ध्वज तु मुजंग हौ इक साजि ॥

मेघ पुष्प सुग्रीव अरु शैव्य वलाहक वाजि ॥ ७ ॥

उद्धव के २। सात्यकि के ४। नाम ॥ दोहा ॥

पवन व्याधितु उद्धव हि हरि को मंत्री जान ॥ ८ ॥

सात्यकि शिनि नमो च वहि शैने च रु युधु धान ॥ ९ ॥

काम की स्री के ३। काम वाराण के १। नाम ॥ दो०

रागलता रती केनती उन्मादन तो वारा ॥ १० ॥

सन्तापन निश्वेद कर मोहन शोषण जारा ॥ ११ ॥

मरिा को १। शिव के खट्वाङ्ग के २। शिव के वृषभ के २।

शिव गरा विशेष के दी महा काल के ३। नामा दो०

हरि कर की मरिा स्वमत क शिव खट्वाङ्ग तु येह ॥

सुख सुख हि भृङ्ग तु वृष हि रिदि तो नाडी देह १०

भृङ्गरी र भृङ्गी फल रु अस्थि विग्रह ह जानि ॥ ११ ॥

महा कय तो वृषारा क महा भीम चय मानि ॥ १२ ॥

शिव द्वार पालन के ४। शिवा के १। नाम ॥ दोहा

द्वाःस्थ तु ताडवतालिकरु नंदिकेण्वरसुआहि
नंदी'शालंकायन'हु'वाली'यमस्वसा'हि॥१२॥
पार्वतीकीसखीके२।पार्वतीकासिंहको१।इन्द्राणी
के३।नाम॥दोहा

शिवासखी विजयाजया'मनस्ताल'मृगराज॥
इन्द्राणी'तु'शतावरी'रु'चारुधारी'साज॥१३॥
इन्द्रकीसुताको१।पुरीको१।विद्याधरके४।नाम।दे०
सुता।देवसेना'पुरी'दृषभाषा'इक'अपि॥१४॥

विद्याधर'स्थिरयौवन'रु'खेचर'रु'कामरूपि१४
जमकीस्त्रीको१।लेखककोभृत्यको११।नाम।दोहा
धूमोरा'तौ'यमति'या'चित्रगुप्त'लिपिकार॥

महाचंड'इक'चंड'इक'यमभृत्यहिनिर्धार॥१५॥
जमकीविचारभूमिको१।पिशाचके३।कुवेरपुत्रके
वर्गकादि३।नाम॥दोहा॥

कालीची'तु'विचारभू'कापिशेय'तु'पिशाच॥
पिंडक'वर्गकेविनिर्ध'रु'मायुराज'त्रयराच॥१६॥
इतिस्वर्गवर्गसारः॥

अथदिग्बर्गसारलिख्यते॥अगस्त्यकीस्त्रीके२
बृहस्पतिके४।नाम॥दोहा॥

कुंभजतिय'कौषीतकी'विदर्भज'हु'द्विधारे॥
उत्थ्यान्ज'तु'गोरथ'रु'द्वादशकर'गुरु'चारि१७

दशमाता को १। ध्रुवमाता को १। देवपथ वा आ-
काश गंगा के ३। नाम ॥ दोहा ॥

मात दशकी मारिषी ध्रुवकी मात सुनीति ॥

नभस्सारितं व्यापय रुद्रि सौमधारी चैति १८

सूर्य की रत्नी के १। दूसरी रत्नी के १३। तिनमें स्वाति
आदितौ ७ अरु यमसू कालिन्दीसू आदि ६। नाम ॥ दो-

गवितिय छाया भूमयी तपती वरी पिछानि ॥

रुमंद जननी स्वातितौ तं ज्ञाद्युमयी जानि १८

त्वाष्ट्री रुमहावीरयो सुवर्दला च सरेणु ॥ ४ ॥

यम कालिन्दी दक्षमनुरैवंतसू स्वरेणु ॥ २० ॥

इति दिग्वर्ग सारः ॥ ३० ॥

अथ कालवर्ग सार लिख्यते ॥ सत्य युग के ३। ने-

ता के २। द्वापर के २। कलिके ३। नाम ॥ दोहा

द्वत तु सत्य युग युगल अथ अयायी त्रैता हि ॥

यज्ञिय द्वापर कर्म युग भर्भर कं रु कलि आहि २१

जीव के ४। मन के ३। नाम ॥ दोहा ॥

जीव तु पुद्गल ईश्वर रु अन्तर्यामी चारि ॥

अन्तःकरण तु मनस अरु निगुती नहि निर्धारि २२

इति कालवर्ग सारः ॥

अथ धीवर्ग सार लिख्यते ॥ बुद्धि के ३। निर्गोय के
३। सिद्धान्त के ३। नाम ॥ दोहा

पंडा तौ चार्वी विदा गुंजा तर्क विचार ॥१॥

उत्तर पक्ष समाधि अरु चय कृतान्त निर्धार ॥२॥

प्रश्न के २। गिरा के ३। नाम के ४। नामा दोहा

पूर्व पक्ष तौ चोख जुग गीर्तु भणिति वाचीहि

संज्ञा लक्षणा अधिवचन सद्यः कृत चव आहि ॥२॥

इति धीवर्ग सारः ॥

शब्द के १। गद्गद वचन के २। नाम ॥ दोहा ॥

अभिधा कु हरित ह्रास पुनि वाचक ध्वनि अभिधान

अभिलाष ह गद्गद ध्वनि तौ मन्मत्त जुग जान ॥ २॥

इति शब्दादि वर्ग सारः

वंशी के २। कथक के ३। नट के ४। नाम ॥ दो०

विवर नालिका वेणु जुग कथक एक नट दोय ॥

लयारंभ तालाव चरु सर्व वंशी होय ॥ २६ ॥

खड्ग धारादि पै नर्तकी के ३। नट विशेष के २। गायक

के २। घणी स्त्री हाथ पकड़ि नाचै तिन को ॥ नाम ॥ दो०

लय पुत्री नर्त नटी प्रवक्तु केलक दीप ॥ २७ ॥

गायन गायक तीय गन नाचत सतु हल्लीष ॥ २८ ॥

रस भेद के ३। शृंगार के २। शृंगार भेद के २। नाम ॥ दो०

दास्य सख्य वात्सल्य रस भेद एक एक योग ॥

शृंगार तु कोशक भिदतु विप्रलंभ संभोग ॥ २९ ॥

इति नाट्य वर्ग सारः

अयमभूमिवर्गसारलिख्यते ॥ नवखंडनके टीस
 पट्टीपत्तके ॥ एथक एथक नाम ॥ हरिपदकृत
 भारतनरहं किं पुरुष हरिवर्षे हिरण्यवर्षे जानो ॥
 उत्तरतुरुभद्राश्व इलाहव के तुमाल नवमानो ॥
 चंबु प्रसू कुश नीच शाक पुनि शात्मालि पुष्कर काहिये
 कविगुलाव नवखंडभूमि के सप्तद्वीपयेलहिये ॥ २८
 गौडदेशके ३ प्रभासके २ कामरूपके २ कुशास्थ
 लीके २ निच्छविके ३ कौरके ३ नाम ॥ दोहा ॥
 गौड वरेन्दी पुंड्र नय सौम तीर्थ तु प्रभास ॥ १ ॥
 कामरूप प्रागज्योतिष हि कुशास्थली तु प्रकास ३
 अन्तर्वदी निच्छवितु तीरभुक्ति रु विदेह ॥ ४ ॥
 कौर शास्त्र शिल्पी तृतीयकाश्मीर हगनिलेह ३
 नवदेशन के एथक एथक नाम ॥ दोहा ॥
 तुरुष्क खत्री वाल्हीक पुनि दाशेरक रु अवन्ति ॥
 मरुभू मालव त्रिगर्तक अरु यष्टस्क भवन्ति ३२
 कारुषके २ चेदिदेशके ३ यदुके ४ नाम ॥ दोहा ॥
 दहहह तु कारुष हिडाहल चैद्य रु चेदि ॥ ५ ॥
 यदु तौ सात्वत लुकुर रु चारि दशार्ह निवेदि ३३
 ओडके २ कीकटके २ शुंभपुरीके ३ अपोच्याके २
 हरिनापुरके २ हारणापुरीके ३ नाम ॥ दो
 ओड तु चकल कीकट तु नवधा हि शुंभपुरी तु ॥

एकचक्र हरिग्रह त्रयहि अथ साकेत सुनीतु ३४
 दूसरा उत्तरकोशला हास्तिने सुतो गजाद्व ॥३॥
 द्वारवती वनमालिनी रु. अविद्यनगरी आह ॥३५
 जनकपुरी के शमथुरा के श. वाराणासी के अनाम दो०
 विदेहांतु मिथिला जुगल मधूपट्ट मथुरा हि ॥
 नपस्थली तौ जित्वरी रु. तीर्थराजी आहि ॥३६
 उज्जयिनी के श. कारापुरी के अ. प्रतिमार्ग के अनाम
 दो० उज्जयिनी तौ विशाला चंगा पुष्पा तीन ॥
 मालिनी ह. उद्वंग तौ. त्रंगा त्रंग मवीन ॥३७॥

इति भूमि वर्ग सारः ॥

हिमालय के श. कैलाश के अनाम ॥ दोहा
 हिमालय तु मेनाधवरु उमागुरु रु. नगनाथ ॥
 रजतप्रस्थ गंगा पर्वत रु. कुवेराचल ह साथ ३८
 मेनाक के श. खडी के श. नामा दोहा
 हिरण्यनाभ तु सुनाभ रु. हिमवत्सुत मेनाक ॥
 खटी तु काठिनी ककवटी रु. वरालेखा ताक ३९

इति शैल वर्ग सारः ॥

सिंहनाद के अ. अष्टापद के श. नाम ॥ दोहा
 सिंहनाद चक्रारपुनि ह्वेडित तीन समूल ॥
 उत्पादक तौ प्रारभ चव अष्टापद शार्दूल ॥४०॥

इति सिंहादि वर्ग सारः ॥

देवरके २। प्रयालाके २। पतिके ३। उपपतिके २। नामादे०

देवरनागरप्रयालतौ वारकीरभरु सोतु ॥ ४० ॥

नर्मकीलं रतगुरु नयहिजारपापपति होतु ॥ ४१ ॥

इति नटवर्गसारः ॥

ऋषिके ३। महर्षि आदि ३। नाम ॥ दोहा

सत्यवचसं शापास्त्रं ऋषि महर्षि तौ व्यासादि ॥

प्रसर्षि तुभेलादिही देवर्षि स्तुकरादि ॥ ४२ ॥

ऋतुपर्णादितु राजऋषि वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि ॥

जैमिन्यादितु कांडऋषि सुश्रुतादितु श्रुतर्षि ॥ ४३ ॥

नारदके २। दुर्वासाके २। वाल्मीकिके ३। नाम ॥ दोहा

कापिवक्त्रं स्तु विधात्यभू कुशारीणां तु दुर्वासं ॥

कविज्येष्ठं प्राचेतसं रु कुशीवशं ह त्रयमस ॥ ४४ ॥

काश्यपके २। व्यासके २। वशिष्ठके २। विश्वामित्रके २। नाम

दो० कृतकोटितु काश्यप अथो मातरं वेद व्यासं ॥

कृष्णद्वैपायनं अपरवादरायणं रु व्यासं ॥ ४५ ॥

सत्यभारतं रु सात्यवतं पाराशरि अट मित्रं ॥

अरुंधतीपतिं वशिष्ठं हिताधिजं विश्वामित्रं ॥ ४६ ॥

गौतमके २। करणादके २। धन्वंतरिके २। काशिराज

कोशनाम ॥ दोहा ॥

गतानन्दं गौतमं हि अथ करणादं काश्यपं दोषं ॥

दिवोदासं धन्वंतरिं हि सुधोद्धवतु इक होय ॥ ४७ ॥

करेणुके २। कौंडिन्यके २। मंदनागके ४। नाम ॥ दोहा ॥
रुचिरासुतं तु करेणुं अथ विलगुप्तं कौंडिन्यं ॥

मंदनागं कात्यायनं रु. पक्षितं स्वामी गित्य ४७

चाणावयके ३। हलभृतिके ४। नाम ॥ दोहा ॥

चाणावयं तु द्रोणिं तृतीयं अंशुलं हलभृतिं सेतु
अयचितं रु. कृतकोटिपुनि उपवर्षं ह च व होतु ४८

पारिनि के ३। नाम ॥ दोहा ॥

दाहीपुत्रं तु पारिनिं रु. प्राणोत्तरीयं जानि ॥ ४९ ॥

प्रातर्दि रु. पारिनिं रु. आहिकं नाम वरदानि ४९
व्याडिके ४। कात्यायनके ३। नाम ॥ दोहा ॥

मेधावी नंदिनी सुतं च व. विध्यस्थं रु. व्याडिं ॥

कात्यायनं मेधाजितं रु. कात्यहि तृतीयनं रु. व्याडि ५०

वररुचिके २। पतंजलिके ४। भर्तृहरिके २। नाम ॥ दोहा ॥

पुनर्वसुं तु वररुचिं पतंजलिं तौ। गोनदीयं ॥

भाष्यकारं च व. चूर्णिकृतं हरितुं भर्तृ हरिं वीय ५१

कालिदासके २। भवभूतिके ३। भारविके २। नाम ॥ दोहा ॥

मेधारुद्रं तु कोटिजितं भूगर्भं तु भवभूतिं ॥

विस्मृतं अथ शतसुष्यं तौ भारविं जुग करवति ५२

इति ब्रह्मवर्गसारः ॥

मंडलेशके ३। एषुके ३। काकुत्स्थके २। नाम ॥ दोहा ॥

मंडलेशं तौ भयापहं रु. एकजन्मी स्वस्थ ॥

आदिरज एषु वैराय नय, पुरंजयं तु काकुत्स्थं ॥

मांघाताके ३। दिलीपके ३। दाशरथिके ३। नाम ॥ दो०

मांघातायौवनाश्वं हि, दिलीपराट् तु नाम ॥

खट्वांगं हि, दशकंठजितं कौशल्याय निर्गमं ५४

जानकीके ४। कुशको १। लवको १। एकवार मैदोनों
को १। नाम ॥ दोहा ॥

वैदेहीं तौ मैथिली भूमिज रू, सीतौ हि ॥ ४ ॥

राम पुत्र कुशीलव हि इक जति, कुशीलव आहि ५५

लक्ष्मण के ३। रावण के ४। नाम ॥ दोहा

लक्ष्मण तौ सौमित्रिय मेघनाद जित वेश ॥

राक्षसेंद्रधनवानुज रू, पौलस्त्य रूलं केश ५६

इन्द्रजीतके ३। हिडिंवारमणके ४। नाम ॥ दोहा ॥

मेघनाद तौ शक्रजित आंजनेय हनुमान ॥ ५ ॥

योगचर रू अर्जुन ध्वज आनिल रू हनुमान ५७

वालि के ३। पुरूरवा के ४। ययाति के ३। नाम ॥ दोहा ॥

ऐंद्रि रू, वाली बालि त्रय, पुरूरवा तौ दौध ॥

ऐतजयंशी बल्लभ हि, ययाति नाहुषि शोच ५८

शाकुंतलेय के ४। सहस्रार्जुन के ३। नाम ॥ दोहा ॥

जु शाकुंतलं यं सु, भरतं सर्व दग्धने दौष्यंति ॥

है हय वाहु सहस्रभृतरू कार्तवीर्य धनंति ५९

नल के ३। शंतनु के ३। नाम ॥ दोहा ॥

वाहुक नैषध अश्ववित् नल अरु पुण्यश्लोक ॥

महाभीष्म तौ शांतनुरु त्रय प्रातीप अरोक ॥ ६० ॥

शांतनुकीरणी योजनगंधिकाके ७। भीष्मके ७।

धृतराष्ट्रके २। पांडुके ३। नाम ॥ दोहा ॥

दासेयी तु भवोदरी चित्रांगदसु जानि ॥ ५ ॥

काली विचित्रवीर्यसु रु व्यास माता मानि ॥ ६१ ॥

सत्यवती हू गांग तौ गांगायनि गांगेय ॥ ५ ॥

स्वेच्छा मृत्युरु शांतनव कौशा पदंत रु ज्ञेय धर

पुरावसु हू धृतराष्ट्र तौ आविकेय जुग जानि ॥

माद्रीपति तु यथापति रु पांडु तृतीय दखानि ॥ ६३ ॥

दुर्योधनके ३। युधिष्ठिरके ४। नाम ॥ दोहा ॥

सुयोधन तु कुरु राज त्रय गांधारेय अशोक ॥

धर्मपुत्र अजमीठ पुनि अजात शत्रु रु कंक ॥ ६४ ॥

भीमसेनके ८। तिनमैव कोदर आदितौ ४। अरु ज

रासंधजित वकाजित आदि ४। नाम ॥ दोहा ॥ ५ ॥

वकोदरस्तु कटवरा रु बीरेण गांधार ॥

जरासंध किमीरजित वकहिडि वजित चार ॥ ६५ ॥

अर्जुनके १६। नाम ॥ दोहा ॥

कुडाकेश अर्जुन दिजय जित्सु बृहन्नल सोय ॥

गांडीवी फाल्गुन धनंजय रु किरीटी होय ॥ ६६ ॥

रु सव्यसाची कपिध्वज सु प्रबुध भेदी सारथ ॥

भीमत्तुरु। वानं पुनि तुभद्रेण अरु। पार्थी ६७॥

द्रोपदी के ७। नाम॥ दोहा॥

पांडु शर्मिली वेदिजा पांचाली हस्तो रु॥ १०॥

नित्य यौवना पार्वती रु। याज्ञसेनी चारु॥ ६८॥

करसा के ६। नाम॥ दोहा॥

चंदोत्क चांतक करसा पुनि वसुपेसा रु। राधेय॥

सतपुत्रक रु। रवितनय चंपेश हृष्ट ज्ञेय॥ ६९॥

द्रोणा के २। अश्वत्थामा के २। जनमेजय के ३। नाम॥

दो० गुरु आचार्य हि। कृपी सुत तौ। द्रोणा यन दोय॥

पारीक्षित राजर्षि अरु। जनमेजय ब्रह्म होय॥ ७०॥

बलिके २। वारा के २। त्वाष्ट्र के ३। शिशुपालक के

३। कंस के ४। नाम॥ दोहा॥

बलितु। विरोचन सुत जुगल विंध्यावली सुतस्तु

वारा हि। त्वाष्ट्र तु। वृत्र अहि वेदि राट तौ अस्तु॥ ७१॥

चैद्य न्यतिय। दमघोष सुत मूलभद्र तौ धारि॥

मूलदेव करी सुत रु। कलाहुर ह। चत्वारि॥ ७२॥

आकाशवारा के ४। लेखक के ३। नाम॥ दोहा॥

देवयज्ञ उपश्रुति रु। सुपुष्प शकटी जानि॥

चित्तोक्ति ह। मसिपराय तौ दोरक किरिक विमानि॥ ७३॥

द्वातिके ४। मेल के २। नाम॥ दो०

वरा कृपिका मसिमारी रु। सुवसी धानी जोय॥

मेलंधुं हि मेलो सुतौ मसीजलं हि जुग होय ॥७४॥

मसिके २। कलम के २। लेख के ४। नाम ॥ दोहा ॥

परंजन तु मसि लेखनी तु वर्णा तुली देख ॥

वर्णादृत तौ स्वस्तिमुख वाचिक हारक लेख ७५

छाप के २। लेख्य स्थान के २। लिफाफा के २। नाम। दो

मुद्रा प्रत्यय कारिणी ग्रन्थ कूट तौ होय ॥७६॥

लेख्य स्थान कचेल तौ लेखनि बंधन होय ॥७६॥

पथिक को १। पथिक गरा को १। संदेश के ३। नाम। दो

पथिक तु यातुरु गंतु त्रय पथिक संहति तु हारि

कौशली तु संदेश अरु प्राभृत त्रय निर्धारि ॥७७॥

घूस के २। गुप्त के २। लुंडी के २। चामर वात के २। नाम। दो

उत्कोच तु उपदान कहि जनातिक तु अपकाश ॥

लुंडी तु न्याय सारिणी कुटेरु मंथरु थाप्र ॥७८॥

हाथी के ८। नाम ॥ दोहा ॥

सिंधुर कटौ निर्करु पीलु महा मृग जानि ॥

जलकांक्ष रु राजीव पुनि सामज पे दिल मानि ७८

राजवाह्य के २। महादंत के २। हाथी का वच्चा को १।

नाम ॥ दोहा ॥

राजवाह्य दूजो विजय कुंजर ईषा दन्त ॥७९॥

महादंत कारिणावक तु विक्क हि नाम भनन्त ८०

गजबंधन स्तंभ के ३। अंकुश के २। प्रदंखला के २ ॥

नाम॥ दोहा॥

अशोक तु भारवि अरु गजवंधिनी विधीर॥

पिन्तज्वरतौ पालकहि पारीतौ हिंजीर॥ ८१॥

अश्व के १२ पंचकल्याण के २ नामा दोहा

अश्व तु झेली चामरी हरी कान्त श्री पुत्र॥

रुजस्कंध रु सुद्रुतक शालि होत्र गनि अत्र॥ ८२॥

वरुद्रथ रु वातायन रु एकशफ रु किल्की हि॥

जु पंचाव पुष्पित सुतौ पंचभद्र लखि बीहि॥ ८३॥

भानुकाहय के २ वेशर के ३ अश्वहृदावर्त के २ नामा दो०

रविहय नाटाट रु हरित वेशरतौ स्वरमानि॥

अश्वतर रु श्री वृक्षक तु हृदावर्त जुगजानि ८४

अर्जुन का रथ को १ दृहस्पति का रथ को १ नाय

क को १ प्रस्थ को १ नामा दो०

नंदिघोष रथ अर्जुन हि नीति घोष रथ जीव॥

अयोधरीक तु नायक हि उद्धात तु इकनीवा ८५

धनुष के १ चिल्ला के १ नामा दोहा

प्रसवाय स्यावर धनुष स्त्रगाता त्रिगाता पंच॥

व्यथ्य तु जीवा भारवरु प्रतिकाय रु गुरा पंच ८६

प्रार के ७ नामा दोहा

अश्व कंदक तु विकर्ष रु स्पूल दोड प्रार तात॥

निन पुख रु विपाट पुनि पत्र वाइ गनि सात ८७

तीरके अतरवारिके ४। पोंकी तरवारिके १। नाम ॥ दो०
तीरे तु विज्जल शायकी हि भद्रात्मज तरवारि ॥

विशसन धारा विष च वहित्युज्ज कटी तल धारि ॥ ८८

अभ्यासके ३। स्तुतिग्रन्थके २। जाचकके २। नाम ॥ दो०

सुरली शस्त्राभ्यास अरु योग्या विबुध किरीट ॥

वन्दि पाठ भोगावली पाचक तौ वसु कीट ॥ ८९

धूलिके ४। पताकाके ४। नाम ॥ दोहा

वातके तु मेदिनी द्रव पांशु रुक्षितिकरा चारे

चीन तु कदली कंदली व्योम मंजर ह धारि ॥ ९०

भीरुके ४। अपयानके २। वधस्थलीके २। नाम ॥ दो०

भेले तु भीरु पले कटे रु हरिण हृदय च वस्थात ॥

प्रगाली तु विद्रव जुगल वधस्थली आघात ॥ ९१

मारणाके २। रात्रि मारणाके २। मृत्युके २। मारकके ३।

नाम ॥ दोहा ॥

कदन तु मंथ हि सौमिक तु रात्रि मारणा हि धारि

भूमिलाभ तु निपात उत्पात त मरक रु मारि ॥ ९२

शवके ५। प्रमशानके ४। नाम ॥ दोहा

शव क्षिति वर्द्धन स्थाग कट पंचावस्थ हि नान ॥

शतानक तु चव दाह सर रुद्रा त्रीड प्रमशान ॥ ९३

इति क्षत्रिय वर्ग सारः ॥ ४ ॥

लट्ठमाके २। ऋणमुक्तिके २। शूर्प वातके २। का

चपात्रको१नाम॥दो०

लट्ठांतौ. धन पिशाची विगरान्तौ. क्रिया सुक्ति

प्रपेदांत फुल्लफाल हि सिंधारा तु इक उक्ति ॥ ८४

वायनके ३। फुलकारोटी के ३॥ नाम ॥ दोहा

व्रतोपायन तु वायन रु सहित प्रहेराक तीन ॥

पूपाली तौ चरपटी त्रय योली परवीन ॥ ८५ ॥

लाजाके २ दोहनीके ७। नाम ॥ दोहा ॥

खदिका लाजा दोहनी तौ पारी रु निपान ॥

तुंवा गदी रु रोहिणी सात निलिपा नाना ॥ ८६

कलेवाके ३। पारदके ४। नाम ॥ दोहा ॥

कल्यवर्त्त प्रातराश रु प्रातर भोजन धारि ॥

सिद्ध धातु हरबीज पुनि पारद सूतक चारि ॥ ८७

इति वैश्य वर्ग सारः ॥

कायस्यके २। नापितके ३। कुक्षुरके १०। नाम ॥ दोहा

कट्वाति तु अंजीकरी हि चंद्रिल वात्सी पुत्र ॥ ८८ ॥

नख कुट्ट हार सनालिह तु अरत चरप लखि अवर्द्ध

कपिल इन्द्र सहकासुक रु दीर्घ सुरत वाताद ॥

वक्र पुच्छ पुनि ग्राम मृग शयालु रत वरा वाद ८९

चौरके ४। नाम ॥ दोहा ॥

शुन्यां शुन्य शुनीर त्रय प्रचुर पुरुष तौ जानि ॥

शंकित वरा के कुंभिल रु चौर ह चारि प्रमानि ९०

वधचौरके ३ मसहचौरके ३ नाम ॥ दोहा ॥
 वधचौरतु कुजंभिरुसुरंगाहि ॥ हतीन ॥ १ ॥
 वंदीकारतु माचलरु बिल्ला ॥ हृत्रयचीन ॥ १ ॥
 स्त्रीचौरके २ काव्यचौरके २ अंडालगावावालाचौ
 रके २ नाम ॥ दोहा ॥
 स्त्रीचौररुतहिंडकहि काव्यचौरतौ जोय ॥ २ ॥
 चन्द्रेणु ही खानिक तु कुड्यके २ जुग होय ॥ २ ॥
 संधिके २ संधिभेदके १ शताकूके २ तर्कुशराके २
 तर्कुपीठीके २ पीनराके २ बूलके ३ नाम ॥ दोहा ॥
 संधिसुंगा भेदतिहि गोंमुख श्री दत्तादि ॥ ३ ॥
 तर्कु तु कपालनालिका तर्कुशान तौ वादि ॥ ३ ॥
 सामक ही अथ वर्तनीरु तर्कुपीठी बूल ॥ ४ ॥
 बूलकार्मुक तु पिंजन हि बूल तु पिचुपिचुबूल ४
 पिंजकाके २ तुरीके २ मोचड़ीकावापावड़ीकाभेला
 ४ नाम ॥ दोहा ॥
 बूलनालिका पिंजिका तंत्रकाष्टतु तुरी हि ॥
 प्राणिहिता पदरथी पावुका रुपनंधी हि ॥ ५ ॥
 इतिश्रु ॥ वर्गसारः ॥
 कल्याणकर्त्ताके ४ दाताके ३ अन्नार्थस्वस्तीदा
 ताको १ नाम ॥ दोहा ॥
 दोमकर मद्रकर रुशंकर रुशिष्ट ताति ॥ ५ ॥

दाह'तु दातां सुचिर'त्रयभायां'द'तु इकरव्याति द'
 सुप्रघातकके २। तीक्ष्णके २। सम्बन्धीके ३। नामादो०
 सुप्रघातक'तु दशेर'हि राजधतीक्ष्ण'हि जानि॥
 सम्बन्धी'गुरावान'अरु संयुक्त'तीनापिछानि॥७॥

षट्प्रज्ञको १। नामादोहा॥

लोकऔरतत्त्वार्थपुनिकाममोक्षधर्मार्थ॥८॥

अतिप्रज्ञाइनमैरवैसो षट्प्रज्ञ'हि सार्थ॥८॥

पृष्ठवावालाके २। दृढके ५। पाकिमके २। नामादो०

कथंकाधिकप्रष्टा'जुगल'ककवटंतौ निस्संधि॥

निर्वह'दृढरु'निवात'ही पाकिमपाकिम'बंधि'द'

पापिष्ठके ४। बौद्धके ५। कौलके २। नाम॥ दोहा॥

अधम'तु अपसदपापध्रुव'वौद्धक्षपरा'अहीक॥

वैनायिक'भिन्नक'हि अध'कौल'आत्वयिक'नीक१०

शैवके ३। पाशुपतके ४। चीकरा'के २। नाम॥ दोहा॥

और्द्ध'श्रोतसिक'शैव'ही पाशुपत'तु चिद्रूप॥

स्फूर्तिमान'पांचार्थिक'हि मस्तरा'मराल'अनूप११

खचितके ४। पात्रेसमितको १। नाम॥ दोहा॥४॥

करंवित'तु खचित'रु रुषित'गुरुगुंडित'चवजोय॥

भोजन'तै अनतन मिलत'पात्रेसमित'सहोय॥१२

इति विशेष्यनिघ्नवर्गसारः॥

धार्मिकसहभाजनको १। दोस्यको १। नामादो०

सहभोजन धार्मिकनको गरा चक्रकै इक आहि ॥

दो स्थतु कीडा कीडकरु सेवा सेवक माहि ॥१३॥

कलंजको १ वक्रभारितके २ अनुमानके ३ नामादे ०

करिविषाल्मृगपक्षि हतते कलंज ही नान ॥

वक्रभारितके कोक्ति जुग अनुमा तौ अनुमान १४

राजकारास्फालको १ वस्तुके २ नाम ॥ दोहा ॥

स्फालनजी कारे काराको भलझुल्लो इक पाव ॥

धर्म तु सत्वरु तत्त्व पुनि वस्तु पदार्थ रु भाव १५

संदर्भके २ ग्रन्थके २ महाकाव्यके २ नाम ॥ दोहा ॥

संदर्भस्तु प्रबंध अथ द्वाविंशदक्षरी सु ॥ १६ ॥

ग्रन्थ सर्गबंधतु द्वितीय महाकाव्य ही दीसु १६

नाटकके २ वाङ्मयभेदनके भिन्नभिन्न ३ नाम ॥ दोहा ॥

महारूपक तु नाटक ही वाङ्मयभेद कथा सु ॥

परिकथा रु आख्यायिका चंपूखंड कथा सु ॥ १७ ॥

कथा परिच्छेदनके भिन्नभिन्न ४ नाम ॥ दोहा ॥

परिच्छेद उद्घात पुनि सर्ग वर्ग अध्याय ॥ १८ ॥

परिवर्त रु उच्छ्वास नव संग्रह अंक गनाय १८

ग्रन्थ संधिनके भिन्नभिन्न ६ संकेतके ५ अप्रति

रूपकथाके २ नाम ॥ दोहा ॥

काराड पर्व आन्हिक पटल प्रकरा स्थान सचेत ॥

ग्रन्थ संधि षट्ही अथो समय कार संकेत ॥ १९ ॥

परिभाषां प्रज्ञप्तिं सुनि शैलीं पंच वरवानि ॥१॥

अमति रूपकथां सुतौ संगरीकां जुगजनि २०॥

इति संकीर्ण वर्गसारः

इति त्रिकाण्ड शेषसार तरंगः ॥१॥

अथ हेम सार तरङ्ग-लिरख्यते ॥ दोहा

जुदे वाधि देव सु प्रथम देव मर्त्य सुनि मान्य ॥

तिर्यक् नारक हेम कृत कठम काराड सामान्य ॥१॥

देवाधि देव प्रथम भै देव तु दूजे माहि ॥ ४ ॥

नर तीजे तिर्यक् च वथ एकेन्द्रियादि आदि ॥३॥

एकेन्द्रिय भूत जल वायु महीरुह जोय ॥

द्वीन्द्रिय तौ हनि आदि अथ पीलकादि त्रय होय ३

लतादितु चतुरिन्द्रिय हि पंच इन्द्रिय तु जानि ॥

इमके कीमत्तादिये थल नभ जल चरमानि ४

सुर नर नारक तीनये पंच इन्द्रिय हि होय ॥५॥

नारक पंचम कठम भै साधारण जिय जोय ॥५॥

मोक्ष केटी नाम दो०

महानन्द अपुन भव रु महोदय रु निर्याण ॥

निर्वृति अक्षर ब्रह्म सिद्धि सर्व दुःख क्षय जाणा ॥

मुनि धन के ३ दीक्षा वा संन्यास के ४ नाम ॥ दोहा

तप रु योग शैव मुनि धन हि व्रतादान तौ धारि ॥

तपस्वा रु नियम स्थिति रु सु परिज्या चारि ॥३॥

अष्टांगयोग नाम। दोहा ॥

योग अंग अठ। यम नियम आसन प्राणायाम ॥

प्रत्याहार रु. धारणा ध्यान समाधि हि नाम। ८ ॥

यम भिन्न भिन्न ५। नाम ॥ दोहा ॥

यम तु अहिंसा सत्यता अरु अस्तेय ब्रह्मचर्य ॥

ब्रह्मचर्य अपरिग्रह ह भिन्न भिन्न ये जानि। ८

भिन्न भिन्न नियम के ५। आसन को १। नाम ॥ दोहा ॥

नियम शौच सन्तोष तप अरु स्वाध्याय विवादि।

ईश्वर प्रणिधान ह अथो आसन वह पद्यादि। १०

प्राणायाम के २। प्रत्याहार को १। नाम ॥ दोहा ॥

प्राणायाम तु प्राणायम प्रवास प्रपवास सन्धार ॥

विषय न तै इन्द्रियन को रोकव प्रत्याहार ॥ ११ ॥

धारणा ध्यान। दोहा

धारणा तु स्थिर बन्धन जु मन को ध्येय में भार ॥

सतत एकता ध्येय मै मन की ध्यान उदार ॥ १२ ॥

समाधि संयम। दोहा ॥

अर्थ मात्र आभास जव ध्येय जु शून्य स्वरूप ॥

सो समाधि अथ एकता त्रय की संयम रूप ॥ १३ ॥

इति देवाऽधिदेव काराऽसारः

अथ देव काराऽसार लिख्यते ॥ स्वर्ग के शिरे वन्त के

४। नाम ॥ दोहा

ऊर्ध्वलोकं गोमुवि तविषंताविषं पञ्चभनन्त॥

स्रवणं अकंरेतो जअरु हयवाहनरेवन्त॥ १४ ॥

चन्द्रमाके ४। बुधके २। कुजके २। नाम॥ दोहा॥

सितवाजी तुलियि मरणी अमृतक्षरु दशवाजि॥

ण्यामाङ्ग तु पंचार्चि अण्ण आरेनवार्चि हि साजि॥ १५

शुक्रके २। शनि के ५। नाम॥ दोहा॥

मघाभव तु षोडशार्चि हि असित सप्त कर जानि॥

कोडरेवती भव पंचम नीलवासस हि मानि॥ १६

सागरकोटि कोटि की वीसी मै द्विविध काल को वर्त

वा दोहा॥

काल द्विविध अव सार्पिणी उत्सर्पिणी पिछानि॥

सागरकोटि हि कोटि गुनितिन वीसन मधिमानि॥ १७

काल चक्र के अरु की संख्या नियम॥ दोहा॥ १८॥

षट् अरु अव सार्पिणी मधिषट् उत्सर्पिणी माहि॥

पूरव सैं विपरीत पर काल चक्र अरु आहि॥ १८॥

प्रथमा ७२ नाम प्रमाणा॥ दोहा॥

जुराकान्त सुखमौ मध्यम काल चक्र अरु धारि॥

तहाँ बरष सागरल के कोटि कोटि हैं चारि॥ १९॥

द्विती य तृतीय अरु नाम प्रमाणा॥ दोहा॥

दूजे सुखमौ अरु विषै कोटि कोटि ते तीन॥

सुखमदःखमौ अरु विषै कोटि कोटि जुग बीन॥ २०

चतुर्थी ऽर नाम प्रथार ॥ दोहा ॥

दुःखमसुखमौ चवथ मै कोटि कोटि इह आहि ॥

सहस्रवयाली सहिवरष न्यून होयति हिं माहि २१

पंचामा ऽरषष्ठार नाम प्रथार ॥ दोहा ॥

पंचम दुःखमौ अरविषे वर्ष इकोस हजार ॥

अथ इकोस हजार ही अति दुःखमौ मफार २२

अथ उः सर्पिणी केषट अरन को सप्तोष वर्शान ॥ दोहा ॥

अथ षट अर उः सर्पिणी मै इन तै विपरीत ॥ १ ॥

अति दुःखमौ रु दुःखमौ प्रथम द्वितीय क्रम मीत २३

अथ सर्पिणी के प्रथमा ऽर अथ मै अत्यन्त मनुष्यन की

आयु। उच्चाई। भोजन नियम। दोहा ॥

प्रथम दूसरे तीसरे अर मै मर्त्य जु होय ॥ १ ॥

पत्यतीन द्वै एक ही क्रम तै जीवत सोय ॥ २४ ॥

ऊंचे तीन रु होय इक गव्यू तहिते तात ॥ १ ॥

तीन दोय इक दिवस ये कल्प दुम फल खात २५

चतुर्थी ऽर मै आयु। उच्चाई। नियम। दोहा ॥

चतुर्थ अर मै नरन की पूर्ण कोटि वय जानि ॥ १ ॥

धनुष पाँच सौ उच्चता तवही तिन की मानि ॥ २६ ॥

पंचमार षष्ठार मै आयु। उच्चाई। नियम ॥ दोहा

पंचम मै शत वर्ष वय उच्चता तु कर सात ॥ १ ॥

कुठै आयु षोडश वरष हाथ उच्चाई तात ॥ २७ ॥

रुसकान्तद्वःखमादिजु उत्सर्पिणी मभार ॥

षट् अरके मानवन को जानि वयादिविचार ॥ २८ ॥

उत्सर्पिणी के षट् अरक को रक्त नाम ॥ दोहा ॥ ५ ॥

अति दुःखमा रु। दुःखमा दुःखम सुखमा जोय ॥

सुखम दुःखमा रु। सुखमा अतिसुखमा षट् होय २८

काल वर्ष जीवन समय उच्चाई रु भव रीति ॥ ५ ॥

या क्रम करि पूरव लिखित ज्यो षट् अरको चीति ३०

सागर कोटि रूपत्य पुनि पूर्व कोटि संख्या हि ॥

नियम विशद विस्तृत लखौ ग्रन्थ जैन मत माहि ३१

काष्ठा। लव। कला। लेश। नाम ॥ दोहा ॥

अष्टादशाहि निमेष की काष्ठा काष्ठा दोय ॥ ५ ॥

सोलह पंदर हलव। कला। लेश। कला जुग कोय ॥ ३२

क्षरा ॥ १ घडी के ४। मुहूर्त १। नाम ॥ दोहा ॥ ५ ॥

लेश पंच दश। क्षरा। सुषट् घटिका घटी वखानि ॥

चारि धारिका नाडिका सुजुग मुहूर्त हि मानि ॥ ३३ ॥

तिथि के २ हेमन्त के ३। शिशिर के २। वसन्त के २। नामा दो

तिथि तु। कर्म वाटी हि ऋतु प्रशाल रोद्र हेमन्त

शैव तु। शिशिर हि इष्यतौ वलाङ्गक हि वर्गन्त ३४

दर्षा ऋतु के ४। शरद के ३। नामा दोहा ॥

मेघ काल मेघागम रु। क्षरी तपात्यय चारि ॥ ५ ॥

शरत घनात्यय शरद ऋतु तीन नाम निर्धारि ३५

दक्षिणादिग्भववस्तुके २। उत्तरादिग्भववस्तुके २। पूर्व
दिग्भववस्तुके २। पश्चिमदिग्भववस्तुके २। नामादेः
अपाचीनं तौ अपाकं हि उदकं स तु उदीचीनं ॥

प्राकं तु प्राचीनं हि जुगल प्रत्यकं तु प्रतीचीनं ॥ ३६ ॥
इन्द्रशत्रु ७ तिनके भिन्न भिन्न । नाम ॥ दोहा ॥
जम्भ' अद्रि' वल' ब्रत्र' अरुन मुचि' पुलोमी पाक' ॥
भिन्न भिन्न ये सात ही शत्रु इन्द्र के ताक ॥ ३७ ॥

इन्द्रसुतके २। इन्द्रसुताके ३। इन्द्रद्वाः स्थको १। नामादेः
सुतजय दत्तरु जय' जुगहि सुता जयन्ती स्वास्थ ॥
ताविषी' तीजी' ताविषी' जु देवनन्दी' द्वाः स्थ ॥ ३८ ॥
इन्द्रसरोवरको १। स्वर्गाशिल्याके ४। नामादेहा
सप्तौ नन्दी सर' इकाहि देव वर्द्धी के तु जानि ॥ ३९ ॥
सु विष्वकर्मा दिष्व कृत त्वष्टा' चारे पिक्वानि ॥ ४० ॥

यमपुरीके १। यमद्वाः स्थको १। कुवेरपुरीके २। नामादेः
सं यमनी' जमकी पुरी वैध्यतैति हिं प्रातेहार ॥
जु वस्वोक सारा सुतौ प्रभा द्वितीय निर्धार ॥ ४१ ॥
पार्वती के ३। स्वामि कार्तिक के ४। नामादेहा
स्वसा कृष्ण मैना के की भूत नायिका' धारि ॥ ४२ ॥
उमा हाते का गङ्गा को सुत अश्रभू' चारि ॥ ४३ ॥
विष्णु के शत्रुन के २३। नाम ॥ कृष्णय
मधु' धनुक' चारार प्रतनी यमलार्जुन कहि ॥ ४४ ॥

शकट अरिष्टरु कालनेमि पुनि हय ग्रीव लहि ॥

कैटभ केशी कंस साल्व मुर मैन्द द्विविद भनि ॥

नरक वारा प्रिशुपाल राहु वल कालिय ह गनि ॥

अरु कनक कशिपु हवी सत्रय हरि केशत्रु वरानिये

काहिक विगुलाव अरिकाम कोशं वर प्रर्यक जानिये ४२

वलदेव को ४। वलदेव को मूसल को १। हल को १। नाम। दो-

सौनन्दी संवर्त की हाल सिता सित चारि ॥ ४१ ॥

सौनन्द तुतिहि मूसल अथ हल संवर्त कधारि ॥ ४२

सूत्र को १। भाष्य को १। प्रस्ताव को २। निरुक्त को १। नाम। दो-

सूत्र तु सूचन कृत हिति हि विस्तृत अर्थ तु भाष्य ॥

प्रस्ताव तु प्रकरा हि पद भंजन निरुक्त राख्य ४३

अधिकरा को १। वार्तिक को १। नाम। दोहा

अधिकरा तु उपपादन जु न्याय हि वार्तिक जान ॥

उक्त अनुक्त दुरुक्त त्रय अर्थ हिकारा ज्ञान ॥ ४४

टीका को १। पद सूचनी टीका को १। अर्थानुसारणी टी-

का को १। नाम ॥ दोहा ॥

टीका व्याख्यानिरुक्त पंजिका तु पद भंज ॥ ४५ ॥

अन्वर्थ स्तुति वंध अरु वृत्ति हती न हिरंजा ४५ ॥

परिशिष्ट १ प द्विती शकारिका १। नाम ॥ दोहा ॥ ४६ ॥

परिशिष्ट पद्वर्ति इति क अर्थ कारिका पिछानि

स्वल्प वृत्ति से सूचना बहुत अर्थ की जानि ॥ ४६

सर्वविद्याको१ नामसंग्रहको१ सामान्यगालीको१
आशिषको१ नाम ॥ दोहा ॥

सर्वविद्यातु कालिन्दिकानिघंटुसंग्रहनाम ॥

गालितु विरुद्धप्रसन्नहि। आशी मंगलधाम ४७

अभिनयभेद ४। नाम ॥ दोहा ॥

आहार्यतु भूषणरचितवचकारि वाचिक जानि ॥

तत्तुकरि आंगिक सत्वकरि सात्विक अभिनयमाने ४८

दशरूपकके भिन्नभिन्न। नाम ॥ दोहा

नाटक प्रकरा भाषा पुनि प्रहसन डिमव्यायोग ॥

समवकार ईहामृग रु वीथी अंकहि योग ॥ ४९ ॥

षट्भाषा। नाम ॥ दोहा ॥

संस्कृत प्राकृत भागधी रु शौरसेनी जानि ॥ ५० ॥

पैशाची भाषा छठी अपभ्रंश पहिचानि ॥ ५० ॥

वृत्ति ४। नाम ॥ दोहा ॥

वृत्ति चरित्रे भारती और सात्वती जोय ॥ ५१ ॥

आरभटी पुनि कैशिकी भिन्नभिन्न चव होय ५१

शिवादेकी वीरगान के भिन्नभिन्न। नाम। कृष्ण

जुअनालम्बी वीरा सो तु शिवकी उर आने ॥

कच्छपीतु शारदहि नारदहि महती सानो ॥

प्रभावती तौ वीरा गगान की कविजन गावै ॥

विष्वावसु की वारा विदित ब्रह्मी ठहरावै ॥

अरु तुन्दरु की तु कलावती कदिशुलावदीरा कहो
अथ कंडेल रुचांडालिका चंडालन की जुगल ही ५२
वीरा का मूल मै तारवांधवा के अंग के २। कोरा के २
नाम ॥ दोहा ॥

वंश शलाका मूल मै कूशिका रु कलिका हि ॥
शारिका तु वीरादि को वाहन कोरा हि आहि ५३
नाट्य मै सौगतादि को शूज्य के ४। नाम ॥ दोहा ॥ ५।
सौगतादि तौ मंदत हि पूज्य तु तत्र भवान् ॥
अत्र भवान रु नीसरो भगवान हि परिमान ५४

इति देव कांड सारः ॥

अथ मर्त्य कांड सार लिखते ॥ वेश्या की मजूरी को
शकावड आदिका दंड के २। वीर के २। नाम ॥ दोहा ॥
भोग तु गणिका की भटति हि भार्या छे तौ जानि ॥
विहङ्गि का हू सूरतौ आरभत हि पहि चानि ५५।
खरूट के २। मार्ग खर्च के २। जा को पिता का नाग के
पाँखे जाणिवो होय ता पुत्र के ३। वेश्या का पति को १
बड़े भाई क वारो होय छोटे परायो ता की स्त्री को १
नाम ॥ दोहा ॥

रूढ वरा पद तौ किरा हि शंवल तौ पाधेय ॥

जु। परव्यात वपूक सुतौ आनुष्या वरा डोय ५६।
अरु असुख पुर्व हन्य हि गणिका पति तु मुज ॥

परिवेत्ता की नारिसे। परिवेदिनी अंग ॥ ५७ ॥

बड़ी साली के २। छोटी साली के ३। नाम ॥ दोहा ॥

तिय की बड़ि भगिनी कुली ज्येष्ठ श्वश्रुं दोय ॥

लघु तौ हाली आलिका केलिकुचि की होय ५८

देवर आदि सैं उत्पन्न पुत्र को १। वाम दृग को १। दाहि

ना दृग को १। डाढ के २। नाम ॥ दो०

देवर आदि जतु होव जहि सौम्य वाम दृग जोय ॥

भान दीप न दाहेनो दाढा जंभा हे होय ५९

जीभ मलादि ५ के ५। भोजन वस्त्र को १। वेत्र का आस

न के २। भोजन शयन को १। नाम ॥ दोहा ॥

कुलुक जीभ मल। दंत मल सुतौ पिप्पिका घूष ॥

नांक मल तु सिंहाणा इक। कान मल तु पिंमूरु ६०

लिंग मेलतौ पुष्पिका काशिए तु भोजन चीर ॥

आसन्दी वेनासन हि अशन शयन औशीर ६१

प्रदीप के ५। वस्त्र का पंखा को १। नाम ॥ दोहा ॥

लेह प्रिय गृह मणि दशा कर्ष दशेन्धन दीप ॥

आलावर्त तु बीजनो बसन रचित कुल दीप ६२

चक्रवर्ती १२ के पिता समेत दोष दोय नाम तिन में
शांति १। कुंक्षु १। अर १। दून को एक एक नाम है। दो०

अर्षिभि भरत हि सगर तौ सुमित्र भूहि गनीय ॥

माद्यवी वैजयं नुगल अथ सनत्कुमार द्वितीय ६३

अश्वसेन नृप नन्दनं हि शान्तिं कुंभं अरितीन ॥ २ ॥

एकस्मिन् हीय भये जित चक्रेश नवीन ॥ ३४ ॥

कान्तदीर्घ तौ सुभूप हि पद्मोत्तरात्मजस्तु ॥ १ ॥

पद्म हि जुग हरिपरां तौ हरिस्तुतं जुग ही अस्तु ६५

विजयनन्दने तु जयं जुग हि ब्रह्मस्तु तौ दोय ॥

ब्रह्मदत्तं ये द्वादशा हि सव इक्ष्वाकुज होय ॥ ६६ ॥

पिता सहित देवासु देव । नान ॥ कृष्यय ॥ ३ ॥

प्रजा पत्यं विष्टं ब्रह्म सम्भवं द्विष्टं गानि ॥

स्वयं भूतु रुद्रजं हि सोमस्तु पुरुषोत्तमं भनि ॥

पुरुषसिद्धं तौ शैवं दोय अथ महाशिरः सुत ॥

पुरुषसंशरीकं हि रुद्रतं तौ आग्नि सिंहस्तुतं ॥

नृपदशायस्तुतं नारायणं हि कृष्णतनयवसुदेवकर

ये वासुदेववक्त्रं चरं भये सकल जानत सुनर्द

वलदेव देविनके । अरु वासुदेवरियुर्देके । एकस्म

कानाय ॥ कृष्यय ॥

अवलं विजयं अरुभद्रं बहुरिस्तुप्रभं रुद्रुदर्शन ॥

आनन्दं रुद्रनन्दनं रूपद्रं पुनिरमं हि । हर्षन ॥

वासुदेव रियुनवतु । अश्वयीवीरु । तारकं भनि ॥

मेरकं मधुं रुद्रिशुभं वलिं रुद्रप्रह्लादं विदितगानि

लेकेशं अम्भगधेष्ट्वरं हि । पृथक् २ कर जानिये ॥

नववल रुद्रिस्तु रिपुह्ननद्रुहिसव अष्टादश मानिये ६८

धर्म पुत्र के २ भीमसेन के ४। द्रोपदी को १ नाम। दो०

बुधिष्ठिर तु शल्यारि ही मरुत्यत्र तो भीम ॥ ४ ॥

नाग बल रु। कीचक जित ही सैरन्धी एक सीम ईष्ट

अर्जुन के ५। करण के ३। नाम। दोहा ॥

राधावेधो रण्डि नर श्वेत हय रु। करणारि ॥ ५ ॥

अगाष्ट राधातनय तृतीय करण निर्धारि ॥ ६ ॥

राजाश्रेणिक के २। हाल के २। चोलुक के ६। निजदेश
रक्षणादिविचार को १। अरिनाशनादिको १ नाम। दो०

श्रेणिक ममासार न्यपसात वाहन तु। हाल ॥

चोलुक तु परमार्हत रुकुमार पाल रसाल ॥ ७ ॥

धर्मोत्मा राजर्षि पुनि मृत स्वभोक्ता द्याप ॥

स्वराष्ट्र चिन्ता तंत्र ही अरि चिन्तन आवाप ॥ ८ ॥

पानदान के २। ॥ ६ ॥ चौकी के २ नाम। दोहा

हेताम्बूल करं कं तो स्थगी नाम जुग जोय ॥

पाद पीठ तु पदासन हि सुचरा चौकी होय ॥ ९ ॥

ब्यसन ७ के भिन्न भिन्न नाम। दोहा ॥

मृगया द्यूत रु। नारि मद अर्थ दोष चव घोर ॥

काठिन दंड येत्याज्य है ब्यसन सातचित चोर ॥ १० ॥

पेटी विशेष जो पेड की सिलहंती का २। पीडी की सिल
हके २। अंग की सिलहके २। दस्ताना आदि हाथ
की सिलहके २ नाम। दो०

उदर वारा नागोद हीमंशुरा जेचा वारा ॥

अंगरसिणी जालिका वाहुलं वाहु वारा ॥ ७४ ॥

पारिमुक्ताऽऽदि प्रसू ४ के ४ । नाम ॥ दोहा ॥

पारिमुक्त प्रसूपादि हैं, यंत्रमुक्त वारादि ॥

याष्ट आदिमुक्ताऽऽमुक्त है, अमुक्त कुरिकादि ७५

चिल्ला सैं वारा का छट बाको ॥ वारा का अति वेगले

खड्ग का म्यान के ३ नाम । दोहा ॥

व्यवच्छेद शरसुक्ति, अथ दीप्ति वेग अतितास ॥

कोशंतु प्रत्याकार अरु परी नारं त्रय भास ॥ ७६ ॥

ताल के ४ । बड़ी कुरी को १ प्रस्ताभ्यास की पृथ्वी को

१ नाम ॥ दोहा

अडुन खेटक आवरा स्फुर ह वड कुरी सोतु ॥

पवपाल अथ शस्त्र सिख भू खल्लूरिका होतु ॥ ७७ ॥

सहाय कौ मित्र की सेना आवैती को १ चलाई सेना को

डेर मै सैं त्तरा काष्ठादि कौ जायती को १ नाम ॥ दोहा

सहद वल तु आसार है चलित वलस्तु प्रचक्र ॥

प्रसारा त्तरा काष्ठादि हित सुतौ प्रसार अबक ७८

अखाडा के २ वील दंड के ३ नाम ॥ दोहा ॥

असवाट तौ मल्ल भू दृत मै दंड जु लेय ॥ ७९ ॥

वैल्व रौ च सार स्वती हि वील दंड त्रय लेय ७८

पील का दण्ड के २ । पीपल का दण्ड के २ । गूलर का

दण्डके २। आसन १। नाम ॥ दोहा ॥

औपैरधिक तु पैलवै हि जितने मि तु अप्वत्य ॥

उत्तखल तु औदं वी हि वृषी पीठ हू कथ्य ॥ ८३ ॥

ब्रह्म यज्ञादि ५ के ५। पक्षान्त यज्ञ दोय के २। नाम ॥ दोहा ॥

ब्रह्म यज्ञ अध्ययन है होमादिक सुर यज्ञ ॥

तर्पणादि पितृ यज्ञ है अतिथि से वानर यज्ञ ८१

भूत यज्ञ बलिदान है महा यज्ञ ये पंच ॥ ८१ ॥

पौरोहितासी इक दर्श मख है पक्षान्त प्रपंच ८२

यज्ञ कण्ड के २। होम की अग्निके ४। नाम ॥ दोहा ॥

होम कण्ड तो हवित्री महा ज्वाल तो जानि ॥

महावीर हामाग्नि अरु प्रवर्ग चारि वास्वानि ८३

होम की धूर्वा को १। होम की भस्म को १। चरित्र के १।

नाम ॥ दोहा ॥

होम धूम तो निगरी ही वैष्टुत भस्म हि मित्र ॥

शील वृत्त चरित रू चरणा आचार रू चारित्र ८४

नारद के ४। वशिष्ठ की स्त्री को १। गुरु धातक के २। नाम ॥ दोहा ॥

नारद कलिकारक पिशुन देव ब्रह्मा आहि ॥

अथो अक्षमाला इकाहि नर कीलक गुरु ही हि ८५

अग्नि होत्र करि वाका कल से ब्रह्म भागै ती विप्र को १।

देवादि पूजा मै प्रद्वारहित विप्र को १। पंच यज्ञ भए

द्विज को १। एक मत से रुचि उडाय दूजा भेलगा वै ताके

१। शूद्र का धन सैं अग्नि होत्र करै ता विप्र को १। होम नू
कि जाय ता को १। नामा दोहा ॥

जु वीरोपजीवक सु डक बल मलि म्लुचै खरु भिन
एक वीर विहावक हु वीरोज्जु हि डक गिन ॥ ८६ ॥

जैन दर्शन वादी के २। वैद्व दर्शन वादी के २। न्याय दर्शन
वादी के ३। नामा ॥ दोहा ॥

जु वाद वादी आहै तहि सौ गत तु शून्य वादि ॥

नैयायिक तौ योग अरु आक्षपाद त्रय वादि ८७

संख्य वादी के २। वैशेषिक वादी के २। चार्वाक वा।

महा नास्तिक वादी के ३। नामा दोहा ॥

॥ संख्य तु कापिल ही अथो वैशेषिक औत्तरक्य ॥

वार्हस्पत्य तु नास्तिक रु। लौकायतिक अचूक ८८

इन छके वादीन को १। सारवी के २। ऋषा के निमित्त ग

हरो धरवा की वस्तु के २। यथा संख्य करि मान भेद

के ३। नामा ॥ दोहा ॥

गेषट। तार्किक स्थेय तौ साक्षी बंधक आधि ॥

पौतव दुवय रु। पाण्य ये तोल माय कर साधि ८९

वैसा को १। तेली के ३। खलि के २। मृगादि पकडवा

का खाडा के २। नामा दोहा ॥

दाव मुष्टि तौ वारट अघ नैली चार्किक तात ॥

धूसर पिण्याक तु खली हि अवट द्वितीय अवपात ९०

इतिमर्त्यकाण्डसारः ॥

अथतिर्य्यकाण्डसारलिख्यते ॥

धरतीकेरत्नसूआदि ३। लवणाखानिभूमिको १। खनिभवलवणाके २। टंकणाखारके २। नाम ॥ दोहा ॥

रत्नबीजसंभूमिं त्रयः। रुमां लवणाकी खानि ॥

रुमाभवंस्तु वसुं कजुगः। पाचिनं टंकणां मानि ८१

कर्मभूमि विचारमै २। फलभूमिमै १। नाम ॥ दोहा ॥

तीन भस्म एवावत सु अरुविदेह कुरु हीन ॥

वर्षं कर्मभूमिं हि अपरदेशतु फलभूमीन ८२

आधागांवको १। सेतुके ३। बाडाके ४। नाम ॥ दोहा ॥

अर्द्धग्रामतु पाटकं हि आलितु पाली चीन ॥

संवरां हि आवेष्टकं तु वाटेरु वृत्तिं प्राचीन ८३

गयाको १। शिवपुरीके ४। नाम ॥ दोहा

गया तु गयराज्यं कीपुरी नाम निर्धारि ॥

वारणासी वाराणासी काशिरु काशी चारि ८४

त्यरा धरके २। रक्जानाके २। होमवस्तु का घरके २। नाब्दो-

कायमान तौ त्यागी कसं दोय कुप्यशालां रु ॥

संधानीं होत्रीयं तौ हविर्गे हि अति चारु ८५ ॥

शान्ति घरके २। गजशालाके २। सभागृहके २। गोशा-

लाको १। नाम ॥ दोहा

शान्तिगृहं तु अथर्वणां हि चतुरं हस्तिशालां हि

इन्द्रक आस्थान गृह ही संदानिनी इकाहि र्द
विप्रशाला को १ तंतुशाला को १ नापित शाला के ३
खूटी के १ नामा दोहा ॥

जालिनी तु इकागर्तिका अथरवरकुटी विमानि ॥

वपनी शिल्पा दंतक तु नागदन्त जुगजानि ८७

कोटी आगल के २ ताला के २ कुँची के ३ नामा दोहा

सूत्रि तु अर्गलिका जुगल तालक तु द्वारयंत्र ॥

तीनकुंचिका कुंचिका साधारण सुमंत्र ॥ ८८ ॥

ताला की सुसके २ देहली के ३ दोहरवाल को १ नामा दो

ताली प्रतिताली उदम्वर तो उदर तीन ॥

अंवर वंदन मालिका भंगल दाम प्रदीन र्द

गवाक्षादिकै त कियो वा कट हडो होय ता के ३ चिन्ह

की पुतली को १ नामा दोहा ॥

मत्तालेंव अपाश्रय रु अत्तवारण सुजानि ॥

पुतली अंजलि कारिका लेप्य मदी इकमानि ९००

दीवड़ा दीवडी के २ खालका कर बाडोलची को १ वि

मला चल के २ मंदरा चल के २ नामा दोहा ॥

द्विती खल्ल हि जुग एक तो करक पात्रिका शील

शतुच्चय विमलाद्रि ही मंदर तु इन्द्रकील १०१

सूर्य मरिा के ३ चन्द्र मरिा के ४ नामा दोहा

सूर्य कात वहनो पल रु सूर्य ५ प्रमं त्रय जोय ॥

चन्द्रकांत चन्द्रोषल रु. चान्द्र चन्द्रगणि होय ॥ १०२ ॥

स्थावर २५ विषभेदनको एकैक । नाम ॥ कृप्यय ॥ १०३ ॥

मेषशृंग अहिच्छत्र कुष्ठ वालूक रु. नन्दत ॥ १०४ ॥

कैराटक मर्कट रु. हेमवत करवीरक मत ॥ १०५ ॥

गौराद्रक मूलक रु. सर्षप रु. सल्लुक कर्दम ॥

कालिंग रुष्टंगिक रु. इन्द्र मधुसिक्धक गौतम ॥

अंकोल्लसार लांगालिक पुनि पिंगल सुस्तक दालदहि

अरु. विस्फालिंग पच्चीस ह्यो स्थावरविषकी जातिकहि ॥ १०६ ॥

कुरंटादि दृक्षयोनिषट् जाति । नाम ॥ दोहा ॥

कुरंटादि तो अग्रज हिमूलज, उत्पल आदि ॥

पर्वयोनि इक्ष्वादि हैं स्कंधज सल्लुकि आदि ४

बीजरुह तु शाल्यादि हैं समूर्च्छ जतुतुरादि ॥

सकल वनस्पति मां हिये मूलजातिषट्वादि ५

इति पृथिव्यादि एकेन्द्रियाः ॥ १०७ ॥

देह मै पडेता कीडाके २ । देह कै बाहिर पडेता कीडाके

१ इन दोनौन को १ सूक्ष्म कृमिको १ । नाम ॥ दोहा ॥

अन्तर्जन्तु नीलंगु कृमि ह्रस्वकीट बहिजात ॥

पुलक नाम इन दुहन को कीकस अणु कृमितात ६

काठका कीडाके १ । गिंडोला को १ । जोक के ४ । नाम ॥ दो

कष्टकीट घुरा अथ कुसू जलसर्पणी तु धारि ॥

सु. जलालोका जलका सहित अस्वपा चारि ॥ १०८ ॥

सीपको १ शंखके ३। छोटा शंखको १ नाम॥ दोहा ॥ ५॥

जु. अब्धि बंडकी सुइक। वारिज सुतौ विरेख ॥

तलिय. घोड शावर्त्त अथ. लघु नौ सुल्लक देख ८

कोडा काडी रूप प्रारणी के ४। कोयल्या जीवको १ नाम॥ दो०

परास्थिक स्तुवराटक रु. चारि कपर्द हिराय ॥

अथ दुर्नामा ह सहित ये सब द्वीन्द्रिय गराया १०८॥

इति द्वीन्द्रियः॥

अथ त्रीन्द्रियाः॥ मकोडा के २। सूक्ष्म कीडी के २। बडामा

घाकी कीडी के २। नाम॥ दोहा ॥

पीलक सुतौ पिपीलक हि अथ पिपीलिका सोतु ॥

हीनांगी अथ ब्राह्मणी सुस्थूल शीर्षा होतु ११०

छत प्रिय कीडी के २ उदेही के ३। लीख के २ नाम॥ दोहा ॥

छतेली तु पिङ्ग कपिश वम्भ पदी का सोतु ॥

उपजिह्वा उपदेहिका लिङ्गारिणी होतु ॥ १११ ॥

जू के २। खटमल के ३। नाम॥ दोहा ॥ ५॥

षट्पदी तु यूका जुगहिकि टिभ तु उत्कुरा जानि ॥

कोल कुरा रु उदंश पुनि मत्कुरा पंज पिहानि १२

चीचडी के २। वीर बहुट्टी। वा। सावरा की डो करी के ३।

यभव कीडा को १ नाम॥ दोहा ॥ ५॥

महामोह गोपालिका इन्द्र गोप वैराट ॥ ५॥

अमिरुजी अमिक तिति भगद्भी तु इकयाट १३

इति त्रीन्द्रियाः॥

अथ चतुरिन्द्रियास्तत्र मूकडी के ५। वीरू के २। वीरू का
डंक को १। नामा दोहा॥

अष्टपाद छमि जालिक रुजाल कारक सुजानि॥

लालात्तावै ह आलिद्रा तिहिं डङ्क तु अलै मानि १४
चंचरी के ३। महुवाल की मॉरवी के २। तैलादी मॉरवी
को १। जुगनू को १। नाम॥ दोहा॥ ४॥

शिली मुख तु इन्द्रिन्द्रि रुरेल म्वै ह त्रय होत॥

सुद्रा सरथी जुग इकि क तैलादी खद्योत॥ ११५॥

तीतरी को १। भीमरी को १। नीली मॉरवी को १। डोंस को १।
टीडी को तथा पतङ्ग को १। कोटा डोंस को १। नामा दोहा
इकि क पुत्तिका। फिल्लिका। नीली दंश पतङ्ग॥

लघु दंश ह चतुरिन्द्रिया मानत इतहि अभंग १६

इति चतुरिन्द्रियाः॥

अथ पञ्चेन्द्रियाः॥ हाथी की मुख ४ जाति के एकै क।
दाँत के समय वीदाँत न आवै अरु खाटरो होय ता को भे
लो १। नाम॥ दोहा॥

भद्र मन्द मृग मिश्र ये भिन्न भिन्न गज जाति ॥ १७॥

लघु तनु वयमहु दन्तेन हि सो गज मत्कुल रयाति १८

वालादि ४ के ४। नामा दोहा॥

पंच वर्ष को वाल गज दश को पोत वरवानि ॥ १९॥

वीसवर्ष को बिको है कलभ तीस को मानि ॥११७॥

अङ्गुश का अग्र को १ अङ्गुश से रोकि वा को १ महावत
कापगन की क्रिया को १ यात को १ अरु यत को भीलो १
नाम ॥ दोहा ॥

अङ्गुश अग्र अग्र है अङ्गुश वारसा यात ॥

यत तु महावत पद कर मवीत तु ये जुगतात ॥१८॥

बुरो चाले फिरे ती घोडा को १ हृदय अरु मुख पर भौरी
दाला घोडा को १ नाम ॥ दोहा ॥ ४ ॥

दुविनीत शकल हय हि त्रीवत्स की तु साजि ॥

जाके हृदय पर भौरी होय सुवाजि ॥१९॥

पाँचौ अंग श्वेत होय ता को १ आठौ अंग श्वेत होय ता को
नाम ॥ दोहा ॥

पंचभद्र उर उर मुख पाश्वर्य जुगल सित जानि ॥

खुर उर हृदय मुख केश सति अष्टमंगल तु मानि २०

श्वेत घोडा के २ श्वेत पिंगल रंग का को १ दुग्ध सम श्वे

तरंग का को १ पीलारंग का को १ नाम ॥ दो०

सित तु कर्क को काहू ही सित पिङ्गल खोङ्गह ॥

सेरह तु पीयूष रंग पीत तु हरिय हि आह ॥२१॥

काला रङ्ग का को १ लाल रङ्ग का को १ सर्व नीला को

१ कपिल रङ्ग का को १ नाम ॥ दोहा

काल वर्ण रङ्गह हय लोहित हय तु कि नाह ॥

आनीलतु नीलकहिअथकापिल त्रिवृहसराह २२
 त्रिवृहको आलवालको श्वेत होवे ताको १। कछु श्वे
 तरङ्ग पीडी प्रयामताको १। नामा दो०
 कापिलजुसितदुम आलजुत सो बोल्लाह वरवानि॥
 कृष्णजंघकम पाण्डु सो बाजि उराहहि जानि १२३॥
 गंधा समरंग काको १। गुलाबीरंग काको १। कछु पी
 लोरंग होय प्रयाम गोडा होय ताको १। नाम॥ दोहा
 गर्दभ आभ सुखह हय पाटल वोरु खान ॥
 कृष्ण जानु कम पीत सो हय कुलाह ही जान २४
 पीतरक्त मिल्या रङ्ग काको १। नाम॥ दोहा॥
 पीतरक्त रंग मिलित सो हय उकनाह विजोय॥
 कृष्ण रक्त विद्युत्त हू कहें उकनाह हि होय १२५
 लाल कमल समरङ्ग काको १। पीत हरित रङ्ग काको
 १। श्वेत काच समरङ्ग काको १। नाम॥ दोहा॥
 शोण को कन दक्ष विहय हि हरित पीत रंग सो तु॥
 हरिकं हाल कहि पंगुल तु सित काचा भहि होतु २६
 कवरा को १। धोरित गतिके लक्षरा सहित १। ना० दो
 चित्रित हय तु हलाह ही धोरित धोरा जानि ॥
 वक्षुकं कशिरि विक्रोड की गति सी हय गति मानि १२७
 वलित को लक्षरा सहित १। पुत को लक्षरा सहित
 १। नाम॥ दोहा॥

समुल्लासतजु अग्रतनुं चितमुखविकनीच ॥
 वलितै अथपुतै लघनजु खग म्गलौ हिअपीच २८
 उत्तेरितकेलदारा सहित ३ नाम ॥ दोहा ॥ ४ ॥
 उत्तेरित आस्कादितके उपकार ठी हित्रयवादि ॥
 उत्पुत्योत्पुत्य जुगमन चौपदकार को पादि २८ ॥
 उत्तेजितकेलदारा सहित २ तो बराका मोहरी का।
 कुलफका भेला ३ नाम ॥ दोहा ॥
 उत्तेजित तौरेचित हिमध्यवेग गति जानि ॥
 वक्र पट्ट तल सारक रुतलिका तीन वरवानि ३०
 दावरा वापिकाडी के २ पाखर के २ वाग के २ ना
 म ॥ दोहा ॥
 पादपाश दामांचन हिप्रद्वार प्रखर द्विधारि ॥
 रश्मिसुतौ वल्गा कुशा अवक्षेपणी चारि ३१
 नावावा वैल का शिरको १ सींग को १ गाडरी के ६
 नाम ॥ दोहा ॥
 गोशिर नैचिक कूरीका सींगहि मेषी सोतु ॥
 कुकरी जालिकिनी रुजा अविलावेणी होतु ३२
 वनवोक के ४ गाडर का दूध के ३ नाम ॥ दोहा ॥
 गडिके तु शिशुवाहक पष्ठ प्रदंग रुव नार्ज ॥
 अवि सोढ तु अवि दूस अरु अवि मरी सत्रय साज ३३
 गज सर्प के २ जी की शब्द अरु रङ्ग कूकडा को सो

होयताके ३ नाम ॥ दोहा ॥

सुजङ्ग भोजी राज अहि कुकुराहि तौ जानि ॥

कुकुद्वयम अहि वर्ण अरु खकारि सो पहिचानि ३४

शेष अरु वासुकि को वर्ण लक्षणा । नाम ॥ दोहा ॥

शेष तु प्रयाम कि शुक्ल रंग सित पंकज को चिन्ह ॥

वासुकि श्वेतरुता सुके नील सरोज हि चिन्ह १३५ ॥

तक्षक । अरु महापद्म को वर्ण लक्षणा ॥ दोहा ॥

लोहिताङ्ग तौ तक्षक सुस्रस्तिक अङ्गित सीस ॥

महर्षि अतिशुक्ल अहि दृष्टा विन्दु नजुत सीस अर्द्ध

शंख अरु कुलिक को वर्ण लक्षणा ॥ दोहा ॥

शंख पीत विभ्राणा गले खड्ग सित जोय ॥ १४० ॥

कुलिक अर्द्ध प्राशि मस्तक रुज्वाल धूम प्रभ होय ३७

चारि नाग विशेषतिन को एकैक । नाम ॥ दोहा ॥

कम्वल रु अश्वतर रु द्यतराष्ट्र वलाहक भिन्न ॥

तक्षकादि इन आठ मै आठ नाग कुल गिन्न १३६

सविष निर्विष सर्प । अरु दृग विषादि वर्णान ॥ दोहा ॥

सविष सर्प नागादि हैं अजगरादि विष हीन ॥

नाग तु दृग विष पुच्छ विष वृश्चिकादि ही चीन ३८

लोम विष तु व्याघ्रादि हैं नख विष सो तु नरादि ॥

लाला विष लालादि कालान्तर मृषादि १४०

औषध मंत्रादि करि जो रह दायो होय ता विष को १

इति खचराः पंचेन्द्रियाः

नकादि षट्का एकैक। नामा दोहा

नका महामुखं शंखमुखं तालुजिह्वां कुम्भीर॥ १८॥

जलसूकरं आलस्यं नवगौमुखं कुम्भीं धीर॥ १९॥

जलमारास्याकेशं जलविलावकेशं नाम॥ दोहा॥

अंबु कूर्मं तु महावसेरु उत्सवीर्यं शिशुमारं॥

पानीयनकुल उद्रे अरु वसीरु जलमार्जारं॥ २०॥

जलनरादि नाम॥ दोहा॥

स्थलमै होय नरादि जे ते जलहू मै होय । १८॥

जलनरं जलगजं जलहयं हि जलवाचकं जलजोय ४८

इति जलचराः पंचेन्द्रियाः॥

आण्डजादि षट् योनि। नामा दो०

आण्डजं खगसर्पादि हैं पीतजं कुज्जर आदि॥

रजसं मद्यकीटादि हैं जरायुजं तु न्यगवादि ४९

मत्स्यादितु संमूर्च्छनजं स्वेदजं तौ यूकादि॥

सुरनारक उपादकं हि उद्भिदं खज्जन आदि ५०

आठ भांति करियो नीयों चर जीवन की जोय॥

उद्भिदं तरु गुल्मादि की योनि सुनवम हि होय ५१

इति तिर्य्य काण्ड सारः॥

अथ नरक काण्ड सार लिख्यते॥ ५२॥

अनाधार ४। नरकन का एक एक। नाम॥ दोहा॥